अमरीका
के
महान् उदारवादी
संपादक : गेब्रील रिचर्ड मेसन

श्री गैब्रील मेसन हमें यह स्मरण कराते है कि उदारवाद अमरीका की सच्ची विरासत है। उस समय ईसाई मत की जो प्रचलित परम्परा थी, उसका विरोध करनेवालों ने इस राष्ट्र की स्थापना की थी। उन्होंने ही स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र लिखा; अधिकार-पत्र की रचना की और सविधान के निर्माण का श्रेय पाया। उस महान् परम्परा का अनुसरण करनेवाले अमरीकी विचारधारा के मूर्धन्य नेताओं ने हर व्यक्ति के लिए, यहाँ तक कि सर्वाधिक अनुदारवादी के लिए भी प्रत्येक पीढ़ी की स्वीकृति बौद्धिक मान्यताओ का समीक्षण एवं मूल्यांकन किया है।

प्रस्तुत पुस्तक "अमरीका के महान् उदारवादी" में अमरीकी जीवन-पद्धति पर अपनी अमिट छाप छोड़नेवाले १२ महान् अमरीकियों के जीवन और प्रभाव की एक सर्वथा नवीन व्याख्या की गई है। आज के युग की विशेष समस्याओं एवं अनिश्चितताओं के संदर्भ में आधारभूत अमरीकी विचारधारा का मूल्यांकन करनेवाले विद्वानों और शिक्षकों के सहयोग के परिणामस्वरूप यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है।

कालिज आफ दी सिटी आफ न्यूयार्क के अध्यक्ष श्री बुएल जी० गालाघेर ने टामपेन के विषय में लिखा है।

"आऊट लाईन आफ हिस्ट्री आफ इंगलिश लिटरेचर"—अंग्रेजी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा आदि पुस्तकों के प्रणेता श्री विलियम ब्रेडले मार्टिस ने थामस जेफरसन पर लिखा है।

"एजूकेशन फार मारल ग्रोथ"—नैतिक वृद्धि के लिए शिक्षा आदि ग्रन्थों के रचयिता श्री हेनरी न्यूमैन ने हौरेस न्यूमैन के बारे में लिखा है।

अमेरिका
के
महान् उदारवादी

अमेरिका
के
महान् उदारवादी

संपादक

गेब्रील रिचर्ड मेसन

प्रकाशक

इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस) प्राइवेट, लिमिटेड

इलाहाबाद

१९५९

मूल्य २ रु० ५० नये पैसे

Hindi Translation
Great American Liberals
By Gabriel Richard Mason.

Price Rs. 2·50

Published by B. N. Mathur
at the Indian Press (Pub.) Private Ltd., Allahabad
Printed by A. K. Bose
at the Indian Press Private Ltd., Branch, Varanasi.

विषय-सूची

आमुख

डिजरायली ने सन् १८४८ में "लोकसभा" में भाषण करते हुए कहा था, "उदारवाद जीवन के उच्चतम कोटि के व्यावहारिक व्यवसाय अर्थात् राजनीति में राजनीतिक सिद्धान्तों के बजाय, दार्शनिक धारणाओं का समावेश है।"

उसी अर्थ में, हम कह सकते हैं कि अमेरिकी उदारवाद किसी एक राजनीतिक दल के सिद्धान्तों का समूह नहीं है। न ही यह साम्यवाद अथवा फासिस्तवाद की भाँति कोई विचारधारा है। वस्तुतः, यह एक गतिशील शक्ति है जो एक अनवरत उन्नतिशील समाज की दिशा में दूरदर्शी पुरुषों और महिलाओं का मार्ग-प्रदर्शन करती है। यह अमेरिका की चिरस्थायी क्रान्ति की प्रेरक शक्तियों में से एक है। नकारात्मक दृष्टि से, उदारवाद निरंकुशता से, चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक हो, दूर उसकी विपरीत दिशा में उन्मुख होता है। सकारात्मक दृष्टि से, उदारवाद हमारे राष्ट्र के संस्थापक पिताओं द्वारा हमारी स्वतंत्रता के घोषणा-पत्र में सुनिर्दिष्ट गौरवपूर्ण आदर्शों की सिद्धि की दिशा में सतत उन्मुख एक सुदृढ़ आन्दोलन है। और, न हमें-मिल्टन, लॉक्, स्पिनोजा तथा फ्रांसीसी प्रबोधन से सम्बद्ध दार्शनिकों-जैसे उत्कृष्ट व्यक्तित्ववाले यूरोप के उन महान् पुरुषों द्वारा उदारवाद में किये गये योगदानों को ही कदापि भूलना चाहिये।

इन उक्तियों से कदाचित् ही कोई असहमत होगा। दुर्भाग्यवश ऐसे लोग भी विरले ही हैं जो दैनिक व्यवहारों में उनके मन्तव्यों से प्रेरित हों। हममें से अधिकांश हमारी महान् शिल्प-प्रविधियों की प्रत्यक्ष प्रगति के सुखद प्रभावों से आत्मतुष्ट हो गये हैं। हममें से अत्यधिक लोगों को इस बात की पर्याप्त अनुभूति भी नहीं है कि हमारे समूचे इतिहास में उदारवाद ने ही हमारी शिल्पिक प्रविधियों के यान को हमारे रहन-सहन के मिथ्याभिमानपूर्ण उस उच्च स्तर की ओर, जिस पर हमको गर्व है, तथा एक महान् संघीय गणराज्य सम्बन्धी हमारे सफल प्रयोग की दिशा में, संचालित किया है। हममें से अत्यधिक लोग शत्रुवत्, प्रतिस्पर्द्धी विचारधाराओं की ओर से हमारे लोकतंत्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों के प्रति पर्याप्त रूप से सजग नहीं हैं—चुनौतियाँ, जो केवल वामपक्ष से, जिसके प्रति सौभाग्य से हम सतर्क हो चुके हैं, ही नहीं, बल्कि

दक्षिण पक्ष से भी दी जा रही हैं, जिसके प्रति हमारा दृष्टिकोण अत्यधिक निष्क्रिय समझौते का है। इन सभी कारणों से, सभी नागरिकों के लिए अमरीकी उदारवाद के इतिहास का एक सरल पाठ्यक्रम—उसकी सफलताओं और आकांक्षाओं पर विशेष रूप से प्रकाश डालने के उद्देश्य से—अत्यन्त वाञ्छनीय हो जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में जिन बारह प्रतिनिधि महापुरुषों के सम्बन्ध में चर्चा की गयी है, उनका चुनाव उनकी विचक्षणता अप्रतिम के कारण, अथवा अमरीकी मस्तिष्क को ढालने में उनके प्रभाव के कारण नहीं हुआ है। वस्तुतः, उनका चुनाव हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास में उनके संचयी अंशदान के आधार पर ही किया गया है। रुचिकर बात यह है कि वे व्यक्तिगत रूप से इस अर्थ में सच्चे लोकतंत्रीय नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं कि उन्होंने केवल उन कोटि-कोटि अज्ञातनाम मानवों की अनुभूतियों का ही उद्गार किया और सम्भवतः उनका मार्गदर्शन भी किया है, जिनसे अमेरिकी राष्ट्र बना है।

यह पुस्तक, 'अमेरिका के महान् उदारवादी', अपने अस्तित्व के लिए सिटी कालेज क्लब की चिरऋणी है, जिसके तत्वावधान में न्यूयार्क, सिटी कालेज से निकट सम्बन्ध वाले बारह विद्वानों ने इस पुस्तक के निर्माण में उदारतापूर्ण सहयोग दिया है।

गेब्रील रिचर्ड मेसन

राल्फ वाल्डो इमर्सन

गेब्रियल रिचार्ड मेसन

राल्फ वाल्डो इमर्सन न केवल अमरीकी साहित्य जगत् में एक महान् विभूति के रूप में प्रतिष्ठित हुए वरन् समूची उन्नीसवीं शताब्दी पर उनके असाधारण उदारवादी प्रभाव की स्पष्ट छाप अंकित हुई। जिन दिनों थोरो प्रकृति के अंचल में व्यतीत होनेवाले अपने सरल जीवन द्वारा गौरव-गरिमा को प्राप्त कर रहे थे और वाल्ट ह्विटमैन अपने काव्य में प्रजातन्त्रवाद के वास्तविक अर्थ का निरूपण कर रहे थे, राल्फ वाल्डो इमर्सन ने मानव मात्र के जीवन में देवत्व केदर्शन का इतनी आस्था, आत्मविश्वास तथा शक्ति और उत्साह के साथ प्रतिपादन किया कि समकालीन धर्म, शिक्षा, राजनीति एवं सामान्य जीवन पर उनकी एक अमिट छाप रह गई है।

तथापि इमर्सन ने किसी अध्यात्म-दर्शन का विधिवत् प्रतिपादन नहीं किया। प्लेटो से लेकर शोपनहावर तक विश्व के समस्त महान् दार्शनिकों का अध्ययन उन्होंने किया था, प्राच्य बहु-देवतावादी सिद्धान्तों का भी उन्होंने अवगाहन किया था, परन्तु उन्होंने उन रहस्यवादी समस्याओं का जो कि पिछले पाँच सहस्र वर्षों से मानव मस्तिष्क और हृदय को सदैव उद्वेलित करती रही हैं, समाधान प्रस्तुत करने जैसे गम्भीर कार्य में अपने को कभी नहीं लगाया। यह ठीक है कि काण्ट तथा उनके अनुयायी दार्शनिकों से प्रभावित होकर वे अतीन्द्रियवाद—जिसकी मान्यता है कि पदार्थ जगत् के सम्पर्क से प्राप्त होनेवाली अनुभूतियों से परे भी मानव, अतिमानसिक ज्ञान की उपलब्धि कर सकता है—की ओर उन्मुख हुए। तदुपरान्त वे इस सिद्धान्त के एक शक्तिशाली व्याख्याता के रूप में संसार के सामने आये। परम-आत्मा, अमरत्व और व्यक्ति के संकल्प स्वातंत्र्य में उनकी दृढ़ आस्था थी तथापि उन्हें आदर्शवाद के एक स्पष्ट प्रवक्ता के रूप में नहीं माना जा सकता क्योंकि स्पिनोजा द्वारा प्रतिपादित सर्वात्मवाद में भी उनकी गहन अभिरुचि थी—जिसका प्रतिपादन कौलरिज, वर्ड्सवर्थ तथा कार्लाइल ने अपने साहित्य में किया और वैदिक

काल में प्राचीन भारतीय ब्राह्मणवाद के रूप में भी जिसका प्रतिपादन हुआ। इमर्सन ने इन दोनों दर्शनों का संश्लेषण करने की कभी चेष्टा नहीं की। परन्तु उनके विचार सदैव इतने स्फूर्ति प्रदान करने वाले तथा इतनी आकर्षक और साहित्यिक छटा से सम्पन्न होते कि केवल अमरीका ही नहीं वरन् समस्त समकालीन योरोप के नागरिकों ने कोनकोर्ड के इस महान् द्रष्टा की वाणी को मनोयोगपूर्वक सुना तथा वे उनके गम्भीर विचारों से प्रभावित हुए। उन्होंने दार्शनिक सत्य के अनुसन्धान में किसी एक ध्येयनिष्ठ दिशा का अनुगमन नहीं किया, तथापि यह सच है कि वे अपने दार्शनिक अभियान के अन्तर्गत एक-एक शिलाखण्ड पर अपने आन्तरिक प्रवेग से अग्रसर होते हुए अध्यात्म दर्शन के रविकिरण प्रकाशित शिखरों पर पहुँचने में पूर्णतः सफल हुए थे।

राल्फ वाल्डो इमर्सन का जन्म २५ मई, सन् १८०३ को बोस्टन में हुआ। इनके पिता विलियम इमर्सन एक पादरी थे, जिनके पूर्वज पिछली छः पीढ़ियों से "न्यू इंग्लैण्ड" के चर्च में इस पद पर रहते आये थे। इनके पिता यद्यपि एक कट्टरपंथी धर्म-प्रचारक के रूप में विख्यात थे तथापि उनके विचारों में उदारता थी। उन्होंने प्रीस्टले के प्रगतिशील साहित्य का पारायण किया था और उसकी सैद्धान्तिक मान्यताओं से वे सन्तुष्ट थे। टामपेन कृत "दी एज आफ रीजन" (बुद्धिवादी युग) को भी उन्होंने मननपूर्वक हृदयंगम किया था।

यद्यपि राल्फ के माता-पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी तथापि उन्होंने उन्हें बोस्टन के हावर्ड विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा था। कुछ वर्षों के लिए इमर्सन ने अपना यह शिक्षा-क्रम स्थगित कर दिया और वे शिक्षक का कार्य करने लगे, हालांकि इस कार्य के प्रति उनके मन में कोई विशेष उत्साह नहीं था। अपनी डायरी में उन्होंने अपने इस शिक्षा-काल के अनुभवों को इस प्रकार अंकित किया है, "अब मैं एक निरर्थक स्कूल मास्टर हूँ और इस नामुराद पेशे में हाड़-तोड़ मशक्कत करते हुए भी उसके दायित्व को भली भाँति निभा सकने का संतोष भी प्राप्त नहीं कर पाता हूँ।"

बाईस वर्ष की आयु हो जाने पर उन्होंने कैम्ब्रिज के धर्मशास्त्र विद्यालय में प्रवेश किया। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, परन्तु इस बाधा के बावजूद भी उन्होंने इस विद्यालय से स्नातक की पदवी प्राप्त कर ली। शीघ्र ही उन्हें "सैकिण्ड चर्च" की ओर से पादरी पद के लिए निमंत्रण प्राप्त हो गया। उनके पादरी पद पर नियुक्त होने के अवसर पर पूजास्पद डा० इजरस्टाइलनट ने

एक भविष्यवक्ता के स्वर में कहा था कि "अपने नव-निर्वाचित नेता के स्वतंत्र विचारों की प्रतिष्ठा करें, भले ही ये विचार उन्हें थोड़े प्रगतिशील ही क्यों न प्रतीत हों।"

उस समय तो इस तरुण पादरी ने अपने प्रवचन में यह घोषणा की थी कि वह उतनी ही स्वतंत्रता ग्रहण करेंगे जो कि धर्मग्रंथ की महत्ता के प्रति शोभनीय होगी और उन्होंने यह भी स्पष्ट किया था कि धर्म की शास्त्रीय शिक्षा देने की अपेक्षा सत्य-निष्ठ जीवन की ही शिक्षा देना अधिक पसन्द करेंगे। उन्होंने अपने श्रोताओं को चेतावनी देते हुए कहा था कि "धर्म की पुरातन परिपाटियाँ आज जीर्ण हो चुकी हैं और उनमें परिवर्तन होना है। मैं धर्म का पहरेदार मात्र बनकर कभी नहीं रहना चाहूँगा।" उस समय भी लोगों ने विस्मय के साथ यह सोचा था कि यह धर्मोपदेशक उस आश्चर्यजनक नास्तिकता को न जाने कौन सी सीमा तक पहुँच कर रहेगा।

दो ही वर्ष पश्चात् संस्थागत धर्म-व्यवस्था से उनकी आस्था उठने लगी। उनकी शिकायत यह थी कि औपचारिक धार्मिकता में प्रेम का समावेश नहीं है और प्रार्थना सभाएँ तथा मन्दिर पाखण्ड के केन्द्र बने हुए हैं। उनका यह भी कहना था कि तत्कालीन धर्म-प्रचार में अहंकार और अज्ञान का ही बोलबाला है और धार्मिक कर्मकाण्ड निष्प्राण और नीरस होते हैं। यद्यपि संस्थागत धर्म-प्रचार की आवश्यकता में अभी भी उनकी मान्यता थी परन्तु वे उनकी चहारदीवारी में अपने को बंदी बनाना नहीं चाहते थे। इन विचारों ने उन्हें शनैः शनैः इस निष्कर्ष पर पहुँचा दिया कि सच्चा पादरी होने के लिए यह आवश्यक है कि गिरजा घर को त्याग दिया जाय। उनकी धारणा बनती जा रही थी कि धार्मिक-पेशा अब निःसत्त्व हो चुका है क्योंकि वह आज भी हम से उन मरणासन्न धार्मिक परिपाटियों का पालन करने का आग्रह करता है—,जिनका पालन हमारे पूर्वजों द्वारा किया जाता था।

अपने इन विचारों से आन्दोलित होकर उन्होंने लूथर के विश्व को कम्पायमान कर देने वाले शब्दों को दोहराते हुए कहा था, यही मेरा विश्वास है और मैं इस पर अडिग हूँ। हे प्रभु मेरी सहायता करो, तथास्तु। उन्होंने तत्काल ही अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इस त्यागपत्र में उन्होंने धर्म के कर्मकाण्डी रूप का साहसपूर्वक विरोध किया था। उनका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया गया। इससे उन्हें कुछ सांत्वना ही मिली। इमर्सन को अब

यह संतोष था कि वह स्वतन्त्रतापूर्वक सत्य की खोज तथा उसका प्रचार कर सकते हैं।

लगभग नौ महीनों तक वे योरोप का भ्रमण करते रहे। इस भ्रमणकाल में उन्हें वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज एवं कार्लाइल से भेंट करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। भ्रमण से लौटने के पश्चात् वे यदा-कदा ही धर्मप्रचार करते थे। लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका के विभिन्न नगरों में जा-जाकर उन्होंने भाषण देने प्रारम्भ कर दिए। मञ्च पर उन्हें आशातीत सफलता मिली। इसके बाद तो ५० वर्षों तक उन्होंने इस कार्य को व्यवसाय रूप में अपनाए रखा।

विज्ञान और युग के प्रतिनिधि व्यक्तियों तथा विविध विषयों पर उन्होंने अनेक भाषण दिये। इन व्याख्यानों में उन्होंने सदैव व्यक्ति को ही गौरवान्वित किया। उनके दो भाषणों ने जो कि फी बैट्टा कप्पा ऑरेशन एवं "डिविनिटी स्कूल एड्रेस" के नाम से विख्यात हैं—इतिहास का निर्माण किया था।

३१ अगस्त, सन् १८३७ को उन्होंने हावर्ड की "फी बैट्टा कप्पा सोसायटी" के २१५ सदस्यों के समक्ष भाषण किया था। उनके भाषण का स्वागत तो हुआ परन्तु श्रोताओं के मन में उद्भ्रान्ति, भय, विस्मय एवं आश्चर्य की एक मिली जुली भावना थी। जेम्स रसल लोवल ने इस भाषण पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि गिरजे की वीथियाँ किस तरह श्रोताओं की भीड़ से खचाखच भरी थीं, कैसा निस्तब्ध वातावरण था, खिड़कियाँ झाँकने वाली औत्सुक्यपूर्ण मुखाकृतियों से किस तरह भरी हुई थीं, कितना अपूर्व उत्साह था और कितना गम्भीर मौन था कि जैसे उनकी वाणी के समक्ष सभी मतभेद पराभूत हो गए हों।"

उन्होंने इस ऐतिहासिक भाषण के सम्बन्ध में कहा था कि यह "अबलार्ड के भाषण का अमरीकन संस्करण है।" ऑलिवर वेण्डल होम्स ने इसे, "हमारी बौद्धिक स्वतन्त्रता की उद्घोषणा" कहकर सम्मानित किया था।

इमर्सन का विचार था कि युग में परिवर्तन की पुकार है, "हमारे परावलम्बन के क्षण और दूसरे देशों के ज्ञान का चिरकालीन शिष्यत्व ग्रहण करने का युग अब समाप्त हो रहा है। उन्होंने विद्वानों से यह माँग की थी कि पांडित्य के दम्भ को छोड़कर पौरुषपूर्ण विचारकों के रूप में अपना कायाकल्प करें तथा उन्हें ऐसे संस्कृतिवान एवं कर्मनिष्ठ व्यक्तियों के रूप में अपना निर्माण करना चाहिए जो कि दुनिया पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं। जो विद्वान्

आत्म-विश्वास के संबल, प्राकृतिक रहस्यों के ज्ञान तथा सभी युगों के महान् ग्रन्थों के पारायण द्वारा अपने को ज्ञान-मंडित करेंगे, उन्हें अपनी लघुता, अनुकरण वृत्ति, प्रभुत्व के समक्ष समर्पण की भावना और योरोपीय संस्कृति की मुखापेक्षिता की भावना से मुक्ति प्राप्त हो जायगी। इमर्सन ने अपने श्रोताओं का आवाहन करते हुए कहा था, विनम्र युवको! पुस्तकालयों में बैठ कर अपना विकास करो और यह अपना धर्म समझो कि सिसरो, लॉक, और बेकन ने जो विचार-सम्पदा तुम्हें प्रदान की है उसे स्वीकार करना है और भूल जाओ कि इन ग्रन्थों का प्रणयन करते समय सिसरो, लॉक और बेकन भी तुम्हारी ही तरह युवक मात्र ही थे। यह आह्वान क्रियाशीलता, आत्म-विश्वास और दुस्साहसिकता का उन्मेष करने के लिए विश्व के समक्ष एक तूर्यघोष था विशेष रूप से अमरीका के लिए जो अब अपने बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास की ओर धीरे-धीरे अग्रसर हो रहा था।

अपना दूसरा भाषण जो सम्भवतः "दी अमरीकन स्कालर" से भी अधिक महत्त्वपूर्ण था – उन्होंने १५ जुलाई, सन् १८३८ को केम्ब्रिज के डिविनिटी स्कूल में दिया था। श्रोताओं से कक्ष खचाखच भरा हुआ था और वे ध्यानमग्न होकर इमर्सन के भाषण को सुन रहे थे। भाषण में उन्होंने विश्वात्मा, एक संकल्प और एक मानस के अस्तित्व पर जोर देते हुए कहा था कि एक ही सत्ता अखिल सृष्टि में संचरित हो रही है और वही मानव-हृदय में धार्मिक भावना का आविष्कार करती है। इन भावों की तुलना ईसा मसीह के इन शब्दों से की जा सकती है, "मैं दिव्यात्मा हूँ, मेरे माध्यम से ईश्वर काम करता है, मेरे कण्ठ से ही ईश्वर की वाणी मुखरित होती है", परन्तु इमर्सन के लिए तो जैसे यह महान् उद्घोषणा मानवमात्र के लिए सत्य थी। प्रत्येक व्यक्ति सत्यतापूर्वक कह सकता है; "मैं दिव्यात्मा हूँ, मेरे माध्यम से ईश्वर काम करता है और मेरे कंठ से उसकी वाणी मुखरित होती है।" अट्ठारह सौ वर्षों तक इन शब्दों को गलत रूप में समझा जाता रहा था, और गलत ढंग पर उनकी व्याख्या की जाती रही थी, इस प्रकार ईसाई धर्म में पौराणिकता का समावेश हो गया और उसका औपचारिक तथा निर्जीव धर्म के रूप में विकास होता गया। इमर्सन ने आग्रहपूर्वक कहा, "हमें इस सबको तिलांजलि देनी है। जीवन में वास्तविक प्राणोन्मेष सीधे ईश्वर के प्रति प्रेम एवं शाश्वत सत्यों की नीराजना द्वारा ही संभव है। धार्मिक कपोल-कल्पनाओं और अतिशयोक्तियों द्वारा धर्म के जो मध्यस्थ बन गए हैं, इन कार्यों से ही उनका स्थान गौण बनाया

जा सकता है। ईसा मसीह में हम दिव्यता के दर्शन करते हैं, उस ईसा मसीह में जो नेजराइन के एक बढ़ई का बेटा था, फिलिस्तीन का यहूदी था, एक असाधारण सामाजिक सुधारक था और मानवों में भद्रतम मानव था—इसी प्रकार हम समस्त मानवों में अन्तर्निहित दिव्यता को क्यों नहीं पहचान सकते।

थ्योडोर पार्कर जैसे लोगों ने इस व्याख्यान के उदार विचारों की सराहना की थी क्योंकि उसमें वर्तमान धार्मिक प्रणाली में विद्यमान बुराइयों को दूर करने की साहसिक माँग की गई थी, लेकिन दूसरे धर्म प्रचारक तो उसे सुनकर स्तब्ध होकर रह गए, उनके अन्तःकरण में उन विचारों से चोट पहुँची थी और उनके मस्तिष्क में परेशानी पैदा हुई थी। उनके मत से इस व्याख्यान में न तो श्रेष्ठ धर्मोपदेश था और न ही श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता। यह व्याख्यान जर्मन कांट, फ्रांसीसी काउज़िन और हिन्दू धर्म का विचित्र सम्मिश्रण था। उनका कहना था कि इमर्सन के तर्क असंगत हैं, उनकी बुनियाद लचर है और कुल मिलाकर वह ऐसा दर्शन है जिसका उचित परिपाक नहीं हुआ है।

परन्तु इमर्सन अपनी मान्यताओं को लेकर दृढ़ और अविचलित रूप से खड़े रहे। अपने विरोधियों के साथ वादविवाद में वे कभी नहीं पड़े, परन्तु ईसा की मानवीय सत्ता के बारे में उन्होंने अपने विचारों में परिवर्तन नहीं किया और न ही इस मान्यता में कोई फेर-बदल की, कि मानव अपनी सहजवृत्ति द्वारा धार्मिक सत्य की उपलब्धि के प्रति उन्मुख है। उन्होंने अपनी आलोचनाओं को अपनी दुर्धर्ष गति से अपदार्थ बताते हुए कहा था—"व्यंग्य, घृणा और आक्रोश के इन ऊँचे स्वरों और जिन विशेषणों से आप मुझे विभूषित करते हैं—उन सभी से अपने अध्ययन-क्रम में मैं इतना सुपरिचित हो चुका हूँ कि वे मुझे हास्यास्पद, पुराने और बासी मालूम होते हैं। इन सभी विरोधों को चुनौती देते हुए उन्होंने कहा, "मैं देख रहा हूँ कि मेरी बातें सुनकर आपको धक्का लगा है। आप ऊँचे स्वर में उसकी आलोचना करें, यह स्वाभाविक ही है, लेकिन मैं देख सकता हूँ कि आसानी से हममें समझौता नहीं हो सकता। मेरे पास कहने को अभी इतना बाकी है कि उसकी झकझोर से आपका धैर्य निःशेष हो जायगा। अनेक प्रगतिशील विचारक हालांकि वे इमर्सन द्वारा कही गई सभी बातों से सहमत नहीं थे, परन्तु वे उनकी स्वतंत्र आत्मा और निर्भिक उक्तियों के प्रशंसक होते जा रहे थे, और भविष्यवाणी भी करने लगे कि उनके इस व्याख्यान का युग के धार्मिक चिन्तन पर स्थायी प्रभाव पड़ेगा।

उदारवादी सुधारक के रूप में इमर्सन की ख्याति का आधार फी बैट्टा कप्पा भाषण जिसने अमरीकी शिक्षा और संस्कृति को अत्यधिक प्रभावित किया तथा धार्मिक रूढि और परम्पराओं में जबर्दस्त व्यतिक्रम उपस्थित करने वाले डिविनिटी स्कूल एड्रेस ही नहीं हैं वरन् राजनीतिक क्षेत्र में अभिव्यक्त अपने विचारों के कारण भी वे विख्यात हुए। राजनीतिक वाद विवादों को इमर्सन बहुत कम महत्त्व देते थे परन्तु जनजीवन के कष्टों और चिन्ताओं के निदान के लिए राजनीतिक चिन्तन के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। उन्होंने प्रजातन्त्र सिद्धान्त की जीवन-पर्यन्त उपासना की। उनकी धारणा थी कि यह सिद्धांत आत्म ज्ञान, आत्मप्रतिष्ठा और आत्म-विश्वास की ही उपज है। वे जानते थे कि प्रजातन्त्रवाद में बुराइयाँ भी हैं परन्तु वे उसकी अन्तर्निहित अच्छाइयों से भी परिचित थे। उन्हें विश्वास था कि हमारे समाज का एक न एक दिन इसी सिद्धांत के आधार पर विकास और सुधार होगा और प्रजातान्त्रिक संस्थाएँ पुष्पित और पल्लवित होंगी। वे आग्रहपूर्वक इस बात पर बल देते थे कि सरकार का प्रमुख कर्त्तव्य आत्मविश्वासी नागरिकों का निर्माण करना है। उनका विश्वास था कि जिस समय प्रत्येक अमरीकी नागरिक अपने जीवन की सम्पूर्ण क्षमताओं को अभिव्यक्ति देने का अवसर प्राप्त कर सकेगा तो इन्हीं आत्मविश्वास एवं सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न नागरिकों का योगदान राज्य के सर्वोपरि विकास और उसकी समृद्धि के रूप में फलीभूत होगा। यह स्वाभाविक ही था कि वैयक्तिकता के महत्त्व के सम्बन्ध में ऐसे विचारों के प्रतिष्ठाता होने पर इमर्सन उन लोगों के साहसिक प्रयासों की सराहना करते जो कि गुलामी की प्रथा के विरुद्ध जिहाद कर रहे थे। जिस समय अमरीकी कांग्रेस ने जल्दबाजी में "फ्युगिटिव स्लेव ला" (भगोड़ा दास अधिनियम) स्वीकार किया तो, इमर्सन के मन से अधिशासनिक सत्ता के प्रति सम्मान का भाव समाप्त हो गया। उनके मत से यह कानून एक बहुत ही भोंडा कानून था। इमर्सन की मान्यता थी कि जब तक अमरीका में दास प्रथा प्रचलित है तब तक न हम शांति प्राप्त कर सकते हैं और न ही अमरीकी उपराज्यों में वास्तविक एकता स्थापित की जा सकती है और उन्होंने सिंहनाद के स्वर में कहा कि "मुझे ईश्वर की सौगन्ध है, मैं ऐसे कानून का पालन नहीं करूँगा। दास प्रथा को निर्मूल कर दो, इसे जला कर खाक कर दो, आज तक की हुई मानवीय क्षति का प्रायश्चित्त करके, उसे सदैव के लिए निश्चिह्न कर दो। भूतपूर्व प्रेजीडेण्ट जान क्विन्सी एडम्स से वे इस बात में सहमत थे कि जिस प्रकार

इंगलैण्ड ने वेस्ट इण्डीज़ में सफलतापूर्वक दासों को उनके मालिकों से खरीद लिया था उसी प्रकार अमरीकी सरकार दासों को उनके मालिकों से खरीद ले। जिस समय यह अनुमान लगाया गया कि इस प्रकार दासों की खरीदारी पर दो करोड़ डालर व्यय होगा तो इमर्सन ने विश्वास के साथ कहा था कि यह धन-राशि जनता उत्साह के साथ संसार से दुःख के इस अगिथास पर्वत को उखाड़ फेंकने के लिए प्रदान करेगी। उन्होंने न केवल नीग्रो दासों के उद्धार का ही जोरदार समर्थन किया था वरन् उन महिला आन्दोलनकर्त्रियों का भी पूर्ण समर्थन किया जो अपने मताधिकारों के लिए संघर्ष कर रही थीं।

नारीत्व के सम्बन्ध में उनकी धारणाएँ यद्यपि रोमानी आदर्शों के अनुकूल थी और उन्हें यह भय था कि मताधिकार प्राप्त होने के उपरान्त नारीत्व का वह रोमानी आदर्श लुप्त हो जायेगा तथापि व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य के वे इतने महान् उपासक थे कि नारी-स्वातन्त्र्य और लैंगिक समानता के लिए संघर्ष करना उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा।

मंगलवार नवम्बर ६, सन् १८६० को इमर्सन ने लिंकन के पक्ष में मतदान दिया और उनकी सफलता को उन्होंने दास प्रथा के विरुद्ध अमरीका की कोटि-कोटि जनता की उदात्त उद्घोषणा का संज्ञा से विभूषित किया। जिस समय गृह-युद्ध प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने त्याग करने के लिए जनता का आह्वान किया। उन्होंने कहा सत्यनिष्ठ ध्येय के लिए बन्दूक की बारूद से भी सुगन्धि आती है और तब उन्होंने ये प्रख्यात पंक्तियाँ लिखीं :—

वैभव हमारे धूलिकणों के इतना पास आ गया है,
और अब ईश्वर मनुष्य के इतना निकट है—
और जब कर्त्तव्य की धीमी पुकार सुन पड़ती है, कर्मकरो !
तब तरुणाई प्रत्युत्तर देती है—मैं तैयार हूँ।

लिंकन से उनकी व्यक्तिगत भेंट हुई थी। वे मानते थे कि वे एक स्पष्टवादी, ईमानदार और सद्भावनापूर्ण मानव थे जिनका मस्तिष्क की भाँति सोचता और विचारता था। सन् १८६४ के निर्वाचन में भी उन्होंने उत्साहपूर्वक लिंकन का समर्थन किया और लिंकन की सफलता पर आह्लादित होकर उन्होंने कहा था कि संसार का इतिहास ये इतने महत्त्वपूर्ण निर्णय बहुत कम जनता के मत पर छोड़े गये हैं। राष्ट्र एक ऐसा आकस्मिक संगठन नहीं है जिसे गुप्त षड्यन्त्रों, हिंसात्मक उपायों से आसानी से विघटित किया जा सकता है। जिस दिन 'ली' ने 'ग्रान्ट' के सम्मुख समर्पण किया था वह क्षण समस्त

मानवता के लिए एक हर्षोल्लास का दिन था। इमर्सन ने उस अवसर पर अपने लोगों से कहा था कि "निकट अतीत में होने वाली घटनाओं ने यह सिद्ध किया है कि मानवता लिंकन के ईर्द गिर्द अपने सर्व-श्रेष्ठ रूप में प्रकट हुई है और यही मानवता जिसने विपुल शक्ति का लिंकन को स्वामी बनाया है, उसका साधु प्रयोग करने में भी उसकी सहायता करेगी।' शहीद प्रेजीडेण्ट की अन्त्येष्टि के अवसर पर इमर्सन ने दिवंगत के मानवीय गुणों की अभ्यर्थना की और कहा था कि ऐसे संकट के क्षणों में उनके ओजस्वी नेतृत्व की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। इमर्सन ने कहा था, "गेटिस्बर्ग में उन्होंने जो संक्षिप्त भाषण दिया था, उसका उल्लंघन आसानी से नहीं किया जा सकता।" उन्होंने कहा, "प्रेजीडेण्ट के रूप में उनका निर्वाचन, मानव की सुबुद्धि और सार्वजनिक सदाशयता की विजय थी। विरले ही लोगों में इस प्रतिष्ठा के उपयुक्त पात्रता रही होगी।" लिंकन जिस संकट से होकर गुजरे थे, इमर्सन के मन में उसके लिए आदर था। उन्होंने इस बात पर हर्ष प्रकट किया था कि लिंकन अवसर-वादिता की ओर उन्मुख न होकर सदैव सिद्धान्त पर अडिग रहे। उन्हीं के कारण संघ की सुरक्षा हुई और नीग्रो लोगों के लिए नवीन अधिकारों की प्राप्ति के बाद दासता सदैव के लिए समाप्त हो गई।

दास प्रथा, नारी मताधिकार, गृह-युद्ध और लिंकन पर प्रकट किए गए उनके उदारवादी विचारों के 'अतिरिक्त राजनीति शीर्षक निबन्ध में भी उनके गम्भीर विचारों के दर्शन होते हैं। इन विचारों में आधुनिकता की एक विस्मयवादी प्रतिध्वनि सुन पड़ती है। फासिस्टों और कम्युनिस्टों को यह सत्य भलीभाँति विदित हो जाना चाहिए कि कोन्कोर्ड का यह ऋषि यह मानता था कि "नागरिक की अपेक्षा राज्य का पद ऊँचा नहीं है।"

कानून को वे किसी विशिष्ट स्थिति को सँभालने के लिए मनुष्यकृत एक उपकरण-मात्र मानते थे। उनका कहना था, "सभी कानून परिवर्तनीय हैं। तरुण शासनाधिकारी यह विश्वास करते हैं कि जनता पर कोई भी कानून यदि उपयुक्त मात्रा में उसे समर्थन प्राप्त हो जाए तो आमद किया जा सकता है, परन्तु बुद्धिमान लोग जानते हैं कि मूर्खतापूर्ण वैधानिकता एक बालू की रस्सी है जो अपनी जकड़ से स्वयं खण्डित हो जाती है। परिणामस्वरूप, अधिक से अधिक शक्तिशाली प्रतिचारी अनतिकाल में पराभव को प्राप्त हो जाते हैं। केवल वही लोग, जो आदर्शों की बुनियाद पर निर्माण करते हैं शाश्वत काल के लिए निर्माण करने में सफल होते हैं।"

बहुत से लोग कभी-कभी आश्चर्य करने लगते हैं कि हमारे देश में दुःशासन क्यों है। इमर्सन ने इस रहस्य को इस प्रकार प्रकट किया है, "प्रचलित शासन का स्वरूप उसे वहन करने वली जनता के संस्कारों की ही अभिव्यक्ति है।"

सम्पत्ति के सम्बन्ध में उनके विचारों ने आधुनिक युग के वैधानिक एवं न्यायिक चिन्तन को बहुत अधिक मात्रा में प्रभावित किया है। वे कहते हैं—"राजनीति व्यक्ति और सम्पत्ति के रूप में दो तत्वों को मान्यता देती है जिनकी सुरक्षा के हेतु शासन अस्तित्वमान होता है। प्रकृति से समानधर्मी होने के कारण सभी व्यक्तियों के अधिकार समान हैं। परन्तु सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार असमान हैं। वे आगे कहते हैं यह सहजस्वीकृत सिद्धान्त कि संपत्ति द्वारा संपत्ति के लिए तथा व्यक्तियों द्वारा व्यक्तियों के लिए कानून बनाये जाने चाहिएँ, आज के युग में स्वयं-सिद्ध प्रतीत नहीं होता। वैधानिक व्यवस्था में सम्पत्ति को बहुत अधिक महत्त्व दे दिया गया है। आज के राजनीतिज्ञों को इमर्सन का यह समादेश हृदयंगम करना चाहिए कि "व्यक्ति का हित ही राज्यों के समक्ष एकमात्र विचारणीय लक्ष्य होना चाहिए। क्योंकि शासन का सर्वोच्च लक्ष्य अपने नागरिकों में संस्कृति का आविष्कार करना है।"

असाधारण सूक्ष्मदर्शिता के साथ उन्होंने प्रजातन्त्र व प्रगतिवाद की सैद्धान्तिक मीमांसा की है। शासन के सभी रूपों की अपेक्षा उन्होंने प्रजातन्त्र को ही प्राथमिकता दी है। तथापि वे हमारी राजनीति में व्याप्त कुछेक दुर्बलताओं से भी उतने ही परिचित थे। उन्होंने हमें चेतावनी दी है कि साधारणतः हमारे राजनीतिक दलों का निर्माण परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हुआ है, सिद्धान्तों के आधार पर नहीं। हमारे अग्रणी राजनीतिक दलों में एक मुख्य दोष यह है कि वे उस गहरी और आवश्यक नींव पर अपना निर्माण नहीं करते जिसके वे सम्मानपूर्वक हकदार हैं, अपितु कुछ स्थानीय एवं सामयिक महत्त्व के विषयों को लेकर उद्विग्न हो उठते हैं। इस बात का जनहित की दृष्टि से कोई भी महत्त्व नहीं है।

"हमारे अमरीकी प्रगतिवाद की मूल भावना" इमर्सन की यह उक्ति आज उतनी ही सत्य प्रमाणित होती है जितनी कि एक शताब्दी पूर्व विध्वंसात्मक उद्देश्यहीन थी। उसके प्रेम का समावेश नहीं है, उसके समक्ष कोई उच्च एवं दिव्य लक्ष्य भी नहीं है वरन् वह अपनी घृणा एवं स्वार्थपरता के कारण ही विध्वंसात्मक है।

जेफरसन के इस कथन से वे सहमत थे कि जितना थोड़ा शासन हो उतना ही अच्छा है और पूर्ण निष्ठा तथा आशावादिता के साथ प्रजातान्त्रिक प्रगति की कल्पना करते थे—हम सोचते तो यह हैं कि हमारी सभ्यता अपने विकास के मध्याह्न को पहुँच चुकी है परन्तु यथार्थ यह है कि अभी हमारी सभ्यता ने केवल मुर्गों की बाँग ही सुनी है और अभी केवल प्रातःकालीन नक्षत्रों की टिमटिमाहट ही हमें दीख सकी है। उनका विचार था कि महान् प्रगति का अभ्युदय केवल तब ही होगा जब कि हमारे आज के शासन-तन्त्र में प्रेम का समावेश होगा। प्रेम की शक्ति को राज्य के आधार के रूप में कभी भी प्रयोग करके नहीं देखा गया है। जिस प्रकार मैत्री की ग्रन्थि एवं प्रेम सूत्र में आबद्ध मित्र एवं प्रेमी परस्पर सद्भावना की अभिव्यक्ति करते हैं उसी प्रकार यह भी संभव है कि सहस्रों नागरिक एक दूसरे के प्रति वैसा ही गरिमायुक्त तथा स्वाभाविक आचरण करें।

आज के राजनीतिक रंगमंच पर जो असत् तत्त्व विद्यमान हैं उनका एक पैगम्बर के समान कितनी उपयुक्तता के साथ इमर्सन ने विश्लेषण किया है। सन् १८४७ में लिखकर उन्होंने आज के उन लोगों को एक आश्चर्यजनक उत्तर दिया है जो यह पूछते हैं कि मार्शल योजना के बावजूद भी यूरोप के लोग अंकिल शाम (चाचा शाम) से क्यों इतनी घृणा करते हैं:—हम दाता को क्षमा नहीं करते। जो हाथ हमारे मुँह में भोजन पहुँचाता है उसके काटे जाने की थोड़ी-बहुत संभावना बनी रहती है।

यह संतोष की बात है कि वह व्यक्ति जिसे आप की सेवाओं का प्रसाद प्राप्त हुआ हो वह आपके मन में कोई चोट अथवा कचोट पहुँचाये बिना ही आप से विदा हो जाए। यह एक बहुत अद्भुत व्यापार है—यह उपकृत होने का व्यापार—आप किसी को ऋण देते हैं और वह आपके मुँह पर तमाचा मारने के लिए सन्नद्ध रहता है।

इसी के समान इमर्सन के अनेकों निब ध हैं जिन्होंने अमरीकी जीवन को प्रभावित किया। इनमें से केवल "आत्म-विश्वास" शीर्षक निबन्ध की ही हम चर्चा करेंगे। यह निबन्ध व्यक्ति के देवतुल्य निर्माण का अपूर्व दर्शन है तथा साहस, शौर्य एवं नवोन्मेष की जैसे एक ऋचा है। अनेक पीढ़ियों तक अमरीकी नवयुवकों के लिए इन निबन्धों में अभिव्यक्त विचारों ने महान् नैतिक शक्ति के रूप में कार्य किया है। इमर्सन के मौलिकता तथा नवोन्मेष का आह्वान करने वाले इन शब्दों ने अमरीका की समस्त तरुणाई को

आन्दोलित कर दिया था, "यह विश्वास कि अपने प्रति जिस वस्तु को हम सत्य समझते हैं, वह हम सभी के लिए सत्य है—वास्तविक प्रतिभा है" सम्भवतः इमर्सन की सर्वाधिक उद्धृत पंक्ति है, "अपने पर विश्वास करो, समस्त मानवीय हृदय उसी एक लौह-रज्जु के प्रति स्पन्दनशील हैं।" आगे उन्होंने इस सूत्र के स्पष्टीकरण में कहा है। "ये वे स्वर हैं जिन्हें हम एकान्त में ही सुन सकते हैं, परन्तु ज्योंही हम संसार में प्रवेश करते हैं ये स्वर मन्द और अस्पष्ट होते जाते हैं। क्योंकि समाज अपने प्रत्येक सदस्य के पोषण के विरुद्ध अभि-संधि करने में संलग्न है।"

अपने इस निबन्ध में इमर्सन ने साहसपूर्वक इंग्लैण्ड की परम्परागत ईसाई धर्म-व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया है—"यह सोचकर मुझे लज्जा आती है कि हम तमगों और नामों, विशाल समाजों और मृतक संस्थाओं के समक्ष कितनी आसानी से समर्पण कर देते हैं।" इमर्सन की एक अन्य विचारोत्प्रेरक उक्ति है "लोकमत के अनन्तर भी जीवित रहना सम्भव है, स्वयं अपने बारे में धारणा बना लेने के बाद भी, अपने मन को एकान्त स्थिति में रख सकना सम्भव है, किन्तु वही व्यक्ति महान् है जो भीड़ के मध्य में माधुर्य के साथ एकान्त की भावना को अक्षुण्ण रख सकता है।" इमर्सन हमें उन रीति-रिवाजों का पालन करने की क्यों वर्जना करते हैं जो कि मर चुकी हैं। क्योंकि ऐसा करने से हमारी शक्ति छिन्न-भिन्न होती है, समय नष्ट होता है और हमारा चरित्र कलंकित होता है। परन्तु साथ ही वे हमें यह भी स्मरण कराते हैं कि यदि आप पुरानी धार्मिक परिपाटी को नहीं मानते तो दुनिया अपने रोष रूपी कोड़ों से आपको दण्ड देती है।"

वे सतत मताग्रह के विरोध में भी बार-बार कहते हैं, एक महान् आत्मा का सतत मताग्रह से क्या सरोकार हो सकता है? आज आप जैसा कुछ सोचते हैं, उसे कठोर शब्दों में प्रकट करो और कल के चिन्तन को कल फिर कठोर शब्दों में प्रकट करो हालाँकि आज तुमने जो कुछ कहा है, कल के कथन से उस सबका विरोध ही क्यों न होता हो।"

"मनुष्य बनो", इस पुराने विषय पर आज तक किसी विचारक ने इमर्सन के समान उत्प्रेरक उद्‌गार व्यक्त नहीं किए। "आदमी अपना मूल्य समझे और चीजों को अपने नियंत्रण में रखे। वह ताक झाँक, चोरी चकारी क्यों करे या निढाल होकर इधर से उधर चहलकदमी क्यों करे, मानो कि वह भिखारी हो या कोई अवैध सन्तान हो, या वह अपने चारों ओर विद्यमान संसार में

कोई अनधिकार चेष्टा कर रहा हो।" इसी कारण इमर्सन हमारे लिए अतीत की उपासना निषिद्ध बताते हैं, "आज का मनुष्य जैसे क्षुद्र और क्षमाप्रार्थी बन गया है। वह अब मस्तक ऊँचा नहीं रख सकता। वह अब यह नहीं कहता, "मेरा विचार है" वरन् किसी सन्त अथवा बुद्धिमान व्यक्ति का उद्धरण देना पसन्द करता है।"

वे हमें सत्यनिष्ठ होने की चुनौती देते हैं, "हम भयभीत और निराश होकर रिरियाते हैं। हम सत्य से भय खाते हैं, स्वतंत्रता से भय खाते हैं, मृत्यु से भय खाते हैं और एक दूसरे से भी भयभीत रहते हैं।"

आत्मविश्वास की भावना से प्रेरित होकर इमर्सन ने उन लोगों की भी आलोचना की है जो स्वार्थसाधना के लिए प्रार्थनाओं का उच्चारण करते हैं: "व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए की गई प्रार्थना नीचता और चोरवृत्ति की द्योतक है। जिस समय मनुष्य का परमात्मा से एकाकार हो जाता है, तो वह भीख नहीं माँगता। तब संसार के प्रत्येक कर्म में उसे ईश्वरोपासना के दर्शन होते हैं। वह उस किसान के कर्म में भी प्रार्थना ही पाता है जो अपने खेत को रोपने के लिए झुका हुआ है।" वह हम सभी को आत्मनिर्भर होने और मजबूती के साथ अपने कदमों पर खड़े होने की प्रेरणा देते हैं। "जो समस्त बाह्य उपकरणों की निर्भरता से अपने को मुक्त कर लेता है, वही व्यक्ति शक्तिशाली और प्रभविष्णु बन सकता है। अपने आपे को छोड़कर दुनिया की कोई वस्तु तुम्हें शान्ति प्रदान नहीं कर सकती।"

अमरीका की पिछली अनेक पीढ़ियाँ अपनी साहसिकता, अप्रमाणिता और सत्यनिष्ठा के लिए कितनी मात्रा में इमर्सन की ऋणी हैं, इसका अनुमान लगाना कठिन है।

इमर्सन ने नवोन्मेष, रूढ़िवादिता, पुरातनवादिता, सत्यवादिता, प्रार्थना और आत्मनिर्भरता इत्यादि विषयों पर जो कुछ भी लिखा है उसमें हृदय को आन्दोलित कर देने की क्षमता है और उसमें समाज की जीर्ण-शीर्ण परम्पराओं का खण्डन करने की पूरी सामर्थ्य है। उनके दूसरे, अनेक निबन्ध भी इतनी ही बुद्धिमत्ता और प्रेरकशक्ति से सम्पन्न हैं। उनके "प्रतिदान", "शौर्य", "प्रेम", "इतिहास", "मित्रता", "प्रकृति" और "आध्यात्मिकसिद्धान्त" प्रभृति रचनाओं ने लगभग एक शताब्दी तक अमरीका वासियों के मत और

वर्तमान काल के विचारों और कार्यों का मौन एवं अचेतन रूप से निर्माण किया है। उनके सत्परामर्श, उनकी उत्प्रेरक उक्तियां, तथा शिक्षा, धर्म, राजनीति तथा सामान्य जीवन में उनके प्रभावकारी एवं महत्त्वपूर्ण सुधारों ने इमर्सन को उन्नीसवीं शताब्दी के महान् उदारवादी अमरीकियों की कोटि में प्रतिष्ठित किया और उनके इस प्रभाव को आज के युग में भी बहुत बड़े परिमाण में अनुभव किया जा रहा है।



टामपेन

ब्यूएल जी० गेलेथर

टामपेन का व्यक्तित्व उनके अपने जीवन-काल में ही अत्यन्त विवादास्पद रहा है। आज भी उनका व्यक्तित्व अत्यन्त कटु विवाद का विषय बना हुआ है। इसमें संदेह नहीं कि उनके प्रति चाहे किसी की कैसी भी धारणा क्यों न हो, परन्तु उनके अभिव्यक्त विचारों के साथ सहमत या असहमत होना जैसे अपरिहार्य बात है।

टामपेन अमरीका के इतिहास के एक अनिवार्य अंग बन चुके हैं। निस्सन्देह, अपने जीवन-काल में वे विवादप्रिय रहे; किन्तु केवल इस तथ्य के आधार पर ही उनके व्यक्तित्व पर विचार-विमर्श करने से इनकार करना कायरता एवं छलना का द्योतक है। आज तो अमरीका में विचारकों का एक ऐसा निकाय है जो यह कहता है कि अमरीकी विद्यालयों और महाविद्यालयों में वादविवाद पद्धति को पूर्ण-रूप से समाप्त कर दिया जाय। यह एक आश्चर्य की बात है कि जो लोग विवादास्पद विषयों की इस शिक्षा का विरोध करते हैं, वे वही लोग हैं जो इस बात का आग्रह करते हैं कि हमें अमेरिकी इतिहास की भी शिक्षा देनी चाहिये। वे हमसे यह तो अपेक्षा करते हैं कि इतिहास की शिक्षा दी जाय, परन्तु वे यह नहीं चाहते कि विचारों के संघर्ष पर विचार-विमर्श किया जाय। ऐसे लोगों की माँग की पूर्ति करना प्रायः असम्भव है। ज्वलंत सत्य यह है कि इतिहास अपने आप में एक ऐसा विषय है जिसमें आदि से लेकर अंत तक मत-वैभिन्न्य भरा हुआ है इसलिए, या तो आप यह निर्णय करें कि इतिहास पढ़ाना ही नहीं है, अथवा जो कुछ भी पढ़ाया जाय उसमें अतीत काल के विवादास्पद विषयों को भी सम्मिलित किया जाय।

वास्तव में, इस कठिनाई को दूर करने का केवल एक ही उपाय है। ऐसा करने के लिए आपको एकतंत्रात्मक मार्ग का ही अनुसरण करना पड़ेगा। समूचे इतिहास को फिर से लिखना आवश्यक हो जायगा। उसकी एक पृष्ठभूमि बनाइये, फिर अपनी पसन्द के तथ्य और घटनाएँ उसमें रखिये और उनको इस तरह का रूप विधान दीजिये कि आप का मनोवांछित चित्र उपस्थित हो

जाय। तब फिर, इसे इतिहास की संज्ञा दीजिये और उसी की शिक्षा दीजिये। क्योंकि यदि आप अनुश्रुति और विचार निर्माण को तरजीह देते हैं, तभी आप विवाद [illegible] पा सकते हैं। परन्तु यदि आप सत्य का निरूपण करना चाहते हैं तो आपको इतिहास के यथार्थ तथ्यों को आधार मानना होगा जोकि तत्कालीन [illegible] में वस्तुतः घटित हुए हैं उस इतिहास के जोकि व्यक्तियों, विचारों तथा संस्थाओं के पारस्परिक संघर्ष से परिपूर्ण है।

टामपेन एक विद्रोही और सैद्धान्तिक दृष्टि से कलहप्रिय थे। अमेरिकी मंच पर उनका प्रवेश एक क्रांतिकारी और पेम्फलेट लेखक के रूप में हुआ और उनकी लेखनी ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की चिनगारियों को भड़काया।

"यह ऐसा युग है जो कि लोगों की आत्माओं की परीक्षा ले रहा है।" ये पंक्तियां पेन ने उस समय लिखी थी, जबकि वाशिंगटन की सेना न्यूजर्सी से हारती हुई पीछे हट रही थी। पेन इस सेना के शिविर में मौजूद थे। उस समय नागरिक और सैनिक इस क्रान्ति की असफलता से निराश हो उठे थे। अंग्रेज अजेय प्रतीत होते थे। निराशा के इन क्षणों में पेन ने कहा था :—

"संकट के इन क्षणों में सुख के आकांक्षी सैनिक और अवसरवादी देशभक्त ही अपने देश की सेवा से पराङ्मुख हो सकते हैं। परन्तु जो 'इन' कठिन क्षणों में दृढ़ रह सकेंगे, वही अपने देशवासियों के प्रेम और साधुवाद का पात्र बन सकेंगे। नरक के समान ही निरंकुश अत्याचार पर भी आसानी से विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। तथापि यह सन्तोष हमारे साथ है कि जितना ही कठिन संघर्ष हम करेंगे, उतनी ही वैभवशाली विजय हमें प्राप्त होगी।"

उनका यह पेम्फलेट सन् १७७६ के बड़े दिन के अवसर पर प्रत्येक हताश अमेरिकी सैनिक को पढ़कर सुनाया गया था। उसी रात्रि से अमेरिकी सेना ने ध्रुवीय महासागर से बहकर आने वाली बर्फ की विशाल चट्टानों और हाड़-मांस को कंपा देने वाले बर्फीले झंझावात का मुकाबला करते हुए डीलावेयर को पार किया था और सोते हुए हेसियनों पर आक्रमण किया था। पेन के इन प्रेरणापूर्ण शब्दों ने इन सैनिकों को एक ऐसी ऐड़ लगाई थी कि भयानक संकट का सामना करते हुए भी उन्होंने विजय प्राप्त कर ली थी, जिसकी देश को बहुत बड़ी आवश्यकता थी।

तदुपरान्त, सात वर्ष तक चलने वाले इस संघर्ष में, जिसने कि एक के बाद एक अग्निपरीक्षा देश के समक्ष उपस्थित की, टामपेन ही ऐसे व्यक्ति

थे, जिन्होंने आवश्यक उद्‌बोधन शब्द लिखा और इन संकटों पर विजय का मार्ग प्रशस्त किया। इस अवधि में उन्होंने सोलह नये पैम्फलेट लिखे, जो उनकी रचना जिसे वह 'दि अमरीकी क्राइसिस' कहकर पुकारते थे, के ही अलग-अलग भाग हैं। सर्वप्रथम पैम्फलेट में उनका प्रारम्भिक वाक्य था :— "यह वह युग है, जो कि आत्माओं की परीक्षा ले रहा है।" और अन्तिम किश्त में लिखा था "वह युग जिसमें कि आत्माओं की परीक्षा हो रही थी अब समाप्त हो चुका है।"

इन दो लेखों के आन्तरिक काल में जो कुछ घटित हुआ, वही इतिहास है। यह वह इतिहास है, जिसका निर्माण करने में टामपेन ने सहायता दी थी। यह वह इतिहास है जो कि तुमुल संघर्ष से परिपूर्ण है, क्योंकि इस इतिहास में मानव के दीर्घकालीन और सतत स्वातंत्र्य संग्राम का अंकन होता है। पेन ने इस तथ्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया है। "अमेरिका को अपने जन्म की यह कहानी कहने में अभी भी लज्जित होने की आवश्यकता नहीं।" जिस राष्ट्र का जन्म क्रान्ति के गर्भ से हुआ, यदि उसके पुत्र उन विवादों को विस्मृत कर देंगे, जिन्होंने हमारी पराधीनता की शृंखलाओं को तोड़ कर इस राष्ट्र को एक स्वतंत्र नागरिकों का राष्ट्र बनाया तो वे अपनी विरासत के प्रति ईमानदारी नहीं करेंगे। टामपेन ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने विशाल अटलांटिक तटरेखा पर बिखरे हुए तेरह उपनिवेशों को "संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी शानदार संज्ञा देने का सुझाव दिया।" पेन ही वह व्यक्ति था जिसने टोरियों का भण्डाफोड़ किया और दास प्रथा के समर्थकों की कठोर भर्त्सना की। पेन ही वह व्यक्ति था जिसने सम्पत्ति की शक्ति के गर्व को स्वातंत्र्य और समानता के नाम पर चुनौती दी। पेन के ही शब्दों की शक्ति ने अमेरिका के प्रताड़ित और जीर्णशीर्ण मानव को अग्निपुंज बनाया और सत्यता की खड्‌ग के रूप में उनका काया-कल्प किया।

जन्म से वह अंग्रेज थे। इनके पिता क्वेकर थे और इनकी माता ऐंग्ली-कन थीं, जो बाद में क्वेकर हो गई थीं। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उन्होंने पेनसिलवेनिया के अपने क्वेकर बन्धुओं के विरुद्ध जिहाद बोल दिया था, क्योंकि वे लोग संग्राम में कोई सक्रिय सहयोग नहीं दे रहे थे। अपने बाल्यकाल में व्यक्तिगत ईश्वर की जो उनकी मान्यता थी उन्होंने उसे भी समाप्त कर दिया और वे ऐसे ईश्वर की संज्ञा में विश्वास करने लगे जो तर्क-संगत है। तथापि अपने बाल्यकाल में धार्मिक शिक्षा के द्वारा जो धार्मिक

अन्तर्दृष्टि उन्हें प्राप्त हो गई थी वह अन्तर्दृष्टि जीवनपर्यन्त बनी रही और उनका अन्तःकरण पूर्ण रूप से क्वेकर ही बना रहा।

पेन से जो विरासत हमें प्राप्त हुई है, वह अधिकांशतः उनके शब्दों में ही है कार्यों में नहीं। जिस प्रकार अनेक महापुरुष लेखनी के धनी रहे परन्तु कर्म में अकिञ्चन रहे हैं उसी प्रकार पेन भी अपने कर्म में विशेष रूप से सौभाग्य-हीन रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता था कि अनुपयुक्त अवसर पर हमेशा भद्द कार्य करने के प्रति उनके मन में पहले से ही संस्कार पैदा हो जाते थे, और अपनी लेखनी के अतिरिक्त उन्होंने जिन वस्तुओं का भी स्पर्श किया वह शून्यता को प्राप्त हुआ। वे एक आविष्कारक थे और उनका स्वप्न था कि स्वीलकिल के आरपार एक लोहे का पुल बनाया जाय लेकिन इस पुल का निर्माण कभी नहीं हो सका। वह राज्य के कर-विभाग के एक पदाधिकारी थे। अच्छे वेतन की माँग करने वाले उनके सहयोगी सरकारी कर्मचारियों ने अपने आन्दोलन में उन्हें अपना नेता बना लिया, जिसके कारण उन्हें अपने पद से हाथ धोना पड़ा। सन् १७९३ में वे नवनिर्मित फ्रांसीसी रिपब्लिक की राष्ट्रीय सभा (नेशनल कन्वेशन) के सदस्य बनाये गये और इस देश के संविधान की रचना करने में उन्होंने सहायता की। परन्तु फ्रेंच चेम्बर में उनकी वाग्मिता ने साथ नहीं दिया, क्योंकि वे उनकी भाषा नहीं बोल सकते थे। उनके शब्दों में चाहे जितनी साहसिकता क्यों न रही हो— परन्तु कर्म की दृष्टि से वे कभी पराक्रमी नहीं रहे। अमेरिकी क्रान्ति में सन्निहित रचनाओं को छोड़कर उन्होंने जो कुछ भी कहा उसके आधार पर उन्हें संकट में ही घिरना पड़ा।

सन् १७८७ में वे इंग्लैण्ड लौट आये। फ्रांसीसी क्रान्ति इस समय जोरों पर थी। एडमण्ड बर्क ने उनके विरुद्ध एक जबर्दस्त जिहाद खड़ा कर रखा था। पेन ने तत्काल बर्क के विरुद्ध एक जोरदार पेम्फलेट निकाला और उसको "दि राइट्स आफ मैन' (मानव अधिकार) की संज्ञा प्रदान की। उनका यह आक्रमण इतना जबर्दस्त था कि उसके कारण उन्हें अपनी जीवन रक्षा के लिए लंदन से भागना पड़ा। जिस समय पेन महोदय कैलेस की तरफ जहाज में बैठकर रवाना होने लगे, ठीक उसके बीस मिनिट बाद ही पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने के लिए पहुँची थी। यदि ऐसा न होता तो फ्रांस की नवनिर्मित सरकार के वादविवाद में भाग ले सकने की बजाय, वह ब्रिटिश कारावास में ही पड़े हुए होते। फ्रांसीसी आतंकवाद का जिक्र जिस

समय चला, तो टामपेन की सहानुभूति जेकोबिनवादियों से हट गई, और दण्ड-स्वरूप उन्हें कारावास में डाल दिया गया। यदि रोबसपियरे थोड़े दिन और सत्ता में रह जाते तो टामपेन को निश्चय ही सूली पर चढ़ा दिया जाता।

इसके बाद टामपेन संयुक्त राज्य अमेरिका में ही लौट आये। उनके जीवन के अन्तिम दिन बहुत गरीबी और उपेक्षा में व्यतीत हुए। सभी क्षेत्रों से उन्हें घृणा और उपेक्षा प्राप्त हुई थी और अत्यंत दयनीय एवं अकिंचन उनका व्यक्तित्व हो गया था। सन् १८०२ में न्यूरोशैली में जब वह अपना मतदान करने गये तो उन्हें इस अधिकार से वंचित कर दिया गया। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने मानव मात्र के राजनीतिक अधिकारों के लिए इतना जबर्दस्त संघर्ष किया, उसके लिए यह आघात बहुत ही भयङ्कर था। सन् १८०९ में जब उनकी मृत्यु हुई, तो अन्तिम संस्कार के समय केवल पाँच व्यक्ति ही इस अवसर पर उपस्थित थे। एक फ्रांसीसी औरत और उसका पुत्र, एक क्वेकर और दो नीग्रो। यह था उस व्यक्ति का अंत, जिससे ७२ वर्ष तक मानव की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया।

कुछ उपन्यासकारों ने टामपेन के जीवन के सरल तथ्यों को सर्वहारा-दुःखान्तकथा के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है। एक कम्युनिस्ट समर्थक लेखक ने पेन को जेब्रील और कामरेड लेनिन के मिश्रित रूप में चित्रित किया है। इन लेखों की पृष्ठभूमि में एक सुस्पष्ट उद्देश्य यह है कि टामपेन के व्यक्तित्व को सोवियत रूस के समर्थन में प्रयोग किया जाय। साहित्यिक विध्वंस के इस कार्य की तुलना इस बात से की जा सकती है कि न्यूयार्क नगर स्थित मुख्य कम्युनिस्ट समर्थक शिक्षा-केन्द्र का नामकरण टामस जेफर्सन के नाम पर हुआ। इस बात को तो हम स्वीकार कर सकते हैं कि टामपेन एक विवादास्पद व्यक्ति थे, परन्तु यह स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है कि प्रत्येक वह व्यक्ति किसी उद्देश्य के लिए कार्य करके यदि बलिदान करता है तो वह व्यक्ति कम्युनिस्ट ही है। टामपेन एक विवादास्पद व्यक्ति भले ही हों, परन्तु उन्होंने मानवीय अधिकारों तथा मानवीय प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष किया। उन्होंने राज्य के अत्याचारों तथा बलपूर्वक चलाये गये श्रम-शिविरों के लिए संघर्ष नहीं किया। वे लोग अपने विश्वासघात पर नकाब चढ़ाने के लिए ऐसा कहते हैं कि हमें टामपेन से मुक्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

एक दूसरा दोषारोपण टामपेन पर यह किया जाता है कि वे नास्तिक थे। इस आरोप से भी हमें उन्हें मुक्त करना चाहिये। टामपेन नास्तिक नहीं थे।

वाशिंगटन, जेफर्सन और लिंकन की तरह वह भी ऐसे ईश्वरवादी थे जिसका अस्तित्व तर्कसंगत है। उनके धर्म-विषयक विचार—"दी एज आफ रीजन" (बुद्धिवादी युग) में संग्रहीत हैं। इस रचना का प्रणयन उन्होंने अपने फ्रांस के अल्पकालीन प्रवास में किया था, जब कि फ्रांसीसी क्रांति के समय आतंकवादी अत्याचारों को देखकर वे राजनीति से धर्म की ओर पुनः आकर्षित हुए। इस कृति का अधिकांश भाग लग्जेम्बर्ग कारावास में लिखा गया। इस समय उन्हें किसी पुस्तकालय से सहायता लेने की सुविधा नहीं थी। यह कृति इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करती है कि एक परिपक्व मानव की अन्तर्दृष्टि बाल्य-काल में प्राप्त धार्मिक शिक्षा की स्मृति के आधार पर क्या कुछ कर सकती है। यह एक गम्भीर धार्मिक ग्रंथ है। परन्तु फिर भी एक ऐसा ग्रंथ है जिससे धार्मिक ज्ञान का आभास नहीं मिलता और परिपक्व आस्तिकतावादी विश्वास की जो मान्यताएँ हैं उनके ज्ञान का परिचय नहीं मिलता।

"एज आफ रीजन" को समझने के लिए हमें उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक युग के विचारों का अध्ययन करना होगा। उस युग में डेकार्टे और बेकन का कृतित्व धार्मिक एवं वैज्ञानिक विचारों के रूप में प्रतिफलित होने लगा था। इस विचारधारा के सुधारकों की मान्यता यह थी कि व्यक्तिगत ईश्वर की कोई सत्ता नहीं है, वरन् वे ऐसे ईश्वर के विचार को मानते थे जिसने इस संसार की सृष्टि की और बाद में इसे अपने ही भाग्य पर छोड़ दिया। पेन ने इस मान्यता को अस्वीकार किया और उनकी आस्था भी औरों के समान ऐसी हो गई कि इस सृष्टि में अपने निर्माता के ही गुण और प्रकृति का निदर्शन होता है। परन्तु ईश्वर अपनी सृष्टि के क्रियाकलाप में कोई हस्तक्षेप नहीं करता। ईश्वर का यह बुद्धिवादी स्वरूप पेन के समकालीन व्यक्तियों में व्यापक रूप से फैला हुआ था। इसके दो मुख्य कारण हैं। प्रथम, विज्ञान ने उस समय तक यह स्पष्ट कर दिया था कि संसार की उत्पत्ति के बारे में अधिकांश धार्मिक लोगों की जो मान्यता है, वह तर्कसंगत नहीं है, और दूसरे उस समय धर्म और अध्यात्म विद्या के क्षेत्र में आधुनिक विद्वत्ता और बाइबिल सम्बन्धी आलो-चना का आविष्कार नहीं हुआ था। परन्तु इस समय इन उपादानों का आवि-ष्कार हो जाने से रूढ़िवादी विचारों के विरुद्ध पेन ने जो आवाज उठाई थी वह आज सर्वसम्मत मान्यताएँ बन गई हैं।

पेन ने आस्तिकतावादियों के धर्म को इतनी प्रचण्डता के साथ अस्वीकार किया, उसका एक विशेष कारण यह है कि वह एक शिक्षित व्यक्ति नहीं थे।

उन्हें किसी भी प्रकार की औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। इसका कारण यह था कि अपनी तरुणावस्था से उन्हें अपनी जीविका अर्जन करने के लिए काम करना पड़ा था। तथापि उनका अध्ययन बहुत व्यापक था। लेकिन अपनी अध्ययन-सामग्री का चुनाव करने में वे अपने मस्तिष्क से काम न लेकर पूर्वाग्रह से प्रेरणा लेते थे। उस समय के बहुत से शिक्षित और अशिक्षित लोग ऐसा ही करते थे। इस प्रकार उन्होंने समूचे जीवन में धार्मिक अध्ययन केवल इसी दृष्टि से किया कि वे आस्तिकतावाद और बाइबिल-सम्मत धर्म के विरुद्ध एक विध्वंसात्मक तर्क उपस्थित कर सके। परन्तु वह केवल एक फूँस के बने मानव का ही विध्वंस कर रहा है जो कि बाल्यकालीन स्मृतियों के वस्त्र धारण किए हुए है। पेन की कृतियों से यह विदित नहीं होता कि उन्होंने अपने युग के प्रमुख आस्तिक विद्वानों की कृतियों का भी अध्ययन किया था जो कि धार्मिक विचार का रचनात्मक रूप से नवोदित वैज्ञानिक जगत् की अनुरूपता देने में संलग्न थे। टामपेन के उत्तरकालीन अनेक अध्येता जो कि उन्हीं के समान अपने समकालीन अध्यात्मशास्त्रियों तथा धार्मिक विचारकों की कृतियों से अपरिचित हैं, आज भी आस्तिक धर्म को अस्वीकार करते हैं, क्योंकि जिन रिक्त कपोलकल्पनाओं पर आक्रमण किया था उन्हीं को केवल सतही रूप से देखा है।

"एज आफ रीजन" को लिखते समय पेन के दो उद्देश्य रहे हैं। एक उद्देश्य था राजनीतिक और दूसरा धार्मिक। हमें यह भी भली भाँति स्मरण रखना है कि इस कृति की रचना उन्होंने उस समय की जब कि गणतंत्र पर निरंकुशवादियों का अधिकार हो रहा था। हमें यह भी याद रखना है कि फ्रांसीसी राज्य आक्रान्ताओं में धार्मिक शक्तियों ने जो प्रतिक्रियावादी भाग अदा किया था उसके कारण यह क्रान्ति विशेष रूप से धर्म-विरोधी और धार्मिक कर्मकाण्ड विरोधी हो गई थी। टामपेन ने इन चीजों को भलीभाँति परिलक्षित किया था। और इनसे उन्हें दुःख हुआ था। एक लेखक ने इस प्रकार कहा है कि पेन ने "दी एज आफ रीजन" का प्रकाशन इस उद्देश्य से किया, क्योंकि उन्हें भय था कि "नास्तिकतावाद के प्रसार से उस धर्म के अस्तित्व को स्वयं खतरा है, जैसे वह अपने ईश्वरवाद के रूप में मानते थे और उन्होंने गणतन्त्रवाद की निरंकुशतावाद से रक्षा करने का संकल्प किया था।" इस बात से यह स्पष्ट है कि धर्म-विरोधी होना तो दूर रहा टामपेन पूर्ण श्रद्धालु व्यक्ति थे। जो कि अपनी मान्यता के धर्म को उस धर्म-विरोधी क्रान्ति से—जैसा कि स्पष्ट

रूप से उन्होंने देखा था—बचाना चाहते थे। साथ ही, वह उस क्रान्ति को विनाश से बचाना चाहते थे। क्योंकि वह मान्यता थी कि धार्मिक मूल्यों की उपेक्षा करने के कारण अपरिहार्य रूप से उसका अन्त वहां होगा। थियोडोर रूज़वेल्ट ने उन्हें एक गन्दा क्षुद्र नास्तिक कहकर पुकारा है। परन्तु पेन ने धर्म को नास्तिकतावाद से बचाने के लिए ही बलपूर्वक ईश्वरवाद का समर्थन किया और साहस के साथ नास्तिकतावाद का विरोध किया। जैफर्सन की ही तरह टामपेन ने अपने नवनिर्मित ईश्वरवाद में नैतिक उत्साह और आस्तिकतावादी धर्म का सदाचार सम्बन्धी अन्तर्दृष्टि को अनुभूत किया था। यह सब उनकी बालकालीन शिक्षा का ही परिणाम था। उनकी नैतिक आस्था इतनी गम्भीर और सर्वव्यापक थी कि उन्होंने अपनी नैतिक धारणाओं की पुष्टि के लिए आस्तिकतावादी धर्म की ओर ही वापस जाना श्रेयस्कर समझा। उन्होंने "दी एज आफ रीज़न" को इन शब्दों के साथ समाप्त किया है; "मनुष्य का नैतिक कर्तव्य परमात्मा की नैतिक सद्भावना और उपादेयता का अनुकरण करने में सन्निहित है, जो कि उसके समस्त प्राणियों के लिए सृष्टि में प्रत्यक्ष रूप से व्याप्त है। सभी मानवों के लिए परमात्मा की सद्भावना को देखते हुए, जैसा कि हम प्रतिदिन करते हैं, हमें उसे एक दृष्टान्त मानना चाहिये, जो कि सभी मनुष्यों से यह अपेक्षा करता है कि वे एक दूसरे के प्रति उसका व्यवहार करेंगे; और इसलिए मानव-मानव के बीच पीड़ा और प्रतिशोध तथा पशुओं के प्रति क्रूरता की प्रत्येक बात नैतिक कर्तव्य भंग करने के सदृश है।"

ये शब्द अभी लिखे ही गये थे कि पुलिस ने उन्हें रॉब्सपीयरे के तत्त्वावधान में स्थापित निरंकुशतावादी शासन का शत्रु मान कर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए उनका द्वार खटखटाया। और यहाँ उनका क्रान्तिकारी रूप प्रकट हुआ। क्रान्तिकारी निरंकुशता के शासन के अन्तर्गत रहते हुए भी उन्होंने पीड़ा और प्रतिशोध समाप्त करने की माँग की। कोलाहलपूर्ण नास्तिकतावाद के अशान्त वातावरण में रहते हुए भी, उन्होंने परमात्मा की नैतिक सद्भावना और उपादेयता को स्वीकार करने का अनुरोध किया। मानव की स्वतन्त्रता के लिए अनिवार्य नैतिक उत्तरदायित्व में उनकी आस्था इतनी गहन थी कि उन्होंने निरंकुशतावाद की अनैतिकता के विरुद्ध आवाज उठायी, जो कि क्रान्ति की आड़ में नास्तिकतावाद के नाम पर सर्वव्यापी भय तथा त्रास द्वारा मनुष्य की आत्मा को कुचल रही थी। पेन के द्वैतवाद का नैतिक आधार उन्हें प्रायः आस्तिकवादी, और नास्तिकतावाद का कट्टर विरोधी

बना देता है। जो लोग पेन की रचनाओं और उनके जीवन की व्याख्या को इस उद्देश्य से तोड़मरोड़ कर दूषित करने का प्रयास करते हैं, ताकि वे परमात्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करने, नैतिकता का मूलोच्छेद करने, तथा नास्तिकतावाद के पोषण में साम्यवाद की तत्कालीन प्रचलित रीतियों के प्रति उनकी सहानुभूति होने की बात सिद्ध कर सकें, वे वस्तुतः टामपेन के विषय में सत्य से बहुत दूर हैं। उनकी धारणा उतनी ही त्रुटिपूर्ण है, जितनी उन लोगों की, जो टामपेन को ऐसा क्रान्तिकारी चित्रित करते हैं जो सोवियत रूस के लोगों के सार्वजनीन अधिनायकवादी निरंकुशतावाद को सहन करने के लिए तत्पर रहे हों।

जहाँ तक धर्म का सम्बन्ध है, टामपेन ऐसे काल में ईसाई धर्म से समझौता करने के दोषी थे, जब कि आधुनिक विद्वत्ता के परिणाम अभी उपलब्ध नहीं थे और जब गिरजाधर्म (विशेष रूप से फ्रांस में) अधिकांश राजनीतिक प्रतिक्रिया के साथ एकरूप हो चुका था। इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात यह नहीं है कि वे इस अनुभव से क्रान्तिवादी होने की बजाय ईश्वरवादी होकर निकले थे, बल्कि उल्लेखनीय बात यह थी कि वे इसमें से तीक्ष्ण नैतिक चेतना से सम्पन्न गहन धार्मिक आस्था वाले व्यक्ति बन कर निकले थे। उन्होंने जेल में स्मरण शक्ति के बल पर लिखते हुए 'दी एज आफ रीजन' में १६ वें भजन के ऐडिसन द्वारा किये गये रूपान्तर को उद्धृत किया था, जो कि हेडन की लय से सर्वत्र गिरजाघरों में प्रेम से गाया जाता है। इस भजन का आशय इस प्रकार है।

ऊपर, अपने समस्त नीले, शून्य नभ सहित,
विशाल, विस्तृत गगन-मण्डल,
तथा देदीप्यमान ढाँचे वाले, चमचमाते आकाश,
अपने महान् स्रष्टा के अस्तित्व की घोषणा करते हैं।
वे सभी विवेक के कर्ण कुहरों में अपना हर्षोच्छ्वास फूँक रहे हैं,
और, गौरवपूर्ण उद्गार कर रहे हैं;
'वे सभी'
अपनी शाश्वत आभामय चमचमाहट से मधुर गुँजार कर रहे हैं,
"जिस हाथ ने हमारा सृजन किया है वह दैवी है, ऐश्वर्य पूर्ण है।"

जो लोग पेन की धार्मिक धारणाओं के विशिष्ट विवरणों से असहमत हैं, जैसा कि हम सभी हैं, उनके लिए पेन के निम्नलिखित शब्दों पर गम्भीरता

के साथ सोचना फिर भी श्रेयस्कर होगा "प्रत्येक व्यक्ति उसी धर्म तथा पूजा-विधि का अनुशीलन करे, जैसा कि उसे करने का अधिकार भी है, जिसे वह स्वयं अधिमान्यता देता है।" इस विषय पर पुनः लौटते हुए कि साम्यवादियों को यह दावा करने का अधिकार नहीं है कि टामपेन उनके संरक्षक सन्त थे, यह वांछनीय होगा कि उस तर्क के सूत्रों को एकत्र करके उसके कारणों का उल्लेख किया जाय। वे चार हैं:

(१) पेन की सहनशीलता तथा उस असहनशीलता के बीच जो कि साम्यवाद का सारा तत्त्व है, सामंजस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। पेन ने लिखा है; "इस घोषणा द्वारा मेरा उद्देश्य उन लोगों की निन्दा करना नहीं है जो मुझ से विपरीत विश्वास रखते हैं; उन्हें अपने विश्वास के पोषण का उतना ही अधिकार है जितना कि मुझे अपने विश्वास के पोषण का। किन्तु मनुष्य की प्रसन्नता के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने प्रति मानसिक दृष्टि से सच्चा और विश्वासी हो। नास्तिकता विश्वास या अविश्वास करने में निहित नहीं है, वह इस बात में निहित है कि मनुष्य जिस बात पर सचमुच विश्वास नहीं करता, उस पर विश्वास करने का ढोंग रचे।" पेन साम्यवादी कदापि नहीं हो सकते थे—वह सहनशील थे।

(२) पेन द्वारा फ्रांसीसी क्रान्ति के पश्चात् स्थापित निरंकुशतावाद के प्रति विरोध और रूसी क्रान्ति के पश्चात् स्थापित निरंकुशतावाद के समर्थन के बीच सामंजस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। 'दी एज आफ रीजन' का अक्षर-अक्षर इस बात को सिद्ध करता है जिसके लिए रॉब्सपीयरे ने उन्हें शूली पर चढ़ाने का आदेश दिया था। निश्चय ही, पेन सोवियत रूस वालों के समर्थक नहीं हो सकते थे।

(३) साम्यवादियों द्वारा नागरिक अधिकारों की उपेक्षा तथा पेन द्वारा मानव अधिकारों के सम्बन्ध में फ्रांसीसी घोषणा के पोषण के बीच सामंजस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। अपराधी सिद्ध होने तक निरपराध माने जाने का अधिकार, जब तक कि कोई स्थापित व्यवस्था को भंग नहीं करता तब तक कोई भी मत रखने के कारण पीड़ित न होने का अधिकार, पत्र-व्यवहार और भाषण की स्वतन्त्रता तथा उसके साथ ही साथ इन स्वतन्त्रताओं के प्रयोग में उचित उत्तरदायित्व को निभाने का अधिकार—ये सभी आधारभूत अधिकार अमेरिकी संविधान तथा फ्रांसीसी घोषणा में सन्निहित हैं, जिन्हें सोवियत शासन के अन्तर्गत प्रतिदिन अस्वीकार किया जाता है। पेन ने उनका समर्थन किया

था। वे लोकतन्त्र के पक्ष में थे, निरंकुशतावाद के पक्ष में नहीं। कम्युनिस्ट उन पर अपना दावा नहीं कर सकते।

(४) पेन द्वारा नास्तिकतावाद का विरोध उन्हें स्पष्टरूप से साम्यवाद के विरुद्ध खड़ा कर देता है, और वह भी ऐसे विरोध में जिसमें समझौता होना असम्भव है, क्योंकि साम्यवाद मार्क्स का अनुगमन करके धर्म को जनता के लिए विषैली औषधि मानता है। वस्तुतः, बाइबिल में निर्दिष्ट आस्तिकतावाद के विरुद्ध उनके आक्षेप का उद्देश्य नास्तिकतावाद से ईश्वरवाद को बचाना ही था।

वस्तुतः, अमेरिकी साम्यवादी दल ने टामपेन का आलिंगन करने के प्रयत्न में उन्हें घातक विष-चुम्बन देने का प्रयत्न किया है। क्योंकि वह लोग जो अधिनायकवादी निरंकुशता के पोषक हैं, अच्छी तरह जानते हैं कि यदि निरंकुशता को सफल बनाना है तो स्वतन्त्र मनुष्यों की भावना को चकनाचूर करना आवश्यक है; और मनुष्यों की भावना को चकनाचूर करने का एक अच्छा ढङ्ग यह है कि उनके नेताओं में उनकी आस्था को विनष्ट कर दिया जाय। अतः टामपेन को गले लगाकर उनके चरित्र की हत्या कर देना ही साम्यवादियों का लक्ष्य है।

"दी एज आफ रीजन' के अतिरिक्त, जो कि ईश्वरवादी धर्म की रक्षा में लिखा गया ग्रन्थ है, पेन के प्रमुख लेख हैं—कामनसेंस (सामान्य ज्ञान), दी अमेरिकन क्राइसिस (अमेरिकी संकट), और दी राइट्स आफ मैन (मनुष्य के अधिकार)। इनमें से पहला, अर्थात् 'कामनसेंस', जनवरी १७७६ में लिखा गया था और उन सबसे प्रभावकारी तत्त्वों में से एक के विषय में लिखा गया था, जिन्होंने ६ महीने के पश्चात् स्वतन्त्रता के घोषणापत्र को जन्म दिया। दूसरा लेख, दी अमेरिकन क्राइसिस, १६ संक्षिप्त पुस्तिकाओं के रूप में क्रान्तिकारी युद्धों के लम्बे वर्षों के भीतर लिखा गया था। इसमें निराश आत्माओं को उत्कर्ष की ओर प्रेरित किया और यूरोपीय महाद्वीप के अधीर और क्षुब्ध लोगों में नवीन शक्ति का संचार किया था। तृतीय रचना, 'दी राइट्स आफ मैन', में बर्क के उन आक्षेपों का उत्तर दिया गया था जो उन्होंने फ्रांसीसी क्रान्ति के विरुद्ध लगाये थे। यह ग्रन्थ उस क्रान्ति के आरम्भिक दिनों में, जब कि वह निरंकुश भय की अवस्था में नहीं पहुँचा था, लिखा गया था। इनके अतिरिक्त कम महत्त्व की अनेक और भी रचनाएँ हैं जो संग्रह के रूप में प्रकाशित होने पर उनकी प्रमुख रचनाओं के आकार के लगभग दूने आकार के ग्रन्थ का

निर्माण करेंगी। निस्सन्देह, पेन बहुत ही अधिक लिखने वाले और भयंकर लेखक थे।

उन्हें स्वयं अपने पर अपूर्व विश्वास था। वे सदैव अधिकार और सचाई के पोषक रहे जो कि उनके मस्तिष्क में औपचारिक भावना बन गई थी। उन्हें अपूर्णता कदापि सह्य नहीं थी और अपने निश्चित विश्वासों से नीचे झुक कर समझौता करने के प्रति वे सदैव अधीर थे। वे स्वभाव से विद्रोही थे और उनकी चेतना भी असामान्य रूप से सूक्ष्मग्राही थी। इन प्रमुख विशेषताओं सहित वे इस धारणा के विरुद्ध प्रसन्नता से लड़नेवाले व्यक्ति थे कि किसी भी व्यक्ति को दूसरों पर स्वामी या उनसे बड़ा होने का अधिकार है। उन्होंने किसी भी रूप में विशेषाधिकार या सत्ता के विरुद्ध दृढ़ आक्रमण करने के उद्देश्य के लिए अपना जीवन और अपनी कृतियों को उत्सर्ग कर दिया था।

यदि उन्हें अमेरिकी इतिहास में वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका, जो कि उन्हें मिल सकता था, तो उसकी व्याख्या सिर्फ यह है कि किसी भी देश के इतिहास में विवादग्रस्त चरित्र के भाग्य में यही बदा होता है। किसने ऐसे व्यक्ति का सम्मान किया है जिसकी प्रवृत्ति सदैव विद्रोही जैसी रही है? किसने ऐसे व्यक्ति को कभी अपना पूज्य नेता माना, जिसका धन्धा ही आन्दोलन करना रहा है? उन्हीं लोगों ने ऐसा किया है, जिनकी प्रवृत्ति आन्दोलनकारी तथा जिनकी वृत्ति विद्रोह करना रही है। किन्तु हमारे समय में यदि आन्दोलन-कारी और विद्रोही वृत्ति वाले लोग यह चाहते हैं कि स्वतन्त्रता के प्रेमियों के बीच टामपेन को अपमानित करने के उद्देश्य से वे उनकी पूजा करें तो उनके लिए यह आवश्यक होगा कि वे पेन के स्वभाव और चरित्र के धार्मिक और नैतिक तत्त्वों को छिपायें अथवा दूषित करें।

किन्तु उन नागरिकों में से अधिक बुद्धिमान लोग, जो कि नैतिक स्वतन्त्रता में आस्था की महान् नैतिक विरासत तथा उनके अनुगामी नैतिक उत्तरदायित्वों का उपभोग करते हैं, पैन की विरासत के दर्पपूर्ण आश्वासनों को विनम्रता के साथ स्वीकार करने, विद्रोही को अपनी पंक्ति में वापस लाने और उसे पुनः 'सन् ७६ की भावना' का उद्गार करने देने के इच्छुक होंगे। हम आज भी उसके कुछ अंश का उपयोग कर सकते हैं।

यह सत्य है क्योंकि स्वयं हमारे लोकतन्त्र के भीतर सबसे बड़ा खतरा केवल देशी और विदेशी साम्यवादियों से ही उत्पन्न नहीं होता, बल्कि उन प्रजानायकों द्वारा भी उत्पन्न होता है जो सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से सन्देह

के बीज बोते हैं। आइये, हम उनका उत्तर ऐसे कामों से दें जो पेन के अद्वितीय शब्दों के अनुरूप हों।

उन्होंने लिखा था, "सन्देह और पीड़ा एक ही घूरे के कूड़ाकरकट हैं।" हमारे समय के अमेरिकी संकट में जो प्रजानायक लोग सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से सन्देह का बीज बोते हैं, उन्होंने बहुत पहले ही यह देख लिया है कि भ्रष्टाचारी हाथों से बोया गया सन्देह शीघ्र ही पीड़ाओं को भी जन्म देता है। वे जानते हैं कि ये दोनों बुराइयाँ पारस्परिक विश्वास की भावना का गला घोट देंगी और स्वतन्त्र मानवों को आसानी से अपने चंगुल में शिकार बना लेंगी।

ऐसे ही समय पर मनुष्य की भावनाओं की परीक्षा होती है। इस संकटकाल में निर्बल आदर्शवादी और अवसरवादी उदार लोग मानवीय स्वतन्त्रता तथा मानवीय अधिकारों के रक्षार्थ कोई कदम उठाने से भय खाते हैं; किन्तु जो व्यक्ति ऐसे अवसर पर दृढ़ रहेगा, उसका विश्वास पुनर्नवीन तथा साहस अक्षय बना रहेगा। त्रितंडावाद सभी निरंकुशताओं की भाँति ही, एक सस्मित तथा दूषित रूप धारण किये रहता है, किन्तु अब निर्णय का समय आ चुका है। जो भी इस अवसर पर स्वतन्त्रता के अग्रगामी मोर्चे से पीछे हटेगा, पतित होकर दासों के साथ पार्श्व में डूब जायगा। लेकिन जो बड़े-बड़े असत्यों को असत्यभाषी दाँतों पर ही उलटकर वापस फेंकता है, और अपने मोर्चे पर अडिग बना रहता है, वह विश्वास को सुरक्षित रखेगा। वह टामपेन की भावना के साथ ही, अपने बच्चों और बच्चों के बच्चों के प्यार और कृतज्ञता का पात्र बनने का अधिकारी होगा।

———

टामस जेफर्सन

विलियम ग्रेडले ओटिस

साउथ डकोटा के एक पर्वत शिखर के मुख पृष्ठ पर गुट्जन बोर्ग्लेन ने जार्ज वाशिंगटन, टामस जेफर्सन, अब्राहम लिंकन और थियोडोर रूजवेल्ट इन चारों की विशाल मुखाकृतियाँ अंकित की हैं। यह रशमोर स्मारक भविष्य की अगणित पीढ़ियों के लिए अमेरिकी लोकतन्त्र के वैभव और गरिमा की स्मृति का प्रतीक बना रहेगा। यदि उस महान् शिल्पकार ने 'संविधान के जनक' जेम्स मेडिसन की मुखाकृति, अथवा हमारे प्रारम्भिक इतिहास के चार महान् अभिलेखों स्वतंत्रता की घोषणा, फ्रांस के साथ मैत्री संधि, इंगलैंड के साथ शान्ति की संधि और संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान—के एक मात्र हस्ताक्षरकर्ता बेंजमिन फ्रेंकलिन की मुखाकृति की भी रचना की होती, तो कितना उपयुक्त हुआ होता। किन्तु वाशिंगटन जेफर्सन और लिंकन के सम्बन्ध में तो कोई संशय ही नहीं। उनका स्थान अमेरिकी गणराज्य के निर्माताओं और संरक्षकों में सर्वोच्च है। राजनीतिक दृष्टि से वाशिंगटन को केन्द्रीय सत्ता के दक्षिण पक्ष, जेफर्सन को वाम पक्ष और लिंकन को शायद कुछ हटकर आंशिक वाम पक्ष का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। कहा गया है कि उग्रवाद विश्व की आशा प्रस्तुत करता है, जबकि अनुदारवाद विश्व के विवेक को बनाये रखता है। स्वयं अपने जीवन-काल में जेफर्सन उग्रवादी समझे जाते थे। किन्तु आज उन्हें अमेरिकी लोकतन्त्र के समस्त सद्गुणों का संरक्षक सन्त मान लिया गया है।

टामस जेफर्सन का जन्म १३ अप्रेल, १७४७ को वर्जीनिया की अल्वेमार्ले काउण्टी में हुआ था। उनके पिता, पीटर जेफर्सन, एक सर्वेक्षणकर्ता और भू-स्वामी थे जो दासों और भूमि की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध हो गये थे। उनकी माता, जेन रेनडल्फ वर्जीनिया के एक समृद्ध परिवार से आयी थीं, जो कि समाज में एक प्रतिष्ठा-सम्पन्न कुलीन परिवार था। सत्रह वर्ष की आयु में टामस जेफर्सन ने "विलियम एण्ड मेरी" कालेज में प्रवेश किया, जहाँ वे दो वर्ष तक रहे। उसके पश्चात् पाँच वर्ष तक उन्होंने

विलियम्सबर्ग में कानून का अध्ययन किया। सन् १७६७ में चौबीस वर्ष की आयु में उन्होंने वकालत प्रारम्भ की। किन्तु, यद्यपि वकील के रूप में वे सफल रहे, फिर भी वह पेशा उन्हें अरुचिकर प्रतीत हुआ। उनकी रुचि कानून की बजाय, दर्शन में थी। उन्हें कानून की भाषा से घृणा थी। उस समय जेफर्सन वर्जीनिया के सबसे समृद्ध नवयुवकों में से एक तथा सबसे बड़े विद्वान थे। वे ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच और गैलिक भाषाओं में निपुण और विशिष्ट योग्यता-सम्पन्न हो चुके थे। अमेरिकी गणराज्य के निर्माण तथा प्रारम्भ के दिनों में जिन व्यक्तियों ने ख्याति और विशिष्टता प्राप्त की थी, उन सबमें जेफर्सन, निस्सन्देह, श्रेष्ठ और अधिकतम सुसंस्कृत और सभ्य थे। जेम्स पार्टन के शब्दों में, "वह ३२ वर्षीय भद्र पुरुष थे जो कि ग्रहण की गणना और जमींदारी का सर्वेक्षण कर सकते थे, रक्त शिराएँ बाँध सकते थे, भवन निर्माण की योजना बना सकते थे, मुकदमे की जाँच कर सकते थे, घोड़े की सवारी के लिए सिखा कर निकाल सकते थे, म्युनवेट नृत्य कर सकते थे और वायलिन बजा सकते थे।"

सन् १७६४ के बसन्त में, वर्जीनिया के बर्गेस-हाउस (प्रतिनिधि-सदन) के एक अधिवेशन में भाग लेते हुए, जेफर्सन के हृदय में अपने मित्र, पैट्रिक हेनरी, का भाषण सुन कर विद्युत् का संचार हो उठा। उस भाषण का ऐतिहासिक चर्मोत्कर्ष बिन्दु था। "सीज़र का अपना ब्रूटस और चार्ल्स प्रथम का अपना क्रामवेल था, जार्ज तृतीय उनके दृष्टान्तों से लाभ उठा सकते हैं।" उसी अवसर* पर जेफर्सन ने अपने आदर्श के रूप में यह वाक्य अपनाया था। "अत्याचारियों के प्रति विरोध भगवान् के प्रति आज्ञाकारिता है।" जेफर्सन स्वयं कोई प्रवक्ता नहीं थे, और कदाचित् ही उन्होंने सार्वजनिक भाषण का प्रयत्न किया हो। किन्तु, स्पष्ट चिन्तन तथा सरल अभिव्यक्ति के लिए अपने समकालीनों में उनकी ख्याति व्यापक थी। अतः, जब यह निर्णय कर लिया गया कि स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र जारी करने के लिए समय परिपक्व हो उठा है, तो उस उद्देश्य से नियुक्त समिति ने सर्वसम्मति से जेफर्सन को उसका मसविदा तैयार करने के लिए चुना, जो कि एक अमर अभिलेख बन चुका है।

---

* सीज़र का काल ब्रूटस के हाथों हुआ था और क्रामवेल ने चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध बग़ावत का झंडा ऊँचा किया था। इन उदाहरणों का तात्पर्य यही है कि जार्ज तृतीय शिक्षा ग्रहण करें।

अपनी आत्मकथा में जेफर्सन लिखते हैं : "स्वतन्त्रता की घोषणा तैयार करने के लिए नियुक्त समिति की इच्छा हुई कि मैं यह कार्य करूँ। तदनुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ।" मसविदे को बार-बार लिखने, और फिर से लिखने, स्पष्ट करने और सौष्ठव प्रदान करने में जेफर्सन को १७ दिन तक लगातार श्रम करना पड़ा। कई वर्ष पश्चात् उसके सन्दर्भ में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा था : "इसे न तो किसी सिद्धान्त या भावना की मौलिकता प्रतिष्ठित करने का उद्देश्य सामने रख कर तैयार किया गया और न ही किसी विशेष या भूतपूर्व प्रलेख से नकल की गया; इसे तो केवल अमेरिकी मनोभावना की अभिव्यक्ति बनाने के उद्देश्य से ही तैयार किया गया था।"

और, सचमुच, यह घोषणा-पत्र ऐसा ही है। किन्तु, यह समूचे विश्व के स्वतन्त्रता-प्रेमी लोगों की आवाज भी है। स्वतन्त्रता के घोषणा पत्र के किसी भी अंश पर निराधार आक्षेप करना पवित्रता को कलुषित करने जैसा प्रतीत होगा। फिर भी, इसमें एक कथन ऐसा अवश्य है, जिसने समय-समय पर भ्रान्तियों एवं विवादों को जन्म दिया है--यह कथन कि "सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं।" निस्सन्देह, इस स्वीकारोक्ति का मन्तव्य केवल इतना ही था कि परमात्मा और कानून की दृष्टि में सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं और उन्हें अपनी स्वाभाविक योग्यता और प्रतिभा विकसित करने के लिए समान अवसर उपलब्ध होने चाहिये। मनुष्यों में कुछ लोग एक प्रतिभा-सम्पन्न, कुछ लोग दो प्रतिभा सम्पन्न और कुछ लोग पाँच प्रतिभा-सम्पन्न होते हैं। स्वयं जेफर्सन कुछ-कुछ एक वैज्ञानिक, वास्तुकार और अन्वेषणकर्ता थे और अध्ययन तथा अनुभव से वे जानते थे कि मनुष्यों की प्राकृतिक प्रतिभायें समान नहीं होतीं। २८ अक्टूबर, १८१३ को जॉन ऐडम्स को लिखे गये अपने पत्र में जेफर्सन कहते हैं; "मैं निर्देशन, न्यास और समाज के प्रशासन के लिए प्राकृतिक कुलीनता को सबसे बहुमूल्य उपहार मानता हूँ, क्या हम यहाँ तक नहीं कह सकते कि सरकारी प्रशासन का वही स्वरूप सर्वश्रेष्ठ है जो अधिकतम प्रभावकारी रूप से सरकारी पदों पर उन प्राकृतिक कुलीनताओं के विशुद्ध चुनाव की व्यवस्था करता है?" मध्यम श्रेणी की मनोस्थिति वाले तथा सीमित प्राकृतिक प्रतिभा-सम्पन्न मनुष्यों ने प्रायः दर्पान्ध होकर इस कथन की कि, 'सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं' दोषपूर्ण व्याख्या की है। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि यह व्यापक स्वीकारोक्ति स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र में मर्यादित नहीं हुई।

वर्जीनिया विश्वविद्यालय के स्थापक, जेफर्सन, का विश्वास था कि व्यापक पैमाने पर जनसाधारण की शिक्षा की व्यवस्था सफल लोकतन्त्र के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। जेफर्सन ने ही सन् १८१७ म निःशुल्क शिक्षण प्रणाली की रूपरेखा तैयार की थी जो कि अब संयुक्त राज्य अमेरिका में अपना ली गयी है। प्राथमिक स्कूलों को पठन, लेखन, गणित और भूगोल की शिक्षा की व्यवस्था करनी थी। हाई स्कूलों को विज्ञान और भाषा की शिक्षा देने तथा विभिन्न पेशों की तैयारी की पृष्ठभूमि तैयार करने की व्यवस्था करनी थी। किन्तु किंचित्मात्र क्रूर व्यवहारों की आशंका के कारण जेफर्सन अनिवार्य शिक्षा के विरुद्ध थे। जेफर्सन की निःशुल्क शिक्षा की सर्वव्यापी योजनाओं का उग्र विरोध हुआ। यहाँ तक कि ३० वर्ष पश्चात् जब न्यूयार्क नगर में निःशुल्क अकादमी की स्थापना के लिए प्रस्ताव हुआ था तो उसी प्रकार का विरोध सामने आया। न्यूयार्क के एक तत्कालीन समाचार पत्र के सम्पादकीय लेख में कहा गया था; "हम में से अकिंचन वर्ग द्वारा समाज के सक्रिय, परिश्रमशील, (और यदि आप बुरा न मानें तो प्रचुरता सम्पन्न) अंग पर अपने बच्चों के लिए निःशुल्क अकादमी योजना के माध्यम से कालेज शिक्षा की व्यवस्था करने का व्यय उगाहने का संकल्प अधिकतम लज्जापूर्ण कार्यों में से एक माना जाना चाहिए, जो कि इन भ्रष्टाचार पूर्ण और पतित दिनों को कलंकित करते हैं। यह संकल्प सम्पत्ति के अधिकारों पर एक विशिष्ट और प्रत्यक्ष आक्रमण है जिसमें औचित्य का इतना भी आभास नहीं जितना शिक्षाशास्त्रियों द्वारा अपना प्रयोजन ढकने के लिए सामान्यतः पर्याप्त हुआ है।" किन्तु होरेस, ग्रीली तथा अन्य उदार नेताओं के समर्थन से, अन्ततोगत्वा, सन् १८४७ में वह योजना जनसाधारण के सम्मुख मतदान के लिए प्रस्तुत की गई और एक के विरुद्ध पाँच मतों द्वारा स्वीकृत हो गई। इस प्रकार, निःशुल्क अकादमी का जन्म हुआ, जिसे बाद में चल कर न्यूयार्क नगर कालेज की संज्ञा दी गई। किन्तु जिस प्रारंभिक श्रम से न्यूयार्क नगर कालेज अंकुरित हुआ, उसे वर्जीनिया में तीन दशाब्दी पहले टामस जेफर्सन ने ही सम्पन्न किया था।

किन्तु, जेफर्सन का विश्वास था कि अमेरिकी लोकतन्त्र को स्वस्थ और सफल बनाने की दृष्टि से निःशुल्क शिक्षा के अतिरिक्त अबाध भाषण और उन्मुक्त समाचार-पत्र में अन्तर्भूत स्वतन्त्रता की भी आवश्यकता है। उन्होंने अपने समय के 'विदेशी और राजद्रोह अधिनियमों' के विरुद्ध जम कर मोर्चा लिया, जिनका प्रयोजन भाषण और समाचार पत्र सम्बन्धी स्वतंत्रता में तीव्र कटौती करना

था। देश भर में इन दोनों आधारभूत स्वतन्त्रताओं की प्रतिष्ठा के लिए जेफर्सन को अमेरिका के किसी भी अन्य निवासी की अपेक्षा अधिक श्रेय पाने का अधिकार है। यदि आज जेफर्सन जीवित होते, तो वे निस्सन्देह कांग्रेस सम्बन्धी समस्त जाँचों पर सतर्क और विवेचक दृष्टि बनाये रखते।

बैंजमिन रूश के नाम लिखे गये एक पत्र (२३ सितम्बर, १८००) में, जेफर्सन ने कहा था:—"मैंने परमात्मा की वेदी पर मनुष्य के मस्तिष्क के ऊपर किसी भी प्रकार की निरंकुशता के विरुद्ध शाश्वत शत्रुता का संकल्प लिया है।" लेकिन, इनके अतिरिक्त, एक अन्य निरंकुशता भी थी, जिसके विरुद्ध जेफर्सन ने मोर्चा लेने को कमर कस रखी थी। वह थी धार्मिक दुराग्रह और असहनशीलता की निरंकुशता। वर्जीनिया में 'संस्थापित अथवा आंग्लिकन चर्च' राज धर्म था। मैथाडिस्ट, प्रेसबिटेरियन, क्वेकर और दूसरे धार्मिक सम्प्रदायों के लोगों पर उनकी खुली सभाओं और विश्वासों के लिए मुकदमा चलाया जाता था और प्रायः उन्हें जेल की यातना दी जाती थी। जेफर्सन का विचार था कि मनुष्यों को अपनी आत्मा की प्रेरणाओं के अनुसार परमात्मा की पूजा करने का अधिकार मिलना चाहिए। फ्रैंकलिन की भाँति ही जेफर्सन भी आस्तिक थे। परमात्मा में उनका विश्वास अडिग था और उन्होंने 'सर्मन ऑन दी माउण्ट' में महात्मा ईसामसीह द्वारा निर्दिष्ट नैतिक नियमों के अनुशीलन की चेष्टा की। किन्तु अन्ध-विश्वास और कट्टरपन्थिता के सम्मुख वे अधीर हो उठते थे। सन् १८१६ में मैथ्यू केरे को उन्होंने लिखा था:—"सृष्टि के आदि से लेकर आज तक समस्त मानव जाति नैतिक सिद्धान्तों के विपरीत, धार्मिक अन्धविश्वासों पर, ऐसी अव्यक्त भावनाओं के लिए जो कि स्वयं उन्हें और दूसरों को भी समझ में नहीं आ सकतीं और जो पूर्णतया मानवीय मस्तिष्क की बौद्धिक क्षमता के बाहर थीं, एक दूसरे से झगड़ती, लड़ती, जलाती और विनष्ट करती आ रही है।" पुनः, डाक्टर बैंजमिन वाटर हाउस को लिखे गये पत्र में उन्होंने कहा था:—"अपने समस्त हृदय से परमात्मा को और अपनी ही भाँति अपने पड़ोसी को भी, प्यार करना धर्म का सार-तत्त्व है।" शक्तिशाली विरोध के विपक्ष में एक लम्बी लड़ाई के पश्चात् धार्मिक स्वतन्त्रता का अध्यादेश कानून बन गया; और चर्च तथा राज्य के पृथक्करण का सिद्धान्त प्रतिष्ठित हुआ। अधिकार-विधेयक में निम्नलिखित शब्द समाविष्ट हैं; "कांग्रेस धर्म की स्थापना या उसके व्यवहार के निषेध के उद्देश्य से कोई कानून नहीं बनायगी।" और, टामस जेफर्सन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके सम्मान में हम पुनः अपना मस्तक झुकाते हैं।"

स्वतन्त्रता की घोषणा के २५ वर्ष पश्चात्, सन् १८०१ में, टामस जेफर्सन संयुक्त राज्य के तीसरे राष्ट्रपति चुने गये। चार वर्ष पश्चात्, १७६ में से १६२ मतदाताओं के मत से उन्हें दुबारा राष्ट्रपति चुना गया। उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि जान ऐडम्स ने यह भविष्यवाणी की कि वह तीसरी बार भी राष्ट्रपति चुन लिये जायेंगे। किन्तु जेफर्सन का ऐसा कोई इरादा नहीं था। उन्होंने कहा : "मैंने राष्ट्रपति पद की द्वितीय कार्यावधि के अन्त में पृथक् हो जाने का संकल्प कर लिया था। खतरा यह है कि लोगों का अनुग्रह और उनके स्नेह के बन्धन किसी व्यक्ति को उसके सठिया जाने के पश्चात् भी उसे पदासीन बनाये रख सकते हैं, कि जीवन भर पुनर्निर्वाचित होना अभ्यस्तता बन जायगी और उसके पश्चात् जीवन भर के लिए निर्वाचन की परम्परा कायम हो जायगी। जनरल वाशिंगटन ने आठ वर्ष के पश्चात् स्वेच्छा से राष्ट्रपति पद से पृथक् होने का उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। मैं उसका अनुसरण करूँगा।" उनके प्रशासन-काल में वे स्वतन्त्रतायें, जिनके लिए वे अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में उतने साहस के साथ लड़ते रहे, अमेरिकी जीवन-पद्धति में आधारभूत तथा दृढ़ बना दी गयीं।

सन् १८०३ में, १५,०००,००० डालर मूल्य पर नेपोलियन के साथ "लूसियाना क्रय" की वार्त्ता की गयी। यह क्रय इतिहास में सम्भवतः यथार्थ जायदाद का सबसे बड़ा सौदा था। इसके फलस्वरूप, मिस्सीसिपी और राकी माउण्टेन्स के बीच की लगभग समस्त भूमि अमेरिकी गणराज्य में शामिल हो गयी। जिस समय रेड इण्डियनों से २४,०० डालर मूल्य पर मैनहट्टन द्वीप खरीदा गया था, उसके पश्चात् इतना लाभदायक सौदा फिर कभी नहीं हुआ था।

विदा-भाषण में वाशिंगटन द्वारा दी गयी सलाह के पश्चात् "उलझनपूर्ण अभिसन्धियों" के विरुद्ध जेफर्सन द्वारा दी गयी चेतावनी सामने आयी। उस भाषण में वाशिंगटन ने यह सूचित किया था कि जब हम में अधिक राजनीतिक और आर्थिक शक्ति आ जायगी तो हम आगे चलकर दूसरे राष्ट्रों से भी वायदे और प्रतिज्ञायें कर सकते हैं। सीनेटर हेनरी केबट लाज ने भी उडरो विल्सन से झगड़े के पूर्व बाल्टीमोर में किये गये एक भाषण में कहा था : "वाशिंगटन ने कभी भी जो कुछ कहा या किया था, उसमें कोई बात ऐसी नहीं थी, जिससे हम इस निष्कर्ष तक पहुँच सकें कि यदि आज वह जीवित होते तो हृदय से लीग आफ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) के पक्ष में न होते।" इसी प्रकार, उलझनपूर्ण अभिसन्धियों

के विरुद्ध जेफर्सन की चेतावनी की भी व्याख्या वर्तमान काल में ऐसी ही होनी चाहिए।

सन् १६५२ के राजनीतिक प्रचार के सिलसिले में लोकतंत्रीय दल (डिमोक्रैटिक पार्टी) के एक प्रमुख सदस्य ने कहा था कि यदि जेफर्सन आज जीवित होते तो वे 'नवीन सौदे' के एक उत्साही समर्थक होते। यह तो निःसंशय सत्य है कि वे अभी भी एक लोकतंत्रवादी होते। यह बात भी इतनी ही निःसंशय सत्य है कि वे अधिक व्यापक, विकसित और प्रचुर आर्थिक कल्याण की आकांक्षाओं से पूर्णतया सहमत और उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण होते। अपने जीवन भर वे जनसाधारण के हितों और उनकी प्रसन्नता के लिए, जिनमें उनका पूर्ण विश्वास प्रतिष्ठित था, लड़ते रहे। किन्तु यह बात भी निःसंशय सत्य है कि वे कुछ बातों के कटु आलोचक भी रहे होते, जो कि बाद में चलकर नवीन सौदे की विशेषता बन गयी थीं। उदाहरण के लिए, वे उच्च पदों में फैले हुए भ्रष्टाचार और धन-लोलुपता को देखकर भय से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये होते। स्वयं उनके आठ वर्ष के प्रशासन को किसी प्रकार के कलंक की साँस तक छू नहीं सकी थी। अपव्यय में उनका विश्वास नहीं था और न ही इस सिद्धान्त में कि सरकार को अपने संचालन का व्यय ऐसा रखना चाहिए जिससे वह समृद्ध बनी रहे। स्वयं उनके सरकारी बजट सन्तुलित रहे। यदि उन्होंने सरकारी स्वामित्व और नियन्त्रण के दीर्घ ज्ञान-तन्तुओं को, जिनसे अलेक्जेण्डर हैमिल्टन तथा संघ-वादियों के शासनकाल में उन्होंने जम कर मोर्चा लिया था, लगातार आगे बढ़ते हुए और भारी घाटों को पूरा करने के लिए अत्यधिक ऊँचे करों की रकमों को हड़प जाते हुए देखा होता तो उनके विरुद्ध उनका यही उद्घोष होता : "सावधान और सतर्क रहो!" उन्होंने कहा था : 'सर्वश्रेष्ठ सरकार वही है जो निम्नतम शासन करती हो!"

मेरा ख्याल है कि जेफर्सन ने, जिन्होंने कि राज्यों के अधिकार तथा स्थानीय स्वराज्य का पक्षपोषण किया था, नगरपालिका और राजकीय तमस्सुकों पर कर लगाने के लिए नवीन सौदे के अन्तर्गत किये गये प्रयत्न का अवश्य विरोध किया होता, जो कि एक ऐसी चाल थी जिसे सौभाग्यवश संयुक्त राज्य कर-न्यायालय ने अवैध घोषित कर दिया था और जिसे संयुक्त राज्य के अपील वाले सर्किट-न्यायालय ने पुष्ट कर दिया था। कर लगाने का अधिकार अभी भी विनाशक अधिकार बना हुआ है, फिर भी जेफर्सन का मस्तिष्क लोचशील था—ऐसा मस्तिष्क, जो अपने आपको परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल मोड़ सकता था।

वस्तुतः, उन्होंने तो यहाँ तक कहा था कि प्रत्येक बीस वर्ष के पश्चात् संत्रीय संविधान को पूर्णरूप से संशोधित कर लेना चाहिए। यदि वे 'नवीन सौदे' की दो दशाब्दियों में जीवित रहे होते, तो उन्होंने भी १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ में आवश्यक नियन्त्रणों की अपेक्षा अधिक कड़े नियन्त्रणों की आवश्यकता स्वीकार कर ली होती। उन्होंने यह देख लिया होता कि वर्तमान युग में, जो कि समूचे रूप में अत्यधिक वैज्ञानिक युग है, हुई तथाकथित आश्चर्यजनक प्रगति ने हमारी समस्याओं को बहुत अधिक उलझा दिया है, कि आधुनिक परिस्थितियों के अन्तर्गत अपना अस्तित्व बनाये रखने के उद्देश्य से हम अधिकाधिक मात्रा में बाह्य नियन्त्रणों को स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं, कि आधुनिक जीवन की जटिल भीड़, अस्तव्यस्तता तथा अव्यवस्था को नियन्त्रित करने के लिए अधिकाधिक हरी और लाल रोशनियाँ, रोकने वाले सिगनल, और दूसरे उपाय आवश्यक हैं। इन सब बातों को मानते हुए भी जेफर्सन ने इस बात पर जोर दिया होता कि निःशुल्क और अबाध शिक्षा द्वारा आत्म-नियन्त्रण ही वास्तविक नियन्त्रण होना चाहिए—ऐसा नियन्त्रण, जो एक शक्तिशाली, स्वतःस्थायी, राजनीतिक नौकरशाही द्वारा लागू होने के बजाय, स्वयं जनता द्वारा अपने आप पर लगाया गया लोकतन्त्रीय नियन्त्रण हो। अतः यह असम्भव नहीं प्रतीत होता कि यदि जेफर्सन जो कि, जैसा हमने कहा है, प्रत्येक बीस वर्ष के पश्चात् संविधान संशोधित कर लेने के समर्थक थे, आज जीवित होते तो वे कालान्तर से राजनीतिक परिवर्तन और पुनः समंजन के पक्ष में भी होते।

जेफर्सन के प्रशासन-काल में ह्वाइट हाउस का जीवन, लोकतन्त्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप ही, सरल था। नृत्य, दरबार और औपचारिक राजकीय प्रीतिभोजों का आयोजन समाप्त कर दिया गया। परम्परा और शिष्टाचार के कठोर नियम भी उठा दिये गये थे, जिनका पालन वाशिंगटन और ऐडम्स ने किया था। किसी एक अवसर पर एक दर्जन से अधिक व्यक्तियों का स्वागत और उनकी दावत नहीं की जाती थी। वे लोग एक गोल मेज के चारों ओर बैठते थे। शायद सम्राट् आर्थर की पौराणिक गोल मेज (राउण्ड टेबुल) की कहानी से ही उन्हें यह सूझ मिली थी। मेज का आकार गोल इसलिए होता था कि बैठाने में किसी भी व्यक्ति को दूसरे से अधिक महत्त्व न दिया जा सके। जैसा कि जेफर्सन ने कहा था : "कोई भी व्यक्ति आप से ऊपर न होगा और न ही आप किसी व्यक्ति से ऊपर होंगे।"

उन प्रारम्भिक दिनों में भी राष्ट्रपति को अपने कार्यालय के कार्य कठिन और भार स्वरूप प्रतीत हुए। उन्होंने यह शिकायत की कि उन्हें पढ़ने और दार्शनिक

चिन्तन-मनन के लिए तनिक भी समय नहीं मिल पाता। फिर, वे कार्यालय के व्यय से भी चिन्तित थे। राष्ट्रपति-पद पर प्रतिष्ठित होने के पहले ही वर्ष उन्होंने २५,००० डालर वेतन के विरुद्ध ३२,००० डालर व्यय किये। दूसरी बार राष्ट्रपति होने पर वे अपनी कार्यावधि के अन्त में कार्यमुक्त होने से अत्यधिक प्रसन्न हुए थे। उन्होंने कहा : "कुछ ही दिनों में मैं कार्य-भार से मुक्त होकर अपने परिवार, अपनी पुस्तकों और अपने फार्मों में व्यस्त हो जाऊँगा, और स्वयं अपना बन्दरगाह, अपनी शरणस्थली, पा लेने पर मैं उन मित्रों की ओर, जो अभी तूफानों में पड़े उनसे संघर्ष कर रहे हैं, सचमुच डाह से नहीं बल्कि चिन्तायुक्त होकर निहारूँगा। किसी बन्दी ने अपनी शृंखला से मुक्त होकर शायद ही कभी उतनी राहत का अनुभव किया होगा, जितनी राहत का अनुभव सत्ता की शृंखलाएँ हटा फेंकने के बाद मैं करूँगा।"

हम जेफर्सन के जीवन का जितना ही अध्ययन करते हैं, उनके कार्य और उनकी सफलताएँ उतनी ही अधिक आश्चर्यजनक प्रतीत होती हैं। उनकी समाधि पर अंकित लेख में, जिसे कि स्वयं उन्होंने अपने लिए लिखा था, कहा गया है : "यहाँ स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र के लेखक, धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए वर्जीनिया विधान के प्रणेता तथा वर्जीनिया विश्वविद्यालय के जनक, टामस जेफर्सन, दफनाये गये थे।" हम सर्वव्यापी शिक्षा और भाषण, समाचार-पत्र तथा धर्म की स्वतन्त्रता के सुखद वरदानों के लिए, किसी अन्य अमेरिकी की अपेक्षा, टामस जेफर्सन के अधिक ऋणी हैं। इतिहास को महापुरुषों का दीर्घशायी प्रतिबिम्ब कहा गया है। जेफर्सन जैसे विशाल व्यक्तित्व वाले महापुरुष दुर्लभ हैं। किन्तु, महान् संकट प्रायः एक महान् नेता उत्पन्न करता है। सन् १७७६ के संकट ने वाशिंगटन और जेफर्सन को जन्म दिया। १८६१ के संकट ने अब्राहम लिंकन को। आइये, हम आशा करें कि आज के संकट में, जो कि भूतपूर्व किसी भी संकट जैसा ही विशाल है, एक अग्रदूत उत्पन्न होगा, जो टामस जेफर्सन जैसी ही दूरदर्शिता, बुद्धिमत्ता, साहस और ईमानदारी से हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा।

होरेस मैन

हेनरी न्यू मैन

अमेरिका के नगरों में सैनिकों और नागरिकों की स्मृति में उनकी प्रतिमाएँ स्थापित की गयी हैं, किन्तु होरेस मैन की स्मृति में कितनी प्रतिमायें प्रतिष्ठित हुई हैं ! अनेक भले नागरिकों ने तो इस व्यक्ति का नाम भी शायद ही सुना हो। हम इसके लिए किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा श्री मैन के अधिक ऋणी हैं कि उनके पहले जिस प्रकार के सार्वजनिक शिक्षालयों की कल्पना की जाती थी, उनकी अपेक्षा अमेरिका में सम्प्रति श्रेष्ठतर सार्वजनिक विद्यालय हैं। मैन के सम्मान में कुछ-एक सार्वजनिक विद्यालयों का नामकरण अवश्य हुआ, किन्तु इस प्रकार के अधिकांश विद्यालयों के लिए वे अभी भी केवल एक नाममात्र बने हुए हैं।

इस समय कर-संचित निधियों द्वारा संचालित सार्वजनिक विद्यालय इतने सामान्य हो चुके हैं कि हम मुश्किल से ही किसी ऐसे समय की कल्पना कर सकते हैं जब कि इस प्रकार का एक भी विद्यालय न रहा हो। किन्तु न्यूयार्क नगर के सार्वजनिक विद्यालय का इतिहास केवल एक शताब्दी पुराना है, क्योंकि कर द्वारा संचित निधियों से संचालित तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए निःशुल्क सार्वजनिक विद्यालयों की स्थापना सबसे पहले १८५३ में ही हो सकी थी। उसके पहले सम्पन्न लोग तो अपने बच्चों की शिक्षा के लिए धन व्यय करते थे, जब कि निर्धन लोगों के बच्चों की शिक्षा की कोई सुविधा न थी, अथवा वे विभिन्न गिरजाघरों द्वारा संचालित धर्मादा कक्षाओं में पढ़ा करते थे। किन्तु गिरजाघर द्वारा संचालित ये विद्यालय भी गरीब लोगों के सभी बच्चों की पहुँच के बाहर थे। सर्व प्रथम सन् १८०१ में एक महिला समिति की ओर से उन गरीब गोरे बच्चों के लिए, जिनके माँ-बाप किसी सम्प्रदाय के सदस्य नहीं थे, एक निःशुल्क पाठशाला की स्थापना हुई, जिसमें प्रति वर्ष १५० डालर वेतन पर "अध्यापिका के पद पर एक सुशिक्षित और सदाचारी विधवा महिला को नियुक्त कर दिया गया था।" जिस प्रकार वैयक्तिक संगठन अनाथों के लिए आश्रमों की व्यवस्था करते हैं, ठीक उसी प्रकार निर्धन बच्चों की शिक्षा के लिए निधियाँ एकत्र करने के उद्देश्य से मेयर डी विट क्लिंटन के नेतृत्व में सन् १८०५ में सार्वजनिक विद्यालय समिति नामक

एक दानार्थ संस्था संगठित हुई। राज्य विधान सभा ने सन् १८१८ में सार्वजनिक विद्यालय समिति को आर्थिक सहायता देने का निर्णय किया। फिर भी, अन्ततः, सन् १८५३ में ही न्यूयार्क नगर एक ऐसे बिन्दु पर पहुँच सका, जब कर-संचित निधियों द्वारा संचालित वर्तमान किस्म के सार्वजनिक विद्यालय अस्तित्व में आ सके। प्रायः समस्त पूर्वी राज्यों के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। जनमत को शिक्षित और उत्साहित करने में समय लगता है। यह कार्य होरेस मैन जैसे व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न हुआ।

उनका अपना राज्य, मैसाचुसेट्स, किसी भी प्रकार के सार्वजनिक विद्यालय की स्थापना में अग्रणी रहा है। आठ वर्ष की सामान्य अवस्था में प्रवेश करने से पहले बच्चों को लिखना और पढ़ना सीखना पड़ता था। विद्यालयों का संचालन-व्यय भी गिरजाघर की भाँति ही जनता से उगाहे गये करों की सहायता से पूरा होता था, क्योंकि सभी नागरिक सामुदायिक गिरजाघर के सदस्य थे। धार्मिक और नागरिक बस्तियों में कोई भेद नहीं था। दोनों एक थीं। इस प्रकार का पहला विद्यालय, बहुत पहले सन् १६३६ में, डोरचेस्टर में स्थापित हुआ। यह तथ्य उस प्योरिटनवाद की परम्परा में एक महान् दृष्टान्त प्रस्तुत करता है जिस पर बहुतों के लिए नाक-भौं सिकोड़ना आसान मालूम होता है। जहाँ कहीं केलविनवाद जोर पर था, वहाँ बच्चों, बूढ़ों और उनके बीच की अवस्थाओं के लोगों को शिक्षित करने में वह पूर्णतः समर्थ था। यह बात फ्रांस, स्विट्जरलैंड, हालैंड, स्काटलैंड, और न्यू इँग्लैंड के केलविनवाद के सम्बन्ध में पूर्णतया सत्य थी। "जहाँ धरती इतनी पथरीली थी कि अन्न भी नहीं उपज सकता था, वहाँ उन्होंने मनुष्यों के उत्थान के लिए विद्यालयों की स्थापना की।"

किन्तु महान् आन्दोलनों के ह्रास और उत्थान की अपनी-अपनी अवधियाँ होती हैं। एक शताब्दी पूर्व न्यू इँग्लैंड के निःशुल्क विद्यालय वैयक्तिक पाठशालाओं की तुलना में, जिनकी स्थापना इन औद्योगिक राज्यों की वृद्धिशील सम्पदा के कारण सम्भव हो गयी थी, बहुत ही अक्षम माने जाते थे, किन्तु इस वृद्धिशील सम्पदा ने तथा इस बात ने कि सभी नागरिक एक ही धर्म के अनुयायी नहीं रह गये थे, सार्वजनिक विद्यालय के आन्दोलन को प्रोत्साहित करने में सहायता पहुँचाई। वाष्प-शक्ति के प्रयोग ने कारखानों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया। नगरों की स्थापना हुई, जिनमें से कितने ही तो शेष राज्य की तुलना में तीनगुनी तीव्र गति से विकसित हो रहे थे। सन १८२० में लावेल नगर का अस्तित्व भी नहीं था। बीस वर्ष बाद उसकी जनसंख्या २० हजार थी।

होरेस मैन ने बड़ी पटुता से इस तर्क का उपयोग किया। निरक्षर समाज की अपेक्षा शिक्षित व्यक्ति अधिक धन व्यय करते हैं। हॉलेएड जैसे तत्कालीन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि किस प्रकार शिक्षा लोगों को श्रम और यत्न करने के लिए प्रेरित करती है, जब कि अशिक्षा शिथिलता और आलस्य को प्रोत्साहन देती है। टामस कूपर ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि जो लोग पढ़ लिख सकते हैं, वे अधिक बुद्धिमान् तथा विश्वासी कर्मचारी सिद्ध हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, श्रमिकों को, कूपर के ही शब्दों में, "सम्पत्ति के समान विभाजन और सम्पन्न लोगों को लूट लेने के निर्धन लोगों के अधिकार" के विषय में खतरनाक विचार प्राप्त हो रहे थे। स्वयं श्रमिकों की शक्ति भी बढ़ती जा रही थी और अब वे धनिकों से दान में पाने के विपरीत अधिकार के रूप में शिक्षा की सुविधायें माँगने लगे थे। इन सभी प्रभावों ने उन स्थानों पर जहाँ सार्वजनिक विद्यालय आन्दोलन का अभाव था, सार्वजनिक विद्यालय आन्दोलन को; अथवा मैसाचुसेट्स जैसे स्थानों पर, श्रेष्ठतर विद्यालय आन्दोलन को, जिनके लिए होरेस मैन के प्रति हम इतने ऋणी हैं, प्रोत्साहित करने में सहायता पहुँचाई।

वह जिस प्रमुख प्रेरणा से प्रेरित थे, वह एक सरल, प्रत्यक्ष और नैतिक लालसा थी—यह लालसा कि अमेरिका लोकतन्त्र के चरम उत्कर्ष को प्राप्त कर ले। एक शताब्दी पहले अमेरिका क्रान्तिकारी युद्ध और १८१२ के युद्ध के अधिक निकट था। उस पर अभी भी दम्भी, ध्वजाधारी, देशभक्तों का जादू था, जिन पर चार्ल्स डिकेन्स ने अपने उपन्यास, 'मार्टिन चुजेलविट' में उचित ही उतना व्यंग्य कसा था। इस उन्मत्त दम्भ का निकृष्टतम पहलू यह था कि उसके कारण देश के बड़े-बड़े क्षेत्र अपनी अज्ञानता से पूर्णतया सन्तुष्ट पड़े थे। मैन ने यह सीधी सी बात अच्छी तरह समझ ली थी कि मतदाता जितना ही अधिक आत्मतुष्ट होगा, अमेरिका के हितों को उतनी ही अधिक क्षति पहुँचेगी। उस समय इस प्रकार के व्यक्तियों का बाहुल्य था। कहानी कही जाती है कि किस प्रकार किसी प्रवक्ता के राजनीतिक भाषण के अन्त में, जिसने कि अपने भाषण में बड़े-बड़े शब्दों का आडम्बर रच रखा था, एक श्रोता कूदकर चिल्ला पड़ा: "यदि आप उन सभी शब्दों का, जिनका प्रयोग आपने किया है, ठीक-ठीक शब्द-विन्यास कर सकेंगे तो मैं अपना मत आपको ही दूँगा।" मैन अच्छी तरह जानते थे कि किसी सम्राट् से मुक्ति पा लेना अपेक्षाकृत सरल कार्य है, किन्तु स्वतन्त्र मानवों के सच्चे गौरव तक ले जाने वाला पथ लम्बा और दुष्कर है। सन् १७७६ और १८१२ में स्वतन्त्रता का तनिक भी सौदा नहीं हुआ था और न ही उसका

मूल्य पूर्णरूप से चुकाया गया था। उस स्वतन्त्रता में, जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है, "सम्पूर्ण देश को ज्ञान की धाराओं से आप्लावित करके" अपेक्षाकृत अधिक विवेक और अधिक चेतना का संचार करने में सहायक होना उनकी भूमिका थी। उन्होंने आगे लिखा है : "महलों की वाटिकाओं में यहाँ-वहाँ कुछ सुन्दर फव्वारों की जल-क्रीडा ही पर्याप्त नहीं है। उसे प्यासी धरती पर पीन पयोदों की प्रचुरता के रूप में प्रवाहित होने दीजिये !"

होरेस मैन का जन्म १७९६ में मैसाचुसेट्स के फ्रेंकलिन नगर में हुआ था—ऐसा नगर जिसे अमेरिका में सर्वप्रथम सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित करने का सम्मान प्राप्त है। इस नगर के अधिष्ठाताओं ने इसका नामकरण बैंजमिन फ्रैंकलिन के नाम पर करके उन्हें जो श्रद्धांजलि अर्पित की थी, उससे बैंजमिन फ्रैंकलिन इतने आह्लादित हुए थे कि उन्होंने इस नगर को कई सौ पुस्तकें उपहार-स्वरूप प्रदान की थीं। मैन की विधवा माँ इतनी निर्धन थीं कि वह अपने बच्चों को किसी वैयक्तिक पाठशाला में नहीं भेज सकती थीं। वस्तुतः, उनमें पाठ्य पुस्तकें भी खरीदने की सामर्थ्य न थी, जिन्हें उन दिनों सार्वजनिक स्कूलों में माँ-बाप ही खरीदा करते थे। बालक होरेस हैट के एक कारखाने में बिकने के लिए लम्बी रस्सियाँ बटकर अपनी पुस्तकों का मूल्य अदा करने के लिए स्वयं पैसे कमाता था। वह सार्वजनिक भाषणों में कहा करते थे कि मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि लोग घोड़ों और पशुओं को सबल बनाने के तरीके इतनी अच्छी तरह किस प्रकार सीख जाते हैं, जब कि उनके अपने बच्चे दुर्बल, क्रोधी और लगातार अस्वस्थ बने रहते हैं। उन्हें इस बात पर आश्चर्य होता था कि समाज में घूँसेबाजी के दस अध्यापक क्यों होते थे, जब कि उनकी तुलना में शिक्षा की गोष्ठियों में शारीरिक शिक्षा के लिए एक ही प्राध्यापक होता था। वस्तुतः कौन सा जनसमूह ऐसा होगा जो कि टिकटघर में आज इस उद्देश्य से धन छोड़ेगा कि वह अपने बच्चों का स्वास्थ्य सुधरते हुए देख सके।

अपनी १५ वर्ष की अवस्था तक मैन एक वर्ष में दस सप्ताह से अधिक स्कूल कभी भी नहीं गये। अध्ययन के अन्तर्गत पढ़ना, लिखना और गणित करना शामिल था, जो कि पुस्तकों की दासता की कठिन पिसाई जैसा था, जब कि शिक्षा मुख्यतः किसी चीज को मस्तिष्क में रटने-रटाने तक ही सीमित थी। इस प्रणाली के अन्तर्गत काम में बच्चों की रुचि के विषय में चिन्ता नहीं की जाती थी, और न ही व्यक्तिगत विभिन्नता की ओर अधिक ध्यान दिया जाता था। हम मैन जैसे लोगों के कृतज्ञ हैं जिनके प्रयत्नों के फलस्वरूप ही उस प्रकार की निष्प्राण

शिक्षा उत्तरोत्तर अधिक निरादृत होती गयी, यद्यपि स्वयं मैन जैसी कुछ रूखी आत्माओं ने उसी प्रणाली के अन्तर्गत, शायद उनसे घृणा करते हुए ही, किसी प्रकार शिक्षा प्राप्त की थी। उस प्रणाली का प्रभाव अधिकांश बच्चों पर यही पड़ा कि वे जीवन भर पुस्तकों से घृणा करते रहे। इस प्रकार, इस प्रणाली ने भौंहें झुकाकर पुस्तकों से चुपचाप घृणा करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका अदा की, जिसके प्रभाव के अन्तर्गत अत्यन्त दीर्घकाल तक अमेरिका का विकास अवरुद्ध रहा। अभी भी हमारे बीच प्रत्येक समाज में भौंहें नीची करके घृणा करनेवाले कुछ लोग मौजूद हैं जो कि सार्वजनिक पद पर प्रतिष्ठित किसी भी ऐसे मनुष्य पर अविश्वास करते हैं जो पुस्तकें पढ़ने में, बशर्ते कि वह पश्चिमी न हो, रुचि रखता है। कुछ लोगों का स्वभाव नाजियों जैसा है जिन्होंने सन् १९३३ में उन पुस्तकों को, जिन्हें वे नहीं समझ सकते थे अथवा जिन्हें वे अपने मत से भिन्न मत प्रकट करने के कारण नापसन्द करते थे, जला दिया था। उन्हें ऐसे जनसमूहों का समर्थन प्राप्त है जिन्होंने पुस्तकों के प्रति अपनी आँखें बन्द कर रखी हैं, अथवा जो कभी भी कोई पुस्तक नहीं खरीदते।

मैन ब्राउन विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होने में सफल रहे। उनके पश्चात् उन्होंने वकालत शुरू की और फिर राजनीति में घुसे। यहाँ भी उनका जीवन कठिन संघर्षों से पूर्ण था। उनमें न्यू इँग्लैंड की ही वह चेतना व्याप्त थी, जिसकी नकल करने की अपेक्षा उसका उपहास करना सरल होता है। उन्होंने एक भाई के लिए ऋण-पत्र पर हस्ताक्षर किये थे और जब वह भाई ऋण चुकाने में असफल रहा तो उन्होंने अपने परिवार का सम्मान बचाने के लिए स्वयं अपने ऊपर ऋण अदा करने का उत्तरदायित्व ले लिया। उनकी पत्नी ने लिखा है कि एक समय ऐसा था जब कि वह लगातार कई दिनों तक अपने लिए रात का भोजन खरीदने में असमर्थ होते थे। राजनीति के क्षेत्र में उनकी उन्नति उल्का की भाँति हुई। ३१ वर्ष की अवस्था में वह मैसाचुसेट्स के प्रतिनिधि सदन के सदस्य चुने गये थे। उन्होंने उस प्रतिनिधि सदन में अपने पहले ही भाषण में उस कानून को उठा लेने की माँग की थी, जिसका उद्देश्य सामुदायिक गिरजाघर की सहायता के लिए प्रत्येक व्यक्ति से कर उगाहना था। ९ वर्ष के पश्चात् मैसाचुसेट्स के राज्य-सीनेट के अध्यक्ष चुने गये। पागलों के लिए प्रथम सरकारी अस्पताल स्थापति करने वाला कानून अधिकांशतः उनके ही प्रयत्नों का परिणाम था।

यदि उन्होंने राजनीति में ही पड़े रहने का निर्णय कर लिया होता तो आज उनका नाम और अधिक विख्यात होता। लेकिन, इसके विपरीत, १८३७ में

उन्होंने एक अत्यन्त साधारण महत्त्व का पद ग्रहण करने की स्वीकृति प्रदान कर दी थी जिससे उन व्यक्तियों को अत्यधिक आश्चर्य हुआ जो यह नहीं जानते थे कि मैन किस प्रकार के व्यक्ति थे। मैसाचुसेट्स विधान सभा ने अपने राज्यीय शिक्षा-मण्डल को पुनः संगठित किया, और मैन ने उस मण्डल के सचिव के पद पर अपनी नियुक्ति स्वीकार कर ली। १८३७ का वर्ष हमारे देश के लिए उस समय तक का निकृष्टतम वित्तीय मन्दी का वर्ष सिद्ध हुआ। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए मितव्ययता करना अनिवार्य हो गया था, अतः नगरों ने पाठशालाओं की व्यवस्था सम्बन्धी अपने व्यय में कटौती कर दी। अब अध्यापकों को, जिन्हें पहले से ही अच्छे वेतन नहीं प्राप्त हो रहे थे, और भी कम वेतन मिलने लगा। राज्यीय शिक्षा-मण्डल के सचिव पद के लिए प्रति वर्ष १,५०० डालर वेतन दिया जाता था, किन्तु उसके साथ यात्रा या अन्य प्रकार के किसी व्यय की व्यवस्था नहीं थी। कोई भी वकील जो राजनीति में मैन जैसी ऊँची ख्याति प्राप्त कर चुका होता, उस समय और भी अधिक आय की अपेक्षा करता। किन्तु इस मौके पर भी हमें मैन के व्यक्तित्व में प्योरिटन चरित्र का अभूतपूर्व पक्ष देखने को मिलता है।

यह सत्य नहीं है कि सभी अमेरिका-निवासी मुख्य रूप से धन की ही चिन्ता करते हैं। उन लोगों में भी, जो धनोपार्जन करते हैं, संसार में उपयोगी होने की उत्कण्ठा हो सकती है। वे भी जनता के लिए आवश्यक वस्तु या सेवा प्रदान करने में गौरव का अनुभव कर सकते हैं। कुछ लोग तो समाज के उपयोग में आने के लिए इतने आतुर होते हैं कि यदि वे किसी प्रकार केवल जीवन-निर्वाह भर के लिए धन उपार्जित करते रहें, तो उससे ही सन्तुष्ट हो सकते हैं। मैन इसी प्रकार के व्यक्ति थे। एक देशप्रेमी अमेरिकी के नाते लोकतन्त्र में उनका गहनतम विश्वास था। उन्होंने स्पष्ट रूप से देख लिया था कि हमारे राष्ट्रीय जीवन का कितना अंश अपमानजनक है। हमारी राजनीति में उन दिनों भी पर्याप्त भ्रष्टाचार था। प्रायः चुनावों में चोरी ऐसे ढंग से की जाती थी जिसकी तुलना में वर्तमान काल की निकृष्टतम व्यवस्था भी नहीं ठहर सकती। मैन ने देखा कि मतदाताओं की अधिकांश जनसंख्या अज्ञानी है, किन्तु लिंकन की भाँति उन्हें यह विश्वास हो गया था कि अमेरिका के सीधे सादे लोग प्रायः सही बात ही करना चाहते हैं, और उन्हें ऐसा कराने के लिए प्रवृत्त करने का ढंग केवल यही है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए पाठशाला की व्यवस्था करके बचपन से ही उन्हें सुधारने का प्रयत्न किया जाय। यही कारण है कि उन्होंने धार्मिक संस्कार जैसी

निष्ठा के साथ इस महान् साहसपूर्ण उद्यम में ऐसी प्रतिभायें होम कर दीं, जिनके बल पर राजनीति में उन्हें अनन्त ख्याति प्राप्त होती।

उनका काम कदापि सरल नहीं था। ऐसे लोग भी थे जो अन्य व्यक्तियों के बच्चों के लिए स्कूल की व्यवस्था करने के उद्देश्य से कर द्वारा संचित निधियों के व्यय का विरोध करते थे। मैन अद्वैतवादी थे और रूढ़िवादी बहुमत के लिए यह बात नास्तिक होने के समान थी। इस समय भी हम नास्तिकता (जिसे कार्ल सैंडबर्ग ने मछली का दृष्टिकोण कहा था, जो तैरने को श्रेयस्कर मानकर यह बात समझ नहीं पाती कि चिड़ियाँ उड़ना क्यों चाहती हैं) से पीड़ित हैं। लगभग २० वर्ष पहले ब्रुकलिन के एक पुजारी ने न्यूयार्क नगर कालेज को अपने क्षेत्र (बरो) में लाने के विचार का विरोध किया था क्योंकि उसका कहना था कि यह कालेज केवल "नास्तिकों तथा क्रान्तिवादियों (बोल्शेविकों) के एक अन्य समूह को भी गलत शिक्षा देगा।" एक शताब्दी पश्चात् उसी प्रबुद्ध तथा सचेत भावना ने एक अन्य तमपूर्ण दिशा में अभिव्यक्ति पाई। ऐसे करदाता मौजूद थे जिन्होंने निःशुल्क अकादमी—जैसा कि शुरू में न्यूयार्क नगर कालेज का नामकरण हुआ था—की संस्थापना का विरोध किया था। उनका कहना था कि हम आयरलैंड के प्रवासियों के बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए कर का भार क्यों उठायें?

मैन ने जिस आन्दोलन के लिए अपनी समस्त शक्ति भेंट कर दी थी उसे विरोधियों के प्रयत्नों ने विलम्बित अवश्य किया, किन्तु वे उसे पराजित नहीं कर सके। कुछ राज्यों में विद्यालयों को पूर्ण रूप से निःशुल्क कर देना था, उनका रख-रखाव कर द्वारा उगाहे गये धन द्वारा करना था, और उनमें से इस तरह का कलंक मिटा देना था कि वे केवल अकिंचनों और दरिद्रों के लिए ही स्थापित हुए हैं। मैसाचुसेट्स में उनकी वित्तीय व्यवस्था श्रेष्ठतर करनी जरूरी थी, ताकि उनमें की गयी शिक्षा की व्यवस्था में सुधार किया जा सके। यह कार्य सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व मैन पर था। उन्होंने इस कार्य को राज्य भर में दौरा करके, स्थितियों का पता लगाकर और जनता की भावना को जागृत करके सम्पन्न किया। उस समय उन्होंने एक दर्जन वार्षिक प्रतिवेदन प्रकाशित किये जो अब ऐतिहासिक महत्त्व के माने जाते हैं।

पहले प्रतिवेदन में उन्होंने यह प्रदर्शित किया था कि विद्यालयों में जितने भौतिक उपकरण उपलब्ध थे, वे अत्यन्त निकृष्ट किस्म के थे। स्कूलों की बेंचों में पीछे का भाग न होने के कारण लगातार ६ घंटे तक बैठने से मांसपेशियाँ और हड्डियाँ चटकने लगती थीं। फिर, वे बेंचें भी जमीन की सतह से या तो अत्यधिक

ऊँची थीं या अत्यधिक नीची। आश्चर्य नहीं कि केवल राहत के लिए ही यह शरारत की गयी थी। विद्यालय के भवन प्रायः दुर्दयनीय अवस्था में थे और सभी कक्षाएँ एक ही कमरे में लगती थीं। यदि किसानों को भी ये भवन उनके पशुओं का बाड़ा बनाने के लिए दिए गये होते, तो उनमें से कितने ही उनका उपयोग करना उपहासजनक समझते—ऐसे बाड़े के रूप में भी, जिसकी छत में एक छिद्र तो ऊपर होता था जिससे बरसात का पानी अन्दर आ सके, जब कि दूसरा छिद्र फर्श पर था जिससे बरसात का पानी बाहर जा सके।

पाठशालाओं के बच्चे सामान्य रूप से, बिना किसी अपवाद के, इनसे घृणा करते थे। उन्हें अपने काम पर लगाये रखने के उद्देश्य से अध्यापक लोग अपनी अयोग्यता के उस सरल अस्त्र, चाबुक, का उपयोग करते थे। होरेस मैन ने प्रारम्भ में ही यह देख लिया कि बच्चों में भय जैसी घृणित भावना के संचार के उद्देश्य से शारीरिक दण्ड देना उनके लिए अत्यन्त हानिकारक था। उसने श्रम को, जिसे कि स्वतन्त्र श्रम होना चाहिये था, दासता के श्रम में परिणत कर दिया था। "आप कलियों को झंझावात द्वारा नहीं, बल्कि सूर्य-रश्मियों के स्नेहमय प्रभाव द्वारा ही खिला सकते हैं।" "वे घूँसे ही, जो गणित और व्याकरण को पीट-पीटकर दिमाग में भरते हैं, विश्वास और पौरुष को मस्तिष्क से ढकेलकर बाहर कर देते हैं।" "वे घृणा, प्रवंचन, असत्य और प्रतिशोध का मार्ग प्रशस्त करते हैं।" स्वयं अध्यापक के लिए भी ये तरीके हानिकारक थे, क्योंकि उनके कारण वे भी स्वेच्छानुसार जितना चाहते, क्षमताहीन हो सकते थे। इस कैलविनवादी परम्परा में कि बच्चे जन्म से ही दुराचारी होते हैं, पले होने के बावजूद, मैन को यह पूर्ण विश्वास हो गया था कि यदि बच्चे अपने अध्ययन में सचमुच हृदय से रुचि रखते हों, यदि अध्यापक इतने अच्छे ढंग से पढ़ाने का कष्ट उठायें, जिससे वे स्वयं अपनी ओर से सीखने के लिए हृदय से प्रवृत्त हों, और यदि वे अध्यापक को अपना शत्रु न मानें जिसे कि उन्हें हर बात पर चकमा देने की कोशिश करनी पड़ती हो, तो उन्हें कक्षा में ही प्रौढ़ मनुष्यों की भाँति व्यवहार के लिए तथा सफलता के साथ अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। यद्यपि वर्तमान काल में भी हमारे अनेक विद्यालय बुरे हैं, फिर भी, अमेरिका ने कम से कम, इतना तो अवश्य ही सीख लिया है। किन्तु मैन के लिए अपने सचिव-पद के बारह वर्ष के भीतर सारे समाज को इसे सिखा देना एक भयानक और दुःसाध्य उद्यम था। उन्होंने सभायें आयोजित कीं। उन सभाओं में यदि कुछ लोग आते भी थे, तो उनकी संख्या बहुत कम होती थी। एक अवसर पर तो

केवल द्वारपाल को छोड़कर एक भी अन्य व्यक्ति सभा में उपस्थित न था, जब कि सड़क के दूसरे पार का हाल एक राजनीतिज्ञ को सुनने के लिए खचाखच भरा हुआ था।

मैन हब्शियों की दासता के उन्मूलन में भी रुचि रखते थे। हममें से कितनों को यह बात सुनकर आश्चर्य होगा कि एक शताब्दी पहले मैसाचुसेट्स में भी केवल कुछ अल्पसंख्यक लोग ही अपने को उन्मूलनवादी कह सकने का साहस कर सकते थे। अधिकांश कुलीन और शक्तिशाली लोग कोई परिवर्तन नहीं चाहते थे। इस बात से भी कितने ही व्यक्ति विद्यालयों में मैन के पाठशाला-सम्बन्धी विचारों का विरोध करने के लिए प्रेरित हुए। सार्वजनिक प्रणाली के विद्यालयों के अध्यापक भी मैन की आलोचनाओं पर क्षुब्ध हुआ करते थे। चूंकि मैन ने स्विट्ज़रलैंड के पैस्टालोजी के शैक्षणिक विचारों का सुझाव दिया था, जिनका प्रयोग प्रशा के स्कूलों में किया जा रहा था, और जो हमारे देश में प्रचलित शिक्षा के अधिकांश ढंगों से निश्चय ही श्रेष्ठतर थे, अतः उनको अन-अमरीकी कहकर पुकारा जाने लगा। प्रत्येक वृत्ति या पेशा लोगों में एक प्रकार की शुष्क निष्क्रियता उत्पन्न करने लगती है जिससे प्रभावित होकर वे नवीनता के पोषकों को देशद्रोही, पागल और कंटक समझने लगते हैं।

फलस्वरूप, मैन को अपने प्रयत्न जारी रखने में अपनी समस्त शक्ति लगा देनी पड़ी। सच तो यह है कि उन्हें उससे भी अधिक शक्ति लगानी पड़ी। उनकी तत्कालीन डायरी में एक अवसर पर हम पढ़ते हैं: "मुझे लगता है जैसे मैं अपनी छूछी मुट्ठियों से जिब्राल्टर के दुर्दम्य थपेड़ों को पराजित करने की कोशिश कर रहा हूँ।" किन्तु उन पर एक ऐसी आस्था का जादू छाया हुआ था, जिसे उन्होंने अपनी डायरी में इन शब्दों में व्यक्त किया है: "वह समय अवश्य आयेगा, जब शिक्षा को सांसारिक वृत्तियों में सर्वोच्च समझकर उसकी पूजा की जायगी। मेरे जीवन में वह समय देखने को कदापि नहीं मिलेगा, यदि देख सकूँगा तो केवल विश्वास की आँखों से। किन्तु मैं कुछ ऐसा कर चुकने के लिए कृत-संकल्प हूँ जिससे दूसरे लोग इसे देख सकें और अन्यथा उपलब्ध करने की अपेक्षा मेरे प्रयत्नों के फलस्वरूप अधिक शीघ्रता से प्राप्त कर सकें।"

और, उनके प्रयत्नों के परिणाम दृष्टिगोचर होने लगे। १८३९ में मैसाचुसेट्स के लेकसिंगटन नगर को अमेरिका में अध्यापकों के लिए प्रथम सार्वजनिक प्रशिक्षण स्कूल खोलने का सम्मान प्राप्त हुआ। आज हमें आश्चर्य होना चाहिये कि यदि अध्यापकों को प्रशिक्षित करके तैयार करने वाली ये संस्थायें न होतीं, तो हमारे

सार्वजनिक विद्यालय भला किस प्रकार संचालित हो सकते थे। प्रशिक्षण विद्यालय देश के अधिकांश कालेजों का एक अविच्छिन्न अंग बन गया है। यदि कभी हम उस गति से, जिससे कि हमारी सार्वजनिक शिक्षा-व्यवस्था उन्नति कर रही है, निरुत्साहित हों तो हमें यह याद रखना होगा कि अमेरिका में प्रथम सार्वजनिक प्रशिक्षण विद्यालय का अस्तित्व १८३६ तक सम्मुख नहीं आया था। मैन ने भावी अध्यापकों के लिए एक निवास-गृह सुसज्जित करने में सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से अपनी कानून की पुस्तकों का पुस्तकालय ही बेच दिया था।

शिक्षा के लिए उनका अनवरत १२ वर्ष का कठिन श्रम फलीभूत हुआ। उसके बाद १८४८ में वे पुनः राजनीति की ओर मुड़ चले। इस क्षेत्र में भी एक महान् आवश्यकता ने उन्हें अपनी ओर खींचा। जान क्वीन्स ऐडम्स का देहावसान हो चुका था। संयुक्त राज्य का राष्ट्रपति रह चुकने के बावजूद, यह महान् प्योरिटन दासता का उन्मूलन करने के लिए मोर्चा लेने के उद्देश्य से इस बार एक साधारण कांग्रेस-जन की हैसियत से पुनः वाशिंगटन लौट आये। जब ऐडम्स का देहावसान हो गया तो कांग्रेस में उनकी जगह लेने के लिए होरेस मैन को राजी किया गया। उन्होंने दासता के उन्मूलन के उद्देश्य से ही ऐसा किया, हालाँकि इसके लिए इन्हें मैसाचुसेट्स के प्रसिद्ध सिनेटर डेनियल वेबस्टर का, जिसने दासता-विरोधी प्रश्न पर ढुलमुल दृष्टिकोण अपनाना पसन्द किया था, विरोध करना पड़ा।

कांग्रेस में इस लड़ाई को केवल इसलिए नहीं चलाना था कि उसके फल-स्वरूप दास-शक्ति के विकास को और अधिक बढ़ने से रोका जा सके, बल्कि तत्सम्बन्धी समस्याओं की भी वार्ता चलाने के मूलभूत अधिकार की दृष्टि से यह लड़ाई आवश्यक थी। उस समय के या हमारे युग के अन्य निरंकुश शासकों की भाँति दास-प्रथा के पक्षपाती नेता यह चाहते थे कि उनके विरोधियों का मुँह बन्द कर दिया जाय, और उसके लिए वे अनेक "गलाघोंटू" नियम लागू कराने में सफल भी रहे। यह कार्य उन्होंने बहुत कुछ उसी तरह किया, जिस तरह उनके वंशज रंग-भेद अथवा शारीरिक पीड़ा के विरुद्ध बनने वाले कानूनों को निष्क्रिय करने के लिए गलत तरीकों का उपयोग करते हैं। इस उग्रतापूर्ण कार्यवाही के विरुद्ध मैन ने जो विचार व्यक्त किया था, उसकी ओर आज भी ध्यान देना उचित होगा :

"फिर भी, मैं स्वतन्त्रता के प्रश्न पर वाद-विवाद चलाने के लिए प्रेरित हूँ क्योंकि एक आदेश घुमाया गया है कि उस पर वार्ता नहीं की जायगी। वाद-

विवाद और वार्ता को आन्दोलन कहकर उसकी भर्त्सना की गई है और फिर ताना-शाही ढंग पर यह घोषणा की गई है कि 'आन्दोलन का दमन होना चाहिये।' मैं विनम्र हूँ। इस नाते मैं ऐसे किसी भी आदेश के सामने सिर नहीं झुकाता, चाहे वह किसी भी पक्ष या कितने ही लोगों द्वारा क्यों न दिया गया हो। इस सरकार में किसी भी व्यक्ति के लिए, चाहे उसका पद कितना ही ऊँचा क्यों न हो, अथवा व्यक्तियों के किसी भी समूह के लिए, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, इस बात का निर्देश करना असहनीय है कि किन मामलों पर आन्दोलन होना चाहिये और किन मामलों पर नहीं। इस प्रकार का निर्देशन स्वतन्त्र भाषण के अधिकार के विरुद्ध अधिक से अधिक दमनकारी कानून की ही एक किस्म है। यह उतना ही घृण्य है जितना उस उन्मूलनयोग्य नियमावली का कोई भी स्वरूप हो सकता है। और, जब मैं किसी एक व्यक्ति के लिए यह कहता हूँ कि मैं अपने भाषण के अधिकार का प्रयोग करने के लिए उस समय और भी अधिक प्रेरित होता हूँ, जब साम्राज्यवादी लोगों के चट्टे-बट्टे मुझ पर प्रतिबन्ध लगाने की कोशिश करते हैं या मुझे दंड देना चाहते हैं, तो वस्तुतः मैं सभी उदार मस्तिष्क वाले व्यक्तियों की समान भावना की ही अभिव्यक्ति करता हूँ। मैं इस सरकार के विरुद्ध राजद्रोह को एक महान् अपराध मानता हूँ, किन्तु चाहे वह अपराध कितना ही महान् क्यों न हो, मैं यह भी मानता हूँ कि स्वतन्त्र भाषण के अधिकार के विरुद्ध राजद्रोह करना उसकी अपेक्षा इतना बृहत्तर अपराध है कि दोनों की तुलना नहीं की जा सकती।"

१८५२ में उन्मूलनकारी दल ने, जो कि स्वतन्त्र भूमि दल (फ्री स्वायल पार्टी) के नाम से एक नये दल के रूप में विख्यात होने लगा था, मैन को उनके राज्य का गवर्नर नामजद किया। उसी दिन उनसे ओहियो के यलो स्प्रिंग नामक स्थान पर स्थापित एक नये कालेज में अध्यक्ष पद ग्रहण करने का अनुरोध किया गया। यह ऐंटियाक कालेज था, जिसने स्वयं हमारे युग में उस समय एक नया जीवन ग्रहण किया, जब विख्यात इंजीनियर, आर्थर मोर्गन, उसके अध्यक्ष बनाये गये। मैन ने ऐंटियाक कालेज के उस पद को स्वीकार कर लिया और वहाँ, १८५६ में अपनी मृत्यु-पर्यन्त, ७ वर्ष तक रहे। आरम्भ में उनका वेतन ३ हजार डालर प्रति वर्ष निश्चित किया गया था। फिर उसे कम करके २ हजार डालर कर दिया गया और फिर १५०० डालर कर दिया गया। किन्तु यह वेतन भी कभी पूरी मात्रा में अदा नहीं किया गया। फिर भी, उन्हें अपने काम में विश्वास था, इसलिए वे उस पर अडिग बने रहे।

इस महापुरुष का चरित्र अत्यन्त रुचिकर है। उनमें कुछ ऐसे दोष थे, जो कि स्वभावतः प्योरिटन किस्म के प्रशिक्षण के अनुगामी होते हैं और जिनके कारण धूम्रपान जैसे मामले भी, जो हमें अत्यन्त साधारण प्रतीत होते हैं, बहुत बड़े माने जाते हैं। उन्होंने रिचर्ड एच० डाना से अनुरोध किया कि वे "टू ईयर बिफोर दि मास्ट" नामक पुस्तक को फिर से संशोधित कर लें ताकि उसका उपयोग ऐसी पाठ्य पुस्तकों के रूप में विद्यालयों में किया जा सके जो "कुछ प्रत्यक्ष नैतिक पाठ्य" प्रदान कर सकें।

किन्तु वे शक्तिशाली चरित्र के पुरुष थे। उनकी ईमानदारी रूखे किस्म की थी, और उसने उन्हें कभी धोखा नहीं दिया। वकालत करते समय उन्होंने ऐसे लोगों का मुकदमा लड़ने से इनकार कर दिया था जिन्हें वे अपराधी समझते थे: "मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि एक जाने हुए गलत पक्ष को बचाने के लिए उसे सही सिद्ध करने के बारे में पुराने वकीलों ने क्या कहा है। मैं उस सबसे इनकार करता हूँ और उससे घृणा करता हूँ। यदि कोई बुरा मनुष्य इस प्रकार का काम कराना चाहता है तो मैं उस काम को अपनी आत्मा से नहीं करूँगा। मैं नहीं चाहता कि मुझे चेचक की बीमारी हो, किन्तु वह भी इस बात की अपेक्षा कि मैं एक बदमाश व्यक्ति को यह अनुमति दूँ कि वह अपनी बुराइयों और दुष्प्रवृत्तियों को मुझमें संचारित कर दे, अधिक सहनीय होगा। इसलिए कि उसने प्रथम कोटि का अपराध किया है, क्या मुझे भी न्यायालय द्वारा उसे निर्दोष मुक्त कर देने के लिए द्वितीय कोटि का अपराध करना चाहिये ?'" मैन के इन शब्दों को पढ़ते हुए हमें इस बात का स्मरण हो आता है कि किस प्रकार अब्राहम लिंकन ने वकीलों के आचार-व्यवहार के सम्बन्ध में एक ऐसा ही तर्क प्रस्तुत किया था।

जब हम भविष्य की ओर देखते हैं तो हमें बहुत सी ऐसी बातें मिलती हैं जहाँ इस महान् अमेरिकी द्वारा इतने भद्र ढङ्ग पर चलाये गये गौरवपूर्ण कार्य को और भी आगे बढ़ाना जरूरी प्रतीत होता है। वस्तुतः, साक्षरता की लड़ाई मुख्य रूप से जीती जा चुकी है। अब हमें प्रायः सामान्य रूप से अपेक्षाकृत कम अपवाद के साथ यह चिन्ता करने की जरूरत नहीं रह गयी है कि अमेरिका के प्रत्येक बच्चे के पढ़ने और लिखने की व्यवस्था हो चुकी है या नहीं। वर्तमान और भविष्य के लिए हमारे लिए अधिक चिन्ता का विषय यह है कि ऐसे ज्ञान के अनेक सदुपयोगों के सिलसिले में बहुत सी ऐसी बातें भी उत्पन्न हो गई हैं जो अपमान-जनक हैं। केवल अशिक्षित लोग ही मूर्खता, असभ्यता, नृशंसता और नैतिक

शिथिलता का प्रदर्शन नहीं करते। हम ऐसे समाचार-पत्रों का भी उल्लेख कर सकते हैं जो लोकतन्त्र को प्रोत्साहित करने के बजाय उसका सामना करते हैं और उसके मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न करते हैं।

हम आज और अधिक पूर्णता के साथ यह सोचने के लिए बाध्य हैं कि समानता का अर्थ क्या है। मैन का आग्रह था कि जो बच्चे छोटे सार्वजनिक पाठशाला भवन में जाते हैं उन्हें भी उन बच्चों के समान ही अवसर मिलना चाहिये जो वैयक्तिक अकादमी में पढ़ते हैं। इस समय और भी ऐसे सम्प्रदाय हैं जो लिखना पढ़ना सीखने के लिए इस प्रकार के समान अवसर प्रदान करते हैं। किन्तु यदि देहात के प्रत्येक बच्चे के लिए वैसी ही श्रेष्ठ शिक्षा की व्यवस्था हो गयी है जैसी कि कुछ नगरों में प्रदान की जाती है, तो भी अभी हमें बहुत सी ऐसी जगहें मिलेंगी, जहाँ यह दिखाई पड़ेगा कि समानता का मतलब तदनुरूपता नहीं है। 'वस्तु-प्रधान' मस्तिष्क वाले बच्चे उतनी तत्परता के साथ पुस्तकों की ओर आकृष्ट नहीं होते, जितनी तत्परता के साथ 'शब्द-प्रधान' मस्तिष्क वाले होते हैं। वे बच्चे जिनका मस्तिष्क तीव्रतर गति से विकसित होता है, उन्हें उस समय अपना समय बरबाद करने के लिए बाध्य होना ही पड़ता है जिस समय कि मन्द मस्तिष्क वाले बच्चे उनके स्तर तक पहुँचने की कोशिश कर रहे होते हैं। कलात्मक स्वभाव वाले बच्चों को अभी भी हर जगह उस तरह के विशेष अवसर और सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं जो कि उनके जैसे बच्चों के लिए सर्व श्रेष्ठ स्कूलों में सुलभ हैं। अनेक ग्रामीण पाठशालाएँ अभी भी नगरों की पाठशालाओं से पीछे हैं। पीड़ित भावनाओं वाले बच्चों की प्रवृत्ति को उद्दण्डता के रूप में व्यक्त होने से रोकने के लिए मनोवैज्ञानिक सेवायें अभी भी उतने समान रूप में उपलब्ध नहीं हैं जितनी कि होनी चाहियें। बच्चों की प्रतिभाओं में भिन्नता पाई जाती है किन्तु वे इस बात में समान हैं कि प्रत्येक को स्वयं अपने उच्चतम स्तर तक विकसित होने के लिए समान अवसर का अधिकार प्राप्त होना चाहिये।

एक अन्य आवश्यकता भी है जिसकी ओर उन असहनशीलताओं ने हमें अपना ध्यान प्रेरित करने के लिए बाध्य कर दिया है जिनसे अन्य महान् अमेरिकी उदार नेताओं ने मोर्चा लिया है। यदि होरेसमैन, जिन्हें पागलों के श्रेष्ठ उपचार, ऋणियों के लिए अधिक न्याय, दासता के उन्मूलन तथा बिना किसी बाधा के सभी सार्वजनिक प्रश्नों पर वाद-विवाद करने के अधिकार के लिए संघर्ष करने का श्रेय है, आज जीवित होते तो वह हमसे अनुरोध करते कि हम अपने अध्यापकों का पक्ष लें, उनमें से उन अध्यापकों की सहायता करें और उनको

प्रोत्साहित करें जो यह जानते हैं कि किस प्रकार नया युग नई आवश्यकताएँ उत्पन्न करता है, और जो वर्तमान समय की शिक्षणपद्धति को इन महान् माँगों के अनुरूप बनाने के लिए उत्सुक हैं। इस समय अध्यापकों के लिए मुख्य खतरा उन लोगों की ओर से उत्पन्न होता है जो हमारे स्कूलों को पूर्णरूप से परम्परागत (जैसा कि वे समझते हैं) प्रणाली के अनुकूल बनाये रखना चाहते हैं और उस नई प्रणाली का विरोध करना चाहते हैं जिसकी अत्यधिक आवश्यकता है। इस प्रकार के लोग सोचते हैं कि अमेरिकीवाद का अर्थ यह है कि हम भूतकाल के उसी अंग पर दृष्टि टिकाये रखें जिन्हें हम अधिमान्यता देते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि स्वतन्त्रता की विरासत उन नवीन दावेदारियों के प्रति जाग्रत होने से ही सुरक्षित रखी जा सकती है जिनका सम्मान किसी भी सच्ची स्वतन्त्रता को करना चाहिये। स्वतन्त्र वाद-विवाद विलासिता नहीं, बल्कि एक महान् आवश्यकता है। यह केवल उन चीजों के लिए संकट बनकर आता है जो जाँच और शोध के प्रकाश का सामना नहीं कर सकतीं।

आज हमें अनेक नये आदर्श और समस्यायें अपनी ओर आकृष्ट कर रही हैं। उनका सामना हमें जिस भावना से करना है उसका संकेत होरेसमैन के इन शब्दों में मिलता है जो उन्होंने एँटियाक कालेज के विद्यार्थियों के समक्ष अपने अन्तिम प्रारम्भिक भाषण के दौरान में कहे थे:—

"यद्यपि कुछ हद तक, आपको इस जीवन में स्वयं अपने लिये जीना है, तथापि उसकी अपेक्षा कहीं अधिक अंश तक आपको दूसरों के लिए जीवित रहना है। महान् वरदानों को, कठिन श्रम द्वारा प्राप्त करना होता है जब कि महान् दोषों को दमन करना होता है। गरीबी की असमर्थता, रुग्णता, निःशक्तता, तथा प्रदर्शनकारी जीवन की मूर्खता, भूख की निर्ममता तथा व्यसन की दानवता, नगरों की सामूहिक बुराइयाँ, जिनकी संख्या उनके निवासियों से भी अधिक है, अज्ञान से उत्पन्न संकटों के समूह, युद्धजनित भौतिक और नैतिक विनाश, असहनशीलता के कष्ट, शारीरिक या मानसिक दमन की क्रूरता, नास्तिकता की देवत्वहीनता—ये सभी शत्रु सामूहिक रूप से हमारे बीच छाये हुए हैं, जिनके विरुद्ध उनके उन्मूलन के लिये युद्ध छेड़ देना है, और आप सबको ही योद्धा बनना है। भय के कारण कभी पीछे न मुड़ें, कभी पीछे न हटें, अपने पूरे शस्त्रों से सुसज्जित होकर इस संग्राम में कूद पड़ें।

"ट्रैफल्गर के भयंकर युद्ध में जब "विक्ट्री" नामक जलयान पर खड़े होकर लार्ड नेल्सन फ्रांस और स्पेन के सम्मिलित जहाजी बेड़ों की ओर बढ़े तो उनकी

रीढ़ की हड्डी में एक गोली लग कर उसमें समा गयी। वे जानते थे कि चोट घातक है, किन्तु जब वे घातक पीड़ा से गुंथते हुए पड़े थे...उस समय लगभग चार घंटे तक उनकी आत्मशक्ति और आकांक्षा उनके जीवन को सुरक्षित रखे हुए थी, और उन्होंने उस समय तक मृत्यु के सम्मुख समर्पण नहीं किया जब तक कि शत्रुओं के बेड़ों ने उनके समक्ष आत्म-समर्पण नहीं कर दिया।

"उसी प्रकार, दोषों और त्रुटियों के विरुद्ध जिस अमित गौरवपूर्ण संग्राम में आप संलग्न हैं, उसमें यदि कभी भी आपको पीछे हटना पड़े या चोट खाकर पराजित होना पड़े तो गिरजाघर या राज्य के कुछ भ्रष्टाचार, समाज के कुछ दोष या मूर्खता, कुछ झूठे मत, क्रूरता या अपराध जिन्हें आपने विजित किया हो, पर विजय के उल्लसित घोष से आपको सदैव शान्ति, ढाढ़स और प्रसन्नता होती रहे। और, मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि आप अपने हृदय में इस विदा के शब्दों को सदैव सुरक्षित रखें यदि आप मानवता के लिए कोई विजय प्राप्त नहीं करते, तो मरने पर लज्जित होना चाहिये।

अब्राहम लिंकन

आस्कर जीशनर

कुछ शताब्दी पूर्व के आत्म-शोषक उदारवादी के लिए अनिश्चितता और भ्रान्ति से पीड़ित होना स्वाभाविक ही था। नवीन बौद्धिक धाराएँ मनुष्य और समाज के स्वभाव सम्बन्धी उसकी अनेक आधारभूत मान्यताओं को अपने प्रवाह में बहा ले गई थीं। हमारे युग की नवीन निरंकुश क्रूरताओं—साम्यवाद और फासिस्तवाद—ने मानवीय प्रगति की अपरिहार्यता में उसके विश्वास को चुनौती दी, उन मूल्यों में से अधिकांश को अस्वीकार कर दिया जिनके लिए उसने प्रयत्न किये थे, और विश्व के सभी महाद्वीपों के कोटि-कोटि मानवों पर बलपूर्वक अपना सिक्का जमा लिया था। इतिहास के घटनाक्रम से भ्रम-मुक्त और उद्विग्न होने पर, यदि उदारतावादी वर्तमान के सम्बन्ध में प्रायः भ्रान्त, तथा भविष्य के सम्बन्ध में प्रायः अनिश्चित हो गया, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

स्वयं उदारतावाद के मन्तव्य में परिवर्तन हो जाने से इस भ्रान्ति में एक और भी तत्त्व का समावेश हो गया। एरिक गोल्डमैन ने आधुनिक अमेरिकी सुधार-आन्दोलनों के अपने विशिष्ट सर्वेक्षण में हमें यह बतलाया है कि किसी भी वर्ग से केवल यह प्रश्न पूछ कर उसका मुँह बन्द कर देना सरल है कि "उदारतावाद क्या है?" १९ वीं शताब्दी में उदारतावाद के दर्शन का जो अभिप्राय समझा जाता था, उसमें अत्यधिक परिवर्तन हो चुका है। जो लोग सन् १८०० में जेफर्सन के समर्थक थे, वे कदापि स्वतः-घोषित जेफर्सन-वादियों की कुछ वर्तमान किस्मों को आसानी से पहचान नहीं सकते। और सम्भवतः, लिंकन को कुछ लोगों के दृष्टिकोणों से, जो इस समय उनके नाम पर बोलने का दावा करते हैं, अपने सिद्धान्तों का समझौता करने में कठिनाई होगी।

वर्तमान और भूतकालीन उदारतावाद की प्रकृति और अमेरिकी इतिहास में उदार आदर्शों से सम्बद्ध कुछ व्यक्तियों के बारे में भ्रान्ति हो सकती है, किन्तु लिंकन के सम्बन्ध में किसी प्रकार के अभद्र मौन का अस्तित्व नहीं है। किसी भी अन्य अमेरिका-निवासी की अपेक्षा लिंकन के सम्बन्ध में लिखी गयी पुस्तकों की संख्या अधिक है। निस्सन्देह, वे हमारे सबसे महान् राजनीतिक महापुरुष हैं। सचमुच,

हममें से अधिकांश के लिए लिंकन अमेरिका की राजनीतिक अभिलाषा और प्रतिभा के मूर्त प्रतीक बन चुके हैं। किन्तु हम सभी लिंकन की जीवन-कथा के प्रत्येक विवरण के सम्बन्ध में सहमत नहीं। उदाहरण के लिए, परम्परागत चित्र के विपरीत, जिसमें लिंकन का चित्रण सरल और सुस्पष्ट रेखाओं द्वारा किया गया है, लिंकन विषयक विद्वानों ने हमें उनके व्यक्तित्व और विश्वासों की जटिलता से परिचित कराया है। लिंकन, वस्तुतः, विभिन्न, और यहाँ तक कि विरोधी, विशिष्टताओं के मिश्रण थे, जिनमें अनुदार और उदार, दोनों ही प्रकार के गुण सम्मिलित थे। इस विचार से कि वह 'महान् मुक्तिदाता' किसी भी दृष्टि से अनुदारतावादी था, संशयात्मक बुद्धि वाला उदारतावादी उद्विग्न हो उठेगा, किन्तु परम्परा के प्रति लिंकन के हृदय में निहित सम्मान का दर्शन पा लेना कठिन नहीं। वे, निश्चय ही, मौलिकतावादी आन्दोलनकारी नहीं थे; उनके सम्बन्ध में कभी कोई ऐसी घटना ज्ञात नहीं, जब कि उन्होंने जल्दी में या अनुचित रूप से परिवर्तन का अनुरोध किया हो। वे सतर्क, विवेकी और दूरदर्शी थे; उन्होंने सीमान्तवादी या उग्र होने की अपेक्षा मध्य मार्ग को सदैव अधिमान्यता प्रदान की। आधारभूत रूप से कहा जा सकता है कि उस समय भी, जब कि वे सुधार का पक्षपोषण कर रहे थे, वे सामान्यतः भूतकाल की श्रेष्ठ बातों को सुरक्षित रखना चाहते थे।

किन्तु लिंकन रूढ़िवादी नहीं थे। इसके विपरीत, उनके व्यक्तिगत और राजनीतिक स्वरूप का अन्य और अधिक आधारभूत पक्ष मूलतः उदारवादी, मानवीय और सुधारवादी था। उनकी जीवनकथा के सर्वश्रेष्ठ रचयिता ने उन्हें "दुरूह मस्तिष्क वाला उदार यथार्थवादी," प्रविधियों में अनुदारवादी, सिद्धान्त में उदारवादी तथा अमेरिकी परम्पराओं और आदर्शों के अनुसार शान्तिपूर्ण विकासवादी कहा है।

लिंकन का उदार दृष्टिकोण, निश्चय ही, मिडवेस्ट के तेजी से विकसित होने वाले समुदायों में प्रचलित सीमान्त प्रदेशीय सरल, भद्दी, और यहाँ तक कि कठोर, परिस्थितियों में उनके प्रारम्भिक अनुभवों द्वारा प्रभावित था। यहाँ पर उन्होंने दैनिक जीवन के स्तर पर लोकतन्त्र को व्यवहार में लाते देखा था। यहीं पर लिंकन ने सबल और स्वतन्त्र होने, तथा अपने पड़ोसियों की स्नेहिल हार्दिक मैत्री और सहानुभूतिपूर्ण निःस्वार्थ भावना के मूल्यों को महत्त्व देना सीखा था। यद्यपि उस परम्परागत विवरण में काफी अंश तक कल्पना का पुट है, जिसमें लिंकन को घोर दरिद्रता में उत्पन्न होना बताया गया है, किन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि बाल्य और युवावस्था में उन्हें आर्थिक और शारीरिक कठिनाइयों का सामना करना

पड़ा था। उन्होंने स्वयं भी सदैव इस बात पर जोर दिया था कि उनका प्रारम्भिक जीवन 'निर्धनों के संक्षिप्त और सरल इतिहास' का एक अध्याय था। किन्तु वे सीमान्त प्रदेशीय जीवन की बाधाओं को रौंद कर उनसे ऊँचे उठ गये, यद्यपि उन्होंने उस प्रदेश की कठोर परिस्थितियों से उसकी बहुत सी अच्छाइयाँ ग्रहण कर ली थीं। उन्होंने कठिनाइयों को सहन किया, शारीरिक तथा नैतिकता की दृष्टि से सबल बन गये; और अन्ततः आत्मनिर्भर और विश्वासी बन गये। किन्तु वे अपने निम्न स्तर के उद्भव को कभी न भूल सके; और कभी भी उन लोगों से उनका सम्बन्ध विच्छिन्न नहीं हुआ, जिनके बीच उनका जन्म हुआ था। बैंजमिन पी-टामस के शब्दों में, "वे अपने पुराने सम्बन्धियों के स्तर से आगे अवश्य बढ़ गये थे, किन्तु उनसे दूर कदापि नहीं थे।"

जनता से यह निकटता लिंकन के व्यक्तिगत और राजनीतिक सिद्धान्त का मौलिक अंग थी। वे अपने साथी नागरिकों पर विश्वास करते थे और उनसे प्रेरणा और शक्ति ग्रहण करते थे। उनका विश्वास था कि जब लोगों को उचित रूप से जानकार बना दिया जायगा, तो वे अपना शासन इस प्रकार कर सकेंगे, जैसा कि किसी ने कभी भी नहीं किया। उनका लोकतन्त्रीय विश्वास इस कथन में, जिसे उन्होंने स्वयं कहा था निहित है। "आप कुछ लोगों को हर समय और सभी लोगों को किसी किसी समय मूर्ख बना सकते हैं, किन्तु आप सभी लोगों को सभी अवसरों पर मूर्ख नहीं बना सकते।"

जन-साधारण में उनका विश्वास बौद्धिक विश्वास की बात नहीं थी; वस्तुतः, वह विश्वास साधारण लोगों की भावनामूलक आवश्यकताओं की गहन जानकारी पर आधारित था। जिस समय लिंकन राष्ट्रपति पद पर आरूढ़ थे, उस समय उन्होंने देश के साधारण नागरिक से जो कि आवश्यकतावश राष्ट्र के पथ-प्रदर्शक से मिलने और बात करने के लिये आतुर होता था, अपने-आपको पृथक् बन्द रखने से इन्कार कर दिया था। मृत्यु की धमकियों का उल्लंघन करते हुए भी लिंकन ने अपने लिए विशेष संरक्षक नियुक्त करने का विरोध किया था। उनका कहना था कि वे कोई सम्राट् नहीं थे और किसी सम्राट् की भाँति व्यवहार भी नहीं करेंगे। अपनी बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था कि यह बात बड़ी ही महत्वपूर्ण है कि लोग जानते कि मैं निर्भय होकर अपने उत्तरदायित्वों को कार्यान्वित करूँगा। उनसे मिलने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में उनको घेरे रहते थे, किन्तु प्रारम्भ में उन्होंने उनकी संख्या सीमित करने से इन्कार कर दिया था। उन्होंने अपने समय और शक्ति की इस अत्यधिक बरबादी का औचित्य

प्रमाणित करते हुए, अपने दर्शकों के सम्बन्ध में कहा था :—"वे कुछ बहुत नहीं चाहते हैं। उन्हें थोड़ा ही मिलता भी है......मैं जानता हूँ कि यदि मैं भी स्वयं उनकी जगह पर होता तो कैसा अनुभव करता।" वस्तुतः, जब राष्ट्रपति सम्बन्धी कार्यों का भार बहुत ही अधिक बढ़ गया और उसे पूरा करना जरूरी हो गया, तो उससे बाध्य होकर ही, अन्त में, लिंकन ने अपने दर्शकों की संख्या सीमित की।

लिंकन के उदारतावाद के कुछ पक्षों की व्याख्या उनकी सीमान्त प्रदेशीय पृष्ठभूमि द्वारा हो जाती है। उनमें से अधिक उल्लेखनीय वे सिद्धान्त थे, जिन्हें राजनीतिक जीवन में उनका मार्ग-दर्शक होना था—वे सिद्धान्त जो कि उस समय स्पष्टतः अधिक महत्त्वपूर्ण बन गये, जब कि उनकी अवस्था और उनके उत्तरदायित्व बढ़ने लगे थे।

उनके उदारतावाद के लिए आधारभूत महत्त्व की बात मनुष्य और सरकार के सम्बन्ध में वह दृष्टिकोण था जो टामस जैफर्सन और अठारहवीं शताब्दी के अन्य उदारवादियों की विचारधारा से अंकुरित हुआ था। अमेरिका निवासी अपने सबसे महत्त्वपूर्ण अभिलेखों—स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र और संविधान—में उनसे अच्छी तरह परिचित हैं। लिंकन को प्रायः अपने राजनीतिक विश्वास के कथन का अवसर मिला करता था। ऐसे ही एक अवसर पर, जब कि वे एक ऐसे राष्ट्र के राष्ट्रपति पद का भयंकर उत्तरदायित्व ग्रहण करने जा रहे थे, जिसके समक्ष गृह-युद्ध के भय मुँह बाये खड़े थे, उन्होंने कहा था :—"राजनीतिक दृष्टि से मुझमें कभी भी कोई ऐसी भावना उत्पन्न नहीं हुई, जो कि स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र में सन्निविष्ट भावनाओं से उत्पन्न न हुई हो।......मैंने प्रायः अपने-आप से पूछा है कि वह कौन सा महान् सिद्धान्त या विचार है, जो इस संघबद्ध राष्ट्र को एक सूत्र में इतने दीर्घकाल से बाँधे हुए है।" उन्होंने पूछा था कि क्या यह विचार केवल यह बात ही है कि हम इंग्लैंड से पृथक् हो गये? यह बात पर्याप्त नहीं हो सकती थी। वह बन्धन इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण था, और उसे स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र में ढूँढ़ा जा सकता है, जिसने कि, लिंकन के शब्दों में, "केवल इस देश के लोगों को ही स्वतन्त्रता नहीं प्रदान की, बल्कि समूचे विश्व को भविष्य भर के लिए आशा भी प्रदान की। उसी ने यह प्रतिज्ञा भी प्रस्तुत की कि उचित समय के भीतर मानव-मात्र के कन्धों पर लदा भार हटा लिया जाना चाहिये और सभी को समान अवसर मिलना चाहिए।"

उस समूची अवधि में जब कि लिंकन राजनीतिज्ञ की व्यावहारिक चालें और निपुणता सीख रहे थे, उन्होंने कभी भी इस आधारभूत सिद्धान्त की उपेक्षा नहीं की। अन्ततोगत्वा उन्होंने राजनीति की कला में उत्कृष्टता प्राप्त कर ली, और वैसा करने में उन्होंने यह देखा कि कभी-कभी उन्हें समझौता स्वीकार करना पड़ता ही है। उन्होंने देखा कि वैधानिक लोकतन्त्र में राजनीतिक सफलता का सारांश यह है जो कुछ भी सम्भव है, उसे प्राप्त किया जाय। कभी-कभी आदर्श लक्ष्य को अस्थायी तौर पर गौण बनाना पड़ सकता है, क्योंकि वे मानते थे कि असम्भव पर हठ करने का परिणाम केवल असफलता है। जैसा कि जेम्स रसेल लोवेल ने लिखा है :—"लिंकन की राजनीतिज्ञता उनकी महान् लक्ष्यों के प्रति निष्ठा में निहित थी, चाहे उन्हें पूरा करने में स्वार्थी मनुष्यों के छोटे और विरोधी स्वार्थों को संयुक्त करने के लिए बाध्य क्यों न होना पड़े।" लिंकन अपने राजनीतिक प्रयत्नों के महान् लक्ष्य, अमेरिकी लोकतन्त्र के संरक्षण और सुधार के प्रति अपनी निष्ठा में कभी विचलित नहीं हुए।

लिंकन का लोकतन्त्रीय विश्वास अनेक प्रकार से, तथा उनके राजनीतिक जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में, उनके शब्दों और कार्यों द्वारा व्यक्त होता रहा। अपनी प्रथम सार्वजनिक घोषणा में ही, जो कि इलीनोइस विधान सभा के लिए प्रचार करने के सिलसिले में की गयी थी, उन्होंने शिक्षा के महत्त्व की चर्चा की थी। लिंकन ने इस बात पर जोर दिया था कि श्रेष्ठ नागरिकता के लिए अखण्ड ज्ञान और स्वस्थ प्रज्ञा शक्ति मौलिक महत्त्व की वस्तुएँ हैं। क्योंकि, उन्होंने पूछा, इनके बगैर कोई व्यक्ति अमरीका की स्वतन्त्र संस्थाओं के महत्त्वों की प्रशंसा कैसे कर सकता है? उन संस्थाओं के महत्त्वों में से एक था: आर्थिक एवं सामाजिक निसेनी पर ऊपर चढ़ जाने का अवसर। लिंकन को इस विचार से अत्यन्त घृणा थी कि कोई व्यक्ति जीवन में किसी एक ही पद पर स्थिर बना रहे। उन्हें एक स्वनिर्मित व्यक्ति के उदाहरण के रूप में स्वयं अपनी ओर संकेत करना अत्यन्त प्रिय था; और उन्होंने सबके विकास सम्बन्धी अपनी आधारभूत आर्थिक धारणा की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए इस दृष्टान्त का उपयोग किया। उन्होंने नाटकीय ढंग से सफलता प्राप्त करने की कहानियों के अनेक दूसरे मामले भी देखे थे। इन मामलों में, अमेरिका ने कठिन अध्यवसाय, पहल, धैर्य, मितव्ययता, और साहस को उचित रूप में पुरस्कृत किया था। लिंकन का विश्वास था कि आर्थिक समृद्धि का द्वार उन्मुक्त रखना चाहिए। सन् १८६० में हार्टफोर्ड में भाषण करते हुए,

उन्होंने कहा था; "मैं किसी ऐसे कानून में विश्वास नहीं करता, जो किसी व्यक्ति के सम्पन्न होने में बाधक हो; उससे लाभ की अपेक्षा हानियाँ ही अधिक होंगी।...जब कोई व्यक्ति निर्धनता की स्थिति से प्रारम्भ करता है, जैसा कि जीवन की दौड़ में अधिकांश लोग करते हैं, तो स्वतन्त्र समाज ऐसा होता है जिसके अन्तर्गत वह व्यक्ति यह जानता है कि वह अपनी हालत सुधार सकता है। वह जानता है कि उसके समूचे जीवन के लिए श्रम की कोई एक स्थिर स्थिति नहीं है।"

अज्ञानी नागरिक वर्ग द्वारा अमेरिकी संस्थाएँ खतरे में पड़ सकती थीं; किन्तु यदि आर्थिक अवसर खत्म हो जाते, तो निश्चय ही, वे अपनी अधिकांश लोकतन्त्रीय प्रेरणा खो देतीं। किन्तु, लिंकन के और स्वयं हमारे समय में भी, स्वतन्त्र अमेरिका को अन्य दिशाओं से खतरों का सामना करना पड़ा। इनमें सामूहिक हिंसा और असहनशीलता के खतरे शामिल थे। लिंकन ने इनके विरुद्ध दृढ़ मोर्चा लिया। वे उनसे किसी भी शर्त पर समझौते के लिए प्रस्तुत नहीं थे। इलिनोइस के आल्टन नामक स्थान पर दास प्रथा के उन्मूलन के पक्षपाती, मौलिकतावादी नेता, एलिजा लवज्वाय, की हत्या के थोड़े ही दिन बाद लिंकन ने जन-समूह के ऊधमकारी शासन की निकृष्टता और दुष्टता से समझौता भंग कर लिया। लिंकन उन्मूलनवादी नहीं थे; इसके विपरीत, उन्होंने दास-समस्या पर उन्मूलनवादियों के उग्र दृष्टिकोण की निन्दा की थी और उसे अस्वीकृत कर दिया था। किन्तु वे इस प्रस्तावना का समर्थन भी नहीं कर सकते थे कि उन्मूलनवादियों की गतिविधि को बलप्रयोग द्वारा रोक देना चाहिए। लिंकन ने कहा था; कोई भी शिकायत ऐसी नहीं है, जो ऊधमकारी कानून द्वारा दूर करने का उपयुक्त विषय बन सकती हो।

बाद में चल कर, उनके जीवन-काल में दास प्रथा के प्रश्न को लेकर उत्तर और दक्षिण के बीच बढ़ते हुए विवाद ने जब राष्ट्र को गृह-युद्ध के निकट पहुँचा दिया, उस समय, मुख्यतः पूर्वी राज्यों में, अचानक 'नो-नथिंग' दल के नाम से एक नवीन राजनीतिक आन्दोलन चल पड़ा। विदेशियों के विरुद्ध विद्वेष भावना, और विशेष रूप से, आयर्लैण्ड के कैथोलिकों के विरुद्ध जन्म-जात शत्रुता, का दुरुपयोग करके शक्ति-संचय करते हुए नो-नथिंग आन्दोलन १८५० की दशाब्दी के मध्यकाल में तीव्र गति से एक सबल राजनीतिक शक्ति बन गया। यद्यपि अनेक राजनीतिज्ञों ने अपनी निम्नकोटि की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए इस नये राजनीतिक दल का उपयोग किया, किन्तु लिंकन ने उससे किसी भी प्रकार का नाता जोड़ना पसन्द नहीं किया। नो-नथिंग आन्दोलन जिन आदर्शों का

पोषक था, वे लिंकन के अपने आधारभूत उदार सिद्धान्तों के विरुद्ध थे। लिंकन ने इस सन्दर्भ में अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा था कि जब मैं हब्शियों तक का दमन करना घृणित समझता हूँ, तो गोरे लोगों के अपमान का समर्थन कैसे कर सकता हूँ। लिंकन ने कहा : "हमने एक राष्ट्र के रूप में इस घोषणा से कि 'सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं', प्रारम्भ किया था। अब हम व्यवहार में उसे इस प्रकार पढ़ते हैं: 'हब्शियों के अतिरिक्त अन्य सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं।' जब शासन की बागडोर नो-नथिंग दल के हाथ में आ जायगी, तो उसे इस प्रकार पढ़ा जायगा: 'हब्शियों, विदेशियों और कैथोलिकों के अतिरिक्त, अन्य सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं।' लिंकन ने कहा कि "जब हम इस सीमा तक पहुँच जायेंगे तो मैं किसी ऐसे देश में प्रवास कर लेना पसन्द करूँगा, जहाँ के लोग स्वतन्त्रता-प्रेमी होने का ढोंग नहीं रचते। उदाहरण के लिए रूस में, जहाँ आडम्बर के घृणित मिश्रण बगैर ही विशुद्ध निरंकुशता का आश्रय लिया जा सकता है।" इस राष्ट्र का सौभाग्य था कि नो-नथिंग आन्दोलन उल्का की भाँति जितनी शीघ्रता से उत्पन्न हुआ था, उतनी ही शीघ्रता से समाप्त भी हो गया।

किन्तु दास-प्रथा के प्रश्न को लेकर जो विवाद उठ खड़ा हुआ था, और जिसका अन्त गृह-युद्ध में हुआ, वह हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए नो-नथिंग आन्दोलन से भी बड़ा संकट सिद्ध हुआ। उस भयंकर युद्ध की अवधि में लिंकन पर राष्ट्रपति पद के नाते जो उत्तरदायित्व आ पड़े थे, उनसे वे भाग नहीं सकते थे। युद्ध के उन दिनों में उन्होंने जो सफलताएँ प्राप्त कीं, उन्होंने जहाँ उनकी महत्ता को जन्म दिया, वहीं उनकी वीरगति का कारण भी बन गयी।

इस दुःखद संघर्ष का सम्बन्ध हब्शी-दासता की अत्यन्त जटिल समस्या से था। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हब्शियों को अंग्रेजी उपनिवेशों में परतन्त्र श्रमिकों के रूप में लाया गया था। धीरे-धीरे, किन्तु निश्चित रूप से, दास-प्रथा ने जड़ पकड़ ली, विशेष कर दक्षिणी क्षेत्रों में, जहाँ आर्थिक स्थितियों के संयोग से, अधिकाधिक संख्या में हब्शियों का प्रयोग लाभकारी सिद्ध हुआ। किन्तु, सभी अन्य उपनिवेशों में भी दास-प्रथा स्थापित हो चुकी थी और उस समय उत्तर और दक्षिण के बीच दास प्रथा के प्रश्न पर नैतिक स्थिति में कोई अन्तर नहीं था। अमेरिकी क्रान्ति के पश्चात् उत्तरी राज्यों में, जहाँ आर्थिक संस्था के रूप में दास-प्रथा का महत्त्व अपेक्षाकृत कम था, और जहाँ नवीन अमेरिकी राष्ट्र के उदार आदर्शों के लिए अपना सुधारकारी प्रभाव उत्पन्न करना

अधिक आसान था, दास प्रथा लुप्त होने लगी। फिर भी, यह याद रखना रुचिकर है, कि सन् १७६६ तक न्यूयार्क दासों के बच्चों को स्वतन्त्र कर देने की कानूनी व्यवस्था नहीं कर सका था। दासों को पूर्ण रूप से उन्मुक्त कर देने की व्यवस्था तो सन् १८२६ तक नहीं हो सकती थी। न्यूजर्सी ने सन् १८०४ तक दास-प्रथा के उन्मूलन का काम प्रारम्भ भी नहीं किया था, और उस राज्य में इस प्रथा को अन्तिम रूप से उन्मूलित कर देने में ४० वर्ष और लगे।

किन्तु, दक्षिण में, वहाँ की विशेष आर्थिक परिस्थितियों तथा हब्शियों की बहुत बड़ी संख्या द्वारा उत्पन्न सामाजिक-मनोवैज्ञानिक समस्याओं के कारण, स्वतन्त्रता के घोषणा-पत्र में निहित इस आदर्श-वाक्य को कि 'सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं,' मूर्तरूप देने का काम अपेक्षाकृत अधिक कठिन था। वस्तुतः, दक्षिण के प्रमुख देशभक्तों ने दास-प्रथा की घोर भर्त्सना की थी। पैट्रिक हेनरी ने इसे एक 'घृणास्पद' बात, तथा 'मानवता, धर्म और स्वतन्त्रता के विरुद्ध संघर्षरत हिंसा और निरंकुशता की प्रणाली' कह कर इसका विरोध किया था। और टामस जेफर्सन ने यह आशंका प्रकट की थी कि जब कुछ मनुष्यों ने दूसरों को उनकी ईश्वर-प्रदत्त स्वतन्त्रताओं से वंचित कर रखा हो, तो उस स्थिति में नवीन राष्ट्र की स्वतन्त्रता भी सुरक्षित रह सकेगी अथवा नहीं। दुर्भाग्यवश, यह उदार भावना इतनी सबल नहीं थी कि वह दास प्रथा को जारी रखने की माँग करने वाले व्यावहारिक कारणों पर हावी हो जाती। दक्षिण की विशेष संस्था संविधान में निर्दिष्ट हो चुकी थी, और इस प्रकार, उसे संविधान का संरक्षण प्राप्त था। सन् १८०० में, जब इस प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था पर 'कपास-सम्राट्' का प्रभुत्व छा गया, दक्षिणी राज्यों के लिए यह श्रमिक प्रणाली और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो उठी।

दास-प्रथा के सम्बन्ध में लिंकन का दृष्टिकोण धीरे-धीरे विकसित हुआ। कहानी है कि लिंकन ने न्यू आर्लियन्स के दास-बाजार के निरीक्षण के परिणाम-स्वरूप ही इस प्रश्न पर अपना दृष्टिकोण निश्चित किया। वस्तुतः, नदी के उतार की दिशा में की गयी उस यात्रा के २० वर्ष बाद तक लिंकन ने कभी उस घटना का उल्लेख भी नहीं किया था, और लिंकन की विचारधारा को ढालने और ठोस रूप देने में इस अनुभव के प्रभाव के प्रति लिंकन-विषयक श्रेष्ठ विद्वान् भी शंकालु हैं। किन्तु, इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं कि वे सिद्धान्ततः दास-प्रथा के विरोधी थे, और उन्होंने बार-बार इस मत को दुहराया भी था। २८ वर्ष की अवस्था में उन्होंने तत्सम्बन्धी प्रश्नों की व्याख्या उनके यथार्थ रूप में की

थी : दास-प्रथा अन्यायोचित थी और राष्ट्र पर एक दुष्प्रभाव बनकर छायी हुई थी। फिर भी, उन्होंने पर्याप्त रूप से यह बात स्पष्ट कर दी थी कि जहाँ कहीं इसका अस्तित्व कानूनी अधिकार के बल पर बना हुआ हो, वहाँ से वे इसे उन्मूलित करने के प्रयत्नों के विरोधी थे। जिस समय गृह-युद्ध प्रारम्भ हुआ, ठीक उस समय तक दास-प्रथा के सम्बन्ध में लिंकन का दृष्टिकोण यही रहा। इस प्रकार का उदार और मध्यमार्गी दृष्टिकोण लिंकन की अपनी विशेषता थी। इसके दोनों ओर उग्रवादियों के दृष्टिकोण थे। एक ओर तो, वे लोग थे जो दास-प्रथा को वास्तविक अच्छाई मानकर उसका समर्थन करते थे, और इस प्रकार, उन आदर्शों को अस्वीकार करते थे, जो लिंकन की दृष्टि में अमेरिकी राष्ट्र के प्रतीक थे। दूसरी ओर, वे लोग थे जो देश को दास-प्रथा से मुक्त करने के उत्साह में संविधान को चुनौती देने, और शायद अमेरिकी गणराज्य को भंग तक कर देने के इच्छुक थे।

लिंकन के सिद्धान्त स्पष्ट थे। दास-प्रथा एक बुराई, 'एक राक्षसी अन्याय' थी। किन्तु, संविधान के अन्तर्गत, उसे देश के सर्वोच्च कानून का संरक्षण प्राप्त था, और, वस्तुतः, जब तक यह कानून था, तब तक उसे अवश्य लागू होना चाहिए। यही कारण था कि लिंकन ने दक्षिण वालों को बार-बार यह आश्वासन दिया था कि वे उस क्षेत्र में दास-प्रथा में किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप के विरुद्ध थे। लेकिन १८५० की दशाब्दी के मध्यकाल में, जब इस प्रश्न ने कि कांग्रेस के अधिकार-क्षेत्र के अन्तर्गत आनेवाले प्रदेशों के भीतर कहीं भी दास-प्रथा को फैलाया जा सकता है या नहीं, जोर पकड़ लिया, तो लिंकन ने असंदिग्ध और स्पष्ट रूप से यह दृष्टिकोण अपनाया कि कांग्रेस को अपने अधिकार-क्षेत्र के प्रदेशों के भीतर कहीं भी दास-प्रथा पर रोक लगाने का अधिकार है और उसे ऐसा करना भी चाहिए। सीनेटर डगलस के साथ हुए इतिहास-प्रसिद्ध वाद-विवाद के सिलसिले में लिंकन ने यही तर्क विकसित किया था।

हमारे देश की यह सबसे बड़ी दुःखान्त घटना थी कि लिंकन द्वारा इस समस्या की कुशल राजनीतिज्ञ जैसी जो उदार व्याख्या प्रस्तुत की गयी थी, उसे उग्रवादियों ने, और विशेष रूप से दक्षिण के उग्रवादियों ने, स्वीकार नहीं किया। दशाब्दियों तक लोगों की भावनाएँ उत्तेजित बनी रहीं, और सन् १८६० तक आते-आते, दक्षिणी मौलिकतावादियों का क्रोध उबल पड़ा, वे चुनौती देकर संघ को ही ध्वस्त करने पर तुल गये थे।

सन् १८६१ में नये राष्ट्रपति की हैसियत से लिंकन के समक्ष भयंकर उत्तरदायित्व उपस्थित था। किसी भी दिन गृहयुद्ध छिड़ जाने की आशंका थी। क्या उन लोगों की चुनौती के सामने, जिन्होंने पहले ही संघ से अपने राज्यों को पृथक् कर लिया था, लिंकन को अपने पाँव पीछे हटा लेने चाहिये? लिंकन अपने निर्णय से रत्ती भर भी न डिगे। संयुक्त राज्य जनता की सरकार थी, और सरकार के इस स्वरूप में मानवता की महान् आशा निहित थी। इस प्रकार के विश्वास का त्याग कदापि नहीं किया जा सकता था। कोटि-कोटि मूक मानवों का भविष्य और उनकी प्रसन्नता इस बात पर ही निर्भर थी कि यह राष्ट्र यह प्रमाणित कर सकता है या नहीं कि लोकतन्त्रीय सरकार 'निरर्थक' नहीं है। इतिहास यह सिद्ध कर चुका था कि जनता सफलता के साथ इस प्रकार की सरकार स्थापित और संचालित कर सकती है। लेकिन उसे अभी भी यह दिखलाना शेष था कि जनता इस सरकार को उलट फेंकने की बड़ी से बड़ी चेष्टा को सफलता से विफल कर सकती है। लिंकन ने कहा—"हमें अभी इस प्रश्न का निर्णय कर लेना चाहिये कि एक स्वतन्त्र सरकार के भीतर अल्पसंख्यकों को यह अधिकार है या नहीं कि वे स्वेच्छानुसार, जब कभी भी चाहें, सरकार को भंग कर सकते हैं। यदि हम "असफल रहे तो इससे पर्याप्त रूप से यह प्रमाणित हो जायेगा कि जनता में अपना शासन आप करने की क्षमता नहीं।" यही कारण था कि लिंकन ने यह संकल्प किया कि संघ को सुरक्षित बनाये रखने के उद्देश्य को लेकर युद्ध अवश्य छिड़ना चाहिए और उसे हर मूल्य पर जीतना चाहिए। इस युद्ध ने अमेरिका के, और, वस्तुतः, पश्चिमी सभ्यता के उदार राजनीतिक आदर्शों को सबसे बड़ी कसौटी पर ला खड़ा किया, क्योंकि सारे यूरोप की दृष्टि संयुक्त राज्य पर लगी हुई थी। क्या युग का सबसे महान् गणतन्त्र समाप्त हो जायगा? क्या स्वतन्त्रता और मानवता के आदर्शों पर आधारित सरकार एक ऐसी चुनौती के सामने पराजित होकर रहेगी जो दास-प्रथा की अच्छाइयों की पोषक थी? लिंकन ने बार-बार इन प्रश्नों को जनता के समक्ष, कांग्रेस के समक्ष और सारी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया। शायद इन सभी वक्तव्यों में सर्वश्रेष्ठ वक्तव्य वह है, जिससे अमेरिका निवासी सुपरिचित हो चुके हैं, जिसे उन्होंने अपने हृदय में स्थान दे रखा है—गेटिसबर्ग का वह अमर भाषण। उस भाषण के सिलसिले में कुल २६८ शब्द बोलने में लिंकन को जितना समय लगा, उसके कुछ ही क्षणों के भीतर उन्होंने अमेरिका के आदर्शों और उसके दुःखान्तपूर्ण युद्ध के महत्त्व को संक्षेप में इस प्रकार

प्रस्तुत कर दिया था—"स्वतन्त्रता के वातावरण में उत्पन्न और इस सिद्धान्त के प्रति, कि सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं, अपने-आप को समर्पित कर देने वाला एक नवीन राष्ट्र" और इस बात का निर्णय करने के लिए "कि इस प्रकार उत्पन्न और इस प्रकार समर्पित वह राष्ट्र दीर्घकाल तक जीवित रह सकता है या नहीं", एक रक्तपूर्ण गृह-युद्ध में उसकी परीक्षा। लिंकन ने आगे कहा कि उन सभी लोगों पर, जो कि भयंकर और विकट युद्धक्षेत्र में उनका भाषण सुन रहे थे, और, सचमुच, अमरीका की समस्त भावी पीढ़ियों पर यह उत्तरदायित्व है कि वे यह प्रमाणित कर दें कि इस राष्ट्र के लिए "परमात्मा की छत्रछाया में स्वतन्त्रता को नया जन्म मिलेगा; और जनता की, जनता द्वारा और जनता के लिए बनी सरकार पृथ्वी से कदापि मिट नहीं सकती।"

युद्ध में लिंकन के सफल नेतृत्व के फलस्वरूप राष्ट्र सुरक्षित बना रहा। किन्तु उन चार क्रूर वर्षों के भीतर भी उनके आलोचकों का अभाव नहीं था। इन आलोचकों ने लिंकन द्वारा कभी-कभी बाध्य होकर अपनाये गये उपायों के कारण उन पर सभी प्रकार की गलतियों, और यहाँ तक कि अधिक गम्भीर दोषारोपण किया था। निस्सन्देह, उनमें से कुछ उपाय अत्यन्त कठोर थे, किन्तु स्वयं लिंकन कभी भी कठोर नहीं रहे। जैसा कि उनके जीवन-कथाकार, टामस, ने कहा है :—"उन्होंने कड़े से कड़े अधिकारों का प्रयोग उदारता के साथ, व्यक्तिगत भावनाओं को ध्यान में रखकर तथा मानवीय अधिकारों का सम्मान करते हुए किया।" ऐसा प्रतीत होता था, मानो वह 'सरल प्रकृति और भावुक' उग्रवादी विचारों के विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से विद्रोही, किन्तु 'उच्च लक्ष्यों की दशा में' धीरे-धीरे और 'कभी-कभी रुक कर' बढ़ने वाले, उदार अमेरिका निवासी के मूर्त प्रतीक बन गये थे।

लिंकन ने पराजित दक्षिण के प्रति सहानुभूति और उदारतापूर्ण दृष्टिकोण पर आधारित पुनः एकीकृत गणतन्त्र के लक्ष्य की दिशा में ही नहीं, बल्कि कानून के अन्तर्गत समानता के महान् सिद्धान्त को स्वीकार करने की दिशा में भी राष्ट्र का मार्ग-प्रदर्शन किया। गृह-युद्ध संघ को सुरक्षित रखने के लिए लड़ा गया था, न कि दास-प्रथा को नष्ट करने के लिए। किन्तु जब लड़ाई आगे बढ़ी तो उसके दौरान दास-प्रथा का उन्मूलन अपरिहार्य हो गया। इस अवसर पर भी लिंकन ने सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सुधार करने के सिद्धान्त पर कार्य किया।

नवीन एकता की दिशा में राष्ट्र का मार्ग-प्रदर्शन करने का जो महान् कार्य शेष रह गया था, उसे सम्पन्न करने में अपनी महान् प्रतिभा और उदार राज-

नीतिज्ञता का प्रयोग करने का अवसर मिलने के पहले ही लिंकन को मृत्यु ने अपने अंचल में समेट लिया और उन्हें वीर गति प्राप्त हो गयी। युद्ध में विजय के फलस्वरूप शान्ति की स्थापना कर ली गयी, किन्तु देश में नयी घृणा व्याप्त थी और उग्रवादी लोग ह्वाइट हाउस के उस लम्बे दुबले व्यक्ति के विरुद्ध पुनः चुनौती देने लगे। कोई भी निश्चय के साथ यह नहीं कह सकता कि लिंकन को उन लोगों की अपेक्षा, जिन्होंने उनका अनुगमन किया था, युद्ध के घाव भरने में अधिक सफलता मिली होती। हमें इस बात का पता नहीं कि 'किसी के प्रति द्वेष नहीं और सभी के प्रति उदारता' के मानवीय सिद्धान्त स्वयं लिंकन के दल वाले उग्रवादियों को भी स्वीकार थे या नहीं। उनमें से कुछ ने तो लिंकन की हत्या को 'देश के लिए ईश्वर-प्रदत्त वरदान' तक कहा था। किन्तु इतिहास ने बहुत समय पहले से इन छोटे मानवों की मूर्खता और अदूरदर्शिता की निन्दा की है और लिंकन को वह अमरता प्रदान की है जिसे उनकी सफलताओं ने उनके लिए [illegible]जत किया था।

लिंकन के व्यक्तित्व में अमेरिका निवासी स्वयं अपने-आप को और महान् उदार तथा मानवीय आदर्शों के लिए अपने प्रयत्नों को मूर्तरूप में देखते हैं। वे लिंकन की आस्था से अपनी आस्था को पुनर्नवीन करते हैं; वे लोकतन्त्रीय सरकार को विस्तृत और सुरक्षित करने के लिए लिंकन द्वारा किए गये प्रयत्नों के उदाहरण से अपने आदर्शों को पुष्ट करते हैं। वे लिंकन के साथ ही यह विश्वास करते हैं कि स्वतन्त्रता अविभाज्य है और उस पर समस्त मानव-प्राणियों का अधिकार है; वे लिंकन की भाँति ही उनके जीवन-काल की अपेक्षा कहीं अधिक यह विश्वास करते हैं कि अमेरिकी लोकतन्त्र में 'सर्वत्र समस्त मानव प्राणियों में उत्तरोत्तर सुधार' की प्रतिज्ञा निहित है।

सुसन बी० एन्थोनी

(आइसीडोर स्टार)

हमारे संविधान में एक वाक्य है, जो इस प्रकार है—"संयुक्त राज्य के किसी भी नागरिक का मतदान सम्बन्धी अधिकार लिंग-भेद के कारण संयुक्त राज्य या किसी भी अन्य राज्य द्वारा न तो सीमित किया जाएगा और न ही अस्वीकार्य होगा।"

इन शब्दों का आशय अत्यन्त दुर्गम है। और, जब हम उनके ऐतिहासिक भूतकाल पर अपनी दृष्टि गड़ाते हैं, तो हमें वहाँ कुमारी सुसन बी० एन्थोनी का गौरवमय चित्र मिलता है, जो अमरीका की एक महान् नागरिक थीं और जिनका देहान्त लगभग आधी शताब्दी पूर्व हुआ था। किन्तु आज भी अमेरिका के राजनीतिक जीवन की उदार संस्थाओं में उनकी आत्मा जीवित है।

उदारतावादी व्यक्ति 'यथास्थिति' का विश्लेषण करता है और उस पर आशंकाएँ प्रकट करता है। यह स्वभाव का ऐसा स्वरूप है जो समाज को परिपक्व बनाता है। यथार्थ का, 'जो है' उसका, आलोचक होने के नाते, वह सदैव आदर्श के लिए, 'जो होना चाहिये' उसके लिए, शोध, चिन्तन-मनन और संघर्ष करता है। वह यह नहीं चाहता कि समाज अपने सिर के बल खड़ा हो। वह चाहता है कि उसका सुधार इस तरह कर दिया जाए, जिससे समस्त स्त्री और पुरुष एक साथ रहने के महान् साहसमय अभियान में साझेदार बन जाएँ, और इस प्रकार, एक श्रेष्ठ विश्व का सृजन करें।

सुसन ब्राउनवेल एन्थोनी इसी प्रकार की उदारवादी और इसी प्रकार की महान् महिला थीं। वह समस्त मानव-प्राणियों के लिए स्वतन्त्रता, समानता और सामाजिक न्याय की पोषिका थीं। मानवता के प्रति उनकी अपार श्रद्धा वर्ग, रंग, जाति, धर्म और लिंग-भेद की सीमाओं को बींध कर आगे निकल चुकी थी। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उनमें एक अद्वितीय मौलिक मस्तिष्क था, जिस पर उनके व्यक्तित्व की छाप थी—यह एक ऐसा तत्त्व था जो उस समाज के लिए, जिसमें वह उत्पन्न हुई थीं और रह रहीं थीं, सबसे अधिक उद्विग्नकारी सिद्ध हुआ।

जब सुसन बिलकुल बालिका थीं, तो उन्होंने अपनी अध्यापिका को एक बार यह कहते सुना था, "१६वीं शताब्दी की लड़कियों को ठीक-ठीक वैसा ही व्यवहार करना चाहिए, जैसा कि अन्य शताब्दियों की लड़कियों ने किया है......परम्परा की पवित्रता का सदैव सम्मान होना चाहिए"। किन्तु सुसन ने स्वयं अपनी आत्मा से पूछा—"क्यों ?" और वह इस निष्कर्ष पर पहुँची कि सभी परम्पराएँ समाज के लिए सर्वश्रेष्ठ नहीं होतीं। इस अन्तर्प्रेरणा के फल-स्वरूप एक महान् मानसिक संघर्ष-सा उनके हृदय में छिड़ गया।

वह कौन-सी रूपरेखाएँ थीं, जो उनके उदारतावाद के ढाँचे में प्रविष्ट थीं ? वह कौन-सी शक्ति थी, जिसने उन्हें अपने जीवन के ८६ वर्ष तक अपने युग की ज्वलन्त समस्याओं···मदिरापान, दास-प्रथा और महिलाओं के अधिकार—को सुलझाने के लिए अटूट श्रद्धा और भक्ति के साथ अध्ययन करने और अनु-सन्धान करने के लिए प्रेरित किया था ? उनके सम्बन्ध में उनकी निकटतम मित्र, एजिलाबेथ केडी स्टेंटन ने यह विचार व्यक्त किया था; "प्राचीन यूनान में वह एक स्टोइक हुई होतीं, सुधार के युग में वह एक कैलविनवादी हुई होतीं, सम्राट् चार्ल्स के युग में वह प्योरिटन हुई होतीं, किन्तु इस १६ वीं शताब्दी में अपने अस्तित्व के मूलभूत नियमों द्वारा ही वह एक सुधारिका है।" सम्भवतः, उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में यह व्याख्या उतनी ही अच्छी है जितनी कि अन्य व्याख्याएँ। वह उस रहस्यपूर्ण और अद्भुत चिनगारी के साथ उत्पन्न हुई थीं जो एक सुधारक को पुष्टिवादी से पृथक् करती है।

सुसन के जीवन के प्रथम ३० वर्ष हमारे इतिहास की सब से असामान्य अवधियों में गिने जाएँगे। वह अवधि जैक्सनवादी लोकतन्त्र का युग थी। वह युग अपने आदर्शवादी उद्वेगों, अपनी बौद्धिक विकलताओं और सामाजिक न्याय के लिए अपनी खोज के लिए विख्यात था। इन सभी बातों ने सुसन के हृदय के ऐसे तार झंकृत कर दिये थे, जिसमें अनुकूल प्रतिक्रिया होने लगी थी। उसने उनके हृदय में अपने युग में उभड़ते हुए मानवतावाद में हिस्सा लेने की आवश्यकता का सृजन किया था।

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि उनके असामान्य माता-पिता ने उदारतावाद की ज्वाला को जीवित रखने में प्रमुख भूमिका अदा की थी। उनके पिता एक स्वतन्त्र, और हम कह सकते हैं कि एक विद्रोही, क्वेकर थे और उनकी माता अत्यन्त भावुक बपतिस्मावादी थीं, उन दोनों ने आपस में मिलकर एक ऐसा पारिवारिक वातावरण उत्पन्न कर लिया था जिसकी विशेषताएँ थीं—

नैतिक उत्साह और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, यहाँ तक कि महिलाओं के लिए भी स्वतन्त्रता का सम्मान। उनका रोचेस्टर स्थित भवन विलियम लायड गैरिसन, वेण्डेल फिलिप्स और फ्रेडरिक डुगलास जैसे धार्मिक योद्धाओं का मिलाप स्थल बन गया था। सुसन का इन व्यक्तियों से व्यक्तिगत परिचय हो गया और जिस चिनगारी को लेकर वह उत्पन्न हुई थीं, वह इन व्यक्तियों की मित्रता के वातावरण में फलने-फूलने लगीं।

सम्भवतः ये सब प्रभाव—अन्तर्प्रेरणा, आत्मा, माता-पिता और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के दृष्टान्त—यह स्पष्ट करने में सहायक होते हैं कि उन्होंने अपने जीवन को सुधार के लिए क्यों समर्पित कर दिया था तथा महिलाओं के लिए मतदान-आन्दोलन में ही अपनी भावनाओं, धार्मिक विश्वासों और अपनी सामाजिक दर्शन की अभिव्यक्ति का मार्ग क्यों पाया था।

न्यूयार्क के रोचेस्टर नामक स्थान पर स्थित सार्वजनिक स्कूलों में अध्यापन करते हुए उन्हें वेतन में प्रति मास केवल ८ डालर मिलते थे, जब कि उसी प्रकार के काम के लिए पुरुषों को २५ और ३० डालर तक मिलते थे। इस बात से वे अत्यन्त उद्विग्न थीं, विशेषकर इसलिए कि एक अवसर पर उन्हें एक देहाती स्कूल में काम दिया गया था, जहाँ पर उनसे पहले के पुरुष अध्यापक को, उद्दण्ड छात्रों के एक ऐसे शरारती वर्ग ने कक्षा से वस्तुतः बाहर ढकेल दिया था, जिसका सामना किसी भी छात्र पीड़ित अध्यापक को उससे पहले कभी भी नहीं करना पड़ा था। किन्तु जहाँ पर पुरुष अध्यापक असफल रहा, वहाँ सुसन को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई। इस भद्र क्वेकर लड़की ने ऊधम मचाने वाले छात्रों को पकड़ लिया, अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ा लीं, एक मजबूत कड़ा बेंत उठा लिया, और, जैसा कि उनके निकटतम मित्र ने उस घटना का उल्लेख किया है, परिणाम से कारण को निकालने वाले तर्क के ढंग का प्रदर्शन करते हुए, प्रतिवादी के सिद्धान्त के अनुसार ही, उन्हें पराजित कर दिया। इस सफलता के लिए उन्हें ऐसी चरम प्रशंसा प्राप्त हुई, जैसी पुरुष की महिलाओं को पहले कभी भी प्राप्त नहीं हुई थी। समाज के पुरुषों में से एक ने उस सम्बन्ध में कहा था—"सच, इस महिला में जो पुरुष जैसा तेज है"; और यह सत्य भी था।

उनके समस्त जीवन काल में उनमें इस तेजस्विता की कभी भी कमी न रही। उन्होंने सफल अध्यापन के २५ वर्षों की उस अवधि में ही सभी अध्यापकों के लिए समान कार्यों पर समान वेतन की माँग की थी। वे न्यूयार्क

राज्य अध्यापक-संगठन की बैठकों में प्रमुख रूप से भाग लेती थीं। वहाँ पर महिलाओं के लिए उन सभी अधिकारों की माँग करतीं थीं जो कि पुरुषों को प्राप्त थे। वे लगातार प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करती रहीं और प्रस्ताव पेश करतीं रहीं। इसके अतिरिक्त, वे सार्वजनिक स्कूलों में हब्शी अध्यापकों और बच्चों के विरुद्ध भेदभाव से भी संघर्ष करती रहीं। वे सभी स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में लड़कों और लड़कियों, दोनो के लिए, समानता और सह-शिक्षा में रुचि लेतीं थीं।

वस्तुतः, ३० वर्ष की अवस्था में ही कुमारी एन्थोनी ने सुधार संबंधी अपने विचारों को सार्वजनिक रूप से प्रचारित करना प्रारम्भ किया। उस समय उनके सम्मुख उपस्थित समस्या 'मदिरा के दैत्य' से सम्बद्ध थी।

अमेरिका में बसने वाले लोगों ने इंग्लैण्ड के जिन रीतिरिवाजों को अपने यहाँ अपनाया, उनमें से एक था तेज मदिरापान। अमेरिका निवासियों ने लगभग तत्काल ही, एक प्रकार की देशी ह्विस्की और सेब की शराब का अन्वेषण करके उस रिवाज को और भी आगे बढ़ाया। एक ऐसे विश्व में, जहाँ हर प्रकार के उल्लास पर प्योरिटनों जैसे कड़े प्रतिबन्ध थे, मनोरंजन की उत्सुकता से तलाश की जा रही थी और उसे प्रायः मदिरापन में पाने की कोशिश की गई। मदिरापान की बुराई के साथ ही साथ बुराई का एक अन्य पहलू यह था कि १६ वीं शताब्दी के पुरुषों में मदिरा पीने की अद्भुत क्षमता आ गई थी। प्रत्येक अतिथि के लिए २ बोतल शराब को वास्तविक मदिरापान का केवल प्रारम्भिक बिन्दु समझना एक असामान्य बात न थी।

मदिरापान के शिकार केवल पुरुष ही न थे, बल्कि उनकी स्त्रियाँ और बच्चे भी थे। नशाबन्दी आन्दोलन ने मदिरा के प्रयोग से उत्पन्न अपराधों और पीड़ाओं से परिचित होकर उसकी बिक्री बन्द करने का प्रयत्न किया।

अलबानी में नशाबन्दी के अनुयायियों द्वारा आयोजित एक सभा के प्रतिनिधि की हैसियत से कुमारी एन्थोनी ने सभा में उठने और एक प्रस्ताव पर बोलने की अनुमति प्राप्त करने का प्रयत्न किया। किन्तु उन्हें तत्काल सूचना दी गयी कि इस बैठक में महिलाएँ केवल देखने, सुनने और सीखने के लिए बुलाई गई हैं, भाषण करने के लिए नहीं। इसका उत्तर उन्होंने अपने व्यक्तिगत ढंग पर दिया। उन्होंने न्यूयार्क की महिला मदिरा-निषेध समिति को संगठित करने में सहायता पहुँचाई जो अपने किस्म का अकेला संगठन था।

किन्तु, सार्वजनिक मामलों में महिलाओं द्वारा हिस्सा लेने का विरोध व्यापक और अत्यन्त शक्तिशाली था, और कभी-कभी तो यह विरोध हिंसा की सीमा तक पहुँच जाता था। उत्तरोत्तर सुसन का यह विश्वास दृढ़ होता गया कि समान अधिकारों के माध्यम से ही महिलाएँ सामाजिक सुधार के लिए सक्रिय कार्यकर्त्री बन सकती हैं।

मदिरा-निषेध आन्दोलन के सिलसिले में उन्होंने जो कार्य किया, उससे दास-प्रथा विरोधी लड़ाई में एक सुधारक के रूप में उनका मार्ग प्रशस्त हुआ। १८५० की दशाब्दी में कुमारी एन्थोनी ने अमेरिकी दास-प्रथा विरोधी समिति के लिए कार्य किया। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी, क्योंकि इस अवधि के सुधारक मदिरा-विरोधी और दास-प्रथा-विरोधी, दोनों ही आन्दोलनों से सम्बद्ध थे। किन्तु कुमारी एन्थोनी ने मौलिकतावादी उन्मूलन के पोषकों का दृष्टिकोण अपनाया और इस नारे के साथ प्रचार किया 'दास रखने वालों के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं।' आज की ही भाँति उस समय भी किसी अलोकप्रिय उद्देश्य के पोषण के लिए महान् साहस की जरूरत थी और जैसा कि अपेक्षित था, उन्हें भी सामान्य भाग्य का सामना करना पड़ा। शोरगुल मचाने वाले ऊधमी गुण्डों और तोड़फोड़ करने वाले उद्दण्ड दंगाई लोग थे, व्यंग्य, उपहास, कराह, सड़े अण्डे, और जलते हुए पुतले थे। यह था ऐसे आन्दोलनों के प्रचारकों का भाग्य। किन्तु उन्होंने डटकर मोर्चा लिया और पुरुष की भाँति अपने मोर्चे पर डटी रहीं।

गृहयुद्ध के पश्चात् कुमारी एन्थोनी, वह पहली महिला थीं, जिन्होंने हब्शियों के लिए मतदान अधिकार का पक्ष पोषण किया। इसके साथ ही साथ, उन्होंने इस बात के लिए भी लड़ाई लड़ी कि १४ वें संशोधन में एक व्यवस्था करके महिलाओं तथा पुरुष हब्शियों के लिए मतदान के अधिकार प्रदान कर दिये जाएँ। जब स्वीकृत हो जाने पर इस संशोधन ने संविधान में पहली बार 'पुरुष' शब्द का प्रवेश कराया, तो वह फूट पड़ीं और उन लोगों का साथ देने से इन्कार कर दिया, जिनका विश्वास था कि यह अवसर हब्शियों के मताधिकार के लिए ही उपयुक्त है। वह चाहती थीं कि 'पुरुष' शब्द हटा दिया जाय, क्योंकि उनका विचार था कि ऐसा करने से हब्शियों और महिलाओं, दोनों को मतदान का अधिकार मिल जाएगा। किन्तु इस पराजय के साथ उनमें अपना सम्पूर्ण जीवन केवल एक सुधार के लिए बलिदान कर देने का संकल्प जाग्रत हुआ, जिससे महिलाओं को पुरुषों जैसी ही गौरव-

भावना प्राप्त हो सकती थी, और वह सुधार था मतदान का अधिकार। वह चाहती थीं कि ऐसा करके महिलाओं के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक पद का निर्धारण कर दिया जाय।

सुसन बी० ऐन्थोनी शरीर की आकृति से आकर्षक महिला थीं। उनके मुख पर एक आध्यात्मिक सौन्दर्य की आभा थी, जो प्रायः महान् उद्देश्यों के प्रति जीवन-पर्यन्त निष्ठा से उत्पन्न होती है। उनके विवाह के लिए जो प्रस्ताव आये थे उनमें से एक प्रस्ताव एक सम्पन्न दुग्ध व्यवसायी कृषक की ओर से भी आया था, जिसने अपना परिचय देते हुए उनसे बतलाया था कि वह अपनी ६० गायों का दूध दुहकर अच्छा रोजगार चला सकता है।

अनेक व्यक्तियों ने उनसे विवाह का प्रस्ताव किया था, किन्तु उन्होंने विवाह करने और पुरुष का कानूनी दास बनने से इन्कार कर दिया था। उनका तर्क यह था कि वह यह स्वीकार नहीं कर सकतीं कि उनके प्रेम का पात्र पुरुष, जिसे संविधान में एक गोरा पुरुष, देश में ही उत्पन्न अमेरिकी नागरिक, स्वशासन के अधिकार से सम्पन्न, महान् गणतन्त्र के राष्ट्रपति पद के लिए योग्य कहा गया है, विवाह में एक राजनीतिक दासी और जाति-च्युत के साथ अपने भाग्य का गठबन्धन करे। वह चीख पड़ी थीं; "नहीं, नहीं, ऐसा हरगिज नहीं होगा। जब मुझे स्वयं भी नागरिक के समस्त अधिकार, सुविधाएँ और मुक्तियाँ प्राप्त हो जायँगी, तो मैं इन विशेष समस्याओं पर कुछ विचार सकूँगी। किन्तु उस समय तक मुझे अपनी समस्त शक्तियाँ महिलाओं के लिए मतदान अधिकार प्राप्त करने पर ही केन्द्रित कर रखनी चाहिएँ।"

१९वीं शताब्दी के मध्य में महिलाओं और पुरुषों के बीच वैधानिक सम्बन्ध को जान लेना रुचिकर होगा। निस्सन्देह, महिलाओं के, और विशेषकर भावुक महिलाओं के लिए उस समय के अनेक रीति-रिवाज सामाजिक विद्वेष और नास्तिकता से उत्पन्न प्रतीत होते थे। सामान्य रूप से, उनके लिए अधिकांश शिक्षा संस्थाओं का द्वार बन्द था, लाभप्रद रोजगार के बहुत ही कम साधन उपलब्ध थे, उनकी आय, और उनकी सम्पत्ति पर उनके पतियों का स्वामित्व था और कानूनी तौर पर बच्चों पर बाप का ही नियन्त्रण होता था। संक्षेप में, ऐसा प्रतीत होता था कि महिला अपने पुरुष सम्बन्धी की केवल सम्पत्ति मात्र है।

महिलाओं को छोटा समझने की धारणा को सामान्य मान्यता मिलने का एक सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह बात थी कि अमेरिका का कानून अंग्रेजों के

सामान्य कानूनों पर आधारित था; हमारे वकीलों और विधायकों पर ब्रिटेन के अनुदार नेता सर विलियम ग्लैडस्टोन का व्यक्तित्व छाया हुआ था, जो कानून के बड़े भारी पंडित थे। ग्लैडस्टोन के दृष्टिकोण से कानून के नियमों के अनुसार, विवाहित महिला कानूनी तौर पर मर चुकी होती है। यह एक ऐसा सिद्धान्त था, जिसका अमेरिका के तत्कालीन कानून में इस प्रकार उल्लेख हुआ था; "विवाह में पुरुष और महिला एक हो जाती हैं और वह इकाई पति होता है।"

यह क्वेकर लड़की, जिसने कभी पहले मतदान का प्रयोग नहीं किया था, यह विश्वास करती थी कि केवल लोकतन्त्रीय अस्त्रों में से सबसे महत्त्वपूर्ण अस्त्र—राजनीतिक मताधिकार—प्राप्त करने से ही स्त्री अपनी असमर्थतायें समाप्त कर सकती है, और अपने लिए समाज में वह गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकती है जिसकी वह उचित रूप से अधिकारिणी थी।

आधी शताब्दी की वह अवधि, जिसके भीतर सुसन बी० ऐन्थोनी महिलाओं के मताधिकार की लड़ाई में सबसे अगले मोर्चे पर थीं, एक महान् उदारतावादी के सक्रिय अस्तित्व का आदर्श दृष्टान्त प्रस्तुत करती है। वह यह प्रदर्शित करती है कि अनवरत दबाव द्वारा एक असाधारण व्यक्तित्व उस क्षिप्रगामी मानव जनसमूह पर, जिसे हम समाज कहते हैं, अमित छाप छोड़ सकता है।

प्रथमतः, उन्होंने अपनी अद्भुत शारीरिक सहनशीलता का प्रयोग देश भर की यात्रा करने में किया और इस सिलसिले में वह उन सभी लोगों को, जिनसे वह मिलती थीं, अपने लक्ष्य के महत्त्व का परिचय देती जाती थीं। यहाँ १८७१ के अन्तिम दिन के उनके डायरी के लेख से एक संक्षिप्त उद्धरण दिया जा रहा है।

"दोपहर में मैडिसिन को छोड़ा, एक गहरे बर्फीले कटाव से जो १० फुट लम्बा था, होकर गई.........१० बजे रात में लारामाइन पहुँची। इस प्रकार, १८७१ का वर्ष समाप्त होता है जो राकी माउण्टेन के पूर्व में ६ महीने और पश्चिम में ६ महीने, के कठिन श्रम से पूर्ण वर्ष रहा है, १७१ भाषण, १३००० मील की यात्रा; कुल प्राप्ति ४,३१८ डालर; ऋण के २२७६ डालर अदा किये। आगे पैदल भूमि नापने के अलावा और कुछ नहीं है।"

खलियान, कूड़े करकट की गाड़ियाँ, खुले मैदान की सभायें, और यहाँ तक कि रेलगाड़ी के डब्बे उनके मंच थे, जहाँ से वह अपने विचारों का प्रचार

किया करती थीं। उसी प्रकार, सारा तोगा हिग्ग्स की बड़ी-बड़ी सभायें भी थीं, जिनमें वह अपने दृष्टिकोण का प्रचार करती थीं। उन्होंने दो बार यूरोप की यात्रा की—दूसरी बार ८४ वर्ष की अवस्था में लन्दन और बर्लिन में आयोजित महिला अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्मेलनों में भाग लेने के लिए।

वह अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए न तो किसी व्यक्तिगत त्याग को अत्यधिक बड़ा मानती थीं और न ही किसी कष्ट को अत्यधिक समझती थीं। सुसन बी० ऐन्थोनी ने इस उद्देश्य से यात्रायें की थीं कि वह महिला मताधिकार के सन्देश को सर्वत्र पहुँचा सकें। अवसर पड़ने पर सप्ताह में ५ और ६ बार तक भाषण करते हुए, और प्रायः अनुपस्थित प्रवक्ताओं की जगह भाषण करते हुए वह कभी भी किसी श्रोता वर्ग के सम्मुख आने में हिचकिचाती नहीं थीं। यहाँ तक कि ऐसी सभाओं में भी बोलने से नहीं हिचकती थीं, जिन पर उन उद्दण्ड श्रोताओं का प्रभुत्व होता था, जो सीटी बजाने में अपना गला फाड़ डालते थे, सड़े टमाटर फेंकते थे और बुरे तथा गन्दे किस्म के शोर मचाते थे। बाद के जीवन में, वह एक बड़ी और उत्साहपूर्ण श्रोता-मण्डली के सम्मुख पुरानी बातों को याद करने से अपने आपको रोक नहीं सकीं; "समय अद्‌भुत परिवर्तन लाता है। इस नगर में ही, जहाँ मुझ पर गुलाब के फूल फेंके गये हैं, किसी समय सिर्फ वही बातें कहने पर जिनकी चर्चा मैंने आज रात में की है, मुझ पर सड़े अण्डे फेंके गये थे।"

सुसन बी० ऐन्थोनी विधान सभा समिति की सुनवाई के अवसर पर एक परिचित व्यक्तित्व बन गयीं। न्यूयार्क में उन्होंने विवाहित महिला द्वारा उपार्जित आय और उसके अपने बच्चों के संरक्षक होने से सम्बद्ध कानूनों को ढीला करने का जोरदार प्रयत्न किया। वाशिंगटन में वे लगातार कई वर्ष तक अन्य लक्ष्यों की तुलना में अपने सबसे बड़े लक्ष्य—संविधान में संशोधन—के लिए लड़ती रहीं। वह सदैव इस बात का प्रयत्न करती रहीं कि महिलाओं के मताधिकार का प्रश्न डिमाक्रैट और रिपब्लिकन मंचों से भी उठाया जाय, लेकिन इस दिशा में उन्होंने जो सफलता पाई वह 'पृथक् हो गये लोगों' तक ही सीमित थी। उन्होंने प्रभावशाली व्यक्तियों से पत्र-व्यवहार करने और दो वर्ष तक 'दी रिवोल्यूशन' नामक पत्रिका प्रकाशित करने के लिए समय निकाल लिया था। अनेक आत्मतुष्ट नागरिक इस पत्रिका के चुनौती से भरे ढंग और नारे से लगातार उद्विग्न रहे होंगे, जिसने यह घोषणा की

थीं "पुरुष, उनके अधिकार और उससे अधिक कुछ नहीं; महिलायें उनके अधिकार और उससे कम कुछ नहीं।"

किन्तु इतना ही नहीं था। कुमारी ऐन्थोनी ने इस महान् आन्दोलन की सफलताओं और शेष कार्य पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालने के लिए 'महिला मताधिकार का इतिहास' लिखना आवश्यक समझा। उन्होंने एलिज़ाबेथ केडी स्टैण्टन और मथिल्डा जोसलिनगेग के साथ कई अंकों में एक पुस्तक लिखना प्रारम्भ किया, जिसमें सभी महत्त्वपूर्ण आँकड़े दिये गये थे, ताकि जनता को शिक्षित और अच्छी तरह परिचित कराने में सहायता मिले।

यह सभी कार्य महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी था। किन्तु अभी तक हमने उनके सबसे बड़े कार्य—वह कार्य जो कि सभी उदारतावादियों के लिए एक ठोस और महत्त्वपूर्ण शिक्षा सिद्ध होता—का स्पर्श भी नहीं किया है।

प्रत्येक महान् सुधार आन्दोलन के इतिहास में एक ऐसा समय आता है, जब समय बहुत ही निराशापूर्ण, बाधायें अत्यधिक और पराजय सबसे अधिक अप्रोत्साहक प्रतीत होती हैं। एक ऐसा समय आता है, जब कि आन्दोलन के प्रधान अभिनेता—महान् प्रवक्ता और प्रतिभाशाली लेखक—अपनी भूमिका अदा कर लेने पर मंच से पृथक् हो जाते हैं। एक समय आता है जब सुधार आन्दोलन इतिहास के क्षितिज के तट पर चक्कर काटने लगता है। महिलाओं के मताधिकार आन्दोलन के इसी अवसर पर सुसन बी० ऐन्थोनी ने अपना सबसे बड़ा योगदान किया था। सुधार-आंदोलन की वार्ताओं के साथ-साथ राजनीतिक परिवर्तन के लिए आन्दोलन भी प्रारम्भ हुए।

अपने समस्त उपलब्ध अस्त्रों का प्रयोग करके उन्होंने सभी मोर्चों पर··· राज्य विधान सभा, क्षेत्रीय सरकारों और कांग्रेस पर—चोटें पहुँचाईं। वह किसी को भी वह आदर्श—संविधान का संशोधन · भूलने नहीं देती थीं।

किन्तु आन्दोलन के सम्बन्ध में सदैव असंख्य और अनन्त साधारण विवरण—वे कठोर तत्त्व जिनका दिन प्रतिदिन आन्दोलन को जीवित रखने के लिए समाधान और सामना करना अनिवार्य था, भी सम्मुख उपस्थित रहते थे। वह केवल एक महान् संयोजिका, कुशल युक्तिकार और नेत्री ही नहीं थीं, वह दैनिक कार्यों की निर्देशिका भी थीं। धन एकत्र करना था, प्रवक्ताओं का प्रयोग करना था, सभायें संगठित करनी थी, प्रार्थना-पत्रों पर हस्ताक्षर करने थे, और उचित अधिकारियों के पास प्रस्ताव पेश करने थे। और उन्होंने

यह सब कार्य—सम्भव होने पर दूसरों के साथ मिलकर और आवश्यक होने पर अकेले ही—सम्पन्न किया।

आयोजन और प्रबन्ध करने की उनकी महान् कुशलता का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन उन संस्थाओं के निर्माण में हुआ जो व्यापक कार्यों के महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गये। जब मदिरा-निषेध के अनुयायी अपर्याप्त प्रतीत हुए, तब सुसन ने न्यूयार्क में महिला राज्य मदिरा निषेध समिति का निर्माण किया। उसके पश्चात्, अमेरिकी समान अधिकार संगठन की स्थापना हुई, और फिर राष्ट्रीय महिला मताधिकार संघ बना, जिसका निर्माण संघीय संविधान में एक संशोधन कराने के लिए हुआ था। सन् १८९० में सुसन बी० एन्थोनी और एलिज़ाबेथ केडी स्टैण्टन के नेतृत्व में संचालित आन्दोलन का अपेक्षाकृत अधिक मौलिकतावादी पक्ष, उसके अधिक अनुदार पक्ष में विलीन हो गया, जिसने श्रेष्ठ समाधान के रूप में राज्यस्तर पर कार्यवाही करने का प्रतिपादन किया। इस प्रकार, नये सिरे से संगठित राष्ट्रीय अमेरिकी मताधिकार संघ ने १८९२ से लेकर १९०० तक कुमारी एन्थोनी को अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित करके उन्हें सम्मानित किया। सन् १९०० में उस पद से वह स्वेच्छापूर्वक पृथक् हो गई। किसी सार्वजनिक उद्देश्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने कार्य करने के आलोचनात्मक मूल्यांकन के दृश्य का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। सार्वजनिक विवादों का सामना करने वाला व्यक्ति जानता है कि ठोस और यथार्थ दृष्टिकोण का प्रतिपादन करना ही हर्षोल्लास, अपमान और क्षुद्र बनाने के प्रयत्न के मिश्रित सहगान को प्रोत्साहन देता है।

अपने दीर्घ जीवनकाल में सुसन बी० एन्थोनी ने ऐसे बहुत से कार्य किये, जिन्होंने इस प्रकार के तीक्ष्ण मतभेदों को जन्म दिया। निम्नलिखित दो घटनाओं पर विचार कीजिये।

सन् १८५० में अमेलिया ब्लूमर तथा दूसरी महिलाओं ने जिनमें कुमारी एन्थोनी भी सम्मिलित थीं, महिलाओं के फैशन में एक नई शैली—विख्यात ब्लूमर वस्त्र, जिसमें छोटा लहँगा और तुर्की पाजामा शामिल थे—जारी की। इस वेशभूषा का उद्देश्य "पुरुषों को उनके रूढ़िगत निष्प्राण, विद्वेषों से बाहर निकाल कर उनमें एक सनसनी उत्पन्न" कर देना था। इसने ऐसे परिणाम उत्पन्न किये, जिसकी पूर्व कल्पना कोई भी पुरुष कर सकता है, किन्तु जिनके विषय में महिलायें कुछ भी नहीं सोच सकती थीं। पुरुषों का तत्काल आकृष्ट

होना अनिवार्य था, किन्तु निश्चित रूप से उनका ध्यान उसमें सन्निहित बौद्धिक प्रश्नों की ओर आकृष्ट नहीं हुआ। इस दोखण्डी वस्त्र के उपयोग के लिए एक वर्ष की अवधि कुमारी एन्थोनी के लिए पर्याप्त थी, और उन्होंने इस टिप्पणी के साथ उसका परित्याग कर दिया, "मेरे लिए यह वस्त्र शारीरिक सुख किन्तु मानसिक हत्या सिद्ध हुआ। मेरे श्रोताओं का ध्यान मेरे शब्दों की बजाय, मेरे वस्त्रों पर गड़ा हुआ था। मैंने उससे यह पाठ सीखा कि सफल होने के लिए मनुष्य को केवल एक ही सुधार का प्रयत्न करना चाहिए।"

दूसरी घटना का सम्बन्ध उस महत्त्वपूर्ण कहानी से है, जो अव्यक्तिगत प्रतीत होनेवाले न्याय सम्बन्धी लेख, "संयुक्त राज्य बनाम सुसन बी० एन्थोनी" की पृष्ठभूमि में थी। यह विश्वास करके कि संविधान के १४वें संशोधन ने महिलाओं को मताधिकार का अधिकारी बना दिया है, कुमारी एन्थोनी ने अन्य महिलाओं के साथ अपने नाम की रजिस्ट्री करा ली, और १८७२ के राष्ट्रपति के निर्वाचन में मतदान किया। अवैध मतदान के अभियोग में गिरफ्तार होने के बाद, वह जमानत पर रिहा हुई। मुकदमे की सुनवाई के प्रतीक्षा-काल में उन्होंने अनेक सार्वजनिक भाषण किये, जिनका उद्देश्य इस मामले की समस्याओं पर प्रत्येक सम्भाव्य पंच को शिक्षित करना था। जब एटार्नी जनरल ने मुकदमे की सुनवाई की जगह बदलवाने में सफलता प्राप्त कर ली, तो सुसन ने पंचों को शिक्षित करने का दूसरा आन्दोलन शुरू किया। किन्तु न्यायाधीश ने इस मामले को पंचों को सिपुर्द करने से इनकार कर दिया, इस सम्बन्ध में अपना मत घोषित कर दिया, जो कि सूचना के अनुसार, मुकदमा प्रारम्भ होने के पहले ही लिखा जा चुका था, और पंचों को निर्देश किया कि वे अपने निर्णय में उन्हें अपराधी घोषित कर दें। सुसन पर १०० डालर का जुर्माना हुआ जिसे उन्होंने अदा करने से इन्कार कर दिया और वस्तुतः, वह कभी भी अदा नहीं किया गया। इस प्रकार के मामलों में अपनी विचारधारा को उन्होंने बड़ी ही आश्चर्यजनक और उद्विग्नकारी सरलता के साथ व्यक्त किया। वह 'परतन्त्र और दासी बना दी गई महिलाओं' की रक्षा के लिए अपनी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का बलिदान करने की इच्छुक थीं।

सन् १९०६ तक, जो कि सुसन बी० एन्थोनी के जीवन का अन्तिम वर्ष था, उन्हें अनेक सफलताएँ और सन्तुष्टियाँ प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। चार राज्यों ने महिलाओं को मतदान का अधिकार प्रदान कर दिया था; कालेजों, उद्योगों, व्यवसायों और पेशों में महिलाओं के साथ पुरुषों के समान

हो व्यवहार होता था। कानून की पुस्तकों पर से विवाहित महिलाओं के विरुद्ध पुरानी वैधानिक रीतियाँ उन्मूलित की जाने लगीं और विवाह को दो समान हिस्सेदारों के बीच एक सामाजिक समझौता या ठेका मान लिया गया। वह गर्व के साथ अपने जीवन के पिछले दिनों को देख सकती थीं कि उन्होंने आधी शताब्दी से अधिक समय तक जो वैधानिक सामाजिक आन्दोलन चलाया था, उसने पर्याप्त परिणाम उत्पन्न किया। उससे पुरुषों और महिलाओं, दोनों को उन्मुक्त करने में सहायता मिली, किन्तु उनका स्वप्न अधूरा रह गया। वैधानिक संशोधन ने उन्हें भ्रम में डाल दिया था।

अपनी ८६ वीं वर्षगाँठ पर अपने अन्तिम भाषण में उन्होंने कहा था, "मैं न्याय चाहती हूँ, प्रशंसा नहीं।" किन्तु उन्हें ये दोनों ही प्राप्त हुए। अत्यन्त तिरस्कृत और द्वेषपात्र महिला के पद से उठकर वह सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित महिला बन गईं। उनकी सबसे महान् विजय में एक ऐतिहासिक न्याय है। उनके जन्म से १०० वर्ष के बाद १६ वाँ संशोधन स्वीकृत हो गया, जिसमें महिलाओं के मतदान के अधिकार की पुष्टि कर दी गई।

—

जान डीवी

जेरोम नेथसन

वर्तमान समय में शिक्षा सम्बन्धी जितनी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, उतनी सम्भवतः हमारे इतिहास में किसी भी अन्य समय नहीं हुई थीं। उनमें से अधिकांश में उस शिक्षा की कटु आलोचना हुई है, जिसे 'प्रगतिशील' अथवा 'नवीन' शिक्षा की संज्ञा प्राप्त है, किन्तु यद्यपि जान डीवी इस प्रगतिशील शिक्षा के समूचे आन्दोलन के बौद्धिक और आध्यात्मिक प्रणेता थे, तथापि अधिकांश आलोचक सतर्कतापूर्वक उन पर आघात करने से बचते हैं। इसके विपरीत, वे अमेरिका के इस उच्चतम दार्शनिक के प्रति श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते जा रहे हैं, जो ९२ वर्ष की अवस्था में १९५२ में दिवंगत हुआ।

२० वीं शताब्दी की अमेरिका पर जान डीवी का प्रभाव व्यापक था। वस्तुतः, यह प्रभाव हमारे समस्त अस्तित्व और कार्य का इतना अविच्छिन्न अंग बन चुका है कि उसे उन अन्य प्रभावों से पृथक् करना कठिन है, जिन्होंने हमें ढाला है। निश्चय ही, हम में से उन लोगों के लिए, जो १९०० के बाद पैदा हुए हैं, जान डीवी वस्तुओं के सम्बन्ध में हमारे दृष्टिकोण और चिन्तनशैली के अंग बन चुके हैं। यदि उन्होंने अपना कार्य सम्पन्न न किया होता, तो निश्चय ही, हम व्यक्तियों के रूप में अधिक अपूर्ण और विपन्न होते। कुछ लोगों का इस निर्णय से मतभेद हो सकता है, किन्तु चाहे हम अधिक विपन्न होते या नहीं, हम कुछ भिन्न तो अवश्य ही होते, और हमारे ऊपर उनकी छाप का यही मापदण्ड है।

हममें से अधिकांश के लिए वार्तालाप शीघ्र विचार-विनिमय की बात है। एक व्यक्ति कुछ कहता है, और दूसरा तत्काल उसका उत्तर देता है। वस्तुतः, हम प्रायः अपनी बात कह उठने की उत्सुकता में एक दूसरे की बात में हस्तक्षेप कर उठते हैं, किन्तु डीवी के साथ वार्तालाप का ढंग सर्वथा भिन्न था। मुझे उनसे अकेले में वार्तालाप करने का पहला अवसर स्मरण हो आता है, जब कि मेरे मुँह से शब्द-प्रवाह निकलता रहता था और फिर डीवी के उत्तर के लिए मैं रुक जाता था। कभी कभी यह रुकावट चुप्पी में

बदल जाती थी जो व्यग्रता के साथ भारी हो उठती थी—इस बात की व्यग्रता कि आखिर में मैं अपने-आपको मूर्ख बना रहा था, यह व्यग्रता कि डीवी मेरी बातें सुन नहीं रहे थे, कि उनका मस्तिष्क किसी कारण अन्यत्र चक्कर काट रहा था। और, अन्त में, उस चुप्पी के बाद, जिसका कहीं अन्त नहीं प्रतीत होता था, डीवी कही हुई बात पर अपने विचार व्यक्त करते थे, वे बात सुन लेने पर उसे अपने मस्तिष्क के बकयन्त्र (क्रोड़) में रख लेते थे, और जब उस पर अपना मत व्यक्त करते थे तो वह मत केवल उसका सारांश नहीं होता था बल्कि उस विशेष बात के सन्दर्भ में उनके समस्त व्यक्तित्व की मिश्रित अभिव्यक्ति बन कर उड़ेल उठता था।

यह पहला ही मौका था, जब मैंने एक ऐसे व्यक्ति से बात की थी, जिसने मेरी बातों के विषय में विलम्बित चिन्तन करने का तीव्र अभिनन्दन प्रदान किया था। केवल डीवी ही ऐसे व्यक्ति थे, जिनके सम्बन्ध में यह बात अभिनन्दन नहीं, बल्कि सामान्य प्रकृति बन चुकी थी; विचारों के सम्बन्ध में उनके व्यवहार का यही ढंग था। अतः यदि इरविन एडमैन और अनेक अन्य व्यक्तियों ने डीवी के इस विशिष्ट ढंग का उल्लेख किया है, तो वह आश्चर्यजनक नहीं प्रतीत होता। जान डीवी हजारों व्यक्तियों के लिए इमर्सन के "चिन्तनशील मानव" के जीवित उदाहरण थे और सदैव रहेंगे।

वह अपने को सर्वप्रथम एक दार्शनिक समझते थे, जैसा कि उन्होंने अपनी ९० वीं वर्ष गाँठ के अवसर पर कहा था। दार्शनिक के रूप में ही डीवी युगों-युगों तक अमर रहेंगे। फिर भी, एक दृष्टिकोण से विचारों का सम्मान केवल व्यक्तियों के लिए उनके सम्मान का अंग था। यह सर्वविदित है कि वे जिन राजनीतिक और सामाजिक उद्देश्यों में विश्वास करते थे, उन्हें सिद्ध करने के लिए यथाशक्ति सदैव तत्पर रहते थे और इन सब कार्यों के लिए उन्हें समय कहाँ से मिलता था, इसे कोई कभी भी नहीं जान सकेगा। किन्तु व्यक्तिगत स्तर पर ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसी भी व्यक्ति को जो उनसे व्यक्तिगत सहायता चाहता था, सदैव उपलब्ध थे।

एक युवक कवि की कहानी है, जो न्यूयार्क शहर में नवागन्तुक था। वह पहले कभी डीवी से मिला नहीं था, किन्तु हृदय से उत्सुक था कि वह व्यक्ति जो उसके लिए आराध्य बन चुका था, उसकी रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त करे। उसने कई दिन डीवी का पता लगाने का प्रयत्न किया, और अन्त में, उनका घर मिल जाने पर अपने गीतों का एक पुलिन्दा बाँह के नीचे दबाये

हुए, पहले से भेंट का समय निश्चित किये बिना ही, उस महापुरुष से मिलने चला गया। डीवी ने उसे अन्दर बुलाया और उस समय जो काम कर रहे थे उसको वहीं छोड़कर उसकी कवितायें पढ़ीं और उसके विषय में काफी देर तक विस्तार से चर्चा करते रहे।

एक दूसरे नवयुवक की भी कहानी है, जिसने अभी-अभी अपनी कालेज की शिक्षा समाप्त की थी और शिक्षा के विषय में डाक्टर की उपाधि के लिए आगे पढ़ना चाहता था। वह इस बात का निश्चय नहीं कर पा रहा था कि अपने स्नातक सम्बन्धी अध्ययन के लिए वह कहाँ जाये। यद्यपि वह पहले कभी डीवी से मिला नहीं था, फिर भी वह बैठ गया और उसने विस्तार के साथ डीवी को पत्र लिखा और उनसे सलाह माँगी। डीवी ने न तो उसकी उपेक्षा की और न ही लापरवाही से उस पर विचार किया। इसके विपरीत, लौटती डाक से ही पूछे गये प्रश्नों पर डीवी के सर्वश्रेष्ठ विचार और सलाह उसे मिल गई।

उनके सम्बन्ध में, इस प्रकार की अनेक घटनाओं से हम परिचित हैं, केवल संयुक्त राज्य में ही नहीं, बल्कि संसार के सभी भागों में ऐसे कितने ही व्यक्ति हैं, जो डीवी से अपरिचित थे; फिर भी डीवी जो कुछ वस्तुतः थे और जिन बातों के प्रतीक थे उनके कारण वे लोग डीवी के पास गये और कभी भी निराश नहीं लौटे। इस प्रकार के अनुभवों की स्मृति को ध्यान में रखकर ही जान लवज्वाय इलिएट ने जिनकी गणना हमारे युग के महान् सामाजिक कार्यकर्ताओं और महान् आध्यात्मिक नेताओं में होती है, एक बार कहा था "मुझे इस बात का निश्चित विश्वास नहीं कि मैं जान डीवी के दर्शन को कहाँ तक समझता हूँ, किन्तु इतना मैं अवश्य जानता हूँ कि जान डीवी क्या थे। वे एक सन्त थे और बस!

चाहे वह सन्त थे या नहीं, किन्तु वे निश्चित रूप से सरलता के मूर्त प्रतीक थे, जैसा कि शायद केवल महान् मानव प्राणी हो सकता है। कोई भी, जब उनसे बात के लिए टेलीफोन उठाता, वह स्वयं ही उत्तर देते थे, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों तक कोई सचिव या मध्यस्थ नहीं रखा था। फोन की घण्टी एक दो बार बजी नहीं कि परिचित 'यांकी' स्वर में "हेलो" शब्द सुनायी पड़ गया। कोई उनके घर जाता तो उसे कुछ क्षणों तक जब तक कि डीवी स्वयं द्वार नहीं खोल देते थे, खड़े होकर टाइपराइटर की खटखट सुननी पड़ती। किसी किसी को डीवी का अनुपम ढंग से टाइप किया

हुआ पत्र मिलता, जिसकी पंक्तियाँ पृष्ठ के किनारे तक फैली हुई होती थीं और वे वहीं पर समाप्त होती थीं चाहे कोई शब्द अधूरा ही क्यों न रह गया हो— उसमें वे हाइफन का प्रयोग नहीं करते थे। लगता था मानो अपने विचारों की गति के साथ कदम मिलाने की कोशिश में उनके पास इतना समय नहीं था कि वे उसे सुन्दर भी बनाने की कोशिश करते। उन्हें भाषण के मंच पर आते हुए हम देखते, वे इस बात से लज्जित नहीं तो कुछ हद तक आश्चर्य-चकित अवश्य होते थे कि उनका भाषण सुनने के लिए इतने अधिक लोग आये हुए हैं, यद्यपि स्वर दबा हुआ होने के कारण, उनके श्रोताओं को प्रायः उनके कथन का उच्चारण सुनने में कठिनाई होती थी।

किन्तु ये तथा इन जैसी अन्य घटनायें डीवी की सरलता के बाह्य आडम्बर के प्रतीक थे। उनकी वास्तविक सरलता उनके व्यक्तित्व में, वह जो कुछ थे उसमें, निहित थी, जैसा कि उसे होना भी चाहिए था। वह जो कुछ सोचना चाहते थे, उसे सोचने के लिए और जो कुछ कहना चाहते थे, उसे कहने के लिए पूर्ण रूप में और हठधर्मी के साथ कृत-संकल्प थे; जिस बात को करने का प्रयत्न कर रहे हों, उसका अवमूल्यन कदापि नहीं करते थे; किन्तु उसे करने के लिए व्यक्तिगत श्रेय प्राप्त करने की कल्पना भी कभी नहीं करते थे।

उनकी यह सरलता उनकी रचनाओं में उतनी व्यक्त नहीं हुई है, किन्तु उनमें है अवश्य। क्योंकि, एक बार जब कोई पाठक उनके ग्रन्थों की कठोर सतर्कतामय तथा अमित विशिष्ट भाषा को बींध कर उसके अन्तर में प्रविष्ट हो जाता था, तो डीवी के विचार आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट और सरल दृष्टिगोचर होते थे। उनके विचार अनिवार्य रूप से यह हैं कि जनता के लिए जनता से बढ़कर अधिक महत्त्वपूर्ण कोई चीज नहीं है, कि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को दूसरों पर पशुवत् अत्याचार नहीं करना चाहिये, कि जीवन के सद्गुण ऐसे हैं कि उनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अच्छा जीवन सम्भव है, कि सौन्दर्य न तो अजायबघर का कौतुक है और न ही किसी कलाप्रेमी का व्यसन, बल्कि वह एक ऐसी वस्तु है जिसे सामान्य जीवन की विशेषता बन जाना चाहिये, और यह कि एक अनिश्चित, किन्तु चिर-आशाजनक, विश्व में, अन्तःकरण में पोषित तथा सबल बुद्धि की भाँति मानव कल्याण के निमित्त प्रयुक्त, विवेक ही हमारा प्रमुख विश्वसनीय आश्रय है।

ये विचार सरल हैं, और शायद, इसी कारण उनके मन्तव्य विश्व को प्रकम्पित कर देने वाले हैं। क्योंकि, यदि हम सामान्य मानवता की ओर से

बुद्धि को स्वतन्त्र और अनियंत्रित ढंग पर क्रियाशील होने दें, तो कोई यह नहीं कह सकता कि उसका अन्तिम परिणाम क्या होगा। अनियन्त्रित बुद्धि किसी संस्था को पवित्र नहीं मानती, यहाँ तक कि वैयक्तिक उपक्रम को भी नहीं। यही कारण है कि राष्ट्रीय वस्तु-निर्माता संघ डीवी पर विश्वास नहीं करता था। अनियन्त्रित बुद्धि किसी तानाशाही को, यहाँ तक कि सर्वहारा वर्ग की तानाशाही को भी, उपयोगी नहीं समझती। यही कारण है कि कम्युनिस्ट डीवी से घृणा करते थे। अनियन्त्रित बुद्धि, रूढ़िवादिता और अन्ध विश्वास से कदापि समझौता नहीं कर सकती, उस समय भी नहीं, जब कि वह धर्मान्धता धर्म की पवित्र आभा में परिवेष्टित हो। यही कारण है कि सनातनी गिरजा-घर डीवी के विरुद्ध थे। इस बीच उनके विचार उसी भाँति आगे बढ़ते जा रहे हैं जिस प्रकार विचार आगे बढ़ते हैं—स्वतःसंचालित रूप में नहीं, बल्कि इसलिए कि वे मानवीय आवश्यकता के मूल स्रोतों को स्पर्श करते हुए मानवीय शक्तियों को एक में समेटते जाते हैं।

हमारा युग सुधार-विरोध और उन्माद का युग है, जैसा कि उसके सम्बन्ध में डीवी कहा करते थे, जिसमें मनुष्य की चिन्ताओं ने कितने ही लोगों को यह विश्वास करने के लिए बाध्य किया है कि वे केवल स्वतन्त्रता का बलिदान करके ही सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं। सभी ओर से हमें यह विश्वास दिलाया जाता है कि विज्ञान और धर्म-निरपेक्षता वर्तमान बुराइयों की जड़ में है। और किसी भाँति, किसी रहस्यमय ढंग द्वारा, जो कि अपने विषय के रहस्य के अनुकूल ही होगा, हम केवल अपने ज्ञान को कम करके ही शान्ति प्राप्त कर सकेंगे। सुधार-विरोधी सिद्धान्त का यही आशय है। इस बीच, इस विश्व की पशुता के लिए एक अस्पष्ट अपराध भावना द्वारा हम एक दूसरे से पृथक् कर दिये गये हैं और उस अपराध का आक्षेप उन लोगों के सिर मढ़ते हैं जो यथास्थिति को, यथार्थता को, चुनौती देते हैं। हमारे उन्माद का यही आशय है। और अपने बीच से भिन्न-मतावलम्बियों का गला घोंट देने के लिए हम सहायता के लिए अधिकारियों की ओर अधिकाधिक मुड़ने लगे हैं, यद्यपि हम अपने हृदय के अन्तराल में यह अच्छी तरह जानते हैं कि कोई भी चीज जो तीक्ष्ण से तीक्ष्ण आक्रमण के समक्ष ठहर नहीं सकती, सुरक्षित नहीं हो सकती। हमारे स्वतन्त्रता से पीछे हटने का यही अर्थ है।

आधुनिक विश्व की इस रुग्णता की सामाजिक, संस्थागत, जड़ें अणुवीक्ष्य हैं—यदि विहंगम दृष्टि से नहीं, तो कष्टसाध्य जाँच से तो अवश्य ही। किन्तु जो

वस्तु कष्टसाध्य होती है, वह कष्टप्रद भी हो सकती है, और ऐसे लोग भी हैं जो भविष्यवक्ता, मसीहा, जैसी अन्तर्दृष्टि या अन्तःप्रेरणा से समस्याएँ 'हल करना' अधिक आसान और अधिक आह्लादकारी मानते हैं। धार्मिक और दार्शनिक विचारों का इतिहास, इस पक्ष के अनुयाइयों द्वारा कथित तथा उलझायी गई झूठी समस्याओं से भरा हुआ है। डीवी उनमें से नहीं थे। इसके विपरीत, उनका दृष्टिकोण यह था कि दर्शन का प्रारम्भ और अन्त मनुष्य की समस्याओं से ही होता है। यही कारण है कि अपनी शैली की समस्त कठिनाइयों के बावजूद, वह सदैव इतने यथार्थवादी हैं, और यदि उन्हें कभी-कभी 'महान् विनाशक' कहा गया है, तो उसका भी कारण यही है।

डीवी अच्छी तरह जानते थे, कि पश्चिमी विचारधारा की प्रमुख परम्परा इस धारणा पर केन्द्रित रही है कि समस्त सृष्टि कोई एक जैसी नहीं है। इसके विपरीत, इस परम्परा के अनुसार, जिस विश्व से हम परिचित हैं, वह केवल धरातल या छाया, प्रतीक या दृश्यस्वरूप है। और, यह दावा किया जाता है कि इस विश्व के नीचे या पीछे 'वास्तविकता' है। परम्परानुसार, धर्म ने इस धारणा का प्रयोग यह प्रदर्शित करने के लिए किया है कि जीवन का अर्थ 'यहाँ और अभी' में नहीं मिलेगा, बल्कि यहाँ के इस जीवन के पश्चात् किसी अदृश्य विश्व में मिलेगा, और हमारी समस्त अनुभूतियों की व्याख्या विभिन्न प्रकार से स्वप्न, या एक कठोर किन्तु स्नेही पिता द्वारा स्थापित परीक्षा-भूमि कह कर किया गया है। दर्शन ने इसका उपयोग यह प्रदर्शित करने के लिए किया है कि यदि हम 'सत्य' जानने के इच्छुक हैं, तो हमें चिरन्तन और शाश्वत सत्ता के विवेक, अन्तर्ज्ञान, और चिन्तन-मनन पर निर्भर करना चाहिये।

एक दृष्टिकोण से, आभास और यथार्थ के बीच, क्षणिक और शाश्वत के बीच, अनिश्चय और निश्चय के बीच, का यह द्वैतवाद आधारभूत मानवीय द्विविधा का समाधान करता है। इससे संसार की सभी हृदय-वेदना और सिर दर्द की व्याख्या हो जाती है। इससे उन लोगों को सुरक्षा मिलती है, जो हमेशा के लिए किसी वस्तु को एक ही जगह स्थिर रखकर सुरक्षा पाना चाहते हैं। यह हमारी अभिलाषा को मूर्त्तरूप देता है, और हमारे स्वप्नों को सिद्धि।

किन्तु, डीवी इस द्वैतवाद द्वारा उत्पन्न समस्याओं से भली भाँति परिचित थे और जानते थे कि शताब्दियों से ये समस्याएँ मानव के पीछे किस प्रकार पड़ी हैं। यदि एक स्नेही पिता समस्त यथार्थ बातों के लिए उत्तरदायी है, तो जीवन की क्रूरताओं और दुःखान्त बातों का कारण क्या है? यदि यह

विश्व जिसे हम जानते हैं, यथार्थ विश्व नहीं है, तो हम कभी भी यथार्थ का 'ज्ञान' कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? अपनी समस्त अनन्त और तीक्ष्ण शाखाओं सहित इन और इनके समान अन्य प्रश्नों ने असंख्य वर्षों से असंख्य मनुष्यों की शक्तियाँ बरबाद की हैं। और, सदैव ही, इस संसार की समस्याएँ, इस बात की समस्याएँ कि हम इसके साथ और अपने साथ क्या कर सकते हैं, पूर्ववत् बनी रहीं।

किन्तु, यदि यह मान लें कि कोई व्यक्ति यह कल्पना करता है कि समस्त सृष्टि एक ही ठोस इकाई है और हमारे अनुभव इस सृष्टि की किसी भी वस्तु की भाँति ही यथार्थ हैं, तो तत्काल परम्परागत समस्याएँ परिवर्तित या अदृश्य हो जाता हैं। यदि अनुभव निकृष्ट यथार्थता नहीं है, बल्कि सच्ची और मौलिक वस्तु है, तो यहाँ पर और इस समय हमें जो कुछ होता है, वह बहुत महत्त्व की चीज है। यदि हम अनुभव के सम्बन्ध में जो कुछ जानते हैं वह केवल सम्भावना है और कभी भी निश्चित नहीं है तो हमें अपनी ज्ञान सम्बन्धी धारणाओं को फिर से नये साँचे में ढाल लेना चाहिए और जानने के श्रेष्ठ तरीकों को विकसित करना चाहिए। यदि हमारे जीवन की सबसे बहुमूल्य बातें—प्रेम, स्वास्थ्य, सौन्दर्य, मैत्री, शान्ति और स्वतन्त्रता—अस्थायी और अनिश्चित हैं, तो हमारी समस्या यह नहीं कि हम उनके लिए किसी रहस्यमय प्रतिभूत को ढूँढ़ें, बल्कि यह है कि हम उन्हें यथाशक्ति स्थायी और स्थिर बनायें।

डीवी ने भी अनिवार्य रूप से यही कल्पना, उसके समस्त परिणामों सहित की है। महान् परम्परा के दृष्टिकोण से, उन्होंने देवालय के स्तम्भ ध्वस्त कर दिये। किन्तु वह केवल विनाशक ही नहीं थे, पुनर्निर्माता भी थे; और, लोकतन्त्रीय समाजों में मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ सम्भावनाओं को उत्तरोत्तर अधिक उन्मुक्त क्रियाशीलता प्रदान करने के उद्देश्य से हमारे चिन्तन, मनन और हमारे एक साथ रहने के ढंगों का पुनर्निर्माण करना ही उनके कार्य का दायित्व है।

डीवी ने जिस शिक्षा-आन्दोलन का नेतृत्व किया था, उसका उद्भव इसी से हुआ है। क्योंकि, परम्परा के अनुसार, जिस प्रकार समस्त जीवन इसके बाद के अस्तित्व के लिए एक तैयारी माना जाता था, उसी प्रकार शिक्षा देना प्रौढ़ या 'यथार्थ जीवन' के लिए बच्चे की तैयारी समझी जाती थी। गिरजाघरों की तरह ही स्कूलों के भी कर्मकाण्ड होते थे और मस्तिष्क को एक निश्चित पाठ्यक्रम—पढ़ाई, लिखाई और गणित—द्वारा प्रशिक्षित करना बच्चों को यदि सभ्य नहीं तो विनीत बनाने का ढंग अवश्य समझा जाता था। किन्तु, एक बार अनुभव को यथार्थ मान लेने पर प्रत्येक बात परिवर्तित हो जाती है। तब

जीवन केवल तैयारी ही नहीं रह जाता है, बल्कि स्वयं जीवन बन जाता है। तब बच्चे का अनुभव केवल तैयारी ही नहीं होता, बल्कि स्वतः अपने कारण भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। तब शिक्षा बच्चों को केवल वह बातें सिखाने की बात ही नहीं रह जाती, जिन्हें प्रौढ़ों के विचार से उन्हें जानना चाहिए, बल्कि उन्हें स्वयं अपनी शक्तियों की खोज करने में सहायता देने की बात हो जाती है। तब मस्तिष्क के प्रशिक्षण को, चाहे उसका अर्थ जो भी हो, कुशल मार्ग प्रदर्शन के अन्तर्गत यथासम्भव सर्वश्रेष्ठ अनुभव प्राप्त करने में बच्चों को सहायता पहुँचाने की अपेक्षा कम महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। तब, बच्चों को 'नन्हें प्रौढ़' समझने की बजाय, हम उनका अध्ययन जो कुछ वे वस्तुतः हैं उस दृष्टि से ही करते हैं। और हमें पता चलता है कि जबानी रटने रटाने तक सीमित ज्ञान, कोई काम स्वयं करके प्राप्त किये गये ज्ञान का बहुत ही अपर्याप्त और निर्बल प्रतिस्थापक है। इस प्रसिद्ध नारे का कि हम कोई काम करके ही करना सीखते हैं, यही अर्थ है। बाल-केन्द्रित पाठशाला पर जोर देने का यही अर्थ है।

इस शिक्षा सम्बन्धी "क्रान्ति" के कारण अमेरिका में अथवा इस दृष्टि से समूचे पश्चिमी विश्व में एक भी ऐसा शिक्षक नहीं है, जो जाने या अनजाने, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, डीवी की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा से प्रभावित नहीं हुआ है। जब हम अपनी पाठशाला प्रणाली का मूल्यांकन करने की कोशिश करते हैं, तो उसमें यह सन्तोषजनक बात मिलती है। शिक्षक प्रभावित हुए हैं और बाकी हम लोग भी शिक्षकों के माध्यम से प्रभावित हुए हैं। किन्तु इस प्रभाव का और उसकी प्रभावोत्पादकता का स्वरूप क्या रहा है?

हम इस बात पर जोर देते हैं कि लोकतन्त्र के लिए शिक्षित करना हमारे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। किन्तु, प्रायः हमारा मन्तव्य वह नहीं होता। यदि हमारा मन्तव्य ऐसा होता तो, सम्भवतः हमारी दो पीढ़ियाँ जो इस शिक्षा से पहले ही प्रभावित हो चुकी हैं, इस समय कम से कम सही किस्म की शिक्षा के लिए धन खर्च करने के लिए उत्सुक अवश्य होतीं। किन्तु इसके विपरीत, जिस समय हम शिक्षकों के लिए अधिक और श्रेष्ठ प्रशिक्षण पर जोर दे रहे होते हैं, ठीक उसी समय हम उन्हें ऐसे स्कूलों में नियुक्त करते हैं जिनमें बच्चों की संख्या अत्यधिक है और साधन अपर्याप्त हैं जिसके कारण उनके लिए उसी प्रकार की शिक्षा देना सम्भव नहीं होता जिस तरह की शिक्षा देने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया गया था। हम इस विचार पर तो जोर देते हैं कि स्कूल को एक लोकतन्त्रीय समाज होना चाहिए, जो सामान्य मानवता और सामान्य

उद्देश्यों से प्रेरित हों, किन्तु हम शिक्षकों और छात्रों को समान रूप से जातिगत धार्मिक आधार पर पृथक्-पृथक् समूहों में विभाजित भी करने की अनुमति देते हैं। और, व्यक्ति और बुद्धि में साधारण विश्वास जो कि इस दर्शन का मूल मन्त्र है, सर्वत्र सत्ताधारी प्रवृत्ति वाले धार्मिक नेताओं और शिक्षकों के आक्रामक आघातों के सम्मुख प्रतिरक्षात्मक स्थिति में है। निस्सन्देह, डीवी ने एक ऐसी क्रान्ति का नेतृत्व किया, जिसने हम सभी को प्रभावित किया है। किन्तु उस क्रान्ति को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए, उसके परिणामों को अमेरिकी संस्कृति में दृढ़ता के साथ प्रतिष्ठित करने के लिए, भविष्य में बहुत बड़े पैमाने पर श्रद्धा और संकल्प की भावना से प्रेरित प्रयत्नों की आवश्यकता होगी।

किन्तु, विद्यालय शिक्षा का केवल एक पहलू है। यदि इनमें डीवीवादी क्रान्ति पूर्णतया सफल भी हो जाय, किन्तु अन्य संस्थायें अछूती बनी रहें तो वह व्यर्थ सिद्ध होगी, क्योंकि हम अपनी संस्कृति की सभी संस्थाओं—भाषा, परिवार, उद्योग और राजनीति—द्वारा शिक्षित होते हैं और वे संस्थाएँ जिस तरह क्रियाशील होती हैं उससे ही अधिकांशतः इस बात का निर्धारण होता है कि हम क्या हैं। यदि शिक्षा का उद्देश्य प्रचुरता से अर्जित अनुभव के लिए जनता में अन्तर्भूत सम्भावनाओं को उन्मुक्त करना है तो सभी संस्थाओं को उसी दिशा में उन्मुक्त करना पड़ेगा। अथवा, यदि हम सिक्के को उलट दें, अर्थात् समस्या के दूसरे पक्ष से विचार करें, तो परिणाम-चक्र तदनुरूप होगा। बालकों को ऐसी शिक्षा देना, जो उनकी सर्वश्रेष्ठ शक्तियों को केवल एक ऐसे समाज में मनमाने ढंग पर प्रयोग करने के लिए ढूँढ़ निकालने में सहायक होगी, जो कि उनकी अभिव्यक्ति को निराश करता है, मूर्खता से भी बढ़कर बुरी बात होगी। यह ऐसे सामाजिक विनाश को निमन्त्रण देता है जो कि क्षोभ और भीतर ही भीतर घुटने वाली शत्रुताओं से उत्पन्न होता है।

तो, किन संस्थाओं को परिवर्तित करना चाहिए और किस प्रकार परिवर्तित करना चाहिए? इस सम्बन्ध में न कोई निश्चित और व्यापक योजना है और न हो सकती है। यह केवल सतर्क मूल्यांकन की, जाँच की और प्रयोग, की बात है। डीवी तो पूछेंगे, "क्या कोई विशेष संस्था या मानवीय सम्बन्धों की प्रणाली रचनात्मक और सामान्य अनुभवों के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करती है? यदि नहीं, तो उसमें कहाँ और क्यों कमी है? उसे किस प्रकार वांछनीय लक्ष्यों के लिए साधन के रूप में श्रेष्ठ ढंग पर संचालित किया जा सकता है? हम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जिन साधनों का उपयोग करते हैं,

उनके द्वारा स्वयं लक्ष्य किस प्रकार ढाले जाते हैं ? हम इस बात की सर्वश्रेष्ठ ढंग पर किस प्रकार परीक्षा कर सकते हैं कि कोई प्रस्तावित सुधार अपने उद्देश्य में सफल होता है ?'' इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कोई सरल तरीका नहीं है, किन्तु प्रयोगात्मक विज्ञान के ढंगों को मनुष्य के सम्बन्धों के विषय में प्रयुक्त करना चाहिए। और, जब उनका प्रयोग होने लगेगा, तो सम्भवतः वैसे ही परिणाम निकलने लगेंगे जैसे कि उस समय निकलते हैं जब उनका प्रयोग वस्तुओं के सम्बन्धों के विषय में होता है।

पहली बात, और लगभग पहले कदम, के रूप में भाषा का पुनर्निर्माण होना चाहिए। जिन शब्दों का प्रयोग हम करते हैं, वे क्लिष्ट परम्परा के अर्थों के भार से लदे होते हैं और प्रायः हमें सहायता पहुँचाने के बजाय वे समस्याओं का समाधान करने में बाधक हो जाते हैं। अतः, प्रमुख शब्दों की पुनः व्याख्या करनी होगी और हमारे मस्तिष्कों को उस प्रक्रिया में पुनः प्रवाहित करना होगा, जो कि, निश्चय ही, कहीं अधिक कठिन काम है। एक दृष्टिकोण से डीवी की समस्त रचनायें इस प्रकार के शब्दों की केवल व्याख्यायें हैं: जैसे 'अनुभव', 'ज्ञान', 'मस्तिष्क', 'सत्य', 'तर्क', 'बुद्धि', 'साधन', 'लक्ष्य', 'मूल्य', 'शिक्षा', 'लोकतन्त्र', 'स्वतन्त्रता', 'कला', 'धर्म'। डीवी में सच्चे दार्शनिक की आत्मा अनुप्राणित थी। फिर भी वे इस काम में केवल उसी के उद्देश्य से रुचि नहीं लेते थे। जो व्याख्याएँ उन्होंने फिर से प्रस्तुत की हैं, वे वस्तुतः उन अनुभवों को अधिक स्पष्टता से अधिक सही ढंग पर देखने के उद्देश्य से दी गई हैं, जिनकी ओर ये शब्द संकेत करते हैं। और इसकी आवश्यकता इसलिए है कि हम अपनी मानवीय समस्याओं को उनके यथार्थ रूप में, इस आशा से श्रेष्ठ ढंग पर देख सकें कि यदि हम उन्हें एक बार भली भाँति निश्चित कर सकें तो उनका समाधान श्रेष्ठ ढंग पर करने के लिए हम उपयुक्त साधन तैयार कर सकेंगे।

ऐसा ही ज्ञान के सम्बन्ध में भी है। डीवी के लिए ज्ञान प्रयोग की प्रक्रिया है और उस प्रक्रिया में विचार अपरिहार्य औजार या उपकरण है। इस धारणा के कारण कभी-कभी उनके दर्शन को प्रयोगवाद और उपकरणवाद भी कहा गया है। विचार इस अर्थ में उपकरण हैं कि वे कुछ अनुभवों की ओर इशारा करते हैं। यदि विचार सचमुच उस दिशा में संकेत करते हैं तो सच्चे होते हैं, अन्यथा झूठे, यद्यपि स्वयं डीवी के लिए अनुभव में सभी प्रकार की श्रेणियाँ और प्रतिबिम्ब होने के कारण यह भी पर्याप्त रूप से सही नहीं था। उन्होंने यह

कहना अधिक पसन्द किया होता कि हमारे मस्तिष्क में जो अनुभव होते हैं, उनकी ओर संकेत करने में विचार अपेक्षाकृत अधिक या अपेक्षाकृत कम प्रभावकारी होते हैं। वे प्रभावकारी हैं या नहीं, इसका किसी प्रकार निर्धारण होना चाहिए और इसके निर्धारण का सबसे विश्वसनीय ढंग प्रयोग द्वारा है। नियन्त्रित प्रयोग का ढंग विज्ञान कहलाता है। और जहाँ तक कि हमारे प्रयोग हमारे द्वारा किसी एक प्रकार के विचार को आवश्यक बनाते हैं, वहाँ तक हम ज्ञान प्राप्त करते हैं।

लेकिन, पुनः, विचार और ज्ञान, दोनों में से किसी का भी प्रयोजन, सिवाय उस दशा में जब कि कोई व्यक्ति उन्हें प्राप्त करने में गहरे सन्तोष का अनुभव करता है, केवल स्वयं उनके लिए ही नहीं है। वस्तुओं की चालू योजना में उनके कार्य का सम्बन्ध सिर्फ इस बात से होता है कि वे वस्तुएँ कहाँ, किन लक्ष्यों की ओर, ले जाती हैं। इसके बारे में प्रायः दार्शनिकों और जनसाधारण में, समान रूप से, डीवी के प्रति इतनी गलतफहमी रही है कि उनके प्रभाव का मूल्यांकन करना सर्वथा असम्भव है, क्योंकि किसी व्यक्ति को डीवी के वास्तविक मन्तव्य के प्रभाव तथा उस प्रभाव के बीच भेद करना पड़ता है जो उनके कथन का गलत आशय लगाने से उत्पन्न होता है। अब से एक या दो शताब्दी के पश्चात् वह भेद प्रत्यक्ष रूप से दिखलाई पड़ सकता है। इस बीच, यह कहकर उनकी लगातार कटु आलोचना की जा रही है कि वे यह विश्वास करते हैं कि वही बात व्यावहारिक है जो लाभप्रद होती है, कि यदि कोई विचार हमारे लिए लाभप्रद होता है तो वह सच्चा होता है, कि वित्तीय, सामाजिक राजनीतिक या कोई भी सफलता मनुष्य का चरम गौरव होती है। विलियम जेम्स ने एक बार इस प्रकार के 'व्यावहारिक' भौतिकवाद के प्रति अपनी घृणा व्यक्त करने के लिए 'चुड़ैल सफलता' का प्रयोग किया था, किन्तु आज तक वे स्वयं इसी प्रकार के भौतिकवादी होने के लिए निन्दित और कलंकित हैं। ठीक इसी प्रकार की बात डीवी के सम्बन्ध में भी हुई। जो भी उन्हें समझता है, उसके लिए यह स्पष्ट है कि जीवन का भौतिकवादी और व्यावसायिक रूप उन सभी आदर्शों का शत्रु है जिनके वे पोषक थे।

जब वे यह कहते हैं कि विचारों और ज्ञान का मूल्यांकन इस बात से होना चाहिए कि वे कहाँ ले जाते हैं, तो उससे उनका आशय यह है कि हमें उन सर्वश्रेष्ठ अनुभवों तक ले जाने के लिए उन पर निर्भर करना पड़ेगा, जिन्हें हम एक साथ अनुभव करते हैं। अतः, यह बात सार्थक प्रतीत होती है कि हम

उन्हें यथाशक्ति विश्वसनीय बनायें। मानवीय उपक्रम और साहस का उद्देश्य न तो "व्यावहारिकता है और न ही सफलता"। इसके विपरीत, "सामान्यरूप से अनुभूत अनुभव मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति है।" जो वस्तुएँ हमारे लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ हैं, उन्हें दूसरों के साथ बाँटकर उपयोग में लाने में एक गहरा गुण अन्तर्भूत है, जो जीवन में किसी अन्य अनुभव से उत्पन्न नहीं हो सकता।

किन्तु, कोई भी दूसरे से यह नहीं कह सकता कि पीड़ा का मूल केन्द्र क्या है, अथवा कब और कैसे आन्तरिक प्रकाश उत्पन्न होगा। हमें स्वयं अपने लिए उसे ढूँढ़ निकालने के लिए स्वतन्त्र होना चाहिए। वस्तुतः, इस प्रक्रिया में हमारे अँगूठे घिसकर ठूठे हो जाते हैं और कभी-कभी हम अपनी गर्दन तुड़वा लेते हैं। फिर भी, जो कुछ भोजन करते हैं, उसी से बढ़ते हैं। और, मानव बनने वाले प्राणियों के लिए सबसे उपयुक्त भोजन केवल वह है जो हमें स्वयं अपने पैरों पर इतने आत्म सम्मान और गौरव से खड़ा होने में समर्थ बनाता है, जिससे हम प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसे प्राप्त करने के लिए उत्सुक हो सकें। उस प्रकार के समाज के लिए दूसरों के साथ काम करना न केवल इसे प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है, बल्कि इस प्रकार के विश्व में बुद्धिमानी और प्रौढ़ता के साथ रहने में समर्थ होने के लिए आवश्यक शिक्षा का भी अंग है।

अमेरिका अपनी विरासत के सम्बन्ध में सम्पन्न, तथा अपनी लोकतन्त्रीय शाखाओं और संस्थाओं के सम्बन्ध में भाग्यवान देश है। किन्तु; लोकतन्त्र कोई ऐसी चीज नहीं है जो हमारे पास मौजूद हो। इसके विपरीत, यह जीवन की एक ऐसी प्रणाली है जिसे हासिल करना होता है; अथवा जैसा कि डीवी ने स्वयं कहा है, यह एक नैतिक आदर्श है। रोजर विलियम्स के समय से लेकर वर्तमान समय तक असंख्य मानवों ने लोकतन्त्रीय समाज के निर्माण के लिए श्रम और संघर्ष किया है। इस २०वीं शताब्दी में, जब कि हमें सबसे कठिन कसौटी पर उतरना पड़ा है, हमारे बीच बड़े-बड़े महापुरुष और अज्ञातनामा कोटि-कोटि मानव रहे हैं, जिन्होंने इस कार्य में अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। निश्चय ही, यदि हम लोग कहें कि हमारे युग के सभी लोगों से आगे बढ़कर एक व्यक्ति ऐसा रहा है, जिसने प्रेरणा और उसे प्राप्त करने के तरीकों को तथा लोकतन्त्र के दृष्टिकोण और प्रविधि को मूर्त रूप दिया है, तो इस कथन से उन कोटि-कोटि अन्य मानवों के योगदान का मूल्य कम नहीं होता—और वह अकेला व्यक्ति निश्चय ही जान डीवी थे।

ओलिवर वेण्डेल होम्स

फेलिक्स फ्रैंक फरटर

न्यायाधीश होम्स का जन्म ८ मार्च, १८४१ को और उनका देहावसान ६ मार्च, १९३५ को हुआ था। इस प्रकार, उनका जीवनकाल पूरे ६४ वर्ष से दो दिन कम था। इस महापुरुष के दीर्घ और सक्रिय जीवन के महत्त्व को संक्षेप में प्रतिपादित करने का प्रयत्न कुछ अंश तक कठिन है। अतः, अनिवार्य रूप से उनकी कुछ सफलताओं और उनके चिरस्थायी महत्त्व का उल्लेख अपर्याप्त रूप में ही सम्भव है, यद्यपि हमें आशा रखनी चाहिए कि यह विवरण उचित सन्तुलन तथा उपयुक्त दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जायगा।

होम्स प्योरिटन परम्परा में पले हुए थे और उसके तात्पर्य तथा वातावरण के प्रति उनका व्यक्तिगत सम्बन्ध अत्यन्त गहन था। अपने प्योरिटन पूर्वजों के सम्बन्ध में वे प्रायः चर्चा किया करते थे। इसी सिलसिले में उन्होंने एक अवसर पर कहा था: "मैं मैसाचुसेट्स के प्राचीन नगरों की प्रत्येक ईंट और पत्थर से प्यार करता हूँ, जहाँ उन्होंने किसी समय श्रम किया था और भगवान् की प्रार्थना की थी।" बौस्टन छोड़ देने के पश्चात् वे नियमपूर्वक नवीन और स्फूर्तिदायक श्रद्धा के साथ उसके निकटवर्ती उत्तरी तट (नार्थ शोर) के बालू के टीलों, चट्टानों और बारबेरी की झाड़ियों का आनन्द लेने के लिए प्रतिवर्ष वहाँ जाया करते थे। किन्तु कालेज के विद्यार्थी जीवन में भी उनमें बोस्टनवासियों की विशिष्ट प्रवृत्ति पाई जाती थी। प्रारम्भिक अवस्था में ही उनकी जिज्ञासाओं ने उनके भावनात्मक सम्बन्धों पर दूरगामी छाप छोड़ दी थी। जिस समय—बीस वर्ष की अवस्था से पूर्व—उन्होंने इमर्सन से बौद्धिक स्वतन्त्रता का पाठ सीखा, उस समय से ही उनकी जिज्ञासा की भूख न तो भूगोल के कारण और न ही व्यक्तिगत अधिमान्यताओं के कारण सीमित हो सकी। वह अपने देश को अपनी सम्पूर्ण आत्मा से इतना अधिक प्यार करते थे कि केवल मूर्ख ही उनके उस कथन से गलत धारणायें बनायेंगे, जब कि उन्होंने कहा था: "मैं भविष्य सम्बन्धी अपने स्वप्नों को अपने देश, अथवा केवल अपनी जाति, तक ही सीमित नहीं रखता ......मुझे यह असम्भव नहीं प्रतीत होता कि उस कौम की भाँति ही, जो

कि ऐसे पक्षी के लिए घोंसला बनाता है जिसे उसने स्वयं कभी नहीं देखा था, किन्तु जैसा वह स्वयं बनना अवश्य चाहता था, मानव भी ऐसे सांसारिक प्रारब्धों का उपभोग करेगा, जो उसकी ज्ञान-शक्ति से परे होंगे।" यद्यपि भावनाओं के क्षेत्र में होम्स अपने जीवन भर न्यू इँगलैण्ड की स्वाभाविक अनुभूतियों से वहाँ के निवासियों से भी अधिक ओतप्रोत रहे, फिर भी अपनी विचारधारा के क्षेत्र में उन्होंने किसी भी प्रकार की क्षेत्रीयता के विरुद्ध अपने आपको अनुशासित कर लिया था। इतनी पूर्णता के साथ इस दोष से अपने आप को मुक्त कर लेने के कारण, वे सभ्यता के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व बन चुके हैं; और केवल एक प्रभावपूर्ण अमेरिकी महापुरुष ही नहीं रह गये हैं।

इस प्रकार, एक सत्यान्वेषी प्योरिटन की भाँति उन्होंने १८५७ के अन्तिम चरण में हार्वर्ड में प्रवेश किया। किन्तु स्नातक की उपाधि प्राप्त करने से पूर्व ही गृह-युद्ध छिड़ गया और लिंकन ने देशभक्तों को पुकार की। अप्रैल १८६१ में, केवल २० वर्ष की अवस्था में ही, होम्स सेना में भर्ती हो गये; और ४ सितम्बर को वे अपने प्रिय सैनिक दस्ते, २० वें मैसाचुसेट्स, के साथ, जो कि पोटोमैक की सेना का अंग था, केवल असमर्थता की स्थिति को छोड़कर, अन्यथा, उसके उल्लेखनीय इतिहास में भाग लेने के लिए दक्षिण की ओर रवाना हो गये। युद्ध क्षेत्र में आहत होने पर उन्हें तीन बार वहाँ हटाना पड़ा था, उनके युद्धकालीन अनुभव अप्रतिम शौर्य की गाथाओं से भरपूर हैं।

युद्ध के मोर्चे पर आहत होकर अपंगु हो जाने के कारण बोस्टन वापस आने पर, उनकी व्यक्तिगत ख्याति तथा समर भूमि में किये गये उनके वीरतापूर्ण कार्यों ने, संयुक्त होकर अनिवार्य रूप से उन्हें एक सामरिक अभिनायक की प्रतिष्ठा प्रदान की। पादरी विलियम लारेन्स ने उनका तत्कालीन चित्रण इन शब्दों में किया है :

"मैंने उन्हें एक युवक सैन्य अधिकारी के रूप में, युद्ध के मोर्चे की ओर अग्रसर होते देखा......उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लेखे पर, मैं सतर्कता के साथ अपनी दृष्टि गड़ाये रहा, क्योंकि हम सभी युवक उन दिनों के अभिनायकों के प्रति सजग थे। और, जब वे बारबार आहत होकर वापस आते, तो बोस्टन की गलियों में उनके दर्शन होते,—उनके, जो कि नगर की युवतियों के लिए एक आह्लादकारी, सुन्दर अपंगु थे। वे एक स्नेहिल, रोमांचकारी, अभिनायक थे और उनका जन्म ही इसलिए हुआ था।" स्वयं उनके हृदय में युद्ध सम्बन्धी कोई रोमांचकारी धारणा न थी। उन्होंने सीमा से अधिक मात्रा

में युद्ध का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर लिया था। वस्तुतः, उन्होंने युद्ध को एक "संगठित यन्त्रणा" कह कर देशभक्त भावुकों की भावना पर ठीक उसी प्रकार आघात किया था, जिस प्रकार, आगे चलकर, इस बात पर हठ करके कि युद्ध उस स्थायी संघर्ष की केवल एक अवस्था है, जो कि जीवन का विधान है, वे उन लोगों को, जिन्हें वे सामाजिक भावुक मानते थे, हार्दिक वेदना पहुँचाने वाले थे।

"जिस समय आप युद्ध में संलग्न होते हैं, वह भयंकर और अनाकर्षक प्रतीत होता है। केवल उसी दशा में, जब कि कुछ समय व्यतीत हो चुका होता है, आप यह सोचते हैं कि उसका सन्देश दैवी था। मुझे आशा है कि एक दीर्घकाल के पश्चात् ही हमें उस स्वामी के चरणों में पुनः बैठने का आदेश मिलेगा। किन्तु, हम सभी को उस प्रकार के किसी शिक्षक की आवश्यकता अवश्य होती है। विश्व के इस सुललित कोने में भी, जो कि अति-सुरक्षित है, हमें इसकी आवश्यकता है, ताकि हम यह अच्छी तरह समझ लें कि हमारा सुखमय नियमित कार्यक्रम परिस्थिति की चिरस्थायी आवश्यकता नहीं है, बल्कि विश्व के तूफानी, अनियन्त्रित, प्रवाह के मध्य शान्ति का एक नन्हा सा ही बूँद है, और ताकि हम खतरे के लिए तैयार हो सकें। व्यक्तिवादी अभावात्मकता के इस युग में, जो कि अपने फ्रांसीसी और अमेरिकी हास्य साहित्य से संयुक्त होकर अनुशासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहा है, मांस-पात्रों को प्यार करता है, और इस बात को अस्वीकार करता है कि कोई वस्तु श्रद्धा और सम्मान के योग्य है, हमें उसकी आवश्यकता है, ताकि हम उन सभी बातों को याद कर सकें, जिन्हें विदूषक भूल जाया करते हैं। हमें सर्वत्र और सर्वदा इसकी आवश्यकता है।"

गृह-युद्ध से उन्होंने यही विश्वास ग्रहण किये थे। यही वे धारणायें थीं, जिन्होंने भविष्य में उनके दीर्घकालीन जीवन पर अपना प्रभाव प्रमुख बनाये रखा, क्योंकि उनके जीवन पर जितनी गहरी छाप गृह-युद्ध ने छोड़ रखी थी, उतनी गहरी छाप सम्भवतः किसी अन्य प्रभाव ने नहीं छोड़ी थी। उसने मानव के प्रारब्ध—अन्तिम लक्ष्य—सम्बन्धी उनकी धारणा का, यदि सृजन नहीं, तो कम से कम निर्धारण तो अवश्य ही किया था। "यदि किसी भी प्रकार उसे इस बात का ज्ञान हो चुका है कि वह समस्त विश्व के विरुद्ध शत्रु देवता के रूप में स्वयं को खड़ा नहीं कर सकता, उसकी आलोचना नहीं कर सकता, अथवा अन्तरिक्ष के विरुद्ध अपने घूँसे नहीं तान सकता, बल्कि उसका प्रयोजन वही है, जो विश्व का प्रयोजन है, उसका मूल्य विश्व के अंग के रूप में हो, विश्वव्यापी सत्ता के विनम्र

साधन के रूप में ही है—यदि उसे यह ज्ञान हो चुका है, तो मैं उसके बाह्य स्वरूप की बहुत परवाह नहीं करता।"

उन्होंने युद्ध क्षेत्र से वापस लौटे सेनानी की हैसियत से यह आस्था व्यक्त की थी और लगातार ७० वर्ष तक वार्तालापों, पत्रों, भाषणों और मतों के माध्यम से असंख्य विविधतापूर्ण, चिरस्थायी, उक्तियों के रूप में उसे दुहराते रहे। किन्तु उनकी यह 'सैनिक' का आस्था मानव के प्रारब्ध के विषय में उनके दार्शनिक विश्वासों का स्पष्टोक्त संकल्प मात्र नहीं थी, न ही वह भावाभिभूत मुहावरों में, किसी वरदानी पुरुष द्वारा उन बातों की अभिव्यक्ति थी जो कि "उस बौद्धिक मुक्ति की कुंजी" तथा "प्रसन्नता की कुंजी" प्रतीत हुई थी। होम्स ने अपनी आस्था का अनुशीलन स्वयं अपने जीवन में प्रत्यक्ष रूप से किया था। किसी ऐसे जीवन की कल्पना भी करना कठिन है जो कि होम्स के जीवन की अपेक्षा अपनी दिशाओं के विषय में अधिक आत्मचेतनापूर्ण, तथा अपने व्यवहारों में अपनी पोषित आस्था के प्रति अधिक श्रद्धामय और निष्ठावान रहा हो। उनकी आस्था ने ही उनके उन इने-गिने व्यक्तिगत विकल्पों का निर्धारण किया, जिन्हें सेना से पृथक् होने पर उनके लिए निर्धारित करना आवश्यक था; यह आस्था उन अनेक रूपी मामलों-मुकदमों में ठोस और मूर्त रूप में रूपान्तरित हुई जो लगभग आधी शताब्दी तक उनके समक्ष निर्णयार्थ उपस्थित हुए थे।

कार्यावधि समाप्त हो जाने के कारण उन्हें सेना से पृथक होना पड़ा। बाद में चल कर उन्होंने एक बार कहा था कि यदि उन्हें पुनः सेना में भर्ती होना होता तो वे युद्ध के अन्त तक उससे पृथक् न हुए होते। इसके विपरीत, सन् १८६४ के उत्तरार्द्ध में उन्होंने कानून का अध्ययन प्रारम्भ किया। सन् १८६६ में हारवर्ड के कानून विद्यालय से स्नातक की उपाधि ग्रहण कर लेने पर उन्होंने इंगलैण्ड की अपनी अनेक यात्राओं में से प्रथम यात्रा की।

होम्स के लिए इंगलैण्ड शक्तिशाली आकर्षणों का केन्द्र था। प्रथम विश्व युद्ध के प्रारम्भिक काल में होम्स ने सर फ्रेडरिक पोलक को लिखा था, "मैं ऐसे प्रत्येक गुण को महत्त्व देता हूँ जो कि आपके देशवासियों की दृढ़ता से अडिग होकर उपार्जन करने की मूक, सरल तथा अकृत्रिम शक्ति को प्रदर्शित करता है।" किन्तु अविनय अथवा असहानुभूति की दिशा में प्रेरित किसी भी प्रवृत्ति को ढूँढ़ निकालने में भी उनकी प्रज्ञा-शक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण थी। उन्हें अमेरिकी नागरिक होने का इतना गर्व था कि वह ऐसे सुझावों और विचारों के प्रति कदापि सहानुभूति प्रकट करने के लिए प्रस्तुत नहीं थे जिनका प्रयोजन यह

सिद्ध करना होता था कि अमेरिकी वातावरण सुकुमार अनुभूतियों के लिए अपर्याप्त है।

अपनी इंगलैण्ड यात्रा के पश्चात्, होम्स वकालत के गम्भीर व्यवसाय में दत्तचित्त होकर जुट गये। जिस समय उन्होंने इस व्यवसाय में प्रवेश किया, उस समय इसके सम्बन्ध में उनके हृदय में तीव्र भ्रान्तियाँ और आशंकायें व्याप्त थीं और अनेक वर्षों तक उनका उन्मूलन नहीं हो सका था। दर्शन उनके लिए उद्विग्नकारी आकर्षण था। किन्तु १८८६ में, उन विद्यार्थियों से जिनके हृदय में उसी प्रकार की चिन्तायें और आशंकायें व्याप्त थीं जैसी पहले उनके हृदय में थीं, वे "निःसंशय" ऐसा कहने में समर्थ थे कि "कोई भी व्यक्ति कानून के पेशे में भी उतना ही महान् जीवन व्यतीत कर सकता है जितना अन्यत्र; कि उस पेशे में तथा अन्यत्र भी उसका विचार एक अनन्त पृष्ठ-भूमि में अपनी इकाई प्राप्त कर सकता है; कि इस क्षेत्र में तथा अन्यत्र भी वह जीवन की चट्टान पर टकराकर चकनाचूर हो सकता है, उसे अभिनायकता का कड़वा घूँट पीना पड़ सकता है, और दुःसाध्य आदर्शों के पीछे अपना हृदय विदीर्ण करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।" सन् १८८७ में उन्हें वकालत में विधिवत् प्रवेश मिल गया और वे उसका कार्य करने लगे। वे भयंकर तत्परता के साथ अपने व्यवसाय में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए जुट गये।

सन् १८६६ में विलियम जेम्स ने लिखा था—"मैं समझता हूँ कि वेण्डेल अत्यधिक कठिन परिश्रम कर रहा है" और यह विषय जेम्स परिवार के पत्र-व्यवहार में निर्दिष्ट है। किन्तु होम्स ने कभी भी देर तक कार्य करने का ढोंग नहीं रचा। वस्तुतः उनका विश्वास था कि जिसे श्रम कहा जाता है, अर्थात् वास्तविक सृजनकारी श्रम, प्रतिदिन चार घण्टे से अधिक नहीं किया जा सकता। किन्तु काम के समय वे गहन तन्मयता के साथ परिश्रम करते थे। होम्स ने कानून के विवरणों में अपने-आपको डुबा दिया था। जिस समय उन्होंने यह अध्यवसाय प्रारम्भ किया था, उस समय "कानून उनके सम्मुख विवरणों की एक नीरस, जीर्ण, झोली बनकर प्रस्तुत हुआ था......किसी को भी प्रायः क्षुब्ध होकर ही अपने हृदय से पूछना पड़ता था कि यह विषय किसी बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा रुचि लेने योग्य है या नहीं।" किन्तु होम्स की कल्पनाशील तथा दार्शनिक प्रतिभा ने कानून के शुष्क विवरणों में जीवन तथा सार्थकता का संचार किया। जहाँ दूसरों को केवल असम्बद्ध दृष्टान्त मिलते थे, वहाँ होम्स को उनमें महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता था। इस प्रकार उनका यह कथन, जिसे उन्होंने किसी अन्य के

प्रति कहा था, स्वयं उन पर ही पूर्णतया चरितार्थ होता था कि उनका ज्ञान "बुद्धिमत्ता के सप्राण तन्तु में रूपान्तरित हो गया था।"

इस सम्पूर्ण अवधि में वे सक्रिय रूप से वकालत में संलग्न रहे और यथार्थताओं की वांच्छनीय झलकें प्राप्त कर रहे थे। किन्तु, उनकी मनोवृत्ति ही कुछ इस प्रकार की थी कि उनकी गहनतम रुचि निश्चित रूप से अध्ययनशील तथा विद्वत्तापूर्ण धन्धों में ही थी, यद्यपि वे अप्रधान व्यवसायों के रूप में ही उनका अनुशीलन करते थे। उन्होंने संयुक्त राज्य के जिला न्यायालय में अपनी नियुक्ति का स्वागत प्रसन्नतापूर्वक किया होता, क्योंकि वहाँ उन्हें अपेक्षाकृत अधिक बौद्धिक स्वतन्त्रता मिली होती। किन्तु भाग्य ने तो उनके लिए कुछ दूसरी ही योजनायें तैयार कर रखी थी।

होम्स की प्रारम्भिक रचनाओं में ऐसी समस्याओं का विवेचन किया गया था जो कि विधिवत् न्याय के लिए तत्पर समाज के लिए महत्त्वपूर्ण थीं। कानून के स्रोत तथा उनके अनुमोदक प्रमाण क्या हैं? किन कानूनों का निर्माण न्यायालयों द्वारा होना उचित है और किन कानूनों को विधान सभा द्वारा निर्मित होने के लिए छोड़ देना चाहिए? न्याय निर्धारण के अचेत अथवा सचेत मूलतत्त्व क्या हैं? नजीरों अथवा दृष्टान्तों की बुद्धिसंगत आवश्यकतायें क्या हैं, और वह कौन से अवसर हैं जब कि न्यायप्रणाली को अपने भूतकालीन दृष्टान्तों द्वारा अपने-आप को बाध्य नहीं समझना चाहिए? इसी प्रकार के प्रश्नों ने एक ऐसे समय में होम्स की छानबीन और शोधों का मार्ग-प्रदर्शन किया था, जब कि कानून को सामान्यतः निश्चित सिद्धान्तों का एक समूह माना जाता था, जिससे तर्कसंगत निगमन की प्रक्रिया द्वारा तीव्र गति से औद्योगिक उन्नति करने वाले समाज की नवीन समस्याओं के समाधान निकाले जाने वाले थे। किन्तु कानून के एक ऐसे दृष्टिकोण को अस्वीकृत करने में, जो कि उसे केवल तर्कसंगत उद्घाटन मानता हो, तर्क से पीछे हटने वाली बाद की प्रवृत्तियों के साथ होम्स के विचारों की कोई एकरूपता नहीं थी। औपचारिक तर्क को सामाजिक बुद्धिमत्ता के रहस्योद्घाटक के रूप में मान्यता न देकर उन्होंने तर्क-विरोधी सिद्धान्त का अनुशीलन नहीं किया था। वस्तुस्थिति ठीक इसके विपरीत थी। उनकी निष्ठा तर्क में और उन प्रवृत्तियों में थी जो भौतिक अथवा स्वाभाविक इच्छाओं तक ही सीमित नहीं थीं। उन्होंने इस सिद्धान्त में विश्वास करने से इन्कार कर दिया था कि "संविधान प्रमुख रूप से लोकतन्त्रीय कृषिवाद तथा व्यक्तिवाद पर मौद्रिक सत्ता की विजय का प्रतीक है.........मैं उस समय तक, जब तक कि अन्यथा सोचने के लिए

बाध्य नहीं होऊँगा, यह विश्वास बनाये रखूँगा कि वे (संघ की स्थापना करने वाले नेता) एक राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे और उन्होंने इस विश्वास के साथ ही पूँजी का विनियोजन किया था (दाँव पर लगाया था) कि वे एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण अवश्य करेंगे; वे केवल इस कारण ही शक्तिशाली सरकार की स्थापना कदापि नहीं करना चाहते थे कि उन्होंने पूँजी का विनियोजन किया था। हीनता सिद्ध करने के लिए प्रेरित तर्कों में सदैव एक प्रकार की उनकी अपनी शक्ति होती है, किन्तु आपका और मेरा यह विश्वास है कि बौद्धिक उत्कर्ष मनुष्य के लिए असम्भव नहीं है। ठीक इसी प्रकार, इस बात से अवगत होते हुए भी कि समाज में हितों का संघर्ष है और कानून की भूमिका मध्यस्थता करने की है, होम्स उस कुत्सित धारणा से भी कदापि सहमत नहीं थे जिसके अनुसार कानून केवल प्रचलित शक्ति और बुभुक्षाओं का क्रियात्मक रूप है।

किन्तु, एक ऐसे समय पर, जब कि न्यायाधीश लोग दर्शन के अभाव का अहंकार मानते थे, होम्स ने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि निर्णय किसी न्याय सम्बन्धी दर्शन के ही व्यापार होते हैं, और यह कि तार्किक ढाँचे के धरातल के नीचे गतिशील विचारों की जानकारी एक सभ्य न्याय-प्रणाली की प्रमुख आवश्यकता है। इस प्रकार, आधुनिक मनोविज्ञान पर फ्रायड का प्रभाव पड़ना प्रारम्भ होने से एक पीढ़ी से अधिक पहले ही न्याय सम्बन्धी मनोविज्ञान के अपने विश्लेषण में होम्स अवचेतन की भूमिका से अवगत हो चुके थे।

सन् १८८१ में ४० वर्ष की अवस्था में प्रवेश करने से पहले ही उन्होंने अपना ग्रन्थ 'दी कामन ला' प्रकाशित किया। यह ग्रन्थ कानून और ज्ञान-संचय की दृष्टि से एक विशेष युग का प्रतिनिधित्व करता है। होम्स के लगभग आधे दर्जन लेखों सहित उनके ग्रन्थ, 'दी कामन ला', ने कानून विज्ञान को सबसे सबल दिशा-निर्देश प्रदान किया। उन्होंने कानूनी छानबीन को नये साँचे में ढाला। यह ग्रन्थ इस अर्थ में शास्त्रीय ग्रन्थ भी है कि इसका विचार-भण्डार सामान्य न्याय सम्बन्धी विचारधारा में विलीन होकर उसका अविच्छिन्न अंग बन चुका है। इसके कुछ प्रारम्भिक वाक्यों से ही इसकी विचारधारा का निरूपण हो जाता है। वे उस समय की मनोवृत्ति की अपेक्षा, जब कि वे लिखे गये थे, वर्तमान समय की विचारधारा का प्रतिनिधित्व अधिक सत्यता के साथ करते हैं। उन्होंने अब से लगभग ६० वर्ष पूर्व ही कानून को एक ऐसी पृष्ठभूमि पर खड़ा कर दिया था जिसे उसके पश्चात् की कानूनी विद्वत्ता ने केवल पुष्टमात्र किया है।

"कानून का प्राण तर्क नहीं बल्कि अनुभव रहा है। उन नियमों के निर्धारण में, जिनके द्वारा मनुष्यों को अनुशासित होना चाहिए, न्याय की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में युग की अनुभूत आवश्यकताओं, प्रचलित नैतिक तथा राजनैतिक सिद्धान्तों, स्वीकृत अथवा अचेतन सार्वजनिक नीति की अन्तर्प्रेरणाओं, और यहाँ तक कि न्यायाधीशों द्वारा अपने बन्धु-मानवों की भाँति ही सामान्यरूप से मान्य पक्षपातों का हाथ रहा है। कानून अनेक शताब्दियों में से होकर किसी राष्ट्र के विकास की कहानी का मूर्तरूप प्रस्तुत करता है, उसे ऐसा ग्रन्थ कदापि नहीं माना जा सकता जिसमें किसी गणित की पुस्तक की भाँति केवल स्वयंसिद्धियाँ तथा उपपत्तियाँ शामिल हों। इसके यथार्थ रूप को जनने के लिए हमें यह जानना पड़ेगा कि यह क्या कर रहा है और इसमें क्या होने की प्रवृत्ति है। हमें इतिहास तथा विधान के वर्तमान सिद्धान्तों में से एक के बाद दूसरे का चिन्तन-मनन करना चाहिए। किन्तु प्रत्येक अवस्था में नवीन रचनाओं के अन्तर्गत दोनों के संयोग को समझना सबसे कठिन काम होगा। किसी भी निश्चित समय पर कानून का मूलतत्त्व प्रभाव की दृष्टि से उस समय जो कुछ सुविधाजनक माना जाता है, उसके प्रायः अनुरूप ही होता है। किन्तु, उसका ढाँचा, उसकी व्यवस्था तथा जिस अंश तक वह वांच्छनीय परिणाम उत्पन्न करने में समर्थ होता है—वे सब अधिकांशतः उसके भूतकाल पर निर्भर करते हैं।

'दी कामन ला' जैसी मौलिक विद्वत्ता वाला ग्रन्थ वकीलों और न्यायाधीशों की विचारधारा को प्रभावित करने में केवल धीमी चाल से ही प्रगति कर सकता है, फिर भी विद्वान् जगत् ने इसे तत्काल मान्यता प्रदान कर दी। इसके प्रकाशित होने का तत्काल परिणाम यह हुआ कि होम्स को हारवर्ड के कानून विद्यालय से प्राध्यापक पद के लिए निमन्त्रण मिला। किन्तु होम्स ने शीघ्र ही प्राध्यापक का आसन छोड़कर न्यायालय में पद ग्रहण किया। ३ जनवरी, १८८३ को होम्स ने मैसाचुसेट्स के उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश का पद ग्रहण किया और लगभग आधी शताब्दी तक न्यायाधीश बने रहे।

उनके २० वर्ष के कार्यकाल में मैसाचुसेट्स के सर्वोच्च न्यायालय जैसे महत्त्वपूर्ण न्यायाधिकरण में से होकर मुकदमों की जो धारा प्रवाहित हुई, उसकी सहायता से होम्स कानून के समस्त विस्तृत क्षेत्र को उर्वर बनाने में समर्थ रहे। यद्यपि उनके सम्मुख मुकदमे के किसी पूर्व निर्धारित क्रम से प्रश्न प्रस्तुत नहीं किये जाते थे, फिर भी मैसाचुसेट्स के प्रश्नों के सम्बन्ध में होम्स ने जो मत—५० अरुचिकर खण्डों में बिखरे हुए लगभग १३ सौ व्यक्त किये, उन्हें यदि उपयुक्त ढंग पर एकत्र

किया जाय तो वे अमेरिकी कानून के इतिहास के किसी भी युग के लिए कानून के सबसे व्यापक तथा दार्शनिक ग्रन्थ का निर्माण करेंगे। जहाँ तक होम्स का सम्बन्ध था, उनके लिए वे उस व्यक्ति की पीड़ाजनक अपर्याप्तता से संयुक्त थे, जिसका लक्ष्य दुस्साध्य रहा हो।

"मैं अपनी उस पुस्तिका पर दृष्टिपात करता हूँ, जिसमें मैं पूर्ण-न्यायालय के उन निर्णयों की सूची रखता हूँ, जिन्हें मुझे लिखना पड़ता है; और उसमें मुझे लगभग १००० मुकदमें मिलते हैं। मेरे समस्त जीवन के लगभग आधे भाग का प्रतिनिधित्व करने वाले १००० मुकदमें, जिनमें से अनेक अत्यन्त साधारण अथवा अन्तर्कालीन विषयों से सम्बन्ध रखते हैं। १००० मुकदमें जिनके सम्बन्ध में उनकी तह तक अध्ययन करना पड़ा होगा और प्रत्येक प्रश्न पर, जिसे किसी भी समय कानून ने प्रस्तुत किया हो, अपना मत व्यक्त करना पड़ा होगा, और फिर, आगे बढ़कर ऐसी नवीन समस्यायें उत्पन्न करनी पड़ी होंगी, जिन्हें कि कानून की कसौटी होना चाहिए; और फिर, उस समस्त तथ्य को सामान्य रूप देना पड़ा होगा और उसे एक निरन्तर तर्क-संगत दार्शनिक शैली में, उसके समूचे ढाँचे को इतिहास में फैली हुई उसकी जड़ों तथा उसकी वास्तविक अथवा काल्पनिक आवश्यकता के औचित्य सहित प्रस्तुत करते हुए लिखना पड़ा होगा।"

निस्सन्देह, इस प्रकार के मापदण्ड विशिष्ट-वर्ग के लिए प्रेरणादायक थे, किन्तु उनका उद्देश्य सर्वव्यापी मान्यता प्राप्त करना शायद ही रहा होगा। मैसाचुसेट्स में अपने सम्मुख आये हुए वकीलों को वे कैसे प्रतीत होते थे, इसका एक विश्वसनीय चित्रण हमें उपलब्ध है।

"मेरे समय में इस न्यायालय में न्यायाधीश पद पर जितने लोग आये, उनमें से किसी में भी इस प्रकार का ओजस्वी तथा भयोत्पादक व्यक्तित्व नहीं था—कम से कम एक युवक वकील के लिए। वे पूर्णतया शिष्ट एवं विनम्र थे, किन्तु उनका मस्तिष्क इतने असाधारण रूप से तीक्ष्ण तथा शीघ्रगामी था, वे इतने सावधान तथा तीव्र ध्यान देने वाले श्रोता थे, उनके प्रश्न मामले की जड़ तक इस प्रकार पहुँच जाया करते थे कि उनके सम्मुख पेश होना एक अग्नि-परीक्षा सिद्ध होता था। किसी मुकदमे में बहस करते समय आप ऐसा महसूस करने लगते थे कि अभी आपका वाक्य आधा भी पूरा नहीं हुआ था कि उन्होंने उसका अन्त समझ लिया; और बहस अभी एक तिहाई ही समाप्त हुई थी कि उन्होंने तर्क के समूचे रूप को भाँप लिया था और यह सोचने लगे थे कि वह तर्क ठोस है या नहीं।"

उन्हें लम्बे घुमाव फिराव से, तर्कों की अनावश्यक दीर्घ व्यूह-रचना से, अत्यन्त घृणा थी और वे वकील महाशयों को यह सुझाव दिया करते थे कि वे वक्रोक्ति की कला अंकुरित करने के लिए फ्रांसीसी उपन्यास पढ़ा करें। किन्तु उन्होंने कुछ श्रम सम्बन्धी मामलों में, जिन्हें बोस्टन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में 'खतरनाक' समझा जाता था, अपना मत पर्याप्त स्पष्टता के साथ व्यक्त किया था। उस समय उनके विचारों की दिशा ऐसी थी कि उनका एक मतभेद-पत्र जो कि उसी समय से अटलाण्टिक के दोनों ओर के देशों में कानूनी विश्लेषण के एक महान् मोड़ के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है, उनकी न्याय सम्बन्धी पदोन्नति के मार्ग में एक गम्भीर बाधा समझा जाने लगा था। उन्होंने केवल कानून सम्बन्धी अपने तटस्थ दृष्टिकोण का ही अनुशीलन किया था और "उन सिद्धान्तों में, जिन्हें संविधान अथवा सामान्य कानून के अन्तर्गत कोई उचित स्थान प्राप्त नहीं था", "समाजवाद" के भय का समावेश करने से इन्कार कर दिया था।

५ अगस्त १८९९ को वे मैसाचुसेट्स के प्रधान न्यायाधीश हो गये; और उनके जिन मतों ने बोस्टन के अनुदारवादियों को उद्विग्न कर दिया था, अन्त में, उन्हीं से अंशतः प्रभावित होकर राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट सर्वोच्च न्यायाधिकरण में एक स्थान रिक्त होने पर होम्स की ओर मुड़े थे।

होम्स ने ८ दिसम्बर १९०२ को अपना पद ग्रहण किया। उन्होंने एक ऐसे युग में न्यायालय में पद-ग्रहण किया था, जब कि सबल वैधानिक क्रियाशीलता में परिवर्तनशील सामाजिक धारणाएँ प्रतिबिम्बित थीं, और ये सामाजिक धारणाएँ भी स्वयं विशाल प्राविधिक विकास से प्रेरित थीं। उस समय वातावरण में जो बातें व्याप्त थीं, वे इस संक्षिप्त कथन में पूर्णतया व्यक्त थीं कि थियोडोर रूजवेल्ट "संयुक्त राज्य के पहले राष्ट्रपति थे, जिन्होंने मध्यम मार्ग के हित में सम्पत्ति के वितरण को क्रियाशील करने के उद्देश्य से राजनीतिक सरकार के अधिकारों का प्रयोग करने का खुले आम प्रस्ताव किया था।"

यद्यपि संवैधानिक कानून औपचारिक रूप से साधारण कानूनी मुकदमे की ही उपज होता है, फिर भी वह साधारण कानून से गहन रूप में भिन्न होता है। संवैधानिक कानून ऐसे सिद्धान्तों का समूह होता है, जिसके द्वारा सर्वोच्च न्यायालय राष्ट्रीय और राजकीय कार्यवाही के बीच सीमारेखा निर्धारित करता है, और जिनके माध्यम से वह नागरिक और सरकार के बीच मध्यस्थता करता है। इस प्रकार वह ऐसे कार्य सम्पन्न करता है जो अमेरिकी लोगों को सरकार की महत्त्वपूर्ण

व्यवस्थाओं का निर्धारण करते हैं। इस प्रकार के समंजन अधिकांशतः संविधान की व्यापक व्यवस्थाओं पर आधारित होते हैं। "स्वतन्त्रता" जैसे शब्द तथा "कानून की उचित प्रक्रिया" तथा "विभिन्न राज्यों के बीच............व्यापार का नियमन" जैसे मुहावरे, ऐसे सरकारी कार्यों की मान्यता के सम्बन्ध में निर्णय करने के लिए कानूनी आधार प्रस्तुत करते हैं, जो कि अनन्त प्रकार के सामाजिक तथा आर्थिक तथ्यों की दिशा में निर्दिष्ट होते हैं। किन्तु ये शब्द तथा मुहावरे "सुविधाजनक अस्पष्टता" के द्योतक हैं। वे राज्य और राष्ट्र के बीच, स्वतन्त्रता और सत्ता के बीच, अनिर्दिष्ट तथा सदा परिवर्तनशील सीमाओं के निर्धारण में न्याय सम्बन्धी विस्तृत लोचशीलता प्रदान करते हैं, जिससे बचना असम्भव होता है। किसी संघीय राष्ट्र में, और विशेष रूप से, ऐसे राष्ट्र में जिसका सीमाक्षेत्र इतना विस्तृत हो और जिसके हित इतने विविध प्रकार के हों, जैसे संयुक्तराज्य के, केन्द्रीय सरकार और राज्यों के बीच आवश्यक समंजन करने के उद्देश्य से एक सबल सत्ता का अस्तित्व कहीं न कहीं अवश्य होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, यह कार्य सम्पन्न करनेवाला साधन ऐसा होना चाहिए जो उन दबावों तथा परिवर्तनों से प्रभावित न हो सके, जिनके अन्तर्गत सरकार के राजनीतिक विभाग आश्रय पाते हैं। वह अन्तिम विवाचक अथवा मध्यस्थ, सर्वोच्च न्यायालय ही है।

होम्स ने न्यायाधीश होने के पूर्व हमारे कानून के स्रोतों का जो गहन विश्लेषण किया था, उसने हमारे कानूनी सिद्धान्तों की सीमित मान्यता के सम्बन्ध में उनके मस्तिष्क पर एक चिरस्थायी सचेतनता की छाप छोड़ दी थी। वे इस बात को कदापि भूले नहीं थे कि भूतकाल में परिस्थितियों ने ही कानून की रूपरेखा तैयार की थी और भावी कानूनों का स्वरूप-निर्माण मुख्यतः विधान सभाओं का कार्य है। अतः, वे उन सूक्ष्म शक्तियों के प्रति अत्यन्त उत्सुकता से सजग थे जो कि दूसरों के निर्माण की समीक्षा, उस निर्णय की बुद्धिमत्ता की दृष्टि से नहीं, बल्कि उसकी बुद्धिमत्ता में उनके विश्वास के औचित्य के दृष्टिकोण से, करने की प्रक्रिया से सम्बद्ध होती हैं। जैसे-जैसे समाज उत्तरोत्तर अधिक जटिल होता जाता है, और तदनुरूप ही व्यक्तिगत अनुभव अधिक संकुचित होता जाता है, वैसे ही वैसे सहनशीलता और विनम्रता संवैधानिक न्याय निर्णय के क्षेत्र में विधायकों के विश्वासों और अनुभव के सम्बन्ध में निर्णय देने में निर्णायक तत्त्व बनकर प्रकट होती जाती हैं। संवैधानिक मामलों पर निर्णय देने के कार्य में इन सूक्ष्म पक्षों से जितना अवगत होम्स थे, उतना सम्भवतः कोई अन्य न्यायाधीश नहीं हो सकता। वे सर्वभक्षी

की भाँति (संदिग्धताओं में वृद्धि करने के लिए) सब कुछ पढ़ा करते थे। दृढ़ता और कठोरता से विकसित उनकी कल्पना और विनम्रता ने उन्हें अपने तात्कालिक अनुभव की संकुचित सीमाओं से पार हो जाने में समर्थ बना दिया था। सम्भवतः न्यायालय में न्यायाधीश के पद पर प्रतिष्ठित कोई भी व्यक्ति कभी उन भावात्मक वायदों से, जो कि उसे स्वयं अपने आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोणों की संवैधानिक आदेशों में रूपान्तरित करने के लिए बाध्य करते हैं, अपनी मनोवृत्ति तथा अनुशासन द्वारा होम्स की अपेक्षा अधिक मुक्त नहीं रहा। उन अधिकारों की शोध करने में, जिनका प्रयोग एक महान् राष्ट्र द्वारा हो सकता है, वे केवल अपने ही मनोभावों का अध्ययन नहीं करते थे। प्रायः उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण उन विधानों के सर्वथा विपरीत हुआ करते थे, जो कि उनके समक्ष निर्णय के लिए उपस्थित किये जाते थे। वे समाज को उन विच्छिन्न आर्थिक सुधारों द्वारा सुधारने के प्रयत्नों पर व्यक्तिगत रूप से अविश्वास करते थे, जिन्हें वे, यदि दुष्टतापूर्ण नहीं, तो व्यर्थ अवश्य समझते थे। किन्तु यह उनका व्यवसाय था ही नहीं। समाज के लिए अत्यन्त व्यापक सीमाओं के भीतर प्रयोग करने के अधिकार का निर्देश करना, अथवा उसे अस्वीकार करना, उनका काम नहीं था। इसे राज्य की राजनीतिक शक्तियों के जिम्मे आपस में प्रतियोगिता करने के लिए छोड़ देना था। न्यायालय का कर्तव्य तो केवल अखाड़े को स्वतन्त्र रखना था। वे संदिग्धता के दार्शनिक मार्ग द्वारा—सामाजिक समस्याओं के अन्तिम समाधानों पर अपने अविश्वास द्वारा—लोकतन्त्रीय परिणाम पर पहुँचते थे। इस प्रकार, उन्होंने न्याय-निर्णय सम्बन्धी कार्य को उसके विशुद्धतम रूप में प्रदर्शित किया था।

उन्होंने आर्थिक नीति के सम्बन्ध में संवैधानिक न्याय को इतना अधिक क्षेत्र केवल इसलिए दिया था कि वे इस बात से भली भाँति अवगत थे कि सामाजिक व्यवस्थाएँ समय और परिस्थितियों द्वारा किस हद तक परिसीमित होती हैं। वे यह भी जानते थे कि हमारे पास "वैज्ञानिक दृष्टि से निश्चित विधान के मापदण्ड नगण्य हैं, और चूँकि उस सीमा रेखा को निश्चित कर लेना प्रायः कठिन होता है, जहाँ संयुक्तराज्य के संविधान द्वारा पुलिस के अधिकार सीमित किये गये हैं, न्यायाधीशों को चाहिये कि वे विधान-निर्मातृ सत्ता से विरुद्ध संविधान में उनके विधानोपरि न होने के निर्देश को जरा सँभल कर ही धीमे पढ़ें।" किन्तु, सामाजिक विकास 'प्रयोग और त्रुटि'

करने की प्रभावकारी प्रक्रिया, उसी दशा में होता है, जब कि मस्तिष्क को उन्मुक्त क्रीड़ा के लिए यथासम्भव अधिकतम अवसर उपलब्ध हो। अतः, होम्स ने उन स्वतन्त्रताओं को, जिन्हें इतिहास ने स्वतन्त्र समाज के लिए एक अपरिहार्य शर्त माना है, उन स्वतन्त्रताओं से एक दम भिन्न वैधानिक महत्त्व प्रदान किया है, जो केवल आर्थिक व्यवस्थाएँ परिवर्तित करने के फलस्वरूप उत्पन्न होती हैं। यहाँ तक कि वाक्-स्वातन्त्र्य को भी उन्होंने निर्पेक्ष मान्यता वाला वह सिद्धान्त नहीं माना, और न ही उसे विशुद्ध सैद्धान्तिक सीमाओं तक लागू किया।

उनके दृष्टिकोण से संविधान कोई साहित्यिक प्रलेख नहीं, बल्कि सरकार का एक अङ्ग है। इस दृष्टि से उसे शब्दों का जादूगरी दिखलाने का एक अवसर नहीं, बल्कि जनता के जीवन को व्यवस्थित करने का एक साधन ही मानना चाहिए। उसकी जड़ें भूतकाल में गड़ी हुई हैं, होम्स ने अपने श्रोताओं को याद दिलाते हुए कहा था—'भूतकाल के साथ ऐतिहासिक अविरामता को बनाये रखना कर्त्तव्य नहीं, बल्कि एकमात्र आवश्यकता है'—किन्तु उसका निर्माण अज्ञात भविष्य को भी दृष्टिगत रखकर किया गया है। संविधान सम्बन्धी यह धारणा ही वह पृष्ठभूमि थी, जिसके आधार पर उन्होंने किसी विशिष्ट अधिकार अथवा विशिष्ट सीमा के क्षेत्र के सम्बन्ध में अपनी प्रत्येक जाँच को प्रक्षिप्त किया था। उनके लिए यह तथ्य, कि संविधान महान् सरकारी शक्तियों का एक ढाँचा है, जिसका उपयोग महान् सार्वजनिक लक्ष्यों के लिए ही होना चाहिए, कोई निष्प्राण बौद्धिक धारणा नहीं था। संवैधानिक न्याय-निर्णय सम्बन्धी उनकी प्रक्रिया पर इसका प्रमुख प्रभाव था। संविधान के प्रति उनके प्रभावकारी दृष्टिकोण के सामंजस्य में निर्मित उनके मतों ने एक ऐसे सप्राण ढाँचे को स्वीकार किया था, जिसके भीतर स्वतन्त्र समाज का गतिशील जीवन प्रस्फुटित तथा प्रफुल्लित हो सकता है। उनके संवैधानिक मतों से एक ऐसे राष्ट्र की धारणा का प्रादुर्भाव होता है, जो कि अपने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्यों को निभाने में पर्याप्त शक्ति से सम्पन्न है और जिसके संघकृत राज्य, यद्यपि राष्ट्रीय लक्ष्यों को सिद्ध करने में केन्द्रीय सत्ता के मातहत होते हैं, फिर भी अपनी स्थानीय विविध आवश्यकताओं को पूर्ण करने में पर्याप्त शक्ति से सम्पन्न हैं। उनके मस्तिष्क पर उस संघ की स्मृति छायी हुई थी, जिसे उन्होंने बाल्स ब्लफ, एण्टीटैम तथा फ्रेडरिक्स बर्ग में सुरक्षित रखने में सहायता पहुँचायी थी। वे उन विषयों में राज्यों के अधिकार-क्षेत्र के विस्तार के प्रति भी उतने ही सतर्क

थे, जो कि कांग्रेस की पहुँच के बाहर होने के कारण विशिष्ट रूप से उनके अपने विषय थे।

उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता के साथ निर्णय करने में असाधारण शीघ्रता करने की क्षमता का संयोग था। उनके मत इन अन्तर्भूत गुणों के मधुर निचोड़ थे। उनकी प्रतिभा—जिसका प्रयोग कठोर आत्मानुशासन तथा प्रकाण्ड विद्वत्ता द्वारा होता था—केवल अत्यन्त अनिवार्य तत्त्व को ही ढूँढ़ती थी और उन्हें मर्मभेदक ढंग पर, संक्षिप्त रूप से व्यक्त करती थी। वे प्रत्यक्ष पर व्यर्थ सिर खपाने को मानसिक शिथिलता का एक रूप समझते थे और उससे अधीर हो उठते थे, क्योंकि शिथिलता और भोंदापन दोनों से वे समान रूप से ऊब जाते थे। उन्होंने मनोरंजक हास्य के साथ सुझाव दिया था कि वजनदार होने के लिए न्यायार्थीशों का भारी होना आवश्यक नहं; "........हमारे प्रतिवेदन नीरस होते थे, क्योंकि हमारी धारणा थी कि न्यायाधीश पद की गरिमा के लिए गम्भीर स्फुरणयुक्त भाषण आवश्यक है, जिस प्रकार जब मैं बड़ा हुआ तो सभी लोग काला फ्राक कोट और काला लबादा पहनते थे......।"

उनके मत से, विवेचक तथा कलाकार अत्यन्त विचित्र ढंग से विगलित होते हैं। मुकदमों का फैसला करने में उनका उद्देश्य "मायावी को, बाजीगर को ही चोट करने का प्रयत्न करना" होता था। उनके मत स्वाभाविक रूप से तथा बिना किसी प्रयत्न के, प्रगट होते थे मानो वे जादूगर की आस्तीन से खींचकर निकाले गये देदीप्यमान पांखोंवाले पक्षी हों। किन्तु, उनके पत्र व्यवहारों से हमें उन महान् प्रयत्नों की झलक मिलती है, जो सरल प्रतीत होनेवाली सफलताओं के पीछे छिपे हुए थे। "निस्सन्देह, पत्रों में उसके स्वरूप के विषय में सोचे-विचारे बिना ही काम चला लिया जाता है, किन्तु अपने कानूनी लेख में मैं निश्चित रूप से उसे सुललित बनाने का प्रयत्न करता हूँ; और मैं फ्लावर्ट से पूर्णतया सहमत हो गया हूँ। यद्यपि उन्होंने फ्रेंच लिखने के सम्बन्ध में कहा है किन्तु किसी भी भाषा का लिखना अत्यधिक कठिन है। भद्दी त्रुटियों और सामने की खाइयों से बचना एक परिश्रम-साध्य काम है। विचारों को इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से सजाना, जिससे एक विचार स्वभावतः अपने पूर्ववर्ती विचार से उछलता हुआ प्रवाहित हो, और उन्हें एक सुमधुर संगीतमय विभिन्नता से व्यक्त करना ही समस्त कठिनाई का मूल है।" और पुनः, "कला का, यहाँ तक कि कानूनी-निर्णय लिखने की

कला का भी, शाश्वत प्रयास अनिवार्यतम तत्त्वों के अतिरिक्त शेष सब कुछ त्याग देने में ही निहित है।"

संयुक्त राज्य के सर्वोच्च न्यायालय में संवैधानिक प्रश्नों पर मतभेदवाले दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति, प्रारम्भ से ही, अनिवार्य मानी गयी है। अतः, वाशिंगटन में न्यायाधीश होम्स की कलम से वे मैसाचुसेट्स की अपेक्षा अधिक बार लिखे गये, और कभी कभी तो उन्हें रूखे "प्योरिटन उत्साह" के साथ लिखा गया। उनकी कुछ सबसे सबल उक्तियाँ मतभेद पत्रों में ही व्यक्त हुई हैं, किन्तु वे ऐसे मतभेद-पत्र हैं, जिन्होंने इतिहास को ढाला है। फिर भी, उनके मतभेद-पत्रों को सानुपातिक महत्त्व प्रदान नहीं किया गया है, वे कुछ बहुत बड़े, एक ठोस इकाई, के अंग मात्र हैं।

अपने पद से निवृत्त होने पर कुछ थोड़े समय तक उन्होंने इस सुझाव का अनुरंजन किया कि वे कानून के सम्बन्ध में अपने अन्तिम विचारों को एक छोटी सी पुस्तिका में लेखबद्ध कर दें। किन्तु वे अपने जीवन भर किसी कर्त्तव्य के अपूर्ण छोड़ देने की चोट से प्रेरित रहे. और अन्त में, इस आनन्द में विभोर हो उठे कि उन्होंने कोई काम अपूर्ण नहीं छोड़ा है। इसके अतिरिक्त, बड़ी सफलता से वह यह मानने लगे कि उन्होंने अपने विचारों को ठीक उसी प्रकार से व्यक्त किया है, जिस प्रकार से उन्हें व्यक्त करने के लिए वे लालायित और अत्यधिक सजग थे। उनके ये विचार उनके दो सहस्र से अधिक मतों में तथा समय समय पर लिखे गये उनके लेखों के दुबले किन्तु भारी संग्रहों में बिखरे पड़े हैं। उन्होंने पोलक को लिखा था: "अब मैं प्रसन्नता के साथ बेकारी के दिन काट रहा हूँ और अपने को यह समझाने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि मेरे जीवन का ९१वाँ वर्ष कर्त्तव्य की सीमा पार कर चुका है......।" वे प्रणालियों में विश्वास नहीं करते थे। उनका विचार था कि वे कुछ इनी-गिनी अन्तर्दृष्टियों के भारी विवरण हैं—जिन्हें उन्होंने बार-बार प्रयुक्त "एपरकन्स" शब्द द्वारा व्यक्त किया है। उन्होंने पुनः जोर देकर कहा था कि प्रणालियाँ मर जाती हैं, किन्तु अन्तर्दृष्टियाँ शाश्वत बनी रहती हैं। अतः, उनके कानूनी दर्शन तथा उनके सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य-क्षेत्र में प्रयुक्त उनकी न्याय सम्बन्धी प्रविधियों के विषय में स्वयं उनकी कुछ अन्तर्दृष्टियों से ही सर्वश्रेष्ठ संकेत प्राप्त होंगे।

"......संविधान की व्यवस्थाएँ गणितीय सूत्र नहीं हैं, जिनका मूलतत्त्व उनके बाह्य स्वरूप में निहित हो; वे सप्राण जीवित संस्थाएँ हैं जिन्हें अंग्रेजी

मिट्टी से उखाड़कर पुनः लगाया गया है। उनका महत्त्व औपचारिक नहीं, बल्कि प्राणमय हैं; उसे केवल शब्दों और शब्दकोष द्वारा नहीं, बल्कि उनके मूलस्रोत तथा उनके विकासक्रम पर विचार करके ही, प्राप्त किया जा सकता है।

"........जब हम ऐसे शब्दों पर विचार कर रहे हैं, जो कि संयुक्त-राज्य के संविधान की भाँति ही किसी ठोस विधान के अंग हैं, तो हमें यह समझ लेना चाहिये कि उन्होंने एक ऐसे प्राणी को जीवनदान दिया है, जिसका विकास उसके सबसे वरदानी जन्मदाता द्वारा भी पूर्णरूप से पूर्वलक्षित नहीं था। उनके लिए यह जान लेना या यह आशा करना ही पर्याप्त है कि उन्होंने एक सजीव, ठोस इकाई का निर्माण किया है; इसमें सैकड़ों वर्ष लग गये हैं, और उनके उत्तराधिकारियों को यह प्रमाणित करने में कि उन्होंने एक राष्ट्र का सृजन किया था, काफी खून और पसीने का मूल्य चुकाना पड़ा है। हमारे समक्ष उपस्थित मामला हमारे समस्त अनुभव की रोशनी में ही विचारणीय है, न कि जो कुछ सौ वर्ष पूर्व कहा गया था, उसकी रोशनी में।

"महान् संवैधानिक व्यवस्थाओं को सावधानी के साथ ही प्रशासित करना होगा। यंत्र के जोड़ों को भी कुछ अंश तक स्वतंत्र रूप से क्रियाशील होने देना चाहिये, और यह याद रखना चाहिये कि विधान-सभाएँ भी स्वतंत्रता तथा जनता के कल्याण को लगभग उसी अंश तक संरक्षित रखती हैं, जितने अंश तक न्यायालय।"

प्रतिभा का उल्लेख करने का प्रयत्न व्यर्थ है; और यह शब्द उस व्यक्ति के लिए अनुचित रूप से हर्गिज प्रयुक्त नहीं हुआ है, जिसे न्यायाधीश कार्डोजो जैसे योग्य प्रशंसक ने अँग्रेजी भाषा-भाषी न्याय-प्रणाली के इतिहास में सम्भवतः सबसे बड़ा कानूनी मस्तिष्क माना है। होम्स केवल अपनी गूढ़तम प्रेरणाओं पर ही ध्यान देते थे। वे वस्तुस्थिति के धरातल से नीचे घुसकर शोध करने; सूत्रों के बाह्य आवरण को बींधकर नीचे तक पहुँचने के लिए ही, चाहे वह कितना भी सम्मानित क्यों न हो, उत्पन्न हुए थे। उन्होंने उनके ऐश्वर्यपूर्ण ढाँचे के नीचे झाँककर देखा और उन्हें उनके सामान्य यथार्थ रूप में, अस्तव्यस्त अथवा परस्पर-विरोधी सामाजिक नीतियों की सूत्रवत् अभिव्यक्तियों के रूप में पहचाना। अतः महत्त्वपूर्ण, सजीव, न्याय सम्बन्धी प्रश्न उनका निवास-स्थल बनने लगते हैं। इस प्रकार निर्णय अनिवार्य रूप से रेखाएँ खींचने की बात

रह जाते हैं। उन्होंने बार बार उस आवश्यकता की ओर ध्यान आकृष्ट किया था जिसे उन्होंने संक्षेप में एक बार इस प्रकार व्यक्त किया है—"मेरे मत से हमें इस विचार के विषय में परेशान होने की आवश्यकता नहीं है कि मेरा दृष्टिकोण मात्रा की भिन्नता पर आधारित है। वस्तुतः समस्त कानून सभ्य और शिष्ट होते ही, ऐसा हो जाता है......।" निस्सन्देह कानून के सम्बन्ध में इस प्रकार के दृष्टिकोण के अन्तर्गत स्वैच्छिक चुनाव को व्यवहार में लाने का भाव निहित है। किन्तु, न्याय सम्बन्धी निर्णय चपल इच्छा की धारणा का विरोध करता है। इसमें स्पष्ट व्यख्या वाले ऐसे दावों के बीच न्याय की कल्पना की गयी है, जिनमें से प्रत्येक को स्व कृत मान्यता प्राप्त हो और प्रत्येक की अपनी सांस्कृतिक वंशावली हो, किन्तु अनिवार्य रूप से उनमें से सभी को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता हो। जैसे जैसे समाज के हित और कार्य उत्तरोत्तर अधिक अन्योन्याश्रित होते जायेंगे, वैसे ही वैसे सामंजस्य की यह प्रक्रिया अनिवार्य रूप से विधान सभा के जिम्मे ही अधिकाधिक होती जायगी। वे विचार जो इस प्रकार विधान को प्रेरित करते हैं तथा वे जटिल और संदिग्ध सामग्रियाँ जिनके आधार पर कानून लिखे जाते हैं, संयुक्त रूप से उन वैधानिक निर्णयों के प्रति आदर प्रकट करने के कर्तव्य को प्रत्यक्ष रूप से सामने ला देते हैं, जिनकी अपेक्षा और माँग संशोधन प्रक्रिया से, जिसे न्याय-निर्णय सम्बन्धी प्रक्रिया कहते हैं, की जाती है। इस दर्शन के प्रति होम्स के निष्ठावान होने के हजारों दृष्टांत वर्तमान हैं। उसके द्वारा उन्होंने राज्य और राष्ट्र, स्वतंत्रता और सत्ता, व्यक्ति या समाज के परस्पर विरोधी दावों को बृहत्तर ग्राह्य सत्यों के रूप में निश्चित कर दिया।

यह सर्वथा उचित और उपयुक्त बात है कि हारवर्ड कानून विद्यालय के वाचनालय में होम्स का चित्र मार्शल के चित्र के सम्मुख समान सम्मान के साथ लगाया गया हो।" जैसा कि होम्स ने एक अवसर पर कहा है, मार्शल को "सम्भवतः वह सबसे बड़ा पद प्राप्त हुआ, जो कि अभी तक किसी न्यायाधीश को प्राप्त नहीं हो सका है।" मार्शल ने इस पद को ग्रहण किया जो कि अमेरिका के इतिहास में सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका से प्रमाणित है। ख्याति के लिए होम्स की दावेदारी का आधार इससे भिन्न है। न्याय सम्बन्धी प्रक्रिया की प्रकृति के अन्तर्भूत भावार्थ-बोध की गहराई तथा इसकी व्याख्या की मौलिकता में वे अद्वितीय हैं। संविधान संबंधी उनकी धारणा को, संविधान लागू करने में किसी न्यायाधीश के कर्तव्य संबंधी उनकी धारणा से पृथक् नहीं किया जा

सकता और न्यायाधीश के कर्तव्य संबंधी उनके दृष्टिकोण, उनकी बौद्धिक पूर्व-कल्पनाओं से, अर्थात् न्याय संबंधी व्यवसाय में उनकी दार्शनिक संदिग्धता के एकनिष्ठ अनुशीलन से उत्पन्न हुए हैं। न्याय संबंधी समस्याओं के प्रति उनका जो दृष्टिकोण था उसे सृष्टि के साथ उनके संबंधों के विषय में सजगता के साथ उत्पन्न उनकी धारणाओं से पृथक् नहीं किया जा सकता था। उनके सम्मुख जो विशेष मामले-मुकदमे आये, उनसे ये भावात्मक धारणायें अत्यन्त दूरस्थ प्रतीत होती हैं। किन्तु मुकदमेबाजी के औपचारिक धरातल के नीचे छिपे हुए बृहत्तर बौद्धिक प्रश्नों के सन्दर्भ में किसी विशिष्ट विवाद को जिस स्पष्टता के साथ देखा गया है तथा जिस तटस्थता के साथ इस प्रकार का विश्लेषण निर्णय और मत का पथ निर्देश करता है, वे अमेरिकी सार्वजनिक कानून के अन्तिम निर्धारक बन चुके हैं।

सन् १९२२ के ग्रीष्म काल में एक बड़े आपरेशन के पश्चात् होम्स में बुढ़ापे के चिह्न -उस समय उनकी अवस्था ८२ वर्ष की थी परिलक्षित होने लगे थे। किन्तु धीरे धीरे उनका विलक्षण शरीर पुनः स्वस्थ होने लगा, यद्यपि उन्होंने अपनी शक्ति को अपने काम के लिए ही सुरक्षित कर रखा था। उनके कुछ सबसे शक्तिशाली मत उनके जीवन की ९ वीं दशाब्दी में लिखे गये। अपनी कार्यावधि के अन्तिम दिनों तक वे प्रायः मतों को, अपने निजी हिस्से से अधिक मात्रा में, लिखते रहे। वे अभी लगभग ८९ वर्ष की अवस्था में ही थे, जब कि प्रधान न्यायाधीश टैफ्ट की बीमारी और मृत्यु ने होम्स पर काफी समय तक के लिए न्यायालय में अध्यक्षता करने के भारी काम का दायित्व डाल दिया। इससे भी कठिन काम था सम्मेलनों में वार्ताओं का दिशा निदर्शन करना। न्यायाधीश ब्राण्डिस के शब्दों में, "उन्होंने इन दोनों कर्त्तव्यों को अपने उसी ढंग पर निभाया, जिनके लिए वे उत्पन्न हुए थे।"

किन्तु, उनका स्वस्थ्य उत्तरोत्तर गिरता जा रहा था, और १२ जनवरी, १९३१, को उन्होंने राष्ट्रपति के पास अपना त्याग-पत्र भेज दिया "अब समय आ गया है, और मैं अपरिहार्य के समक्ष अपना माथा टिकाता हूँ।" वाशिंगटन में, और ग्रीष्म काल में बेवर्ली फार्म्स पर, वे पढ़ते हुए और पढ़ाकर सुनते हुए, प्रकृति के सरल और परिचित दृश्यों का, जिन्होंने उन्हें सदैव स्फूर्ति प्रदान की थी, तथा मित्रों और विशेष रूप से युवकों के श्रद्धामय साहचर्य का, आनन्द लेते हुए, अपना शांत जीवन व्यतीत करने लगे। वे अवस्था में अत्यंत वृद्ध हो चुके थे, किन्तु उनकी आन्तरिक शक्ति और प्रेरणा कभी भी विक्षत नहीं

हुई थी। वे अपनी भद्रता में सर्वथा ध्यान-परायण हो गये थे। उनके उद्दीप्त व्यक्तित्व की अग्नि मुर्झाती जा रही थी और ६ मार्च १९३५ की प्रातः कालीन वेला में उनका देहावसान हो गया।

विशाल जनसमूह की ओर से—कालान्तर से—सद्भावना और आत्मा के शौर्य का अनुकूल और निश्चित उत्तर मिलने के कारण होम्स, जो कि मूलतः एक एकाकी विचारक थे, एक सर्वव्यापक तथा अमूल्य राष्ट्रीय निधि बन गये। उनके देहावसान पर समस्त देश ने शोकाभिभूत होकर आँसू बहाये। किन्तु उस अवसर पर जितने भी हृदयद्रावक उद्‌गार प्रकट किये गये थे, उनमें से होम्स ने अपने पुराने सुहृद तथा लगातार १५ वर्ष के निकटतम सहयोगी, न्यायाधीश बैंडिस, द्वारा मृत्यु-सन्देश पाने पर व्यक्त निम्नलिखित संक्षिप्त उद्‌गार को सबसे अधिक पसन्द किया होता : "तो, वह महापुरुष चले गये।" उनके ९४ वें जन्म-दिवस पर—हल्के हिमपातवाले मार्च के उस दिन की सुकुमार वेला में—उन्हें अपनी पत्नी की समाधि की बगल में और पोटोमैक की सेना के अपने ज्ञात और अज्ञात साथियों के निकट आर्लिंग्टन के राष्ट्रीय श्मशान में उचित सैनिक सम्मान के साथ दफना दिया गया।

बिना किसी सफाई दिये ही, उन्होंने अपनी विशाल सम्पत्ति का अधिकांश राष्ट्र को समर्पित कर दिया, जो कि राष्ट्र को अब तक बिना शर्त मिला सबसे बड़ा दान है। कांग्रेस ने एक होम्स-स्मारक निधि आयोग की स्थापना की। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट ने दान में मिली सम्पत्ति के उचित उपयोग का सुझाव देते हुए होम्स के उद्देश्य की व्याख्या इस प्रकार की थी : "यह एक ऐसे महापुरुष की भेंट है, जिसने युद्ध और शांति में अपना जीवन उसकी (राष्ट्र की) सेवा में समर्पित कर दिया था। इसके द्वारा उन्होंने, स्पष्टतः, स्वतंत्रता के उन सिद्धांतों में, जिसकी सुरक्षा के लिए इस देश की स्थापना हुई थी, अपनी मूलभूत आस्था के सम्पूर्ण मापदण्ड को उदार बल देते हुए अंकित करने का प्रयत्न किया था।" और राष्ट्रपति ने इसे राष्ट्र की लालसा समझकर यह व्यक्त किया था कि कांग्रेस "इस उपहार को एक ऐसा रूप प्रदान करे, जो कि उस महानतम परम्परा को बनाये रखने के लिए स्थायी प्रेरणा बन सके, जिसके न्यायाधीश होम्स मूर्त्त प्रतीक थे।" राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने लिखा कि वह परम्परा "कानून की सृजनात्मक सम्भावनाओं में उनकी आस्था ही है। उनके लिए कानून-मानव के बीच न्यायोचित सम्बंधों का एक साधन था। संयुक्तराज्य की न्याय-प्रणाली के इतिहास में इतनी गहरी

अंतर्दृष्टि के साथ, जिससे आगे कोई भी अमेरिकी विद्वान् अभी तक नहीं जा सका है; प्राचीन सिद्धांतों को वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार ढालने की क्षमता के साथ, जिसका विस्तार अद्वितीय तथा जिसकी भविष्यवाणी की शक्ति विलक्षण थी; तथा उसके मन्तव्य के ज्ञान के साथ जिसके आधार पर मनुष्यों के उद्देश्य ढलते हैं; न्यायाधीश होम्स ने उस न्याय प्रणाली माध्यम से उन महान् लक्ष्यों को सिद्ध करने का प्रयास किया था, जिन्हें पूरा करने के लिए ही हमारे राष्ट्र का निर्माण हुआ है।"

— —

वुडरो विल्सन

सैमुएल स्टीनबर्ग

४ मार्च, १६१३, को राष्ट्रपति की हैसियत से ह्वाइट हाउस में प्रविष्ट होने पर वुडरो विल्सन को जितने उथल-पुथलपूर्ण अवसरों का सामना करना पड़ा उतने उथल पुथलपूर्ण अवसरों का सामना कम ही राष्ट्रपतियों को करना पड़ा होगा। ऐसा प्रतीत होता था कि प्राचीन व्यवस्था के पाये सर्वत्र काँप उठे हैं। देश के भीतर श्रमिक, किसान तथा मतदाता व्यापक सुधारों के लिए शोर मचा रहे थे। जिस समय उनकी माँगें पूरी करने के लिए जोर डाला जा रहा था, विदेशी संकट, जिनमें विश्वयुद्ध का दैन्य भी सम्मिलित था, बलात् सर उठाने लगे थे। और राष्ट्रपति पद के विशेष अभिप्राय को किसी अन्य राष्ट्रपति ने विल्सन की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझा भी नहीं था, जिसकी व्याख्या करते हुए बाद के एक इतिहासकार ने लिखा था; "वह (राष्ट्रपति) राष्ट्र के व्यक्तित्व का मूलतत्त्व है या हो सकता है, और उसके अन्तर्गत अनेक वस्तुएँ कुसुमित या नष्टप्राय हो सकती हैं।" अमेरिकी राजनीति के उद्भट विद्यार्थी, वुडरो विल्सन, भली भाँति जानते थे कि संकट के अवसरों पर राष्ट्रपति पद का अभिप्राय है - शासक और बलिपशु की दुहरी भूमिका। उन्होंने लिखा था :

"असमर्थता और व्यक्तिगत अक्षमता के अतिरिक्त, अन्यथा, राष्ट्रपति अपने दल का नेता होने से बच नहीं सकता, क्योंकि वह एक साथ ही, दल और राष्ट्र, दोनों के ही स्वेच्छिक निर्वाचन का प्रतीक होता है .... राष्ट्रीय गतिविधियों में एकमात्र उसी के उद्गार राष्ट्रीय होते हैं। यदि एक बार वह देश की प्रशंसा और विश्वास का भाजन बन जाये, तो कोई भी अन्य शक्ति एकाकी उसका सामना नहीं कर सकती, कोई भी शक्ति समूह उसे आसानी से पराजित नहीं कर सकता। उसका पद देश की कल्पना को अभिभूत कर लेता है। वह किसी एक निर्वाचन क्षेत्र का नहीं, बल्कि समूचे राष्ट्र का प्रतिनिधि होता है। वह एक साथ ही, अपने दल और राष्ट्र दोनों का नेता हो सकता है, अथवा इनमें से कोई भी एक हो सकता है। यदि वह राष्ट्र का नेतृत्व करता है तो उसके दल के लिए उसे रोकना मुश्किल हो सकता है।"

शान्तिकाल में वुडरो को राष्ट्रपति पद से भय नहीं था, क्योंकि वह अपनी राजनीति अच्छी तरह जानते थे और उन्हें मनुष्यों और विवादग्रस्त प्रश्नों को सुलझाने की अपनी योग्यता में पूर्ण विश्वास था। किन्तु वे युद्ध से भय खाते थे और इसका कारण केवल युद्ध-जनित अमर्यादित विनाश तथा अतिशय निरर्थकता ही नहीं बल्कि यह भी था कि वे अच्छी तरह जानते थे कि युद्ध विवेक की सरल रेखाओं को विच्छिन्न कर देता है और स्वस्थ तथा बुद्धिमत्ता-पूर्ण नेतृत्व के कार्यों को कठिन बना देता है। उन्हें विशेषकर यूरोपीय युद्ध छिड़ जाने की सम्भावना से भय था। यही कारण था कि उन्होंने १६१४ के वसन्तकाल में अपने व्यक्तिगत परामर्शदाता कर्नल हाउस, को यूरोप के राजदरबारों में शान्ति के उद्देश्य से यात्रा पर भेजा था। हाउस ने अपना प्रतिवेदन ह्वाइट हाउस के सम्मुख प्रस्तुत किया, जिसमें कहा गया था; "परिस्थिति असाधारण है। सैन्यवाद उग्ररूप से उन्मत्त हो चुका है। यदि आपकी ओर से प्रतिनिधि के रूप में कोई व्यक्ति भिन्न प्रकार का सद्भावनापूर्ण दृष्टिकोण उत्पन्न नहीं कर देगा, तो किसी न किसी दिन प्रलयंकारी भयंकर संकट उत्पन्न होकर रहेगा। यूरोप में कोई भी ऐसा करने में समर्थ नहीं है......यह एक भयंकर समस्या है और उसके परिणाम व्यापक होंगे। मेरी सदिच्छा है कि इसे हमारी अमेरिकी सभ्यता के अनुरूप सुलझा लिया जाय।" दुर्भाग्यवश, धर्मान्धता तथा परिणामों को समझ सकने की क्षमता के अभाव के कारण तत्सम्बन्धी वार्तायें व्यर्थ सिद्ध हुईं। दो ही महीने बाद युद्ध छिड़ गया।

पूछा जा सकता है कि "युद्ध का इतना अधिक भय क्यों?" क्या विल्सन कायर, बुखानन-जैसे व्यक्तित्व वाले मनुष्य थे, जो संघर्ष और युद्ध से लज्जित होकर भाग जाते? इससे बढ़कर अधिक असत्य बात कुछ और नहीं हो सकती। प्राचीन पैगम्बर जैसे साहस और नैतिक क्रोध से सम्पन्न वुडरो विल्सन एक ऐसे व्यक्ति थे जो अपने सिद्धान्त पर दृढ़ता से अडिग बने रहते थे, चाहे ऐसा करने पर उन्हें अपने निकटवर्ती और विश्वसनीय परामर्शदाताओं को भी पराङ्मुख क्यों न करना पड़ा हो। किन्तु वह जानते थे कि युद्ध लोगों को भौतिक तथा आध्यात्मिक, दोनों ही दृष्टियों से अकिंचन बना देता है। एक अवसर पर उन्होंने अपने मित्र इरविंग कॉब से कहा था; "एक बार जनता को युद्ध में झोंक दीजिये, और फिर, वे सदा के लिए यह भूल जायँगे कि सहनशीलता जैसी भी कोई चीज थी। युद्ध में लड़ने के लिए नृशंस और हृदयहीन होना पड़ता है। हृदयहीन नृशंसता की भावना हमारे राष्ट्रीय जीवन के मूलभूत तन्तुओं में प्रविष्ट

होकर रहेगी।" यह भविष्यवाणी स्वयं विल्सन के सम्बन्ध में ही खेदजनक रूप से पूरी हुई, जब कि युद्ध की अवधि में उन्होंने कांग्रेस को संविधान के लिए क्षतिकारी 'गुप्तचर' तथा 'स्वतन्त्र भाषण-विरोधी' कानून बनाने के लिए बाध्य किया था। चार्ल्स इवांस ह्यूजेज़ जैसे अनुदार नेता भी, जो कि एक समय प्रधान न्यायाधीश थे, यह देखकर भय से काँप उठे थे कि 'नवीन स्वतन्त्रता' के पुजारी में युद्ध ने कितना परिवर्त्तन कर दिया था। विल्सन को युद्ध ने इतनी हानि पहुँचाई अथवा उनकी रुग्णता ने, यह प्रश्न अभी भी प्रश्न बना हुआ है। कुछ भी हो, नागरिक स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण इतिहास के अमिट व्यंग्यों में से एक समझा जाना चाहिए।

अतः इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होता कि जब चार्ल्स इवान्स ह्यूजेज़ के चुनाव के सम्बन्ध में झूठी खबरें आने लगीं (सन् १६१६ में कैलिफोर्निया के निर्वाचन-परिणाम चार दिन बाद घोषित हुए थे), तो विल्सन के मुँह से अकस्मात् यह निकल पड़ा 'भगवान की बड़ी कृपा हुई।' उन्हें इस विचार से बड़ी राहत मिली कि उन्हें राष्ट्रपति के लिए दूसरी बार नहीं चुना जायगा उन्होंने राहत इसलिए महसूस की कि वह जानते थे कि युद्ध में अमेरिका के शामिल होने के बादल क्षितिज पर मँडरा रहे थे। अतः वुडरो विल्सन ने अपने द्वितीय शासन-काल के दायित्व का सामना बहुत ही भारी हृदय से किया उस विल्सन ने, जो कि प्रशिक्षण और अपनी प्रवृत्तियों द्वारा रचनात्मक शान्ति के जीवन के उपयुक्त थे। अपने प्रथम शासनकाल में युद्ध में तटस्थ रहने के सभी प्रयत्नों के बावजूद, शान्ति के पोषक इस व्यक्ति के भाग्य में प्रथम कोटि का युद्धकालीन राष्ट्रपति होना बदा था। शक्ति के अधिकार के विपरीत अधिकार की शक्ति की धारणा में उनके मूलभूत विश्वास ने ही उन्हें अमेरिकी जनता को जर्मनी की सैन्य व्यवस्था के विरुद्ध, जो कि उस समय सभ्य संसार को चुनौती दे रही थी, उठाकर खड़ा कर देने के लिए प्रेरित किया था।

अपने प्रथम शासन काल में विल्सन सबसे सुखी व्यक्ति थे, क्योंकि उस समय ही वह अपने परमप्रिय देश को लोकतंत्र की गहनतर धारणा तक ले जाने में समर्थ रहे। ऐण्ड्र्यू जैक्सन और अब्राहम लिंकन की भाँति ही जन-साधारण में उनकी उत्कट आस्था थी। यह आस्था उनके प्रथम उद्घाटन भाषण में अच्छी तरह व्यक्त हुई है:—

"हमें अपनी औद्योगिक सफलता पर गर्व रहा है। लेकिन अभी तक हम मानवीय लागत की गणना के लिए पर्याप्त विचारशीलता के साथ रुके नहीं

हैं......हमारा विचार तो यह रहा है कि "प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चिन्ता स्वयं करने दिया जाय; प्रत्येक पीढ़ी को अपनी चिन्ता स्वयं करने दिया जाय", जब कि हम बड़ी-बड़ी मशीनों को विकसित करते रहे; जिसकी वजह से यह असम्भव हो गया कि केवल उन व्यक्तियों को छोड़कर जिनके हाथ में औद्योगिक नियंत्रण की बागडोर थी, किसी अन्य व्यक्ति को अपनी चिन्ता और व्यवस्था करने का अवसर मिल सके......हमारी महान् सरकार, जिसे हमारा स्नेह प्राप्त था, का प्रयोग प्रायः निजी और स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के लिए किया गया है, और जो लोग उसका प्रयोग करते हैं, उन्होंने जनता को भुला दिया ।......यदि पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को महान् औद्योगिक तथा सामाजिक प्रक्रियाओं के परिणाम से, जिन्हें परिवर्तित और नियन्त्रित करने, अथवा जिनका एकाकी सामना कर सकने में वे असमर्थ हैं, उनके जीवन में उनकी सप्राणता में, सुरक्षित नहीं कर दिया जायगा,...तो समानता या अवसर की व्यवस्था कदापि नहीं हो सकती। समाज को इस बात के प्रति सतर्क रहना चाहिए कि कहीं स्वयं वही अपने अविच्छिन्न अंगों को क्षति न पहुँचाये, कमजोर न करे अथवा उनका दमन न करे।"

इस स्पष्ट घोषणा में विल्सन ने लोकतंत्र को एक नया आकार, एक नयी दिशा, दी। उन्होंने जेफर्सन के इस सिद्धान्त को तिलांजलि दे दी कि सरकारी प्रशासन जितना ही कम हो उतना ही अच्छा होगा। जेफर्सन का यह सिद्धान्त १६ वीं शताब्दी के ग्रामीण समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप था। किन्तु विल्सन ने उस सिद्धान्त को तिलांजलि देकर नयी अप्रौढ़ शताब्दी के लिए एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जो विशिष्ट रूप में यह था कि यदि एक जटिल उद्योग-प्रधान समाज में व्यक्ति को अपना अस्तित्व बनाये रखना है, तो सरकार को अपने प्रभाव तथा अपनी सत्ता का प्रयोग सबलों को नियन्त्रित रखने में अवश्य करना चाहिए, ताकि निर्बल उचित मात्रा में अवसर का उपभोग कर सके। इस प्रकार, विल्सन का उदारवाद ऐतिहासिक परम्परावादी उदारवादी से भिन्न था, जिसका सम्बन्ध यथेच्छा-कारी अर्थशास्त्र से था। वस्तुतः विल्सन का उदारवाद सुधार-आन्दोलन के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य आर्थिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा सामान्य कल्याण के बीच सामंजस्य उत्पन्न करना है। इन लक्ष्यों को सिद्ध करने के उद्देश्य से विल्सन टेड्डी रूजवेल्ट के इस विश्वास को आगे बढ़ाने के लिए दृढ़-संकल्प थे

कि कार्यकारिणी सत्ता-सम्पन्न व्यक्ति को अपने समस्त नेतृत्व का प्रयोग करना चाहिए, जिसके लिए वह समर्थ है।

इस दृढ़ संकल्प को राष्ट्रीय नीति के रूप में किस प्रकार कार्यान्वित करना था? निश्चय ही, राष्ट्रपति पद पर कांग्रेस के उदासीन गुमाश्ता के रूप में दृष्टिपात करके नहीं; न ही कार्यकारिणी विभाग को केवल विधान-सभा का अवरोध-बिन्दु समझकर, और न ही अपने दल का नेतृत्व प्रभुओं या प्रजानायकों के हाथ में सौंपकर। राष्ट्रपति ने एक अवसर पर कहा था: "कोई भी दल, जिसे स्वयं अपने अल्पसंख्यकों की वफादारी प्राप्त नहीं है, दीर्घकाल तक सरकार का नियन्त्रण या जनता की सेवा नहीं कर सकता।" बहुत पहले सन् १८६० की शताब्दी में, जब विल्सन प्रिंसटन में राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक थे, उन्होंने सरकार के प्रशासन पक्ष के बढ़ते हुए महत्त्व को भाँप लिया था। उन्होंने अपने एक तत्कालीन प्रसिद्ध लेख, 'प्रशासन का अध्ययन', में भविष्यवाणी युक्त ये शब्द लिखे थे: "स्वस्थ बच्चे की भाँति हमारी सरकार बढ़कर स्वभाव की दृष्टि से विस्तृत और आकार की दृष्टि से विशाल हो गयी है, किंतु चाल ढाल में असुन्दर भी हो गयी है। इसके जीवन की शक्ति और वृद्धि इसके रहन-सहन की निपुणता की तुलना में पूर्णतया अनुपातहीन है। इसने शक्ति-संचय अवश्य किया, किंतु व्यवहार के सुरुचिपूर्ण ढंग हासिल नहीं किये हैं।" एक अन्य अवसर पर विल्सन ने कहा था कि संविधान "का उद्देश्य सरकार को घोड़ों और डिब्बों के युग तक, उस युग तक जब डाकिये हर प्रकार की चिट्ठी-पत्री तथा पत्र-व्यवहार ढोया करते थे, पीछे घसीट कर ले जाना नहीं है।"

अन्य शब्दों में राष्ट्रपति होने के लगभग २५ वर्ष पहले ही विल्सन ने कार्यकारिणी विभाग को शक्ति सम्पन्न तथा सबल करने के महत्त्व को देख लिया था। वह यह भी जानते थे कि ऐतिहासिक घटनाओं की शक्ति निरन्तर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर रही हैं, जिसके लिए संविधान अपर्याप्त मार्ग निर्देशक सिद्ध हो रहा है; और राष्ट्रपतियों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे ऐसा नजीरें उत्पन्न करें, जिनसे उनके बाद में आनेवाले राष्ट्रपति प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। किन्तु सिर्फ यह जान लेना कि कुछ करना जरूरी है, एक बात है, और उसे करने में समर्थ होना दूसरी बात है। विल्सन 'नवीन लोकतन्त्र' सम्बन्धी अपने विचारों तथा 'बड़ी सरकार' सम्बन्धी अपने विचारों के बीच, जो कि बड़े व्यवसाय की गतिशील प्रगति को नियन्त्रित रखने के लिए अत्यन्त

अनिवार्य थे, समन्वय कैसे उत्पन्न करने जा रहे थे ? इसके लिए राष्ट्रपति में राजनीतिज्ञ की अन्तर्दृष्टि तथा कुशल कूटनीतिज्ञ की निपुणता का होना जरूरी था।

विल्सन में ये गुण उल्लेखनीय अंश में विद्यमान थे। यह "राजनीति का पण्डित", जो कभी भी काल्पनिक विचारक नहीं रहा, सदैव अपने विचारों को व्यावहारिक उपयोग में लाने के लिए उत्सुक था। यदि व्यवसायी वर्ग विल्सन के सुधार सम्बन्धी उपायों का विरोध करने के उद्देश्य से भय का वातावरण उत्पन्न करने का साहस करते, तो उनके लिए राष्ट्रपति की चेतावनी यह थी—"मैं अपने लिए नहीं, बल्कि अपने देश के लिए, उसको (व्यवसायी को) हमान के समान ऊँचा फाँसी का तख्ता देने का आश्वासन देता हूँ।" देशी सुधार की विविध माँगों को शान्ति सम्बन्धी राष्ट्रीय आकांक्षा में विलीन करके विल्सन ने, जो कि अल्पसंख्यक राष्ट्रपति थे, (उन्हें १६१२ के चुनाव में ४२ प्रतिशत से कम जनमत प्राप्त हुए थे), अपने आप को राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में मान्य कराने में सफलता प्राप्त की थी।

तदनुसार, राष्ट्रपति के नेतृत्व की प्रेरणाओं के अन्तर्गत, कांग्रेस के अनेक कानून तैयार किये, जिन्हें विल्सन ने स्वयं बाद में चलकर 'नवीन स्वतन्त्रता' कहा था। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की अन्तिम बुद्धिमत्ता में दृढ़ता से विश्वास करनेवाला राष्ट्रपति स्वयं सशरीर कांग्रेस के सम्मुख उपस्थित हुआ (यह रिवाज जान ऐडम्स के समय से बन्द हो चुका था), और विधान सभा को आयात-निर्यात करों में कमी करने के लिए राजी कर लिया था। जनसाधारण में योग्य, सच्चे तथा स्पष्ट नेता होने के नाते उन्होंने सफलता के साथ कांग्रेस से अनुरोध किया कि वह कर सम्बन्धी कानून में, 'प्रत्येक व्यक्ति से उसकी भुगतान क्षमता के अनुसार' के सिद्धांत पर आधारित आय-कर की श्रेणीगत प्रणाली की व्यवस्था शामिल कर दे। इस प्रकार संविधान के १६वें संशोधन के अन्तर्गत यह प्रथम आय-कर सम्मुख आया, जो कि विल्सन के विचार से वस्तुतः सच्चे रूप में एक लोकतंत्रीय कार्य था। राष्ट्र की ऋण संबंधी सुविधाओं पर वाल स्ट्रीट के नियंत्रण, तथा बैंक-प्रणाली की अपर्याप्तता द्वारा, जिसका रहस्योद्घाटन १६०७ के भयग्रस्त वातावरण द्वारा हुआ था, भयभीत होकर कांग्रेस ने राष्ट्र-पति के नेतृत्व में संघीय आरक्षण प्रणाली स्थापित की, जिसके द्वारा बैंकिंग हितों की केन्द्रित शक्ति को १२ संघीय शाखाओं में विकेन्द्रित कर दिया गया। हमारी प्रतिस्पर्धा-प्रधान आर्थिक प्रणाली तथा जनसाधारण के लिए एकाधिकार

के खतरों को ध्यान में रख कर विल्सन ने कांग्रेस से विधि ग्रंथों में एक शक्तिशाली न्यास-विरोधी कानून शामिल करा दिया, जिसका उद्देश्य 'सक्रिय प्रतिस्पर्धा' को पुनः स्थापित करना था। सैमुएल गोम्पर्स के इस तर्क से प्रभावित होकर कि संगठित श्रम अवैध नहीं घोषित होना चाहिए, विल्सन ने कांग्रेस से अनुरोध करके इस न्यास-विरोधी कानून में ही एक व्यवस्था सम्मिलित करा ली, जिसने श्रमिक संघों को न्यासों के रूप में उनके विरुद्ध मुकदमा चलाने की व्यवस्था से मुक्त करके, उनकी स्थिति अत्यन्त सबल बना दी। विश्व के दलितों और पीड़ितों के लिए शरण-स्थल होने की संयुक्तराज्य की परम्पराओं के अनुरूप ही उन्होंने साक्षरता अधिनियम के विरुद्ध दो बार, यद्यपि व्यर्थ ही, अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग किया। उनका मत था कि यह अधिनियम पूर्वी और दक्षिणी यूरोपवासियों के विरुद्ध भेदभाव करता है, तथा उन लोगों के लिए, जो कि 'शिक्षा का अवसर' ढूँढ़ रहे थे, उसका द्वार बन्द कर देगा। कुछ क्षेत्रों में अलोकप्रियता का खतरा उठाकर तथा योग्यता में अडिग विश्वास के साथ विल्सन ने 'सामाजिक न्याय के अग्रदूत', लुई ब्रैंडिस को संयुक्तराज्य के सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्त किया—ऐसी नियुक्ति जिसका स्वागत प्रगतिशीलों ने गणराज्य के इतिहास में महत्त्वपूर्ण मोड़ कहकर किया था। नवीन स्वतंत्रता ने "राष्ट्र के स्कूलों को कोई भी संघीय सहायता नहीं; शिक्षा एकमात्र राज्य का उत्तरदायित्व है" की परम्परा की उपेक्षा करके दो आधारभूत कानून लागू किये, जिनके द्वारा कालेज और हाई स्कूल स्तरों पर पेशों संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करने के लिए राज्यों को संघीय सहायता प्रदान की गयी। इस प्रकार संघीय नियंत्रण बगैर शिक्षा के लिए संघीय सहायता का सिद्धांत प्रतिष्ठित हुआ।

क्या नवीन स्वतन्त्रता ने विल्सन को उग्र दृष्टिवाले, मौखिकवादी तथा समाजवाद के प्रतिपादक के रूप में प्रदर्शित किया? अदूरदर्शी स्वार्थी मनुष्यों ने ऐसा ही सोचा था। किन्तु अनेक ऐसे नागरिकों ने, जिनके हृदय में सामान्य कल्याण की भावना थी, तथा उन नागरिकों ने, जिनमें यह समझने की पर्याप्त दूरदर्शिता थी कि उनके देश की भावी सुरक्षा के लिए कौन-सी बात उपयोगी थी, राष्ट्रपति का समर्थन किया। विल्सन के समर्थकों ने उन्हें एक ऐसा महान् उदारवादी कहकर उनका अभिनन्दन किया, जो उस बिन्दु से, जहाँ पर जैक्सन, लिंकन और टेड्डी रूजवेल्ट ने छोड़ रखा था, देश को विकास-पथ पर केवल आगे ही बढ़ा रहा था। भविष्य ने उन्हें सच्चा प्रमाणित

किया। उदाहरण के लिए, क्या इस समय कोई उत्तरदायी मनुष्य, चाहे वह कैसा भी अनुदारवादी क्यों न हो, संघीय प्रारक्षण प्रणाली को भंग करने की बात कहेगा? फिर भी, विल्सन के जीवनकाल में नवीन स्वतन्त्रता के इस शिरस्त्राण को एक समाजवादी दैत्य के अन्वेषण के रूप में ही देखा गया था। संघीय प्रारक्षण प्रणाली के विरोधियों ने उसे 'अज्ञानता और अविवेक की असंगत सन्तान कहा था।' नवीन स्वतन्त्रता के अन्य महान् सुधारों पर दृष्टिपात करने से यह पता चल जायगा कि वे भी अमेरिकी लोकतन्त्र के लिए अमूल्य सिद्ध हो चुके हैं।

इतिहास के दृष्टिकोण से देखने पर अब हम विल्सन को एक उदारवादी समझते हैं, विचारधारा अथवा सिद्धान्त का प्रतिपादक नहीं। यदि उन्होंने विशेषाधिकारों और अधिकारों की स्थिति पर चोट किया उसे दृढ़ किया, तो ऐसा करने में उन्होंने किसी एक सामाजिक वर्ग के हितों को ही, दूसरों के विरुद्ध, अभिव्यक्त नहीं किया था, बल्कि वे वस्तुतः अमेरिकी लोगों की बहुसंख्यक आवाजों को ही व्यक्त कर रहे थे जो कि उस समय से ही असन्तुष्ट थे, जब से कि प्रगतिशील युग का आरम्भ हुआ था। विल्सन ने जिन कानूनों का समर्थन किया था, वे इन पूर्वनिश्चित मान्यताओं पर आधारित नहीं थे कि विभिन्न वर्गों के हित पूर्णतया परस्पर-विरोधी हैं। नवीन स्वतन्त्रता का निर्माण इस लोकतन्त्रीय सिद्धान्त के नाम पर हुआ था कि आर्थिक वर्गों के बीच सामंजस्य उत्पन्न किया जा सकता है। इस प्रकार यह सच्ची उदार स्थिति मार्क्सवादी सिद्धान्त को अस्वीकार करती है जो कि सामाजिक वर्गों के बीच सदा के लिए विभाजन कर देता है। इस प्रकार, यह उदार स्थिति प्रतिस्पर्धी वर्ग या वर्गों के पूर्ण उन्मूलन या दमन को अपना लक्ष्य मानने से इन्कार करती है। संक्षेप में, नवीन स्वतन्त्रता यथार्थ रूप से प्रयोगात्मक तथा पाण्डित्यपूर्ण सिद्धान्तों के अनुरूप थी, जो कि आज तक अमेरिकी जनता की प्रतिभा के प्रतीक सिद्ध हुए हैं।

राष्ट्रपति होने के पहले के उनके जीवन पर मुड़कर दृष्टिपात करने से विल्सन के हृदय और मस्तिष्क के एक अन्य पक्ष पर भी प्रकाश पड़ता है। जेफर्सन की भाँति ही उन्होंने भी बड़ी स्पष्टता के साथ नेतृत्व के उत्तरदायित्व और शिक्षा के पारस्परिक सम्बन्ध को पहचान लिया था। जेफर्सन की भाँति ही वह भी यह विश्वास करते थे कि किसी भी राष्ट्र से एक साथ ही स्वतन्त्र और अज्ञान, दोनों होने की अपेक्षा करना सर्वथा असंगत है। यह दृष्टिकोण

प्रिंस्टन के प्राध्यापक और बाद में, अध्यक्ष की हैसियत से विल्सन के समस्त जीवन में स्पष्ट रूप से दिखलायी पड़ता है। उन्होंने घोषणा की थी : "विश्व का व्यापार व्यक्तिगत सफलता में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि के पक्ष में स्वयं उसके सुधार, स्वयं उसके शक्ति-संचय तथा स्वयं उसके विकास में निहित है।" उनका विचार था कि विश्वविद्यालय 'भद्र आवारों' के लिए मनोरंजन-केन्द्र नहीं हैं, बल्कि प्रयोगात्मक विज्ञानशालायें हैं, जहाँ स्वतन्त्र बुद्धिवाले प्राध्यापक तथा अध्यवसायी छात्र स्वतन्त्र जाँच तथा लोकतन्त्रीय रहन-सहन की ललित कलायें स्वयं अनुभव करते हैं। इस प्रकार, प्रिंस्टन के प्रथम गैर-पादरी अध्यक्ष, विल्सन ने, शिक्षा सम्बन्धी नेता के रूप में ऐसी महान् ख्याति प्राप्त की, जैसी हारवर्ड के चार्ल्स डबल्यू इलियट के पश्चात् किसी अन्य ने प्राप्त नहीं की थी।

सामान्य सुधार आन्दोलन की पृष्ठभूमि में विल्सन के विश्वविद्यालय सम्बन्धी कार्य ने उनके लिए ऐसी लोकप्रियता उपार्जित की, जिसके बल पर वे न्यूजर्सी राज्य के गवर्नर पद पर पहुँच गये। यद्यपि गवर्नर की हैसियत से उनका जीवन केवल एक कार्यावधि (१९११-१९१३) तक ही सीमित था, फिर भी उन्होंने यंत्र-पोषक राजनीतिज्ञों के बावजूद इतने काफी सुधार कर लिये, जिससे स्वभावतः राष्ट्र का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हो गया। जब १९१२ में उन्होंने अपने विरोधी, मिसूरी के स्पीकर, कैम्प क्लार्क, के विरुद्ध लोकतन्त्रीय नामजदगी जीत ली, तो यह विजय उन्हें, वस्तुतः, एक सुधारवादी गवर्नर के नाते ही मिली थी, जिसने अपने नेतृत्व में न्यूजर्सी के अत्यधिक ढीले निगम कानूनों को समाप्त करने के लिए "सप्तभंगिनी" कानून तैयार करने में पूर्ण सफलता पायी थी।

यदि सन् १९१६ में विल्सन राष्ट्रपति पद पर दोबारा न चुने गये होते, तो वे अपनी नवीन स्वतन्त्रता की सफलताओं के आधार पर ही एक महान् राष्ट्रपति के रूप में इतिहास में अमर हो गये होते। राष्ट्रपति की द्वितीय कार्यावधि में वे एक विश्वविख्यात महापुरुष बन गये। स्कूलों का बच्चा-बच्चा इस कहानी से अच्छी तरह परिचित हो चुका है कि किस प्रकार अमेरिका तैयारी का एक कार्यक्रम चला लेने के बाद एक ऐसे समय में युद्ध में प्रविष्ट हुआ, जब कि अमेरिकी शांति-समिति का एक सदस्य व्हाईट हाउस में था। किन्तु इस विषय में बहुत ही कम बातें ज्ञात हैं कि जब महान् राष्ट्रपति की विदेशी नीति का

परित्याग कर दिया गया तो अमेरिकी जनता पर और विश्व की जनता पर कितने संकट आ पड़े थे।

युद्ध में अमेरिका के प्रविष्ट होने के बहुत पहले विल्सन ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति की आधारशिलाओं को स्पष्ट कर दिया था। उन्होंने हमारे स्वतन्त्रता के घोषणा पत्र में अत्यन्त उत्कृष्टता से निर्दिष्ट केवल इस सिद्धांत को ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में लागू किया था कि—कोई भी सरकार जिसे अनुशासित जनता की स्वीकृति प्राप्त नहीं है, न्यायी नहीं हो सकती। हम चीन में सनयातसेन के गणतंत्र को मान्यता देने में तथा मेक्सिको में हुर्टा की तानाशाही को मान्यता न देने के उनके संकल्प में इस नीति का प्रत्यक्ष दर्शन पाते हैं। आगे चलकर, जब यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गयी कि कैसर का युद्ध-यन्त्र हमारी तटस्थता नीति को नष्ट करने लगा है, तो कांग्रेस से युद्ध-घोषणा के लिए अनुरोध करने के लिए विल्सन के हृदय विदारक किंतु आवश्यक निर्णय में हम उसी नीति का दर्शन पाते हैं। विल्सन को वस्तुतः, युद्ध से इतनी घृणा थी कि वे एक दीर्घकाल से राष्ट्रपति-पद से त्याग-पत्र दे देने का विचार कर रहे थे। उन्हें इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि युद्ध-संदेश जारी कर देने के पश्चात् जब वे नसिलवेनिया ऐवेन्यू से होकर गुजर रहे थे, तो लोगों ने हर्षोन्मत्त होकर उनका अभिनंदन किया था। उन्होंने एक मित्र से कहा, "युद्ध-संदेश पर हर्ष प्रकाश करना, कितने आश्चर्य की बात है।" किन्तु युद्ध संदेश तो, वस्तुतः एक पागल जर्मन साम्राज्य की ओर से दिया गया था, जो विश्व-विजय पर तुला हुआ था। वस्तुतः, युद्ध को छिड़ने से रोकने के लिए किये गये वीरतापूर्ण प्रयत्नों के सिलसिले में लगातार ३२ महीने की क्षुब्ध कूटनीतिक गतिविधियों के पश्चात् ही युद्ध में हस्तक्षेप करने का निर्णय किया गया, जब जर्मनी ने अनियन्त्रित पनडुब्बी जहाजों की लड़ाई फिर से प्रारम्भ करने का आदेश दे दिया तो उस व्यक्ति के सम्मुख जो कि 'इतना गरिमामय था कि युद्ध नहीं चाहता था,' केवल एक ही रास्ता शेष रह गया था।

किन्तु अपने आदर्शवाद के प्रभाव के कारण विल्सन का दृष्टिकोण यह था कि यदि केवल आक्रमण को रोक देना ही उद्देश्य हो, तो युद्ध छेड़ना कदापि उचित नहीं। यदि युद्ध के पश्चात् स्थापित शान्ति का प्रयोजन केवल सैन्य शक्ति और हिंसा को रोक देना ही है, तो वह शान्ति अनिवार्य रूप से केवल नकारात्मक शान्तियुद्धों के बीच केवल विराम सन्धि सिद्ध होगी। इस प्रकार की शान्ति का अर्थ था कोटि-कोटि नवयुवकों का व्यर्थ बलिदान। अतः

विल्सन ने उत्साह और संकल्प के साथ इस युद्ध को समस्त युद्धों का अंत बनाने का निर्णय किया। युद्ध छिड़ने का कोई अन्य उपयुक्त कारण हो ही नहीं सकता था। इस गहन विश्वास के अनुरूप ही, विल्सन ने अपने चतुर्दश-सूत्रों को प्रस्तुत किया। संक्षेप में, वे ये थे :—सभी राष्ट्रों के लिए समुद्रों की स्वतंत्रता, आर्थिक प्रतिबन्धों का निष्क्रमण, शस्त्रीकरण को राष्ट्र की सुरक्षा या प्रतिरक्षा के उपयुक्त निम्नतम स्तर तक घटा देना, औपनिवेशिक जनता की आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान देते हुए औपनिवेशिक समस्याओं का समाधान, छोटी राष्ट्रीयताओं का आत्म-निर्णय, और अत में, राष्ट्र संघ लीग आफ नेशन्स) की स्थापना; जिसका उद्देश्य युद्ध को सदा के लिए भूतकाल के गर्भ में डुबो देना हो। संक्षेप में, शान्ति को बिना विजय के शान्ति बनाना था। इस प्रकार के कार्यक्रम से जो भी लाभ होगा, वह समस्त मानवता के लिए होगा, और केवल एक राष्ट्र और राष्ट्रों के समूह के लिए ही नहीं होगा। विश्व-युद्ध के भयंकर बलिदान व्यर्थ नहीं होंगे।

इस शान्ति के विषय में क्या हुआ? संयुक्त राज्य में पक्षपातपूर्ण राज-नीति ने राष्ट्रपति के अति-उत्साह से संयुक्त होकर—एक ऐसे अति-उत्साह से, जिसने राष्ट्रपति को 'यथार्थ राजनीति' अनिवार्यताओं की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित किया, जिसने शान्ति-सम्मेलन में कांग्रेस-गत प्रतिनिधित्व का निर्देश कर दिया होता—२ मार्च, १६१६, के महत्त्वपूर्ण विरोध-प्रदर्शन को जन्म दिया, जिसके द्वारा ३६ सीनेटरों ने शान्ति-सन्धि का विरोध करने की प्रतिज्ञा की, जिसके अविच्छिन्न अंग के रूप में राष्ट्रसंघ के निर्माण का भी प्रश्न था। यूरोप में, "प्रतिशोध-भावना से अभिभूत क्लीमेंसू, तटस्थतावादी आरलैण्डो तथा प्रजानायक लायड जार्ज" ने एक अस्त-व्यस्त शांति का प्रस्ताव तैयार किया, जिसके लागू करने पर राष्ट्रसंघ का गर्भ में ही अवसान हो जाना अनिवार्य था। और सर्वत्र असंख्य नागरिक अपने हृदय से युद्ध में वीरगति पाये हुए अपने पुत्रों की स्मृति निकालकर "पूर्ववत व्यवसाय" के जीवन में पुनः लौट आये। इस देश तथा अन्य देशों की उदार शक्तियों ने चाहे कुछ परिवर्तन कर भी लिया हो, तो भी ये क्रांतिवाद (बोल्शेविज्म) के भय से उद्विग्न थीं जो कि युद्धोत्तरकालीन विश्व में सिर उठा रहा था। अपने दृष्टिकोण के एकाकी पोषक वुडरो विल्सन, राष्ट्रसंघ को सुरक्षित रखने का समझौता कर लेने के बाद ही समझौता करने की स्थिति में डाल दिये गये। इस प्रकार, द्वितीय विश्वयुद्ध के कीटाणुओं का बीजारोपण कर दिया

गया था। इस प्रकार, वल्सन के अनुसार, "छठों मनुष्यों के एक नन्हें से वर्ग ने, जो कि अपने अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति के मत का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा था, संयुक्तराज्य की महान् सरकार को असहाय और अपमानित कर दिया है।"

विल्सन का विलाप व्यर्थ था। उन्होंने कहा :—"मैं पूर्ण निश्चय के साथ यह भविष्यवाणी कर सकता हूँ कि यदि युद्ध रोकने के लिए उपयुक्त उपायों के विषय में विश्व एक मत नहीं होता है, तो एक हो और पीढ़ी के भीतर दूसरा विश्व युद्ध छिड़ कर रहेगा।" हम उसके दुःखान्त परिणाम से भली-भाँति परिचित हैं। द्वितीय महायुद्ध होकर ही रहा। इस बार अंतर केवल यह था कि एक बहुत बड़ा मूल्य चुका देने के पश्चात् लोगों में इतनी बुद्धि-मानी आ गयी थी कि वे इस युद्ध के पश्चात् निर्मित अंतर्राष्ट्रीय संस्था को व्यापक समर्थन प्रदान कर देते।* किन्तु इस उद्देश्य से कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के लिए हमारा उत्साह और समर्थन कम न होने पाये और हम उन शक्तियों को, जो कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के विरुद्ध हो गई हैं, अच्छी तरह समझ लें, हमारे लिए यह अत्यन्त उचित है कि हम रुकें और उन वास्तविक कारणों का विश्लेषण करें, जिनके फलस्वरूप राष्ट्रसंघ को तिलांजलि दे दी गयी थी।

इतिहास की पूरी दो पीढ़ियों की पृष्ठभूमि में दृष्टिपात करने पर राष्ट्रसंघ की सफलता में विल्सन के व्यक्तित्व और नेतृत्व के तत्त्व को नगण्य मानना चाहिए। अमेरिका द्वारा राष्ट्रसंघ के अस्वीकृत होने का आधारभूत तत्त्व उन उदारता-विरोधी शक्तियों के सिर मढ़ा जाना चाहिये जिन्होंने १९२० के बाद सत्ता ग्रहण की; और नवीन स्वतंत्रता के लिए जिनकी घृणा अत्यधिक स्पष्ट थी। 'विल्सन की नवीन स्वतंत्रता' से घृणा करते हुए, उन्होंने वुडरो विल्सन से सम्बद्ध समस्त बातों की निन्दा करने का दृढ़-संकल्प सा कर लिया था। किसी भी बात को जिसके विल्सन पक्षपाती थे, निर्दोष और अकलंकित नहीं रहने देना चाहिए। युद्ध से ऊबी हुई जनता को नारमैल्सी के रंग-बिरंगे

---

* यद्यपि इस आणुविक युग में हम १९१४ की अपेक्षा विनाश के अधिक निकट हैं, फिर भी हम, सामूहिक सुरक्षा द्वारा, अराजकता का सामना करने के लिए सन् १९१४ से पहले की अंतर्राष्ट्रीय अराजकता की अपेक्षा अधिक सुसज्जित हैं। "यथार्थ राजनीति" के विषैले बोल को अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता के टिचर से निष्क्रिय कर देने का श्रेय विल्सन को ही मिलना चाहिए।

"वंशीवादकों" के सुरों ने मंत्र-मुग्ध कर लिया था। वे सुर विशेष रूप से गडारिनों को मीठे लगे, जिनके सम्मुख तत्काल वर्तमान के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। इन्हीं तत्त्वों ने, जो कि अल्पसंख्यक, किंतु शक्तिशाली थे, उन पृथकतावादी सीनेटरों को बल प्रदान किया, जो कदापि समझौता करने के लिए प्रस्तुत नहीं थे। ये सीनेटर चोट करने की विशेष अच्छी स्थिति में थे, क्योंकि राष्ट्रसंघ के निर्देशक सेनापति एक नाजुक मौके पर अत्यधिक अस्वस्थ हो गये थे। और इस प्रकार, जहाँ तक संयुक्त राज्य का सम्बन्ध था, राष्ट्रसंघ मृत हो चुका था और संयुक्तराज्य के बगैर शेष राष्ट्रों का भी उससे पृथक् हो जाना कुछ वर्षों की ही बात रह गया था।

इस महान् राष्ट्रपति के देहावसान के अवसर पर, ३ फरवरी, १९२४, को अडिग किन्तु बुद्धिमान रिपब्लिकन नेता विलियम आलेन ह्वाइट ने गीतमय सौंदर्य वाले ये शब्द कहे थे। उन्होंने कहा—"परमात्मा ने वुडरो विल्सन को एक महान् अंतर्दृष्टि प्रदान की थी.........वह गर्वीला हृदय शांत हो चुका है। किन्तु अंतर्दृष्टि जीवित है।" विलियम आलेन ह्वाइट ने एक भविष्यवक्ता जैसा सत्य वचन कहा था। वैदेशिक राजनीति के क्षेत्र में विल्सन को मुँह की खाकर पराजित होना पड़ा, किन्तु उनकी अंतर्दृष्टि और उनके आदर्श जीवित बने रहे। उन्हें तत्कालीन विद्वेषों, पक्षपातों, स्वार्थ और आवेशों द्वारा पराजित होना पड़ा। यद्यपि उन्होंने अपनी पीढ़ी से विवेकपूर्ण बात कही थी, किन्तु वह पराजित रहे। फिर भी, बृहत्तर दृष्टिकोण से विजयी रहे। विलियम जेम्स ने कहा था; "यदि हम किसी एक स्थान और क्षण पर विवेक को लें, तो वह प्रकृति की सबसे कमजोर शक्तियों में से एक सिद्ध होगा। केवल दीर्घकाल में ही उसके प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं।"

विद्वान् और राजनीतिज्ञ, दोनों के नाते वुडरो विल्सन का कार्य अमेरिकी स्वप्न की सिद्धि की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम का प्रतीक है। सन् १९१२ में, जो कि विल्सन के राष्ट्रपति पद पर चुने जाने का वर्ष था, समूचा राष्ट्र विशाल उद्योगपतियों और वित्तीय व्यवस्था करनेवालों के प्रभाव के अंतर्गत था, जो कि अनजाने एक सामाजिक क्रांति का बीजारोपण कर रहे थे। उस वर्ष समस्त विश्व एक विश्वासघातक अंतर्राष्ट्रीय अराजकता के जाल में फँस गया था और उसे अपनी पीड़ायें किसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था के समक्ष, चाहे वह कितनी ही सीमित क्यों न हो, उपस्थित करने की आशा भी नहीं थी। १९२१ के वर्ष में, जब कि वुडरो विल्सन ने ह्वाइट हाउस से विदा ली, हमारा राष्ट्र

एकाधिकार-पोषक दैत्य को सन्नद्ध करने — केवल साधारण रस्सियों से नहीं बल्कि नवीन स्वतंत्रता में निहित कानूनों की दृढ़ बागडोर से — की दिशा में काफी अग्रसर हो चुका था। उस वर्ष ने ही एक ऐसे विश्व का दर्शन किया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की एक अंतर्दृष्टि थी, जिसके अंतर्गत किसी न किसी दिन सभी राष्ट्र युद्ध के अलावा अन्य साधनों द्वारा अपने झगड़े हल करना सीख लेंगे। यदि भविष्य के गर्भ में आर्थिक उथल पुथल और विश्वयुद्ध होने की सम्भावना छिपी हुई थी, तो उसका कारण कदापि यह नहीं था कि वुडरो विल्सन असफल हो गये थे।

बुद्धिवादियों के संबंध में सर डेसमाण्ड मैकार्थी के कथन की व्युत्पत्ति करते हुए, यह कहा जा सकता है कि वुडरो विल्सन उन उदारवादी राजनीतिज्ञों में से थे, जो "मूंगों की भाँति उस चट्टान का निर्माण करते हैं जो मूर्खता और सम्भ्रांति के चंचल सागर से झील की रक्षा.........करता है। शक्तिशाली लहरें उनसे टकरायेंगी और उनमें से कुछ अपने फेन से उन्हें ढक लेंगी, किन्तु चट्टान का निर्माण तो होगा ही।" नवीन स्वतंत्रता के पश्चात् "नारमैल्सी" की मूर्खता और सम्भ्रांति प्रारम्भ हुई। विश्वव्यापी मंदी और विश्वयुद्ध की शक्तिशाली लहरें नवीन स्वतंत्रता और राष्ट्रसंघ से टकराने लगीं। किन्तु मनुष्य की मूर्खताओं के विरुद्ध और भी अधिक किलों की आधारशिला के रूप में चट्टान जीवित रही। ये किले और भी नयी मूर्खताओं और सम्भ्रांतियों के विरुद्ध खड़े रह सकेंगे या नहीं—यह बात देवताओं पर, और उससे भी बढ़कर, अमेरिकी लोगों पर निर्भर करती है। हमारी चिर-संचित सभ्यता मृत जातियों की सूची में डिनोसार का स्थान ग्रहण करती है, अथवा उत्कर्ष के नये चरम विंदु प्राप्त करती है—यह बात सर्वत्र न्याय और विवेक के सक्रिय जीवन के पुनर्निर्माण पर, जिसका उपदेश वुडरो विल्सन ने इतनी अच्छी तरह दिया है, निर्भर करती है।



फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट

बर्नार्ड वेलुश

समाज के एक ऐसे आर्थिक स्तर पर उत्पन्न होने के उपरान्त भी, जो कि पसीना बहाने वाले श्रमिक पुरुषों और स्त्रियों के विशाल जनसमूह के समक्ष उपस्थित संघर्ष और हृदयवेदना से सर्वथा अपरिचित था, कुलीन रूज़वेल्ट का अभिनन्दन अनेक व्यक्तियों, अन्ततोगत्वा उनके सबसे बड़े, उत्कट प्रवक्ता के रूप में किया है। कितनी विडम्बना है कि हमारी अर्थ-व्यवस्था के आधारभूत तत्त्वों को सुरक्षित कर लेने के पश्चात् भी अनेक व्यक्तियों ने रूजवेल्ट को उनके वर्ग का विश्वासघातक कहकर उनकी भर्त्सना की है।

फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट उग्रवादी नहीं थे और "समाजवादी" तो थे ही नहीं यद्यपि अनेक व्यक्तियों ने उनके समाजवादी होने का दावा किया है। किन्तु उनका विश्वास था कि जिस समय हमारा राष्ट्र १६३० की दशाब्दी वाली घातक मन्दी जैसे प्रलयंकारी संकट का सामना कर रहा था, उस समय राष्ट्र के आर्थिक ढाँचे को सुरक्षित रखने की आशा में नये प्रयोग करने का सबसे उपयुक्त अवसर था। जो लोग उनके दर्शन का मूलमन्त्र ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रहे हों, उन्हें यह स्मरण रखना महत्त्वपूर्ण है कि रूजवेल्ट एक सहज क्रियाशील व्यक्ति थे। उन्होंने जनता के हितार्थ उपयुक्त व्यवस्था करने में जिस दृढ़ संकल्प और एक-रूपता का परिचय दिया था, उसमें विशिष्ट कानूनों सम्बन्धी उनकी योजनाओं और युक्तियों द्वारा कभी-कभी बाधा उत्पन्न हो जाती थी। प्रायः अपने पार्षदों से बात करते समय रूजवेल्ट को यह कहते हुए सुना जा सकता था: "यदि यह प्रस्ताव उपयुक्त नहीं सिद्ध होता, तो, आइये, हम किसी अन्य प्रस्ताव की परीक्षा कर लें। किन्तु हम यह विलाप करते हुए कमर टिका कर बैठे न रहें कि जो बात हमारे प्रपितामहों के लिए श्रेयस्कर थी, वह हमारे लिए भी अवश्य श्रेयस्कर होनी चाहिए।

जब यह स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रीय पुनर्ग्रहण अधिनियम (नेशनल रिकवरी ऐक्ट) न्यायालयों द्वारा अवैध घोषित होने के अतिरिक्त जनता के बहुत बड़े समूह को लाभ पहुँचाने में भी पूर्णतः असफल सिद्ध हुआ है, तो रूजवेल्ट

किसानों के हितार्थ मूल्य-समता की व्यवस्था करके, चिर अपेक्षित श्रमिक सुधारों पर स्वीकृति प्रदान करके तथा किसानों के कल्याण के उद्देश्य से कुछ अत्यावश्यक बातों पर ध्यान देकर तत्काल नवीन मार्गों पर चल पड़ने के लिए उत्सुक हो उठे।

रूजवेल्ट राष्ट्रपति पद को एक महत्त्वपूर्ण, उदार तथा सबल शक्ति बनाने की अनिवार्य विशेषताओं से सम्पन्न थे। उनमें मनुष्यों को सम्हालने और उन पर नियन्त्रण रखने की क्षमता तथा अपने उद्देश्यों के लिए उनके अनुभवों और प्रशिक्षण की सम्भाव्यतायें पहचान लेने की अप्रतिम योग्यता विद्यमान थी। इस प्रकार, वे मस्तिष्क के न्यास जैसे थे। बहुत पहले जिस समय वे गवर्नर थे उन्होंने शासन-प्रणाली में "विशेषज्ञ" नियुक्त कर रखे थे। कभी-कभी वे पार्षदों के चुनाव में चूककर बैठते थे, किन्तु लाभप्रद ढङ्ग पर तथा समूचे राष्ट्र के कल्याणार्थ उनके ज्ञान का उपयोग करने में वे पूर्णतया सफल रहे। उनमें अवसर की अनुकूलता पहचान लेने की अपूर्व प्रज्ञा थी, वे राष्ट्र की ही आँखों से झाँककर देखने का प्रयत्न करते थे, ताकि वे उसकी आवश्यकताओं, इच्छाओं, आकांक्षाओं तथा आशंकाओं की यथार्थ व्याख्या करने में समर्थ हो सकें। केवल सन् १९३७ की न्यायालय योजना के सम्बन्ध में ही एक अवसर पर वे असफल रहे, जब कि राष्ट्र की न्याय-प्रणाली के संबंध में दीर्घकालीन धारणाओं और गहरी भावनाओं में अवांछनीय परिवर्तन करने के प्रयत्न में वे अमेरिका निवासियों की मनोवृत्ति का सही अनुमान करने में चूक गये थे।

राष्ट्रपति की हैसियत से रूजवेल्ट वैधानिक सुझावों के महत्त्वपूर्ण स्रोत, कार्यकारिणी निर्णय के अन्तिम स्रोत, राष्ट्र की विदेश नीति के प्रतिपादक, राष्ट्र के तथा उसकी आवश्यकताओं और उसके हितों के प्रतिनिधि और अपने राजनीतिक दल के नेता थे।

राष्ट्रपति के रूप में ह्वाइट हाउस में व्यतीत १२ वर्ष की कार्यविधि में रूजवेल्ट ने समाज-कल्याण सम्बन्धी विधानों की एक विस्तृत प्रणाली का निर्माण किया और हमारे अनेक परम्परागत दृष्टिकोणों को रूपान्तरित किया। सम्प्रति उनके योगदान न केवल अमेरिकी जीवन-ढाँचे के अविच्छिन्न अंग माने जा चुके हैं, बल्कि उनके उत्कट राजनीतिक आलोचकों द्वारा भी सक्रिय रूप से प्रतिपादित हैं। उन्होंने केवल आर्थिक प्रणाली के सर्वश्रेष्ठ तत्त्वों को सुरक्षित ही नहीं रखा, बल्कि जनता की स्वयं अपने में और अपनी सरकार में मूलभूत

आस्था को पुनः अनुप्राणित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका भी सम्पन्न की। इस प्रक्रिया में रूजवेल्ट ने वाम और दक्षिण पक्षीय मौलिकवादी आन्दोलनों को, यदि स्थायी रूप से रोक देने में नहीं, तो कम से कम उनका विरोध करने में तो निश्चित रूप से, किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक योग प्रदान किया। देश के आन्तरिक कार्यक्रमों के सम्बन्ध में उन्होंने जिस उदारवादी दृष्टिकोण का आश्रय लिया था, उसका समावेश यूरोप और सुदूरपूर्व में अधिनायकवादी आक्रमण की प्रारम्भिक अवस्थाओं में अमेरिका की विदेश नीति में नहीं हो सका था। किन्तु, जब सन् १६३७ तक यह निश्चित रूप से देख लिया गया कि जर्मनी, जापान और इटली को युद्ध के अतिरिक्त किसी अन्य उपाय द्वारा रोकना असम्भव है, तो उसके पश्चात् रूजवेल्ट ने अधिनायकवादी साम्राज्य-वाद के विरुद्ध शक्तिशाली तथा उपयुक्त दृष्टिकोण अपनाया।

रूजवेल्ट के प्रति शिक्षाविद् विशेष रूप से कृतज्ञता के ऋणी हैं। गवर्नर तथा राष्ट्र के प्रधान कार्यकारी की हैसियत से उन्होंने राष्ट्र-सेवा में १६ वर्ष की जो अवधि व्यतीत की, उसके अन्तर्गत उन्होंने सरकार की भूमिका के सम्बन्ध में लोकमत को, और फिर, सरकार के अन्तर्गत नागरिक की भूमिका को, परिवर्तित कर दिया। अँगीठी के सामने बैठकर किये गये वार्तालापों और पत्र-प्रतिनिधियों की भेंटों द्वारा उन्होंने राष्ट्रपतित्व को प्रत्येक मतदाता की कुटिया तक पहुँचा दिया और बड़प्पन तथा ऐकान्तिक निरुपायता युग में उन्होंने सरकार के प्रति जनता के हृदय में निकटता और अपनत्व की भावना का संचार किया।

किसी भी व्यक्ति के लिए, और विशेष रूप से पुरुषार्थी, सक्रिय तथा सुन्दर व्यक्ति के लिए, जिसमें नेतृत्व के प्रत्यक्ष गुण विद्यमान हों, शारीरिक अयोग्यता उन सबसे बड़ी परीक्षाओं में से एक है जो मानव प्राणी के सम्मुख उपस्थित हो सकती हैं। रूजवेल्टने शिशु पक्षाघात के दौरे वाले वर्षों में इस दुखान्तपूर्ण और क्रूर चुनौती पर वीरता से विजय प्राप्त की। अपने हाइड पार्क स्थित जमींदारी के कुलीन वातावरण में एकान्तवासी होने के बजाय, उन्होंने अन्ततोगत्वा, अपने आप को पुनः राजनीतिक कड़ाहे में उतने ही उत्साह के साथ झोंक दिया, जितना उत्साह उन्होंने एक राजकीय विधायक पद के लिए नामजद व्यक्ति की हैसियत से प्रदर्शित किया था। सन् १६२२ में उन्होंने अल स्मिथ से गवर्नरी की नामजदगी छीन लेने के लिए प्रकाशक विलियम रैनडाल्फ हार्स्ट द्वारा किये गये प्रयत्नों का सफल विरोध किया था।

दो वर्ष के पश्चात्, बैसाखियों की सहायता से, एक नूतन रूजवेल्ट ने लोक-तन्त्रीय राष्ट्रीय सम्मेलन में स्मिथ की नामज़दगी के पक्ष में स्फूर्तिदायक भाषण देकर संघर्षशील प्रतिनिधियों में आशा और प्रसन्नता का संचार किया। चार वर्ष पश्चात् रूजवेल्ट ने पुनः "प्रसन्न योद्धा" के पक्ष में बोलते हुए नेतृत्व तथा प्रेरणादायक गुणों का प्रदर्शन किया। इलिनर रूजवेल्ट तथा लुई हाऊ ने अपने राजनीतिक कर्तव्यों को इतनी अच्छी तरह निभाया था कि फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट अपनी आशा के विपरीत अधिक शीघ्रता के साथ राजनीतिक प्रकाश में आने लगे।

सन् १६२८ में न्यूयार्क राज्य राजनीतिक सम्मेलन में लोकतन्त्रीय प्रतिनिधियों तथा दल के नेताओं ने गवर्नर पद का चुनाव लड़ने के लिए कोई प्रमुख योग्य उम्मीदवार न पाकर अनिच्छुक फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट को, जो कि उस समय ज्यार्जिया के वार्मस्प्रिंग में अवकाश व्यतीत कर रहे थे, इसके लिए तैयार किया। तूफानी प्रचारों के पश्चात् चुनाव परिणामों के अनुसार, स्मिथ स्वयं अपने ही राज्य में पराजित हुए, जब कि रूज़वेल्ट लगभग २५,००० मतों से विजयी हुए।

रूज़वेल्ट द्वारा अलबानी में व्यतीत चार वर्ष की अवधि ने, वस्तुतः "नवीन सौदे" को जन्म दिया। इस अवधि में नवीन सौदे सम्बन्धी कार्यक्रम पर वार्तायें हुईं, उसे तैयार किया गया अथवा उसे न्यूयार्क में लागू किया गया। उस सौदे के अन्तर्गत गृह-निर्माण, श्रम, जेल, कृषि, बुढ़ापे की पेंशन, जीवन बीमा, सस्ती और प्रचुर बिजली की शक्ति, नागरिक उपयोगिता सेवायें और नीली प्रतिभूतियों की बिक्री शामिल थी। आगे चलकर वाशिंगटन के रंग-मंच पर प्रभावशाली भूमिकाओं क अभिनेता अनेक व्यक्तियों—हैरी हापकिंस, फ्रासिस परकिंस, हेनरी मोरगेन्थाव द्वितीय, रेमण्ड मोले, टामस जे० पैरन, द्वितीय, लेलैण्ड ओल्डस्, रेक्सफोर्ड जी० टगवेल, फेलिक्स फ्रैंक फरटर, मोरिस एल० कुक, जेम्स ए० फार्ले, इलिनर रूजवेल्ट, सैमुएल रोजनमैन तथा अन्य ने अलबानी में ही रूजवेल्ट की छत्रछाया के अन्तर्गत अपनी अपनी भूमिकाओं को प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की।

रूज़वेल्ट ने गवर्नर पद सम्बन्धी प्रथम प्रचार के सिलसिले में हर प्रकार के जातीय अथवा धार्मिक दुराग्रह का तीव्र तथा स्पष्ट विरोध किया। उन्होंने "कू क्लक्स क्लान" क्षेत्र के मध्य में अपने प्रचार सम्बन्धी अनेक भाषणों में अल स्मिथ के विरुद्ध उनके कैथोलिकवाद के कारण फैले हुए कानाफूसी के

प्रचार की तीव्र निन्दा की। उन्होंने उन लोगों की भी आलोचना की थी जो कि केवल इस कारण ही वोट देते कि उनके विरोधी का सम्बन्ध यहूदी सम्प्रदाय से था। तत्कालीन राजनीतिक रंगमंच पर ऐसे नेता बहुत ही कम थे, जिनमें धार्मिक दुराग्रह के विषय में इतना स्पष्ट दृष्टिकोण व्यक्त करने का साहस या बुद्धिस्वातन्त्र्य था। सन् १६४१ में युद्ध छिड़ जाने के तत्काल बाद वेस्टकोस्ट पर जापानियों के साथ अभद्र व्यवहार के बावजूद रूजवेल्ट ने अमेरिकी मंच पर एक ऐसा सद्भावनापूर्ण वातावरण विकसित करने में योग दिया, जिसके फलस्वरूप, अन्ततोगत्वा, संयुक्तराज्य के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हमारी सार्वजनिक विद्यालय प्रणाली में जातीय भेदभाव अवैध घोषित कर दिया गया।

धार्मिक या साम्प्रदायिक भेदभाव जैसे अनुचित रिवाजों और आचरणों की केवल निन्दा करना ही पर्याप्त नहीं है। हमारे राष्ट्रीय इतिहास की उस संकटकालीन अवधि में, जो कुछ करना उचित था और जो कुछ रूजवेल्ट ने किया, वह था द्वितीय विश्वयुद्ध की अवधि में उचित रोजगार आचार-आयोग की स्थापना-जैसे कार्यों द्वारा शिक्षा सम्बन्धी प्रारम्भिक शोध को प्रोत्साहन देना। इस प्रकार के उपायों ने गत १० वर्षों के भीतर हमारी संस्कृति में महत्त्वपूर्ण प्रगति के लिए दृढ़ आधारशिला के निर्माण में सहायता पहुँचायी।

आपद्ग्रस्त मन्दी से पूर्व जिसने कि हमारे राष्ट्र को गहरे काले कुहरे की भाँति आवृत्त कर लिया था, बहुत ही कम, राजनीतिक नेताओं को जनता के बीच खुले आम यह कहने का साहस होता था कि उन लोगों की सहायता करना और उनका पालन-पोषण करना सरकार का निश्चित उत्तरदायित्व था जो स्वयं कोई अपराध न करने पर भी बेरोजगार, अस्वस्थ अथवा असमर्थ हो गये थे। अमेरिकी जीवन के प्रायः सभी नेता यह विश्वास करते थे कि जो लोग परिस्थिति के बीच होकर बच निकलते थे, वे सबसे उपयुक्त और योग्य थे, अतएव निर्बलों और अयोग्यों की देखभाल करना सरकार का नहीं, बल्कि व्यक्तिगत दानियों का उत्तरदायित्व था। किन्तु सन् १६३२ तक राष्ट्रपति हरबर्ट हूवर के यथेच्छाकारी तथा अत्यधिक व्यक्तिवादी दर्शन में भी एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा था। क्योंकि उनकी अनेक नीतियों के फलस्वरूप संघीय सरकार उत्तरोत्तर अधिक संख्या में बेरोजगार श्रमिक और अकालग्रस्त किसानों को आर्थिक सहायता देने की दिशा में उन्मुख होने लगी थीं। यद्यपि राष्ट्रपति हूवर हिचक के साथ अशान्त चेतना तथा व्याकुल हृदय

से ही, अपने कदम उठा रहे थे, फिर भी उन्हें एक छोटे पैमाने पर कुछ अत्यन्त आवश्यक परिवर्तन करने के लिए बाध्य होना पड़ा था। किन्तु मार्च १९३३ में रूजवेल्ट के राष्ट्रपति बन जाने के समय तक संघीय सरकार ने गरीब किसानों, कारखाने के शोषित मजदूरों, करोड़ों बेरोजगार व्यक्तियों, निराश युवकों, बूढ़ों, बीमारों और असमर्थों की सहायता करने में गतिशील पहल का दृष्टिकोण अभी नहीं अपनाया था।

फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट को राष्ट्रपति पद के लिए 'उपेक्षित मानवों' ने—श्रमिक संघों के सदस्यों, राहत की अपेक्षा करनेवाले मनुष्यों—छोटे दूकानदारों, काश्तकारों किसानों—ने ही निर्वाचित किया था, जो कि सन् १९२० की दशाब्दीवाली समृद्धि के खोखलेपन के प्रत्यक्ष भुक्तभोगी थे। इन 'उपेक्षित मानवों' के लिए नवीन सौदा भी एक प्रतीक था। उनके लिए उसका आशय यह था कि सरकार की विस्तारशील भुजाओं के अन्तर्गत जनसाधारण की सुरक्षा के दिन अवश्य लौटेंगे। नवीन सौदे ने सुरक्षा की परिधि को व्यवसायियों से आगे बढ़ाकर उसके भीतर किसानों और श्रमिकों को भी शामिल कर लिया।

"नवीन वितरण व्यवस्था" के अन्तर्गत अमेरिकी जीवन की दयनीय स्थितियों का सामना करने के उद्देश्य से अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य शामिल थे, जैसे : सामान्य सहायता कार्यक्रम, नागरिक संरक्षण दस्ते, छोटी-छोटी जायदादों के मालिकों को बचाने के लिए गृहस्वामियों का ऋण निगम, वास्तविक सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम के लिए संघर्ष, कृषि को राहत, राष्ट्रीय पुनरुद्धार अधिनियम, एक राजकोषीय कार्यक्रम जिसने ैंकों को सुरक्षित किया, संघीय जमा बीमा निगम, प्रतिभूतियों और विदेशी विनियम आयोग तथा टेन्नेसी घाटी विकास अधिकारी की स्थापना। वितरण व्यवस्था की व्याख्या किसी एक कानून अथवा सरल मुहावरे द्वारा नहीं की जा सकती। यह विकास कार्यक्रमों की एक क्रमबद्ध शृंखला, प्रस्तुत समस्याओं के समाधान के लिए प्रयत्नों का सामूहिक रूप था। हमारे देश के विद्यार्थी सदैव यदि इन प्रयोगों में से कुछ असंगतियों से नहीं, तो कम से कम उनकी विविधता से तो अवश्य ही चकित रहेंगे।

अपने प्रशासन काल के प्रथम दो वर्षों में रूजवेल्ट ने राष्ट्रीय पुनरुद्धार प्रशासन की प्रतिभासित, नील गरुड़ के चिह्न से अंकित, ध्वजाओं द्वारा जनता में भविष्य के लिए विश्वास और आशा की भावना का संचार करने का प्रयत्न

किया। राष्ट्रीय पुनर्ग्रहण प्रशासन के अन्तर्गत वैयक्तिक उपक्रम द्वारा स्थापित व्यावसायिक नियमों ने बड़े उद्योगों को सहायता पहुँचायी तथा, इस पुरानी प्रविधि को, कि व्यवसाय की सहायता करके हम राष्ट्र की सहायता करते हैं, सुरक्षित रखा, जिसका अनुशीलन करके पिछले वर्षों में सरकार ने देश की अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया था। पुनर्ग्रहण प्रशासन का ठोस पक्ष उसकी ७वीं धारा में निहित था—जो कि वस्तुतः श्रमिकों का प्रथम राष्ट्रीय अधिकार-विधेयक था, जिसे अभी व्यवहार में लागू करना शेष था। जिस आधारभूत कानून ने श्रमिकों के लिए समाज में स्थायी और सम्मानपूर्ण पद को निश्चित व्यवस्था की थी, उसके अन्तर्गत, राष्ट्रीय श्रमिक सम्बन्ध अधिनियम तथा उचित श्रम प्रमाण अधिनियम शामिल थे। इन अधिनियमों द्वारा काम की अधिकतम अवधि तथा मजदूरी की निम्नतम व्यवस्था कर दी गयी थी। श्रमिक सम्बन्ध अधिनियम के सम्बन्ध में, जो कि विशुद्ध अर्थ में प्रशासनिक उपाय नहीं था, रूजवेल्ट का सन् १९३४ का विरोध १९३५ में समर्थन में परिवर्तित होने लगा था। फिर भी, नवीन वितरण व्यवस्था की अवधि के महत्त्वपूर्ण कानूनों में एक मात्र यह ऐसा कानून था, जिसके प्रवर्तक रूजवेल्ट नहीं थे, अथवा कम से कम जिसके स्वीकृत होने के पहले उन्होंने उसका समर्थन नहीं किया था। किन्तु जब एक बार वह स्वीकृत हो गया तो उन्होंने पूरी शक्ति के साथ उसका प्रतिपादन किया, और १९३६ तक निम्नतम मजदूरी के पक्ष में कानून के दृढ़ प्रवक्ता बन गये।

फ्रैंसिस परकिंस और जान जी० विनाण्ट जैसे निष्ठावान व्यक्तियों की सहायता से रूजवेल्ट ने सन् १९३५ के सामाजिक सुरक्षा अधिनियम को लागू किया। इस कानून ने न केवल हमें पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्रों से आगे बढ़ा दिया, बल्कि उससे श्रमिकों ने यह समझ लिया कि वे निरपराधी होने की स्थिति में काम से हटाये जाने पर भूखों नहीं मर पाएँगे, इस कानून के अनुसार बड़े-बूढ़ों को पेंशन द्वारा सहायता और रुग्ण तथा असमर्थों को आवश्यकता के समय आर्थिक सहायता दी जाती थी। हमारे राष्ट्र के इतिहास में पहली बार संघीय सरकार प्रत्यक्ष रूप से अपने नागरिकों के लिए चिन्ता करने की ओर अग्रसर हुई थी।

सार्वजनिक उपयोग के लिए विद्युत्शक्ति के विकास के प्रस्तावकों से सहमत होकर फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट ने टेनेसी नदी की शक्ति के उपयोग के सम्बन्ध में सिनेट सदस्य जार्ज डब्ल्यू० नोरिस के स्वप्न को अपना पूर्ण समर्थन

प्रदान किया। इसके परिणामस्वरूप टेन्नेसी घाटी अधिकारी का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने सात राज्यों के सीमा क्षेत्र में जीवन के स्वरूप और रूपरंग में निश्चित क्रान्ति उत्पन्न कर दी। राष्ट्रपति हूवर ने सस्ती विद्युत्शक्ति के स्रोत के रूप में छिछले जलस्रोतों के विकास का विरोध किया था, क्योंकि यह एक "समाजवादी" उपाय और हमारे राष्ट्र के नैतिक तन्तुओं के लिए खतरनाक समझा गया था। किन्तु, इसके विपरीत, रूज़वेल्ट इस नये प्रस्ताव के सम्बन्ध में प्रयोग करने के लिए उत्सुक थे। उनका विचार था कि इससे न केवल सस्ती और प्रचुर विद्युत्शक्ति प्राप्त होगी, बल्कि यह वैयक्तिक उपयोगिता संस्थानों को इस बात के लिए प्रेरित करने में मापदण्ड सिद्ध होगा, कि वे उपभोक्ताओं से वसूल किये जानेवाले ऊँचे मूल्य को कम करें।

टेन्नेसी नदी और उसकी शाखाओं द्वारा संचित सात दक्षिण-पूर्वी राज्यों के निवासी अत्यधिक निम्न आय के कारण दीर्घकाल से कष्ट में थे। उनकी गरीबी ने हजारों व्यक्तियों को वह क्षेत्र छोड़कर अन्यत्र भागने के लिए बाध्य कर दिया था, जिसके फलस्वरूप १६३२ तक नाक्सविल तथा अन्य नगर निर्जन हो चुके थे। विद्यालय प्रणाली, सड़कों और अस्पताल की अपर्याप्तता तथा सरकारी सेवाओं की निकृष्टता उस क्षेत्र की विशेषतायें थीं। मौसमी बाढ़ें, जो घाटी से नीचे की ओर दहाड़ती हुई आया करती थीं, अपने पीछे पहाड़ी इलाकों पर मिट्टी के कटाव के गहरे दाग छोड़ जाती थीं।

टेन्नेसी घाटी अधिकारी की स्थापना तथा विशाल भयंकर बहु-उद्देश्यीय बाँधों के निर्माण के कुछ ही वर्ष पश्चात् विनाशकारी बाढ़ों को रोक दिया गया। पहाड़ियों पर शान्ति के साथ गायें चरने लगीं, वे नयी-नयी उगी घास-खाकर उन बच्चों के लिए जिन्होंने इसके पहले उसका दर्शन भी नहीं किया था, अमृतमय दूध उत्पन्न करने लगीं। अब साल के बारहों महीने एक निम्नतम गहराई तक जलप्रवाह को नियमित रखने के कारण टेन्नेसी नदी चढ़ाव की ओर कई-कई मील तक वस्तुओं से लदे सैकड़ों व्यापारी जहाजों को अपनी छाती पर ढोने लगी। अकस्मात् नदी के किनारों पर या उसके निकट-कारखाने बढ़ने लगे, जब कि नाक्सविल तथा अन्य केन्द्रों का महत्त्व घनी आबादीवाले नगरों के रूप में पहले से बहुत बढ़ गया। करों की वसूली में नियमित रूप से दृढ़वृद्धि होने के फलस्वरूप विद्यालय प्रणाली को सुधारना तथा यातायात और संचार के साधनों को आधुनिक रूप देना सम्भव हो गया। घाटी की रूपरेखा परिवर्तित हो जाने पर जनसंख्या के प्रवास की प्रवृत्ति भी उल्टी हो गई।

अब इस घाटी के मछली के शिकारगाहों, तैरने के साधनों, नौका-विहार की सुविधाओं, सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों तथा स्वस्थ क्षेत्रों के आकर्षण हर वर्ष हजारों व्यक्तियों को अपना अवकाश व्यतीत करने के लिए इस विकासशील और बढ़ती हुई जनसंख्यावाले विश्वासी क्षेत्र की ओर खींच लाते हैं जो कि अब क्रुद्ध तथा अनियन्त्रित नदी से तनिक भी पीड़ित नहीं रह गये हैं।

यदि रूजवेल्ट ने कुछ अन्य योगदान न भी दिया होता तो भी केवल टेन्नेसी घाटी अधिकारी की स्थापना ही उनकी मौलिक प्रतिभा, जनता में उनकी आस्था तथा भविष्य में उनके विश्वास का पर्याप्त तथा चिरस्थायी स्मारक बनने के लिए पर्याप्त थी। अमेरिका निवासी, चाहे विश्व के किसी भी कोने में हों, उनसे अन्य देशों के रुचि रखनेवाले तथा सतर्क लोगों से वार्तालाप के सिलसिले में सामान्यतः एक विषय पर चर्चा अवश्य होती है और वह विषय है टेन्नेसी घाटी अधिकारी। वे इससे भली भाँति परिचित हैं और सर्वत्र-चीन, दक्षिण अफ्रीका, इसरायल, यूगोस्लेविया और दक्षिण अमेरिका—में लोगों ने इसकी प्रशंसा की है। सन् १९३३ में प्रारम्भ होने के बाद से ही टेन्नेसी घाटी अधिकारी विश्व में संयुक्तराज्य के उस ठोस नेतृत्व का प्रतीक बना हुआ है, जिसे इस देश ने विभिन्न अवसरों पर प्रदर्शित किया है और जिसे भविष्य में भी अधिक प्रभाव के साथ प्रदर्शित करने में समर्थ है। अपने उद्देश्यों और सफलताओं सहित टेन्नेसी घाटी अधिकारी संसार भर में मनुष्यों की विचारधारा को परिवर्तित करने के संघर्ष में हमारे सबसे बड़े अस्त्रों में से एक है।

जिस समय रूजवेल्ट अलबानी छोड़कर वाशिंगटन के लिए रवाना हुए, उस समय लगभग एक करोड़ २० लाख बेरोजगार मनुष्य अपने भविष्य के संबंध में निराश हो उठे थे, और स्वयं अपने आप में तथा लोकतंत्र में उनकी आस्था घटने लगी थी। वैयक्तिक धर्मादा संस्थाओं तथा स्थानीय सरकारों के साधन समाप्त हो चुके थे। गवर्नर रूजवेल्ट ने हैरी हाप्कीन्स के तत्वावधान में अस्थायी संकटकालीन सहायता प्रशासन द्वारा राज्य के करोड़ों बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार या घरेलू सहायता देने की व्यवस्था के लिए गम्भीर प्रयत्न किये। दुर्भाग्यवश, धन की अपर्याप्तता के कारण यह प्रशासन न तो अधिक व्यक्तियों को सहायता ही पहुँचा सका और न उतना प्रभावकारी ही सिद्ध हुआ। अतएव यह आवश्यक हो गया कि इस दिशा में कुछ किया जाय और शीघ्र किया जाय।

राष्ट्रपति की हैसियत से रूज़वेल्ट ने क्रम से अनेक प्रशासनिक विभाग स्थापित किये, जिनका उद्देश्य बेरोजगारों की सहायता के उद्देश्य में निर्माण-कार्य चलाना था। वर्णमाला के अक्षरों के रूप में उनमें से कुछ के नाम थे, डबल्यू, पी, ए, पी० डबल्यू० ए०, एन० वाई० ए०। इस निर्माणकारी सहायता कार्यक्रम के फलस्वरूप बहुत से बेरोजगारों को गन्दी बस्तियों की सफाई ग्रामीण विद्युतीकरण और बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाने में रोजगार प्राप्त हुआ। व्यक्तियों के आत्मसम्मान को वापस लाने के उद्देश्य से सुरक्षा स्तर पर मजदूरी दी जाती थी, अर्थात् उनकी मजदूरी सहायतार्थ किये गये भुगतानों से अधिक, किन्तु प्रतिस्पर्द्धी वैयक्तिक उपक्रमों में अदा की जानेवाली मजदूरी से न्यूनतर होती थी।

जिन लोगों का सम्बन्ध निर्माणकारी सहायता योजनाओं से था, उनमें से कुछ ने मकानों की बगलों से लटके हुए अपना काफी समय व्यर्थ गवाँ दिया होगा, जिन्हें देखकर सम्भवतः दर्शक को आश्चर्य हुआ होगा कि मकान को रोका जा रहा है या मजदूर को। यह भी सम्भव है कि कुछ मजदूरों ने उन्हीं सूखी पत्तियो को बार-बार इकट्ठा किया होगा। किन्तु यह भूलना नहीं चाहिए कि उन महिलाओं और पुरुषों में से अधिकांश जनसंख्या जो सहायतार्थ चलाये गये निर्माण-कार्यों में काम पाये हुए थे, अपने प्रयत्नों और काम के सम्बन्ध में सचेत थी। उन्होंने अपने प्रयत्न से राष्ट्र के धरातल के मुख पर स्थायी छाप छोड़ दी है। निर्माणकारी विकास प्रशासन के प्रथम दो वर्षों के भीतर १,६३४ विद्यालय-भवन, ३००० टेनिस खेलने के मैदान, १०३ गोल्फ के मैदान, ५,८०० सचल पुस्तकालय तथा १,६५४ चिकित्सा तथा दन्त चिकित्सा के केन्द्र निर्मित हुए थे। उसी अवधि के भीतर प्रति मास १२८, ३०, ३० दोपहर के भोजन दिये गये थे, और १,५०० बार नाटकों का आयोजन हुआ था तथा १, ७००० साक्षरता कक्षायें चलायी गयीं।

गलाघोंटू गन्दी बस्तीवाले क्षेत्रों के सबसे अँधेरे कोनों में, खेल के मैदान बन गये जिससे बच्चों को अपनी मांसपेशियाँ फैलाने और मोड़ने तथा अपनी शक्तियाँ रचनात्मक प्रयत्नों में लगाने के लिए खुली जगहें प्राप्त हो गयीं। नये-नये डाकखाने खुल गये, जिन्होंने देश के एक कोने से दूसरे कोने तक नगरों और छोटे शहरों को सौन्दर्य तथा विश्वास की ताजी साँस प्रदान की। नागरिक संरक्षण दलों ने गली-कूचों में परित्यक्त पड़े हुए हजारों बेकार नव-युवकों को उनके अन्तर्भूत अपराधी जीवन से निकालकर राष्ट्र के प्राकृतिक

साधनों को सुरक्षित रखा तथा राजमार्ग और शरणस्थानों के निर्माण में सहायता पहुँचाने के लिए एकत्र कर लिया। किन्तु इन सबसे ऊपर, इन नागरिक संरक्षण दलों ने हमारे युवकों के आत्मसम्मान तथा लोकतन्त्र और भविष्य में उनके विश्वास को बनाये रखने का प्रयत्न किया।

जब हजारों-लाखों पढ़ाई प्रारम्भ करनेवाले बच्चे घर पर पर्याप्त धन के अभाव के कारण पढ़ाई छोड़ने लगे, तो देश के सम्मुख अचानक इंजिनियरों, वैज्ञानिकों, प्रविधि विशेषज्ञों, शिक्षकों, डाक्टरों, वकीलों और अन्य पेशेवाले लोगों की एक समूची पीढ़ी की हानि की सम्भावना उत्पन्न हो गई। रूजवेल्ट ने अपने पूर्ववर्तियों की परम्परा को जारी रखने की बजाय, सन् १६३५ में राष्ट्रीय युवक प्रशासन की स्थापना की, जिसने बेकार नवयुवकों को पेशों-सम्बन्धी मार्ग-दर्शन, प्रशिक्षण और ठिकाना देकर विद्यालयों में अवसर, नवसिखुओं में उनकी पाली तथा काम और रचनात्मक जीवन के लिए अवसर प्रदान किया। १२ महीने के भीतर राष्ट्रीय युवक प्रशासन ने ६ लाख युवकों को सहायता दी। अपना काम समाप्त करने के पहले राष्ट्रीय युवक प्रशासन ने अधिनायकवादी आन्दोलनों के पथ पर चलने के विरुद्ध अमेरिका निवासियों की एक समूची पीढ़ी को सबल बनाया और उत्तरदायी तथा योग्य पुरुषों और स्त्रियों को शान्ति काल और युद्ध में विभिन्न पेशों के लिए तथा औद्योगिक और आर्थिक विश्व के लिए निश्चित रूप से तैयार कर दिया। यही वह पीढ़ी है, जिसे फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट की मौलिक प्रतिभा तथा दूरदर्शिता ने हमारे राष्ट्र के लिए बचा लिया।

कुलीन वातावरण की उपज यह महापुरुष कला संगीत और नाटक का विशेष मर्मज्ञ नहीं था। फिर भी, उन्होंने महसूस किया कि संकट के समय में राष्ट्र को चाहिए कि वह निर्धन कलाकारों, संगीतज्ञों, लेखकों और नाट्यकारों की प्रतिभाओं और उनके आत्मसम्मान को सुरक्षित रखने में सहायता पहुँचावे। दुखी, दलित, बेरोजगार राष्ट्र कोई महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक योगदान करने की आशा नहीं कर सकता। अतः रूजवेल्ट ने ऐसी योजनाएँ प्रारम्भ कीं जिनके द्वारा प्रतिभासम्पन्न पुरुषों और महिलाओं की योग्यताओं का उपयोग उनके समकालीन लोगों के आनन्द तथा ज्ञानोन्नति के लिए तथा भावी पीढ़ियों के लाभार्थ किया गया।

अति उत्पादन, न कि अर्ध-उपयोग, पर आधारित दर्शन से युक्त रूजवेल्ट ने मिट्टी संरक्षण, ऋण की मात्रा में कमी, उत्पादन पर नियन्त्रण, कारखाने

बन्द होने के विरुद्ध सुरक्षा, काश्तकारों और उप-सीमान्त किसानों के पुनःस्था-पन तथा ग्रामीणों को आर्थिक सहायता द्वारा खेती की आय को शहरी आय के समान करने का प्रयत्न किया। राजनीतिक रंगमंच से रूज़वेल्ट के विदा लेने से पूर्व किसानों की बहुत बड़ी जमात यह गीत गाया करती थी; "हमारे यहाँ का जीवन सुखमय है।"

इसी प्रकार, रूज़वेल्ट के प्रयत्नों के ऐसे भी अनेक दृष्टान्त प्रस्तुत किये जा सकते हैं, जो उन्होंने स्कन्ध-बाजार (स्टाक मार्केट) की अव्यवस्था में कुछ अंश तक व्यवस्था का आभास उत्पन्न करने, निरर्थक प्रतिभूतियों की बिक्री रोकने तथा शक्तिशाली प्रतिभूति और विनिमय आयोग के माध्यम से राष्ट्र के लाभार्थ उपयोगिता सेवाओं के अधिक कड़े नियम तैयार करने के सम्बन्ध में किये थे। यह सब कुछ उस समय किया गया था, उन्हें करने का प्रयत्न किया गया, जब कि रूज़वेल्ट अभी भी देश के आन्तरिक क्षेत्र पर अपने प्रयत्न केंद्रित करने में समर्थ थे। किन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र की प्रगतियाँ अमेरिकी क्षितिज पर उत्तरोत्तर गहन होती गयीं। जर्मनी इटली और जापान में आक्रामक अधिनायकवाद के विकास ने द्वितीय विश्व युद्ध का तथा राष्ट्र तथा उसके राष्ट्रपति द्वारा उसमें उत्तरोत्तर अधिक रुचि लेने तथा उसमें हस्तक्षेप करने का मार्ग प्रशस्त किया।

अपनी अन्तर्दृष्टि के उत्कर्ष बिन्दु से इतिहासकार घटना और व्यक्तिगत सम्बन्धों, कारणों और परिणामों पर दृष्टिपात कर सकता है और इन तत्त्वों से त्रुटियों और असफलताओं के तथा भूतकाल की सफलताओं और विजयों के मूल्यांकन की प्रमुख रूपरेखा साहस के साथ तैयार कर सकता है। जो बात इतिहासकार के लिए लाभदायक है, वही बात उन लोगों के लिए बाधक सिद्ध हो सकती है जो घटना के दौरान सक्रिय तथा निरंतर भूमिकाएँ अदा कर रहे थे। जैसा कि कुछ इतिहासकारों का मत है, विदेशी मामलों में रूज़वेल्ट की भूमिका गौरव-विहीन थी। बीते हुए काल के उत्कर्ष-बिन्दु से इन इतिहासकारों ने रूजवेल्ट के निर्णय और कार्यों में कुछ कमजोरियों का उद्घाटन किया है। निश्चय ही, एक बात से सभी सहमत होंगे कि युद्ध में अमेरिका को भाग लेने से रोकना राष्ट्रपति के अधिकारों के बाहर की बात थी। सबसे महत्त्वपूर्ण बात इतिहासकार चार्ल्स ए० बीयर्ड द्वारा व्यक्त यह दृष्टिकोण है कि रूजवेल्ट ने जान-बूझकर और धोखेबाजी से हमें झगड़े में फँसा दिया, जब कि उन्होंने अमेरिका के लोगों से कोई परामर्श नहीं लिया। किन्तु इस दृष्टिकोण के पीछे

कोई मौलिक आधार नहीं है। यदि विदेशी संबंधों में रूज़वेल्ट की भूमिका की कोई आलोचना हो सकती है, तो वह यही है कि वे अति शीघ्र, मौके से, स्वतंत्रता के लिए अमेरिकी राष्ट्र और उसकी सैन्यशक्ति के प्रयोग का वादा करने में चूक गये थे। इस प्रकार, बीयर्ड के विचारों के विपरीत, युद्ध में हस्तक्षेप अधिक विलम्ब से किया गया।

राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अपनी प्रथम कार्यविधि के भीतर यदि राष्ट्रीयतापूर्ण नहीं, तो कुछ संकुचित, विदेश नीति का अनुशीलन अवश्य किया था। इस संबंध में लैटिन अमेरिका के साथ हमारा संबंध एक अपवाद है। रूजवेल्ट ने अपने प्रथम उद्घाटन भाषण में इस बात पर जोर दिया था "विश्व नीति के क्षेत्र में नेक पड़ोसी की नीति के उद्देश्य पर इस राष्ट्र को भेंट कर दूँगा— ऐसा पड़ोसी जो दृढ़ संकल्प के साथ अपना सम्मान करता है और चूँकि वह ऐसा करता है इसलिए वह दूसरों के अधिकार का सम्मान भी करता है—वह पड़ोसी जो अपने उत्तरदायित्वों का सम्मान करता है और पड़ोसियों के विश्व में अपने समझौतों की पवित्रता का सम्मान करता है।"

रूजवेल्ट ने इस नेक पड़ोसी की धारणा को लागू करते हुए प्लैट-संशोधन को लागू करके क्यूबा में हमारे संरक्षण अधिकार को समाप्त कर दिया, हैटी से हमारे समुद्री जहाजों को वापस बुला लिया, पनामा में हमारे सन्धि-अधिकारों को छोड़ दिया तथा १९३६ के अखिल अमेरिकी सम्मेलन में व्यक्तिगत रूप से हिस्सा लेकर एक साहसपूर्ण नवीन दृष्टान्त प्रारम्भ किया। सन् १९४० की बैठक में स्वीकृत हवाना अधिनियम का उद्देश्य विशेष रूप से धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध था, क्योंकि उसमें यह चेतावनी दी गयी थी कि दक्षिण अमेरिका में किसी भी बाहरी हस्तक्षेप को सभी सदस्य आक्रमण समझेंगे और उसके विरुद्ध सभी राष्ट्र एक होकर उसका सामना करेंगे। मनरो सिद्धान्त को अन्ततोगत्वा व्यापक करके उसे १९ वीं शताब्दी के संकुचित तथा राष्ट्रीयतापूर्ण प्रयत्न की बजाय एक बहुउद्देश्यीय नीति में बदल दिया गया।

एक अन्य नीति जिसका समर्थन रूजवेल्ट ने बड़ी सबलता के साथ किया और जिसने हमारे विदेशी सम्बन्धों को सुधारने में अत्यधिक योग दिया था, पारस्परिक व्यापार कार्यक्रम से सम्बद्ध थी। प्रधान कार्यकारी को यह अधिकार प्रदान कर दिया गया था कि वह कांग्रेस की अनुमति बिना भी ५० प्रतिशत तक आयात-निर्यात करों को घटा सकता है। कार्डेल हल के नेतृत्व से अनुप्राणित होकर इस अधिनियम के अन्तर्गत किये गये समझौतो ने रूजवेल्ट की

नीति-सम्बन्धी ऐसी लोचशीलता प्रदान की, जो हमारे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को सहकारी और मैत्रीपूर्ण आधार पर निर्मित करने के लिए तथा स्वयं अपने लिए और उसमें भाग लेनेवाले राष्ट्रों के लिए पारस्परिक लाभ की निश्चित व्यवस्था करने के उद्देश्य से आवश्यक थी।

थोड़े ही समय पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने विदेशी मामलों के सम्बन्ध में अनेक व्यक्तियों के भ्रम को चूर-चूर करना प्रारम्भ कर दिया। सन् १९३५ में असहाय एथियोपिया पर इटली के धृष्ट आक्रमण के बावजूद अमेरिका की जनता, राष्ट्रपति और कांग्रेस हठधर्मी के साथ, इस मूर्खतापूर्ण नहीं, तो कम से कम, व्यर्थ आशा से चिपकी रही कि हम विदेशी झगड़ों से अपने आपको पृथक् रख सकते हैं। कांग्रेस ने तटस्थता-सम्बन्धी अनेक उपायों में से पहले उपाय को कानूनी रूप दिया जिसके द्वारा राष्ट्रपति को अधिकार दिया गया कि वह युद्धरत देशों को युद्ध सामग्री के निर्यात पर रोक लगा सकता है और अमेरिका में धन एकत्र करने के उनके अधिकार को अस्वीकृत कर सकता है।

स्पेन के गृह युद्ध ने आइबेरिया के प्रायद्वीप पर भयंकर प्रलय मचा दी और द्वितीय विश्व युद्ध की प्रारम्भिक अवस्था का द्वार उन्मुक्त कर दिया। उन उदारवादियों की पीड़ा और उद्विग्नता के विरुद्ध, जो कि उचित तौर पर यह समझते थे कि स्पेन में राज्य-भक्तों के प्रारम्भिक वर्ष लोकतन्त्रीय युद्ध का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, रूजवेल्ट ने तटस्थता की नीति अपनायी। जनवरी १९३७ में इस बात के बावजूद कि उचित रूप से स्थापित राज्य-भक्त सरकार को क्रान्तिकारी चुनौती दे रहे थे, जिन्हें फासिस्तवादी इटली और नात्सी जर्मनी से खुले आम सैनिक टैंकों और वायुयानों की सहायता मिल रही थी, रूजवेल्ट ने स्पेन के दोनों ही पक्षों के माल से भरे जहाजों पर रोक लगाने का अनुरोध किया। स्पेन के युद्ध क्षेत्र अधिनायकवादी शक्तियों के सैनिक उपकरणों तथा युद्ध की चालों के लिए परीक्षा-भूमि सिद्ध हुई।

सुदूरपूर्व में भी संकट के बादल मँडराने लगे और उन्होंने नये संकटों और भयों को उकसाना प्रारम्भ कर दिया। जापान ने चीन की भूमि पर प्रत्यक्ष आक्रमण के उद्देश्य से अपनी सैन्य शक्ति का निर्माण करके साहसपूर्ण सरलता के साथ मंचूरिया और दक्षिण-पूर्वी चीन में सैन्य संचालन करना प्रारम्भ कर दिया। इस संकटकाल में राष्ट्रसंघ की असमर्थता ने उसके पूर्ण दिवालियेपन को सिद्ध कर दिया।

शिकागो विश्वविद्यालय के उपदेशात्मक भाषण में जार्ज केनन ने बड़ी सतर्कता के साथ यह सुझाव दिया था कि द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों की जड़ें एथियोपिया, स्पेन और चीन की तात्कालिक घटनाओं की अपेक्षा अधिक गहरी थीं। उनका विचार था कि अधिक महत्त्वपूर्ण बात, जैसा कि जर्मनी के मामले में था, यह थी कि हम अमेरिका निवासी सन् १९२० की दशाब्दी में "वीमर लोकतन्त्र की विनम्र शक्तियों को अधिक समझने, उनका समर्थन करने और प्रोत्साहन देने में असफल रहे।" यदि हमने ऐसा कर लिया होता तो हम हिटलर के उत्थान को रोकने में सफल हो गये होते।

जब जापानियों ने चीन में पूर्ण आक्रमण प्रारम्भ किया और नानकिंग के निरुपाय नागरिकों पर निर्लज्जता के साथ बम वर्षा की, और जब हिटलर की जर्मन सेनाओं ने राइनलैण्ड में कूच किया, तब राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने भावी अधिनायकवादी आक्रमणों के विरुद्ध निर्णायक दृष्टिकोण अपनाया। ५ अक्तूबर सन् १९३७ को उन्होंने यह बात स्पष्ट कर दी कि धुरी राष्ट्रों की आक्रामक चालें संयुक्त राज्य की सुरक्षा के लिए संकट उत्पन्न कर रही हैं। संयम और गौरव के साथ उन्होंने घोषणा की कि जब तक वर्तमान स्थिति जारी रहेगी, वे आक्रामकों को 'रोकने' का प्रयत्न करेंगे। किन्तु अभी भी अमेरिका निवासी हृदय में तटस्थावादी बने हुए थे; उन्हें आशा थी कि हम अन्य युद्ध में शामिल होने से बच जाएँगे। यद्यपि साथ-साथ ही हम मित्रराष्ट्रीय प्रयत्नों और उद्देश्यों पर भावनात्मक दृष्टि से तथा सक्रिय रूप से हर्ष प्रकट करते जा रहे थे, फिर भी हम उस समय तक यूरोपीय युद्ध में प्रविष्ट होने से इन्कार करते रहे, जब तक कि जर्मनी ने स्वयं हमारे विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं कर दी।

सन् १९३८ तक रूजवेल्ट ने सफलता के साथ नौ-शक्ति के विस्तार सम्बन्धी कार्यक्रम के लिए एक अरब डालर देने का अनुरोध किया। उस घटना-प्रधान वर्ष का अन्त होने के पहले फ्रांस और इँगलैण्ड ने म्यूनिख में जेकोस्लोवाकिया के विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उन्हें आशा थी कि ऐसा करने से हिटलर और मुसोलनी की तीव्र तृष्णा सन्तुष्ट हो जायगी। अगले १२ महीनों के भीतर घटनाचक्र बड़ी तेजी से घूमा—हिटलर ने जेको-स्लोवाकिया में कूच किया, मेमेल पर अधिकार कर लिया। उसके साझेदार ने अलबेनिया पर कब्जा कर लिया और फिर पोलैण्ड पर आक्रमण प्रारम्भ हुआ। सितम्बर १९३९ तक तो अधिकृत रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया।

१९४० में फ्रांस के हृदयविदारक पतन के पश्चात् रूज़वेल्ट ने अत्यन्त शीघ्रता और दृढ़ता के साथ कदम बढ़ाये और खुलेआम राष्ट्र को इस युद्ध में अपरिहार्य रूप से हिस्सा लेने के लिए तैयार करने लगे। कांग्रेस ने नासेना पर अधिक व्यय के लिए धन देना स्वीकार कर लिया और राष्ट्रपति को सेना में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए राष्ट्रीय संरक्षक दल का निर्माण करने तथा निर्वाचित सेवा अधिनियम पर स्वीकृति प्रदान करने का अधिकार दे दिया। राष्ट्रपति ने ब्रिटेन की सहायता के लिए अपने समस्त कार्यकारी अधिकार का प्रयोग किया और पश्चिमी भूमण्डल में स्थित अंग्रेजी उपनिवेशों के पट्टों के बदले ५० पुराने विध्वंसक पोत देकर ब्रिटेन की सहायता की। जुलाई १९४० में कांग्रेस ने निर्यात-नियन्त्रण अधिनियम स्वीकार कर लिया, जिससे राष्ट्रपति को देश से बाहर सामान भेजने पर रोक लगाने या उसमें कटौती करने का अधिकार प्रदान कर दिया। इसका उद्देश्य जापान माल भेजने में बाधा पहुँचाना था। अक्टूबर में राष्ट्रपति ने अन्तिम रूप से लोहे और इस्पात के खड्डों के भेजने पर रोक लगा दी। ग्रेट ब्रिटेन तथा पश्चिमी लोकतन्त्रों की सुरक्षा के सम्बन्ध में अपनी निश्चित नीति के अंग के रूप में रूज़वेल्ट ने कांग्रेस से उधार पट्टा कानून स्वीकृत करा लिया, जिससे, ब्रिटेन, यूनान, चीन और निष्कासित सरकारों को पूर्ण सहायता देना निश्चित हो गया। १९४१ में जर्मनी द्वारा सोवियत संघ पर आक्रमण के फलस्वरूप शक्ति सन्तुलन में एक महत्त्वपूर्ण और आधारभूत परिवर्तन हो गया। यदि ये दोनों अधिनायकवादी शक्तियाँ संयुक्त रहतीं, तो पश्चिमी लोकतन्त्रों के लिए विजय की आशा बहुत ही कम होती। स्वतन्त्रता की सफलता की सम्भावनायें इस वांच्छनीय विभाजन से ही नहीं, बल्कि इस बात से भी अधिक बढ़ गयीं कि अब जर्मनी को दो मोर्चों पर लड़ाई लड़ना अनिवार्य हो गया।

युद्ध में संयुक्तराज्य का अन्तिम रूप से प्रवेश पूरा हो गया। युद्ध में एक बार शामिल हो जाने पर युद्धकालीन वर्षों के दबाव के अन्तर्गत लिये गये निर्णय विक्रान्त, भार से दबे हुए, मनुष्यों के निर्णयों जैसे थे, जो उग्र रूप से कठोर परिस्थितियों के अन्तर्गत किये जाते हैं—यह एक ऐसा तत्त्व है जिसे हम पृष्टिपेषण करते हुए मुश्किल से याद करने का प्रयत्न करते हैं। जैसा कि जार्ज केनन ने अत्यन्त उचित रूप से कहा है। "मेरे विचार से विचाराधीन वार्ता तथा ऐतिहासिक सद्भावना के उद्देश्य—इन दोनों ही के सम्बन्ध में बाद की व्याख्याओं में जो कि युद्धकालीन वर्षों के विशिष्ट निर्णयों

को हमारी समस्त वर्तमान कठिनाइयों का मूल-स्रोत मानती हैं, कुछ अन्याय किया जा रहा है।

द्वितीय महायुद्ध की अवधि में रूस से हमारे सहयोग को रूजवेल्ट की विदेश नीति की कमजोरी कहना कदापि उचित नहीं। यह एक सामरिक आवश्यकता थी, जिसे युद्ध की परिस्थितियों ने उत्पन्न किया था। मास्को, तेहरान और याल्टा में युद्धकालीन सम्मेलनों के महत्त्व को शायद बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है। जैसा कि सम्मेलन के समझौतों तथा तत्कालीन घटनाओं से प्रकट हुआ है, पूर्वी यूरोप में सोवियत सैन्य-शक्ति की स्थापना तथा मंचूरिया में उसकी सेनाओं के प्रवेश, इन वार्ताओं के ही एकमात्र परिणाम नहीं थे। युद्धोत्तर कालीन सोवियत नियन्त्रण, मुख्यतः युद्ध की अन्तिम अवस्थाओं में, रूसी सैन्य संचालन का परिणाम था। इसके अतिरिक्त, याल्टा की व्यवस्थाओं को चीनी सरकार का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। कम से कम इतना तो निश्चित ही है कि लोकतन्त्रीय देशों ने रूस के साथ सद्भावनापूर्ण कामचलाऊ सम्बन्ध स्थापित करने की सच्ची उत्सुकता का प्रमाण दिया। ये सम्मेलन युद्धोत्तर कालीन शान्ति के लिए अमेरिका की आशा के स्थायी प्रमाण बन चुके हैं। बाद की घटनाओं ने रूसी प्रवृत्तियों की असत्यता का रहस्योद्घाटन किया है।

प्रथम विश्वयुद्ध की अवधि में मित्रराष्ट्रों के व्यवहार के ठीक विपरीत इस द्वितीय विश्वयुद्ध की विशेषता यह थी कि इसमें संयुक्त राष्ट्रों के बीच अधिक अंश तक सहयोग रहा। युद्ध की समूची अवधि में फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट और चर्चिल के बीच व्यक्तिगत सम्बन्ध प्रायः राजदूतों की मध्यस्थता की औपचारिकता से विहीन बना रहा, और अन्त में, उसीने संयुक्त राष्ट्रसंघ को जन्म दिया। युद्ध की समूची अवधि में रूजवेल्ट ने मित्र राष्ट्रों के बीच युद्धोत्तरकालीन आयोजन की आवश्यकता पर जोर दिया और उसमें सुविधा पहुँचायी। जून सन् १९४४ में उन्होंने एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के लिए अपनी सरकार की योजना प्रस्तुत की। डम्बर्टन ओक्स में प्रारम्भिक प्रस्तावों पर समझौता हुआ। रूसी सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से रूजवेल्ट और चर्चिल ने यहाँ तक स्वीकार कर लिया कि बाइलोरसिया तथा यूक्रेन को पृथक् प्रतिनिधित्व प्रदान किया जायगा, कि सुरक्षा समिति के प्रत्येक सदस्य को विशेषाधिकार प्राप्त होगा, और कि सोवियत संघ पूर्वी पोलैण्ड को अपने सीमा क्षेत्र में मिला सकता है। रूजवेल्ट की मृत्यु के थोड़े ही समय बाद

सैनफ्रांसिसको में संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र को स्वीकार करने के लिए ५५ राष्ट्रों का सम्मेलन हुआ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे संगठन के महत्त्व से रूजवेल्ट सदैव भली भाँति अवगत थे। उद्विग्नतामय तनावों और अधिनायकवादी आक्रामक प्रवृत्तियों से उत्पन्न नवीन दबावों के इन दिनों में भी यह संगठन राष्ट्रपति रूजवेल्ट के उच्च नैतिक उद्देश्यों के ठोस और रचनात्मक स्मारक के रूप में खड़ा है। शायद हम उनकी आलोचना इसलिए कर सकते हैं कि उन्होंने यह सोचने में बुद्धिमानी नहीं दिखलायी थी कि रूसी सहयोग पर भरोसा किया जा सकता है; शायद हम भावी युद्धों के मूलोच्छेद के साधन के रूप में मित्र राष्ट्रीय सहयोग में उनकी सरल आस्था के कारण उन पर क्षुब्ध हो सकते हैं; किन्तु कम से कम इतना तो निश्चित ही है कि वे अपने पीछे एक ऐसा संगठन छोड़ गये हैं, जिसके माध्यम से विश्व के राष्ट्र अपने अधिकारों के लिए और भावी शान्ति के लिए वार्ता चला सकते हैं, और यहाँ तक कि कूटनीतिक आधार पर सौदा भी कर सकते हैं—और, इसके लिए हमें अपनी प्रशंसा को मूक रखने की आवश्यकता नहीं। यदि संयुक्त राष्ट्रसंघ असफल होता है, तो वह असफलता किसी एक व्यक्ति या कुछ थोड़े से व्यक्तियों की नहीं होगी, बल्कि उसके लिए हम जनता के लोग भी उत्तरदायी होंगे, जो उस एकमात्र सम्भव साधन का उपयोग करने में असफल रहे, जिसके माध्यम से इस विश्व में सच्ची शान्ति और आस्था स्थायी रूप से स्थापित हो सकती है।

एक अर्थ में, नवीन सौदा एक क्रान्ति था, क्योंकि उसने एक ऐसे अवसर पर अमेरिकी लोकतन्त्र और प्रगतिशील पूँजीवाद में आशा और विश्वास को पुनर्जीवित किया है, जब कि विनाशकारी मन्दी के कारण विस्तार की सीमा सदा के लिए मजबूती से बन्द प्रतीत होती थी। नवीन सौदा अनुदारवादी था और परम्परा की दृष्टि से अमेरिकी भी था, क्योंकि इसने हमारे भूतकाल के सर्वश्रेष्ठ तत्त्वों को सुरक्षित रखा तथा व्यवसायी, कृषक और श्रमिक समाजों को दी गयी सहायताओं के द्वारा सभी सामाजिक वर्गों का समर्थन प्राप्त किया। इसने समाजवाद के उठते हुए ज्वार का मूलोच्छेद कर दिया।

फ्रैंकलिन डिलानो रूजवेल्ट मनुष्यों और विचारों के साहसी नेता थे, किन्तु वह एक मानव प्राणी थे, जिसने निस्सन्देह भूलें की हैं। उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति पद में, विशेष रूप से विदेशी मामलों के क्षेत्र में, नवीन शक्ति

का संचार किया और टामस जेफर्सन ऐन्ड्रयू जैक्सन, अब्राहमलिंकन, थियोडोर रूज़्वेल्ट और वुडरो विल्सन की परम्परा का अनुशीलन करते हुए लोक संस्थाओं को सबल बनाया। उन्होंने जनमत को शिक्षित किया और अवसर के अनुसार उनका नेतृत्व अथवा अनुगमन किया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उन्होंने अन्ततः तटस्थता को भंग कर दिया और अधिनायकवादी साम्राज्यवाद की शक्तियों के विरुद्ध सफलता से संघर्ष किया।

हेनरी डेविड थोरू

सैमुएल मिडिलब्रुक

अंग्रेजी में 'लिबरल' एक ऐसा शब्द है, जो इसका प्रयोग करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ रंग बदलता रहता है। इसकी व्युत्पत्ति लैटिन शब्द "लिबर" से हुई है, जिसका अर्थ दास का विपरीत, स्वतन्त्र मनुष्य होता है। जब इसे अंग्रेजी मे संज्ञा के रूप मे प्रयोग करते हैं, तो उसका आशय ग्रेट-ब्रिटेन के एक दल विशेष से होता है, जो अब प्रायः मृतप्राय हो चुका है, और जिसके सबसे विख्यात नेता ग्लैडस्टन थे। साधारणतः लिखने पर इसका आशय सदैव स्वतन्त्रता के साथ किसी न किसी प्रकार के सम्बन्ध से, मनुष्य की अप्रयुक्त सम्भावनाओं की कुछ चेतना से, तथा राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या नैतिक सुधार की कुछ किस्मों से होता है। इतिहास हमें बतलाता है कि किसी एक पीढ़ी के सुधार न तो कभी उस पीढ़ी को, और न ही उसके आगे आनेवाली पीढ़ियों को, सन्तुष्ट कर पाते हैं। अतः अनेक सुधारकों के युद्ध-घोष के उदारवाद (लिबरलिज्म) को नये-नये अर्थ ग्रहण करने पड़ते हैं। उदारवादी कहते हैं कि मनुष्य को स्वतन्त्रता मिलनी ही चाहिये। लेकिन किस बात से स्वतन्त्रता? क्या आवश्यकता और भय से? क्या अत्यधिक सरकारी नियन्त्रण या निरंकुशता से, अथवा अत्यधिक न्यून सरकारी नियन्त्रण या अराजकता से? और, फिर, किस लिए स्वतन्त्रता? क्या "प्रत्यक्ष या मूर्त प्रारब्ध"—एक प्रसिद्ध उक्ति जिसका अर्थ इस समय साम्राज्यवाद होता है—के लिए? वस्तुतः, इस सम्बन्ध मे तर्क की अनन्त सम्भावनाएँ हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे हमारी अमेरिकी, परम्परा में पले हुए प्रत्येक महान् उदारवादी के सामने उसकी अपनी विशिष्ट समस्याएँ और अपने विशिष्ट समाधान रहे हों।

थोरू के विषय में विचार करते समय हमें मैसाचुसेटस के एक छोटे से नगर में उत्पन्न विपन्न नागरिक (यांकी) की समस्याओं और समाधानों पर ध्यान देना है। थोरू का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ लगभग एक शताब्दी पूर्व प्रकाशित हुआ था, और तभी से उसकी ख्याति उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। उन्हें इस समय सामान्य स्वीकृति से एक महान् अमेरिकी उदारवादी माना गया है। किन्तु वे किस प्रकार के उदारवादी

थे, वे स्वयं अपने और दूसरों के लिए किस प्रकार की विशिष्ट स्वतन्त्रताएँ चाहते थे, उन्होंने किन खतरों के विरुद्ध चेतावनी दी थी, और इस समय भी उनके विचार कितने उपयोगी हैं—इन सभी प्रश्नों की जाँच वांछनीय है।

ऐसा करने में हमें इस व्यक्ति, थोरू, के कार्यों पर, और इन कार्यों के औचित्य के सम्बन्ध में उनके द्वारा प्रस्तुत व्याख्याओं पर, दृष्टिपात कर लेना चाहिए; हमें उनके जीवन और लेखों पर विचार करना पड़ेगा।

थोरू के सम्बन्ध में ये दोनों ही पक्ष अपेक्षाकृत छोटे हैं। उनका देहावसान ४५ वर्ष की अवस्था में ही हो गया था, और उन्होंने केवल दो ही पुस्तकें प्रकाशित कीं। थोरू का जीवनक्रम उनके पड़ोसी इमर्सन के इस कथन का दृष्टान्त प्रस्तुत करता है, कि महान् प्रतिभाओं की जीवनगाथाएँ अल्पतम हैं।

थोरू का जन्म सन् १८१७ में मैसाचुसेटस के कान्कार्ड नामक स्थान पर हुआ था। उनका परिवार मध्यम श्रेणी का निर्धन परिवार था। वे पेंसिल बनाने का व्यवसाय करते थे। उनकी सहायता से थोरू ने १५ मील दूर स्थित हार्वार्ड कालेज में अपनी शिक्षा का क्रम चलाया। उनकी कक्षा सन् १८३७ की कक्षा थी; यह वही वर्ष था जब कि हार्वार्ड के 'फी बेटा कप्पा' समाज के तत्वावधान में इमर्सन ने अपना प्रसिद्ध व्याख्यान, 'अमरीकी विद्वान्' दिया था। हमारे साहित्य के कुछ विद्यार्थियों का विचार है कि इमर्सन ने इस "स्वतन्त्रता की बौद्धिक घोषणा" में, जैसा कि उस व्याख्यान के सम्बन्ध में कहा गया था, वस्तुतः, बाद की अवस्था के थोरू के विषय में भविष्यवाणी सी कर दी थी, क्योंकि उन्होंने विद्वान् की व्याख्या करते हुए, उसे किताबी कीड़ा होने की बजाय 'चिन्तन-मननशील मनुष्य' कहा था—ऐसा विद्यार्थी, जो उस विद्यार्थी के विपरीत, जो अपनी जिज्ञासा सन्तुष्ट करने के लिए ही बड़े-बड़े लेखकों की पुस्तकें पढ़ता है, प्रकृति की गोद में पला, कार्य के लिए उत्सुक, स्वतन्त्र और आत्म-निर्भर हो। यह एक रुचिकर धारणा है। सच्ची बात यह प्रतीत होती है कि कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के लिए गये हुए हमारे अनेक लेखकों की ही भाँति, थोरू भी एक अविख्यात और अविशिष्ट अर्द्ध-स्नातक (अण्डर-ग्रेजुएट) थे, और 'फी बेटा कप्पा' श्रेणी के विद्यार्थी नहीं थे।

किन्तु, १८३७ में हार्वार्ड में शिक्षा पानेवाला उनका कोई अच्छा सहपाठी छात्र यह घोषणा करने में समर्थ हो सकता था कि बालक थोरू अपनी युवावस्था में ऐसा मनुष्य होगा, जिसके सम्बन्ध में अधिकतम सम्भावना यही रहेगी कि वह पीछे लौटेगा। एक दृष्टिकोण से देखने पर, हार्वार्ड के पश्चात् का उनका समस्त

जीवन प्रौढ़ता के साधारण व्यवहारों से गौरवपूर्ण अपक्रमों की, वापसी की, शृंखला प्रतीत होगा। वे हार्वार्ड के अधिकारी विद्वानों के बीच से हटकर अपने जन्मस्थान के नगर में वापस चले गये। कुछ ही समय बाद, वे कांकार्ड की एक पाठशाला में अध्यापन कार्य करने से यह साधारण सफाई देकर पीछे हट गये कि "चूँकि मैं अपने बन्धु मानवों के लाभार्थ न पढ़ाकर, केवल आजीविका के लिए ही यह कार्य करते थे, अतः वह असफल और निरर्थक था।" वह स्वयं कंकार्ड से भी हट गये और वाल्डन के तालाब के किनारे एक जंगल में जो कि इमर्सन का था, एक कुटिया बनाकर उसी में रहने लगे। इस जगह वे दो वर्ष तक आंशिक रूप से एकान्तवास करते रहे। उन्होंने पुनः इस वापसी की स्थिति से मुँह मोड़ लिया और शहर में वापिस लौट गये, और वहाँ इमर्सन के मकान में संरक्षक की भाँति अथवा एक विशेष प्रकार के 'किराये के आदमी' की हैसियत से रहने लगे। उनका सबसे प्रसिद्ध अपक्रम उस समय हुआ, जब कि उन्होंने १८४५ में मेसाचुसेट्स राज्य से सम्बन्ध-विच्छेद किया। उनका ढंग बहुत ही सरल था, वे कर अदा करने से इन्कार कर देते थे। जब स्थानीय मोची के पास जूते की मरम्मत कराने के लिए जाते समय पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तो वे चुपचाप जेल चले गये। कर के रूप में एक सेंट अदा करने की अपेक्षा वे जेल में पड़े-पड़े सड़ते रहने के लिए तैयार थे क्योंकि वे मैक्सिको के विरुद्ध एक अन्यायपूर्ण युद्ध संचालित करने के उद्देश्य से उगाहे जानेवाले कर में प्रत्यक्ष रूप से एक पैसा भी अदा करने के पक्ष में नहीं थे। कहानी तो यह भी कही जाती है कि इमर्सन उनसे मिलने के लिए जेल में पहुँचे और दोनों के बीच निम्नलिखित वार्ता हुई—

"हेनरी, अरे भाई तुम यहाँ कैसे?"

"वाल्डो, अरे भाई, तुम यहाँ क्यों नहीं?"

वस्तुतः इस कहानी के पीछे कोई तथ्यपूर्ण आधार नहीं है। सम्भवतः यह दोनों व्यक्तियों की मनोभावनाओं को ध्यान में रखकर गढ़ ली गई है।

थोरू का एक सिद्धान्त यह था कि अधिकांश मनुष्य अत्यधिक धन उपार्जन करने के उद्देश्य से अत्यन्त दीर्घकाल तक और अत्यधिक श्रमसाध्य काम करते हैं। उन्होंने चतुर्थ आदेश को परिवर्तित कर देना पसन्द किया और, सप्ताह में केवल एक दिन श्रम करने को अधिमान्यता दी। यह एक घण्टा भी वह अधिकांशतः अस्त-व्यस्त कामों, जैसे सर्वेक्षण, परिवार के लिए कभी-कभी पेंसिल निर्माण और दूसरों को हकलबरी की कुंजोंवाले भूखण्डों तक पहुँचाने में ही व्यतीत करते थे। वे अपने जन्मस्थान के शहर के प्रति मूक रूप से उन्मत्त थे।

वे इस सम्बन्ध में अपनी भावना व्यक्त करते हुए इस प्रकार कहा करते थे—"मैंने कंकार्ड में काफी यात्रा की है।" उनका यह दावा उचित ही था कि वे उसके आस-पास की भूमि से उन लोगों की अपेक्षा, जिनका कि उस पर स्वामित्व होता था, कहीं अधिक परिचित थे। अपने हार्वार्ड में बिताये गये दिनों के पश्चात् उन्होंने कुछ इने-गिने मौकों पर ही कंकार्ड छोड़ा, जैसे, स्टेटिन द्वीप की यात्रा, मेनऊडस, केपकाड, ह्वाइट माउन्टेन्स और कनाडा तक पैदल यात्रा, और अपनी मृत्यु के पूर्व के वर्ष में मिनेसोटा की अपनी अन्तिम यात्रा के सिलसिले में। उनके जीवन के ४५ वें वर्ष, सन् १८६२ में क्षय रोग से उनकी मृत्यु हुई। उन्होंने हँसते हुए मृत्यु का सामना किया, क्योंकि जब एक उत्सुक मित्र ने उनसे यह पूछा कि क्या उन्होंने भगवान् से समझौता कर लिया है, तो उन्होंने धीरे से कहा—"मुझे तो इस बात का ज्ञान ही नहीं कि हममें आपस में कभी किसी तरह की लड़ाई भी हुई थी।"

अपने अनेक परिचितों को तो थोरू एक ऐसे पागल व्यक्ति प्रतीत हुए होंगे, जो अपने जीवन और अपनी शिक्षा, दोनों ही को, व्यर्थ बरबाद करने पर तुला हुआ था। वे उस समय जीवित थे जब कि जेफर्सनवादी लोकतन्त्र समृद्धि पर था, जब कि हमारे अमेरिका निवासियों और नये आगन्तुकों की बहुत बड़ी संख्या हमारे देश के पश्चिमी मैदानों की ओर अथवा हमारे विकासशील नये नगरों की ओर प्रवाहित हो रही थी। कैलीफोर्निया स्वर्ण-शोधकों को उपलब्ध था; जब कि कंसास हब्शी दास प्रथा के उच्छृङ्खल उन्मूलनवादियों और सप्रतिज्ञ संरक्षणकारियों में से, दोनों ही को उपलब्ध था, और उनके लिए रक्तस्राव कर रहा था। ब्रुकफार्म, जो कि सहकारी कल्पना-लोक के साधकों के लिए अमेरिका के असंख्य उपनिवेशों में से एक था, वेस्ट राक्सबरी में उनके निवास-स्थान के लगभग ठीक पड़ोस में स्थित था। हेनरी ने इन सभी साहसिक उद्यमों की ओर से अपना मुँह मोड़ लिया था। वे अपने घर पर ही पड़े रहे और सेम की फलियाँ पैदा करते रहे। अनुभव से उन्हें यह ज्ञात था कि ये फलियाँ खाद्य-तत्त्व सम्पन्न होती हैं; और जो सितारे उनकी फलियों के पौधों की पंक्तियों पर प्रकाश डालते थे, एक अद्भुत त्रिकोण बनाते थे। किन्तु इसके ठीक विपरीत, ब्रुकफार्म के उपहार और लाभ उन्हें बहुत ही अधिक भ्रामक प्रतीत हुए।

किन्तु थोरू को सन्त या ऋषि समझना एक गहरी भूल है। उनके पड़ोसी और मित्र अद्भुत थे। कंकार्ड आकार में छोटा अवश्य था, किन्तु उसमें सृजनकारी प्रतिभा लबालब भरी हुई थी। वहाँ के प्रमुख और सामान्य नागरिक,

इमर्सन, संरक्षण और चुम्बकीय आकर्षण,......दोनों ही के अनन्त स्रोत थे; उन्होंने इस नगर के सबसे महान् निवासी थोरू की प्रतिभा का पोषण किया। और अनेक प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तियों को आकृष्ट भी किया जो स्वयं उन्हीं की भाँति आकर वहाँ बस गये थे। वहाँ पर हार्थार्न आये। उसी प्रकार, ब्रोनसन आल्काट का भी आगमन हुआ, जो दिवस-क्रम से सुमधुर, मनोमुग्धकारी विचारों के दैव-प्रेरित पद यात्री, अथवा कठिन देवदूत थे। हार्थार्न की मित्र-मण्डली में हरमैन मेलविल सम्मिलित थे; इमर्सन की मित्र-मण्डली में वाल्ट ह्विटमैन सम्मिलित थे, क्योंकि इमर्सन पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उनकी रचना 'लीव्स आफ ग्रास' की खुली प्रशंसा में, स्वयं ह्विटमैन की अपनी आलोचना के अलावा, स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया था। वस्तुतः, कंकार्ड अमरीका के अनेक विख्यात साहित्यकारों एवं महापुरुषों के लिए प्रेरणा का महत्त्वपूर्ण स्रोत सिद्ध हुआ।

इन लेखकों में से अनेक के लिए थोरू एक बहुमूल्य साथी थे, किन्तु कभी-कभी वे भयंकर भी प्रतीत होते थे। कंकार्ड के उनके एक मित्र ने कहा था—"मैं हैनरी को प्यार करता हूँ, किन्तु मैं उसे पसन्द नहीं कर सकता, और जहाँ तक उनकी बाँह में बाँह डालकर चलने का प्रश्न है, मैं उनकी अपेक्षा एक पेड़ की शाखा को पकड़कर चलना श्रेयस्कर समझूँगा।"

स्वयं थोरू की प्रतिभा, उनके जीवन-काल में, उनकी द्वितीय प्रकाशित पुस्तक 'वाल्डेन' में मुख्य रूप से प्रस्फुटित हुई। पुस्तक में उनके उन दो वर्षों की गतिविधि का विवरण था, जिन्हें उन्होंने शहर की सीमा से लगभग १ मील दूर स्थित वाल्डन जलाशय पर निर्मित अपनी कुटिया में बिताये थे। वहाँ पर उनके जाने का कारण सरलतम था; क्योंकि वे चिन्तन-मनन करना चाहते थे। उस पुस्तक का निम्नलिखित प्रसिद्ध उद्धरण इस सारी स्थिति का सारांश प्रस्तुत करता है :—"मैं उस जंगल में इसलिए गया कि मैं जान-बूझकर इस प्रकार रहना चाहता था, ताकि मुझे जीवन के अनिवार्य तथ्यों का सामना करना पड़े, और मैं यह देख सकूँ कि क्या मैं उन बातों को सीख सकता हूँ या नहीं जिनकी शिक्षा यह जीवन देने में समर्थ था; और मृत्यु के निकट पहुँचने पर मुझे इस बात को जानकर पश्चाताप न करना पड़े कि मैंने अपने जीवन को पूर्णतया जीकर नहीं बिताया है। मेरे लिए जीवित रहना इतना बहुमूल्य है कि जो कुछ जीवन नहीं था, उसे मैं कदापि जीना नहीं चाहता था; और जब तक कि जीवन से संन्यास लेना अत्यधिक आवश्यक न हो जाय, मैं संन्यास भी लेना नहीं चाहता था। मैं जीवन की गहराइयों तक जीने का इच्छुक था और चाहता था कि

जीवन की समस्त अन्तर्भूत शक्तियों को चूस लूँ। मेरी अभिलाषा थी कि मैं इतनी बहादुरी और वीरता के साथ जीऊँ, जिससे उन समस्त बातों का मान-मर्दन और निराकरण कर सकूँ जो सच्चे जीवन के अन्तर्गत नहीं आतीं, चौड़ी खूँटियाँ काटकर निकटता से दाढ़ी की सफाई करूँ जीवन को हर दिशा से घेरकर कोने में घर दबाऊँ और उसे उसकी निम्नतम शर्तों तक ही परिसीमित हो जाने के लिए विवश कर दूँ; और यदि वह नीच और क्रूर सिद्ध हो, तो उस दशा में निश्चय ही, उसकी समस्त और मौलिक नीचताओं को छीन लूँ और विश्व के लाभार्थ उन्हें प्रकाशित कर दूँ; अथवा, यदि वह उत्कर्षपूर्ण हो तो स्वयं अपने अनुभव से उसे जान लूँ, और अपनी अगली मनोरंजक यात्रा में उसका सही-सही विवरण प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकूँ।"

घर पर ही बनाई गई एक कोठरी या कुटिया में, जिसके निर्माण में थोरू को सामान के लिए २८.१२½ डालर व्यय करने पड़े थे, बैठकर थोरू जब कभी पढ़ने की इच्छा होती, कुछ इनी-गिनी पुस्तकें (ग्रीक भाषा में होमर लिखित 'इलियड') पढ़ लिया करते थे। जब कभी उनकी इच्छा होती, वे झील के चारों ओर घूमा करते; भेंट करने के लिए शहर से आये हुए लोगों से बातचीत करते; चिड़ियों, चीटियों और पेड़ों को ध्यानपूर्वक देखते और रेलगाड़ी की सीटी, 'दूर चरती गायों और टूटते हुए बर्फ की आवाजें सुना करते। उन्हें यह पता चल गया कि यदि मनुष्य जीवन को सरल और आनन्दमय बनाना चाहे, तो उसे वैसा बनाया जा सकता है।

उन्होंने प्याज के छिलकों की भाँति अनुभव की बाह्य पर्तों को दृढ़ता के साथ छील डाला और अधिकांश छिलकों को व्यर्थ समझकर फेंक दिया। वे महान् सरलताओं की खोज में थे। अब उनमें से अनेक सरलतायें उन्हें उन वस्तुओं के रूप में मिलीं जिनकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी। उन्हें मांस, तम्बाकू, शराब, अधिक साथियों की आवश्यकता नहीं थी। (जब उनसे पूछा गया कि भोजन में वह किस प्रकार का खाना सबसे अधिक पसन्द करते हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया—निकटतमों।') उन्हें नये वस्त्रों की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें ऐसी गपशप या बकवास की आवश्यकता नहीं थी, जिनसे अधिकांश दैनिकपत्र अथवा अधिकांश वार्तायें भरी होती हैं। उन्हें उस सुरक्षा की भी आवश्यकता नहीं थी जो दूसरों के लिए ऐसी बातें करने से उत्पन्न होती हैं, जिन्हें वे स्वयं अपने लिए श्रेष्ठतर ढंग पर कर सकते हैं। और, सबसे बढ़कर, उन्हें वस्तुओं के स्वामित्व की आवश्यकता नहीं थी।

दूसरी तरफ उन्हें तीन महान् गुणों की निश्चित रूप से आवश्यकता थी, जो उदारता का संचार करते हैं—और ये गुण उन्हें जंगलों में मिले। वे गुण थे—निष्कपट सरलता, साहस और मनुष्य में आस्था। जब कोई व्यक्ति इन गुणों से सम्पन्न होता है और इन्हें हमारे साहित्य की एक सर्वश्रेष्ठ गद्य-शैली द्वारा व्यक्त कर सकता है, तो वह अपने देशवासियों के लिए स्वभावतः चिरस्थायी और अमर आत्मा हो जाता है।

निष्कपट सरलता ने थोरू को कंकार्ड नगर की ओर निकटता से देखने के लिए बाध्य कर दिया, जो कि सचमुच प्रबन्धनीय सीमाओं के भीतर विश्व का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करता है। उन्होंने जो कुछ देखा, उसका वर्णन एक अमरवाक्य में इस प्रकार किया है; "मनुष्यों का समूह बिलकुल नैराश्य का जीवन व्यतीत करता है।" व्यर्थ वस्तुओं का स्वामित्व उनकी परेशानियों का एक मूल है, वे अपने पीछे एक मकान और साठ एकड़ मिट्टी खींचते हुए अपनी कब्र तक पहुँच जाते हैं। वे पत्थर पर हथौड़े की चोट करके उसे व्यर्थ स्वरूप प्रदान करते हैं। वे काम करते हैं और सैकड़ों व्यापारिक प्रयत्नों के बारे में चिन्तित रहते हैं, जिनमें से ६७ तो अन्ततोगत्वा असफल सिद्ध होते हैं। वे दार्शनिक सान्तायाना द्वारा की गयी व्याख्या के अर्थ में, 'उन्मत्त' होते हैं—"ऐसे मनुष्य जो अपना लक्ष्य भूल जाने पर अपनी शक्तियों को पुनः दुगुना कर लेते हैं।" और, यदि वे संसार की दृष्टि में सफलता प्राप्त कर लेते हैं, तो उनकी दुरात्मा अथवा उनके अस्वस्थ पेट उन्हें अपने बान्धवों पर दानार्थ और निष्काम सेवा प्रदान करने वाले उद्यम लाद देने के लिए प्रेरित करते हैं।

यह एक क्रूर अपराध है, जिसे थोरू ने प्रस्तुत किया है। यह उनकी अपनी पीढ़ी के प्रति उनकी व्यक्तिगत चुनौती के रूप में लिखित है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक नवयुवक का अपने आस पास के उन लोगों के बारे में निर्णय है, जिनके हाथों मे शासन की बागडोर थी। उन्होंने लिखा है—"मैंने इस ग्रह पर लगभग तीस वर्ष जीवन व्यतीत किया है और अभी तक मुझे अपने से बड़े लोगों की बहुमूल्य या हार्दिक सलाह का पहला शब्द भी सुनने में नहीं आया है...यदि मुझमें ऐसा अनुभव होगा, जिसे मैं बहुमूल्य मानता हूँ, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं इस बात को अवश्य कहूँगा कि जिनके बारे में मेरे विश्वासपात्र मन्त्रियों और परामर्शदाताओं ने कुछ भी नहीं कहा था।"

सत्य को उसके यथार्थ रूप में कहने की निष्कपटता से सम्पन्न होने के उपरान्त, थोरू में अपनी अन्तर्दृष्टि का अनुसरण करने का साहस भी था। उन्होंने अपने

समाज द्वारा स्वीकृत लक्ष्यों का परित्याग कर दिया था। यद्यपि उन्होंने अपना व्यय-भार स्वयं उठाने पर जोर दिया था, फिर भी उन्होंने धन बचाने से इन्कार कर दिया था। उन्होंने एपीक्यूरस द्वारा निर्दिष्ट ढंग पर अपनी आवश्यकताएँ पूरी करके, अपने को समृद्ध बना लिया था। उन्होंने सम्पत्ति के सच्चे उद्देश्यों को अत्यधिक सरलताओं में विभाजित कर दिया था। उदाहरण के लिए, उनकी धारणा थी कि शरीर की अग्नि प्रज्वलित कर रखने के लिए खाद्यान्न एक प्रकार का ईंधन है। वस्त्र धारण करना उस ज्वाला को बनाये रखने के लिए एक अन्य ढाल जैसा है। निवास-स्थान की व्यवस्था एक प्रकार की अचल वस्त्र-व्यवस्था है। यही सारी बातों के मूल तत्त्व हैं। उन्हें श्रेष्ठतर बनाने के लिए किया गया हर प्रयत्न एक प्रकार का दम्भ है। जब तक कि इस प्रकार के दम्भ के लिए पर्याप्त व्यवस्था करने से सम्बद्ध जटिलताओं की लागत उनके उपार्जन से कम रहेगी तब तक सम्भवतः यह दम्भ हानिकारक नहीं होगा। और, फिर, प्रश्न यह है कि हम लागत का अनुमान किस प्रकार लगायेंगे? थोरू का सूत्र, जिसे हम पारदर्शी अर्थशास्त्र का पहला नियम कह सकते हैं, यह है; "किसी वस्तु की लागत उस वस्तु की, जिसे मैं जीवन कहूँगा, वह मात्रा है, जिसे तत्काल या कालान्तर से उसके बदले देना आवश्यक होता है।" जहाँ तक थोरू का सम्बन्ध था, वे अपने पड़ोसियों या मित्रों द्वारा संचित अधिकांश वस्तुओं के लिए माँगा गया मूल्य अदा करने से इन्कार कर देते थे। अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वे किसी आर्थिक समाज से निम्नतम सम्बन्ध बनाये रखने के पक्ष में थे।

जहाँ तक उनका अपना सम्बन्ध था, थोरू इस बात पर उद्यत थे। कोई भी पेशा या व्यवसाय, जिसे उन्होंने कंकार्ड में अपनाया होता, उस मूल्य के समान मूल्यवान् नहीं था, जो कि जीवन के रूप में उन्हें चुकाना पड़ता। उन्हें "चूहा-दौड़" में शामिल होना स्वीकार नहीं था। वे 'सभ्यता की दौड़' में प्रतिस्पर्द्धी होने की बजाय सहयात्री और दर्शक होने के लिए उत्सुक थे।

कंकार्ड (अथवा संसार) में दर्शक होना एक स्फूर्तिदायक व्यवसाय था। एक बात तो यह थी कि इसके द्वारा वे प्रकृति का दर्शन करने में समर्थ रहे। उन्होंने लिखा है "कई वर्षों तक मैं बर्फीले तूफानों और बरसाती झंझावात का स्वतः नियुक्त निरीक्षक बना रहा, और मैंने अपना कर्त्तव्य बड़ी श्रद्धा और विश्वास से निभाया; मैं यदि सड़कों का नहीं तो कम से कम जंगल के मार्गों और दूसरे छोटे-मोटे रास्तों का सर्वेक्षक अवश्य था...... मैंने नगर के पशुओं की देखभाल की है, जो एक कर्तव्यनिष्ठ चरवाहे को या पशुपालक हो, बाड़े से कूद-फाँदकर काफी

कष्ट देते थे। और मेरी दृष्टि खेत के उन कोनों और हिस्सों पर दौड़ा करती थी जहाँ कोई भी नहीं जाता था; यद्यपि मुझे सदैव इस बात की जानकारी नहीं होती थी कि जोना या सलोमन ने आज किस खेत पर काम किया। किन्तु, मेरा यह काम था भी नहीं।"

अपने स्वाभाविक रूप में कभी-कभी प्रकृति भयंकर सिद्ध होती थी। एक बार थोरू ने लाल और काले चींटों के बीच ऐतिहासिक संग्राम होते देखा। उन्होंने तीन योद्धाओं को एक मिट्टी के रोड़े पर उठाकर रख दिया और उन्हें एक घण्टे तक युद्ध-रत देखते रहे। छोटे लाल चींटे ने बड़े लाल चींटे की टाँग तोड़कर चबा ली, जब कि बड़े चींटे ने अपनी बार उनका सिर काट लिया और उनके सिरों को, जो उसके मुँह में कभी भी सटे हुए थे, लेकर लड़खड़ाता हुआ भाग चला। इस दृश्य को देखकर उनका हृदय इतना पसीज उठा, मानो उन्होंने कंकार्ड का क्रान्तिकारी युद्ध प्रत्यक्ष रूप से स्वयं सशरीर खड़े होकर देखा हो।

इतनी सहानुभूति के साथ मनुष्य के अतिरिक्त अन्य प्राणि-जगत् का निरीक्षण करने का यह स्वभाव थोरू को पुनः मानव प्राणियों के बीच खींच लाया, जैसा कि वर्ड्सवर्थ तथा अन्य महान् प्रकृतिवादी कवियों के सम्बन्ध में हुआ था। प्रकृति के प्रेम ने मनुष्य से प्रेम करने की प्रवृत्ति को नवीन प्रेरणा प्रदान की—मनुष्य को उस रूप में नहीं, जिसमें वह प्रायः पाया जाता है, बल्कि जैसा कि वह हो सकता है, मनुष्य को अपने आदर्शों के स्रष्टा और सृष्टि के रूप में, मनुष्य को परमात्मा के परम प्रिय पुत्र के रूप में।

थोरू के स्वभाव की इस विशेषता को हृदयंगम किये बिना 'वाल्डेन' की अन्तर्निहित भावनाओं को समझना असम्भव है। थोरू ने अपने मानव बन्धुओं के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनमें से अनेक के हास्य-व्यंगपूर्ण प्रभाव से विमूढ़ हो जाना पड़ता है। अत्यधिक "अवसरों पर जीवन प्रायः कुत्सित और असुन्दर होता है। किन्तु हम यह कैसे जानते हैं कि वह कुत्सित है? क्या हममें कुछ 'श्रेष्ठतर' जीवन के लिए अन्तःप्रेरणा नहीं है? थोरू का कहना है कि हम इस अन्तर्प्रेरणा पर विश्वास करें। हम आदर्श जीवन की इन प्रवृत्तियों का, जो कि इस रहस्यपूर्ण ढंग से हमारे खेदजनक वर्तमान के साथ गुँथी हुई हैं, अनुसरण करें। अतः उनकी यह पुस्तक जो इस विचित्र उक्ति के साथ प्रारम्भ होती है कि "मैंने कंकार्ड की काफी यात्रा कर ली है", एक अन्य गरिमामय उक्ति के साथ जो कि मेरे विचार से हमारे समस्त १६वीं शताब्दी के साहित्य में

सर्वश्रेष्ठ अन्तिम वाक्य है, समाप्त होती है। यह वाक्य है; "सूर्य केवल एक प्रातःकालीन सितारा है।"

अन्य शब्दों में, हमारे वर्तमान जीवन की यथार्थताएँ भविष्य के गौरव के सम्मुख उसी प्रकार मलिन होकर मिट जाएँगी, जैसे सूर्योदय की ज्वाज्वल्यता के सम्मुख प्रातःकालीन सितारा क्षीण होकर लुप्त हो जाता है, चाहे वे यथार्थतायें उषा के पूर्व गगन-मण्डल में शुक्र तारे की भाँति ही क्यों न आकर्षक प्रतीत होती रही हों।

इस धार्मिक चरमोल्लास के साथ पुस्तक समाप्त होती है। किसी भी चिरस्थायी उदारवाद के लिए निष्कपट सरलता, साहस और मानव में आस्था के तीन महान् गुण ही आधार शिला होनी चाहिए। थोरू का जन्म न्यू इँग्लैण्ड की उस पीढ़ी में हुआ था, जिसने कैल्विनवाद की इस प्रथम दमनकारी सबल मान्यता को उखाड़ फेंका था कि मानव पूर्ण कलुषता की उपज है...एक कीड़ा जो रास्ते के बगल में पैस उठा है और रक्त स्राव कर रहा है, एक घृणित मकड़ा, जो प्रारम्भिक काल के विख्यात प्योरिटन, जोनाथन एडवर्ड्स के प्रसिद्ध शब्दों में एक क्रुद्ध परमात्मा के हाथों द्वारा नरक की भयंकर अग्नि के ऊपर पकड़ कर लटका दिया गया है।

थोरू ने मानवता में अमिट आस्था का जो उपदेश दिया है, वह आज के अनेक बौद्धिक केन्द्रों में लोकप्रिय नहीं है। एक बार पुनः हम पर विनाश के पैगम्बरों का प्रभाव छा गया है। अपने बन्धु मानवों से घृणा करनेवाले लोग सत्तापूर्ण आसनों पर विराजमान मिल सकते हैं। हमें देश में और उसके बाहर भी ऐसे जिज्ञासु मिलेंगे जिन्होंने, ऐसा प्रतीत होता है, थोरू के इस कथन को कभी सुना ही नहीं है: "मेरा मत है कि हम जितना विश्वास करते हैं उससे कहीं अधिक विश्वास बिना किसी भय के साथ कर सकते हैं।......मैं अभी से यह देख रहा हूँ कि अन्त में चलकर समस्त मानव जाति इसी नियम पर चलकर अपना जीवन निर्धारित करेगी।" इस प्रकार के तिरस्कार करनेवाले और जिज्ञासु लोग नास्तिकता और पाखण्ड से घृणा करते हैं, और उसे तुरन्त ढूँढ़ निकालते हैं। किन्तु वे थोरू से कितने भिन्न हैं, जिन्होंने बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ कहा था; "यदि कोई व्यक्ति अपने साथियों के साथ-साथ प्रगति नहीं कर रहा है तो शायद इसका कारण यह है कि वह किसी भिन्न व्यक्ति के नक्कारे की आवाज पर मुग्ध है।"

थोरू को अधिक दुनियावी लोगों की सक्रिय घृणा का पात्र होना ही पड़ा। 'अटलाण्टिक मन्थली' पत्र के सम्पादक ने उन्हें विरोधाभासपूर्ण सनकी कहकर

उनकी भर्त्सना की है। राबर्ट लुई स्टीवेंसन ने उन्हें 'पलायनवादी' समझ रखा था। किंतु इन दोनों ही व्यक्तियों ने इस तरह की गलती इसलिए की थी कि उन्होंने थोरू पर उनके बाह्य शाब्दिक अर्थ में ही अत्यधिक अक्षरशः ढंग से विचार किया था और ऐसा करना आसान भी है। 'वाल्डेन' की कथा इतनी सुस्पष्ट है, कंकार्ड की सीमा पर बिखरे जंगल में अपने लिए कुटी-निर्माण करने की साहसिक कहानी उन्होंने राबिन्सन क्रूसो जैसी शैली में इतने आकर्षक ढंग पर प्रस्तुत की है कि कितने ही पाठकों को विश्वास होने लगता है कि थोरू उन्हें अपने कार्यों की नकल अक्षरशः करने की सलाह देते हैं। स्वतन्त्रता के नाम पर उन्हें अपनी कुटिया का स्वयं निर्माण करना चाहिए, अपनी फलियाँ खुद पैदा करनी चाहिए, सवारी की बजाय पैदल चलना चाहिए, यहाँ तक कि शायद दाढ़ी भी रखनी चाहिए, अपने पाजामें में स्वयं पैबन्द लगाना चाहिए और मतदान पेटिका से घृणा करनी चाहिए। हम अपने घने बसे नगरों के अत्यन्त व्यस्त वर्गों में भी इस प्रकार के अक्षरशःगामी बुद्धिवाले 'सरल जीवन के पोषकों' से परिचित हैं। वे विश्वास जाग्रत नहीं करते। प्रायः वे प्रसन्न भी नहीं प्रतीत होते। स्वयं थोरू को भी अपने जीवन-काल में ऐसे अनेक लोगों से पाला पड़ा था, जिनमें सावधानी के साथ उत्पन्न सनक की विशेषता एक सामान्य तत्त्व थी। किन्तु थोरू का जीवन कोई आडम्बर नहीं था। वह व्यक्तिगत रूप से उनका अपना जीवन था। उसमें उनके व्यक्तितत्व की छाप और निराली सरलता थी। वह लिखते हैं; "यदि कोई अन्य व्यक्ति ऐसा होता जिसे मैं उतनी ही अच्छी तरह जानता होता जितना अपने को, तो स्वयं अपने विषय में इतना अधिक कदापि नहीं लिखता।" इस कथन में उनका प्रयोजन यह है कि मनुष्य को अपनी सच्ची अन्तर्प्रवृत्तियों की प्रेरणा के अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए।

इस पुस्तक का शाब्दिक के बजाय प्रतीकात्मक स्वरूप प्रारम्भ के ही एक अंश में व्यक्त हो गया है : "बहुत समय पहले मैंने एक कुत्ता, एक घोड़ा और एक कबूतर खो दिया था और मैं अभी भी उनकी तलाश में हूँ। मैंने उनके सम्बन्ध में अनेक यात्रियों से चर्चा की है और उनसे बतलाया है कि उनका रास्ता और चिह्न क्या हैं, तथा वे किस तरह की बोली बोलने पर उसका उत्तर देते हैं। मुझसे एक या दो ऐसे व्यक्ति भी मिले हैं, जिन्होंने मेरे कुत्ते का भूँकना और घोड़े के पैर पटक कर चलने की आवाज सुनी थी और कबूतर को भी बादलों की आड़ में लुप्त होते देखा था; और वे उन्हें पुनः वापस पाने के लिए इतने आतुर थे, मानो उन्होंने स्वयं इन्हें खो दिया हो।"

इन रहस्यपूर्ण पशुओं से उनका आशय क्या था, इसका केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। मुझे वे थोरू के आदर्शों और उनके लिए थोरू के अन्वेषण के प्रतीक प्रतीत होते हैं और मुझे ऐसा लगता है, मानो थोरू अपने जैसी मनोभावना वाले लोगों को इस खोज में भाग लेने को निमन्त्रित कर रहे हों।

अपनी महान् रचना 'वाल्डेन' के अतिरिक्त, उन्होंने अपने अल्पकालीन बन्दी जीवन से प्रेरित होकर 'नागरिक अवज्ञा' पर एक लेख भी लिखा था। इसमें उन्होंने अपनी यह धारणा प्रस्तुत की थी कि जहाँ-कहीं राज्य किसी व्यक्ति की अन्तश्चेतना से टकराती हो, वहाँ व्यक्ति को चाहिए कि राज्य की सत्ता को अस्वीकार कर दे। उसकी अवज्ञा दृढ़, किन्तु अहिंसक होनी चाहिए। शायद बहुत कम लोगों को इस घटना की जानकारी है कि किस प्रकार महात्मा गांधी ने इस लेख को १९०७ में प्राप्त किया था, इसे अपनी पत्रिका में जिसका सम्पादन वे स्वयं करते थे, प्रकाशित किया था और इसे भारत में अपने अहिंसा के प्रचारों का आधार बनाया था। इस प्रकार इस शांत 'यांकी' ने हमारे युग की सबसे बड़ी नाटकीय राजनीतिक घटना में हाथ बटाया था।

यद्यपि थोरू कभी किसी आन्दोलन में सम्मिलित नहीं हुए, फिर भी दास-प्रथा के उन्मूलनवादी आन्दोलन में वे सक्रिय होकर ही रहे। उन्होंने भूमि के नीचे बनायी गयी रेल की सड़कों पर भगोड़े दासों की सहायता की। उन्होंने जान ब्राउन की अत्यधिक प्रशंसा की थी, जिनसे वे हारपर्स फेरी पर आक्रमण से दो वर्ष पहले एक बार कंकार्ड में मिले थे। १८५९ में जिस दिन ब्राउन को फाँसी पर लटकाया गया, थोरू ने कंकार्ड के सभा-भवन का घण्टा बजाया था, और उन्हें स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर उत्सर्ग शहीद कहकर उनका गुणगान किया था। बोस्टन के फानेल हाल में, बाद में आयोजित एक सार्वजनिक सभा में उन्होंने एक ऐसी सरकार को धिक्कारा था, जिसने दास-प्रथा से समझौता कर लिया था। वे गेटिसवर्ग, मुक्ति-घोषणा और अब्राहमलिंकन के कार्य देखने के लिए जीवित नहीं रहे। जिस समय गृह-युद्ध छिड़ा, थोरू मृत्युशय्या पर जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे थे। वे अपने पीछे एक महान् पत्रिका, लेखों का एक बण्डल, जिनमें से कितने ही पहले प्रकाशित भी हो चुके थे, पत्र और कवितायें छोड़ गये थे, जिनमें से प्रत्येक ने उनकी रचनाओं को बीस खण्डों में प्रकाशित होने में योग दिया था।

फिर भी विशेषज्ञों के अतिरिक्त अन्य लोगों के लिए वे केवल एक ही पुस्तक के रचयिता हैं। उनकी पुस्तक 'वाल्डेन' में उनकी कुछ गहनतम अन्तर्दृष्टियाँ,

उनकी सबसे गूढ़ उक्तियाँ तथा उनका सबसे बहुमूल्य आत्मचित्रण शामिल है। इस पुस्तक का महत्त्व बहुत बढ़ गया है और अब इसकी गणना ह्विटमैन की रचना 'लीव्ज़ आफ ग्रास' अथवा इमर्सन के ग्रन्थ 'एस्सेज़' के साथ-साथ अमेरिकी उदारवाद के महान् अभिलेखों में होती है।

विशाल नगरों, श्रम और पूँजी के बड़े-बड़े संगठनों, समाचारपत्र के नियमित स्तम्भों, रेडियो के प्रसार, केन्द्रीयकृत सरकारों और सैनिकों की बलात भर्ती के हमारे युग में थोरू के उदारवाद को एकपक्षीय कहना सरल है। आज मनुष्य इतना अधिक संगठित प्रतीत होता है, जितना पहले कभी भी नहीं था—उत्पन्न होने के लिए, शिक्षा के लिए, रोजगार के लिए, जाँच कराये जाने के लिए और यहाँ तक कि मृत्यु पर शोक मनाने के लिए, जो कि प्रायः उन क्लबों, कम्पनियों और संस्थाओं का एक विवरण होता है जिसमें दिवंगत व्यक्ति सम्मिलित था, व्यक्ति उत्तरोत्तर अपना अस्तित्व खोता हुआ ह्रासशील प्रतीत होता है जब कि जनसमूह उत्तरोत्तर अपना प्रभाव बढ़ाता हुआ वृद्धिशील प्रतीत होता है।

मानव जीवन के इस समूहगत पक्ष के प्रति थोरू पूर्णतया उदासीन हैं। वे ऐसा कहते हुए प्रतीत होते हैं कि उसके विषय में दूसरे लोग लिखें या सोचें। गुरुत्वाकर्षण शक्ति की भाँति समाज हम सबको एक शक्ति द्वारा सम्बद्ध रखेगा, जिसमे कदापि ढिलाई नहीं आ सकती, किन्तु हम सबको अपनी-अपनी कक्षा या पथ पर बनाये रखने के लिए एक प्रतिरोधी शक्ति भी अवश्य होनी चाहिए। अन्यथा हम सब एक ही जगह एकत्र होकर आकृतिविहीन अज्ञानता के ढेर में, अपना अस्तित्व खो देंगे।

थोरू का जीवन और उनकी रचनायें इस प्रतिरोधी शक्ति की सक्रियता का एक उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उनके लिए किसी समाज की कसौटी उसमें सम्मिलित व्यक्ति ही थे। क्या उनमें से प्रत्येक अपने व्यक्तित्व का प्रतीक, पवित्र और अप्रतिस्थाप्य तथा सबसे बढ़कर स्वयं अपने आदर्शों के लिए उत्तरदायी था? मनुष्य को अपने लिए इन आदर्शों की सिद्धि अवश्य करनी चाहिए—ऐसा थोरू का विश्वास था। यह कार्य किसी के लिए कोई दूसरा व्यक्ति कदापि नहीं कर सकता। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए मनुष्य की समस्त सच्ची निष्कपटता, उसका समस्त साहस और मनुष्य में उसका समस्त आस्था अपेक्षित है—वह विश्वास जिसने अथेनियनों द्वारा मृत्युदण्ड पाने पर सुकरात को यह कहने के लिए प्रेरित किया—"वह जीवन जिसे परीक्षा की कसौटी पर नहीं उतरना पड़ा हो, जो अपरिचित हो, कदापि जीने योग्य नहीं है।" थोरू ने अपने जीवन की परीक्षा करने के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में 'वाल्डेन' को चुना था और अमेरिकी उदारवादियों के नाते हमें भी अपने वाल्डेन की खोज करनी है।

वाल्ट ह्विटमैन

इलियास लिबरमैन

सन् १८५६ में वाल्ट ह्विटमैन से एक भेंट के पश्चात् थोरू ने कहा था : "वह लोकतन्त्र के प्राणमय प्रतीक हैं।" यद्यपि थोरू ने एक मित्र को लिखे गये अपने पत्र में, 'लीव्ज आफ ग्रास', के वासनामय उद्‌गारों पर आक्षेप किया था, तथापि उन्होंने उसमें कहा था—"स्पष्टतः वे (ह्विटमैन) उच्चतम लोकतन्त्रवादी हैं जिनका विश्व ने अभी तक कदापि दर्शन नहीं किया था......मैंने अभी-अभी उनकी रचना का द्वितीय संस्करण (जिसे उन्होंने स्वयं मुझे दी थी) समाप्त किया है और मैं कह सकता हूँ कि एक लम्बी अवधि के भीतर पढ़ी गयी किसी भी अन्य पुस्तक की अपेक्षा यह मुझे अधिक उपादेय सिद्ध हुई है...मुझे इस बात का किंचित्मात्र विश्वास नहीं कि इस देश में जितने भी तथाकथित उपदेश दिये गये हैं, वे उपदेश की दृष्टि से सम्मिलित रूप से भी इसके समकक्ष समर्थ हैं।"

थोरू स्वयं ह्विटमैन के जीवनकाल के उन इने-गिने धीमान आत्माओं में से थे, जो 'लीव्ज आफ ग्रास' को लोकतन्त्र की अप्रतिम अभिव्यक्ति मानते थे। 'लीव्ज आफ ग्रास' को सं० रा० अमेरिका में ही नहीं, बल्कि विश्व भर में लोकतन्त्र का प्रतीक बन पाने में लगभग ७५ वर्ष लग गये। अनेक भाषाओं में जिनमें डेनिश, जापानी और हेब्रू भी शामिल हैं उसका अनुवाद हो चुका है। उसकी कुछ कविताएँ तो २०वीं शताब्दी में एकतन्त्रवाद के विरुद्ध मोर्चा लेनेवाले आन्दोलनों में भाग लेनेवाले सेनानियों के हृदय में प्रेरणा और साहस का संचार करने के उद्देश्य से लिखी गयी प्रतीत होती हैं। अमेरिकी काव्य की रूपरेखा और विषय-वस्तु की दृष्टि से ह्विटमैन एक मुक्तिदाता हैं, लोकतन्त्र की अपनी धारणा के अनुसार, वे एक दूरदर्शी पैगम्बर और मार्ग-दर्शक थे।

अमेरिकी काव्य पर ह्विटमैन का प्रभाव एक विलम्बित बम-विस्फोट जैसा था, जो अपने पीछे एक हल्का भूचाल छोड़ गया हो। सन् १८८५ में 'लीव्ज आफ ग्रास' का प्रथम संस्करण प्रकाशित होने के पश्चात् दीर्घकाल तक वाल्ट ह्विटमैन की कविता या तो उपेक्षित रही या तिरस्कृत। अधिक से अधिक, ऐसे आलोचकों ने, जो लेखक की सामाजिक अलोकप्रियता से भली भाँति परिचित थे, हल्की से

हल्की प्रशंसा के साथ उसकी निन्दा मात्र की थी। केवल इमर्सन में ही यह बात समझ पाने का साहस और तीक्ष्ण आलोचक का विवेक था कि 'लीव्ज़ आफ ग्रास' के साथ एक महान् मौलिक प्रतिभा प्रादुर्भाव हो रहा है। ह्विटमैन द्वारा उपहारस्वरूप भेजी गयी प्रति को पढ़ लेने के पश्चात् उन्होंने ह्विटमैन को लिखा : "मैं आपको आपके स्वतन्त्र और निर्भीक विचारों का उल्लास भेंट करता हूँ। मुझे इसमें अत्यधिक आनन्द मिला है...इसमें मैं विषय-निर्वाह का ऐसा साहस पाता हूँ, जो आनन्द-विभोर कर देता है, और जिसे केवल महान् अनुभूतियाँ ही प्रेरित कर सकती हैं। मैं आपको एक महान् जीवन-वृत्ति के प्रारम्भ में बधाई देता हूँ।"

जब मैं बाल्यावस्था में प्रारम्भिक स्कूल में पढ़ने जाता था, तो प्रायः स्कूल के सभाभवन की दीवाल पर लटकती हुई एक सूची-पट्टिका की ओर घूरा करता था, जिस पर अमेरिकी कवियों के नाम अंकित थे। उस समय सबसे प्रमुख समझे जानेवाले कवियों के लांगफेलो, ह्विट्टियर, लोवेल, ब्रायण्ड तथा जोकीं मिलर की गणना थी। उस समय, १९वीं शताब्दी की अन्तिम दशाब्दी में, केवल दो महत्त्वपूर्ण कवियों—एडगर अलेन पो और वाल्ट ह्विटमैन—का उल्लेख नहीं था। यदि आज का कोई आलोचक इन दोनों ही व्यक्तियों के कार्य और प्रभाव की उपेक्षा कर जाय, जिनके विषय में उस समय या तो पूर्णतया उपेक्षा करने अथवा क्षमा-याचना के साथ स्वीकार करने के दृष्टिकोण का चलन था, तो उसे उसके महत्त्वपूर्ण कार्य के योग्य नहीं समझा जा सकता। आश्चर्य की बात तो यह है कि उस समय भी विश्व-साहित्य के ज्ञाताओं को भली भाँति मालूम था कि थोरू और ह्विटमैन, दोनों ही की न केवल यूरोप में अत्यधिक प्रशंसा हो रही थी, बल्कि वे लेखकों के उन वर्गों पर अपनी छाप छोड़ रहे थे, जो कि एक निष्प्राण किस्म के परम्परावाद के जाल से अपने-आपको उन्मुक्त करने के लिए विकल थे। १९वीं शताब्दी की प्रारम्भिक दशाब्दियों में फ्रांस की ललितकला अकादमी ने कलाकारों पर विषयवस्तु और शैली के सम्बन्ध में जो प्रतिबन्ध लगाये थे, उन्होंने इसी प्रकार के विद्रोह को जन्म दिया था।

यह कहना अत्युक्ति न होगी कि काव्य के पुनर्जन्म में, जो कि हमारे देश में हैरियट मोनरो की काव्य-पत्रिका के प्रथम अंक के साथ प्रारम्भ हुआ था, वाल्ट ह्विटमैन के प्रभाव ने एक प्रभुत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अत्यधिक अलंकृत तथा तुकान्त छन्दबद्ध कविताओं के विरुद्ध, जिनमें किसी नवीन भाव की अभिव्यक्ति नहीं होती थी, और जिनके दृष्टान्त एडमण्ड सी० स्टेडमैन, रिचर्ड

वाट्सन गिल्डर तथा भावना के कुछ निम्नतर स्तर पर, एला ह्वीलर विलकाक्स की रचनाओं में उपलब्ध थे, विद्रोह का नेतृत्व ह्विटमैन के उत्साही अनुयायियों, जैसे कार्ल सैण्डवर्ग, वाचेल लिण्डसे, एडगर ली मास्टर्स तथा जेम्स ओपेनहेम ने की। यदि उन्होंने ह्विटमैन के मुक्तिदायक प्रभाव को स्वीकार न कर लिया होता, तो उनकी अदम्य प्रतिभाएँ पूर्णतया विकसित न हुई होतीं। ब्रैण्डर मैथ्यूज ने, जिसने यद्यपि एक आलोचक के नाते ह्विटमैन के साथ अनुकूल एवं न्यायोचित होने का प्रयत्न किया था, "फिर भी, **"ए स्टडी आफ वर्सीफिकेशन"** (छन्द-रचना का अध्ययन) में लिखा : "इस बात का उल्लेख कर देना भी उचित होगा, कि इस सिद्धान्त का, कि अन्तिम दीर्घ पद के स्वर पर यति या समानता रहेगी, वाल्टमैन ने, जिन्होंने 'एक्जल्टिंग' तथा 'डेयरिंग', 'क्राउडिंग' तथा 'टेनिंग' को समस्वर बनाया है, तथा पो ने, जिन्होंने 'डेड' और 'टिनैण्टेड' को समस्वर बनाया है, उल्लंघन किया है।" आजकल आधुनिक कवियों ने, अंग्रेजी में समान लयवाले तुकान्त शब्दों का अभाव देखकर, इस प्रकार के प्रयोगों को मान्यता प्रदान कर दी है, जिसका श्रेय, वस्तुतः, पो और ह्विटमैन, दोनों के मार्ग-प्रदर्शक प्रयोगों को ही है। जहाँ तक ह्विटमैन के काव्य की विषय-वस्तु का सम्बन्ध है, जिसमें उनके काव्य के स्वरूप की अपेक्षा कहीं अधिक अंश तक परम्परागत रूढ़ियों का उल्लंघन किया गया था, यह मानना पड़ेगा कि विभिन्न साहित्यिक युगों के दृष्टान्तस्वरूप, मैसफील्ड की रचना **'दी विडो इन दी बाई-स्ट्रीट'** (गली की विधवा) तथा हार्टक्रेन की रचना **'दी-ब्रिज'** (पुल) जैसी कविताएँ अपने यथार्थवाद में ह्विटमैन द्वारा प्रभावित थीं, जिन्होंने :

"दुष्ट और पातकी, मृतप्राय और रुग्ण;
(उन्नीस सौ बीसवीं वाले) अगणित नीच और कुकर्मी, अशिष्ट और क्रूर
बन्दीघर के पागल, कैदी, भयंकर, गन्दे, कपटी,
विष और कीचड़, सर्प, भक्षक शार्क, झूठे; और व्यसनी;" का पक्ष-पोषण किया है।

जान कीट्स की **'ओड आफ दी ग्रीशन अर्न'** नामक कविता का कलात्मक ढंग से अन्त करनेवाली सुप्रसिद्ध पंक्तियाँ :

"है सुन्दरता सत्य, सत्य सुन्दरता है, बस री,
यही जानते तुम धरती पर, यही जानना तुम्हें जरूरी"

की पुष्टि करने का ह्विटमैन का ढंग यही था। दोनों कवियों का विश्वास था कि सत्य की झलक पाने का रोमांचकारी उल्लास सुन्दर के दर्शन के समान है।

उपन्यास और काव्य-सम्बन्धी इतनी अधिक आधुनिक रचनाएँ इसी व्यापक सिद्धान्त पर आधारित हैं।

अन्य कवियों के जीवन की भाँति, ह्विटमैन का जीवन भी आत्म-सिद्धि के लिए अनवरत संघर्ष था। उनकी प्रारम्भिक पृष्ठभूमि प्रयोगात्मक शोध के लिए अध्ययन का उपयुक्त विषय है। ह्विटमैन का जन्म १८१६ में, एडगर अलेन पो के जन्म से १० वर्ष बाद, हुआ था, किन्तु जब १८४६ में पो का देहान्त हुआ, उस समय तक ह्विटमैन ने अपनी रचना 'लीव्ज आफ ग्रास' का प्रथम संस्करण भी प्रकाशित नहीं किया था। ह्विटमैन की माँ हालैण्ड के एक क्वेकर वंश से आयी थीं। उनके पिता एक प्योरिटन अंग्रेज परिवार के वंशज थे। वे मुख्यतः किसान थे और लगभग १५० वर्ष से अमेरिका की भूमि पर खेती करते आ रहे थे। ह्विटमैन का जन्म लांग द्वीप के हरिंटग्टन नामक स्थान के निकट वेस्ट हिल्स में हुआ था, किन्तु उनका परिवार शीघ्र ही वहाँ से हटकर ब्रूकलीन में जा बसा। वहीं एक प्रारम्भिक पाठशाला में उन्होंने, १६ वर्ष की प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करने से पहले लिखाई, पढ़ाई और गणित का मौलिक ज्ञान प्राप्त किया। ११ वर्ष की अवस्था में वे सन्देशवाहक छोकरे का काम करते थे। १२ वर्ष की अवस्था में वे एक 'मुद्रक के शैतान', नौसिखुए कम्पोजिटर थे; १४ वर्ष की अवस्था में लांग द्वीप के पत्र **"स्टार"** के कम्पोजिंग कक्ष में अक्षर जोड़ने का काम करते थे; और १७ वर्ष की अवस्था में न्यूयार्क नगर में एक भ्रमणशील मुद्रक-पत्रकार थे। उनके जीवन की इस अवस्था में, सिवाय इस बात के, कि बालक की बुद्धि तीक्ष्ण थी और वह स्वयं अपनी पाठशाला में शिक्षा की अपूर्णता को इतना पूर्ण कर लेने में समर्थ रहा, जिससे वह १७ वर्ष की अवस्था में स्वयं अध्यापन कार्य के योग्य, और उसके लिए इच्छुक, हो गया था, इस बात का कोई अन्य प्रमाण नहीं मिलता कि उनका मस्तिष्क गतिशील और मौलिक था। उस अवस्था में शिक्षण का आर्थिक स्तर इतना निम्नकोटि का था कि वे अपनी आय की सम्पत्ति के लिए अध्यापन के अतिरिक्त लांग द्वीप के पत्र **"डिमोक्रैट"** में लेख और गीत भी लिखा करते थे। सम्भव है, अपने लेखों के लिए उन्होंने जो पत्र चुना था, उसके नाम में स्वयं उन्हीं के भविष्य का संकेत रहा हो। उस समय की मुद्रक की स्याही के लिए उनका प्रेम सच्चा रहा होगा, क्योंकि जब वे १८४१ में ब्रूकलीन और न्यूयार्क में वापस आये, तो उन्होंने सम्पूरक सामग्री, लघु कहानी, लघु उपन्यास, कविता और सम्पादकीय लेख जैसी विविध प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ करने में अपने-आपको व्यस्त रखा।

ब्रूकलीन के पत्र **"इवनिंग स्टार"** में वे पहली बार नियमित रूप से सम्पादकीय पद पर आये, जिसे उन्होंने सन् १८४६ में ब्रूकलीन के पत्र **"डेलि इगिल"** का सम्पादक होने के लिए छोड़ दिया।

इन समाचार-पत्रों में ह्विटमैन ने जो सम्पादकीय लेख या समीक्षाएँ लिखीं, उनका अधिकांश फिर से मुद्रित हुआ है। उनमें युवक सम्पादक ने तत्कालीन राजनीतिक समस्याओं पर विचार किया है। वह ऐसा समय था, जब मैक्सिको से युद्ध छिड़ने का भय छाया हुआ था, ओरेगान से विवाद खड़ा हो गया था और स्वतन्त्र व्यापार तथा दास-प्रथा के विस्तार के प्रश्नों पर गर्मागर्म बहस-मुबाहिसे हो रहे थे। इनमें से अधिकांश प्रश्नों पर ह्विटमैन ने डिमोक्रैटिक दल का पक्ष लेकर बड़ी सबलता के साथ अपने विचार व्यक्त किये। स्वतन्त्र भूमि के प्रश्न पर उन्होंने दल के अधिक मौलिकतावादी पक्ष, तथाकथित खलियान जलानेवालों (बार्न बर्नर्स) का इतना ओजस्वी समर्थन किया कि दो वर्ष तक सम्पादक की हैसियत से उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर लेने के पश्चात् भी उन्हें **"इगिल"** पत्र से पृथक् कर दिया गया।

राजनीतिक और नागरिक विषयों के अतिरिक्त ह्विटमैन ने जेल-सुधार तथा शिशु और महिला श्रम जैसे सामाजिक मामलों पर भी लिखा। नागरिक तथा मानवीय समस्याओं पर उनके दृष्टिकोण प्रायः अपने युग से बहुत आगे के हुआ करते थे। फ्लोरेंस बर्न्सस्टीन फ्रीडमैन के ग्रन्थ, **"वाल्ट ह्विटमैन लुक्स ऐट दी स्कूल्स"** (स्कूलों के विषय में वाल्ट ह्विटमैन के दृष्टिकोण) में प्रकाशित शिक्षा और स्कूल-सम्बन्धी उनके लेख वर्तमान स्थिति की दृष्टि से विशेष रुचिकर हैं। उदाहरण के लिए, ब्रूकलीन के पत्र **"इवनिंग स्टार"** में प्रकाशित अपने एक लेख में उन्होंने पाठशाला-सम्बन्धी प्रचलित व्यवहारों के विषय में यह कहा है : "हमारी ब्रूकलीन की पाठशालाओं में एक हास्यास्पद तथा व्यग्रकारी नियम लागू है, जिसके द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी के लिए यह अनिवार्य है कि वह अपना या अपनी पुस्तकें कागज आदि स्वयं अपने पास से लायें।... निश्चय ही, यह एक खेदजनक तथा निम्नकोटि की मितव्ययिता है, जिसके विरुद्ध उस समय तक शोरगुल और ऊधम मचाये रखना आवश्यक है, जब तक कि उसे सुधार न लिया जाय।" इन पंक्तियों में ह्विटमैन की तेजस्विता और ओज का परिचय मिलता है।

शारीरिक दण्ड से ह्विटमैन अत्यधिक क्षुब्ध थे। उसी सम्पादकीय लेख में उन्होंने लिखा था : "जैसा अध्यापक इस व्यवहार का अनुशीलन करता

है, वह यह प्रदर्शित करता है कि वह अपने पद के लिए सर्वथा अयोग्य है। यदि वह बेंत और नगारे जैसी चोट बगैर लड़कों और लड़कियों के एक भुण्ड को अनुशासित नहीं कर सकता, तो उसे उस पद पर नियुक्त नहीं करना चाहिए।" अध्यापक के व्यक्तित्व के सम्बन्ध म ह्विटमैन के दृष्टिकोण से उन लोगों को प्रसन्नता होगी, जिस पर केवल योग्य और प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियो को अध्यापक पद पर नियुक्त करने का उत्तरदायित्व है। ह्विटमैन का उपदेश था—"हम,यह भी सुझाव देंगे कि युवकों मे अध्यापकों के पद पर नारीगुण सम्पन्न तथा सुशिक्षित महिलाओं को प्रायः अधिक अनुपात में और सामान्य रूप से नियुक्त किया जाय। महिला चरित्र का सौष्ठव और उसकी विनम्रता, बच्चों की भावनाओं के साथ उसकी स्वाभाविक सहानुभूति और उनके आज्ञापालन तथा उनकी भलाई के लिए सर्वश्रेष्ठ साधनों का उसका स्वाभाविक ज्ञान जैसे गुण उन्हें निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ अध्यापक प्रमाणित करेंगे और यहाँ हमारे कथन में अत्युक्ति नहीं है। यदि बालकों को महिला शिक्षता की विनम्र क्षमता के प्रभाव के अन्तर्गत अपेक्षाकृत अधिक सामान्य रूप से लाया जाता रहा, तो उन असभ्य और भद्दे ठिठोरियों, उन शोर-गुल और ऊधम मचानेवाले अप्रिय बालक-उपद्रवियों की संख्या कितनी कम हो जायगी, जो कि इस समय हर गली में मक्खियों की भाँति भरे पड़े हैं।" निश्चय ही यह कथन नृशंस चित्कार जैसा हरगिज प्रतीत नहीं होता।

बच्चों की सम्भाव्यताओं के मूल्यांकन में ह्विटमैन जान डीवी के अधिक निकट प्रतीत होते हैं। जैसा कि उन्होंने ६ मार्च १६४६ के **"इवनिंग स्टार"** में लिखा था—"यह बहुत ही आश्चर्यजनक सा प्रतीत होता है कि बहुत से लोग बालक और बालिकाओं से कदापि स्नेह नहीं कर सकते। उनके नन्हें दोष एक क्षणमात्र की तुच्छ दुर्बलता के अतिरिक्त क्या है? और तथाकथित विनष्ट तथा अप्रिय बच्चों से कौन व्यक्ति ऐसा है जो निम्नतम पटुता द्वारा भी कुछ न कुछ रुचिकर गुण नहीं निकाल सकता? यदि जिस समय आप बच्चे से बातचीत करते हैं, बच्चे का ध्यान आकृष्ट नहीं होता तो यह आपका दोष है। उसका मस्तिष्क और उसके वार्तालाप एक शीशे जैसे है जो स्वयं आपका रूप प्रतिबिम्बित करता है। भगवान् की सृष्टि में किसी मानव प्राणी का सृजन कुछ सुन्दर गुणों बिना नहीं होता......।" उसके पश्चात् ह्विटमैन 'समाज की कृत्रिम और झूठी रीतियों और परम्पराओं' की तीक्ष्ण भर्त्सना करते हैं, जो कि 'प्राकृतिक मस्तिष्क की निष्कलुष और नवीन प्रेरणाओं' को कुचल देने के लिए प्रयत्नशील होती हैं। और, इस कथन द्वारा—और यहाँ वह अशान्त विश्व में अंगीकारक और स्वीकृति-

सूचक के रूप में 'हाँ कहने' वाले की भाँति अंकुरित होने लगे हैं—समाप्त करते हैं कि इसके बाद भी "सदैव प्रेम, सत्य और स्नेहमय पदों के सजातीय दैवत्व का अनुकूल प्रत्युत्तर देने के लिए पर्याप्त दैवी विरासत शेष रह जाती है।" ह्विटमैन ने "पाठशाला प्रशासन की मूर्खतायें" शीर्षक एक लेख में ब्रुकलिन के कुछ सार्वजनिक पाठशालाओं में—"जहाँ बच्चों का प्रयोग इच्छा के विरुद्ध संचालित अनेक यन्त्रों के रूप में होता है", प्रचलित रीति-रिवाजों पर खेद प्रकाश करने के बाद कहा है कि "सच्ची पाठशाला का उद्देश्य शिक्षा देना है।" फिर, वह आगे कहते हैं, "सभी प्रकार के रिवाज और नियम केवल प्रतिबिम्ब हैं, वे केवल उसी हद तक यथार्थ होते हैं, जहाँ तक वे दूसरे को सहायता पहुँचाते हैं। बच्चे के मस्तिष्क को विकसित करना उसे प्रसन्नता भरे तथा प्रोत्साहन के शब्दों द्वारा सक्रिय बनाना, करुणा, विनम्रता और दृढ़ता द्वारा उसके अपने सम्पन्न भण्डार को खोलना—इन्हीं बातों को लक्ष्य बनाना चाहिए। अन्ततोगत्वा केवल रटना-रटाना या पुस्तक-ज्ञान शिक्षा का केवल एक अल्प अंश है। और ये मेज पर घूँसा लगाकर डराने-धमकानेवाले अध्यापक स्वयं ज्ञानार्जन के केवल किनारे पर ही हैं और अपने पदों के सर्वथा अनुपयुक्त हैं।"

संशोधित और प्रगतिशील शिक्षा, जो कि उद्देश्यपूर्ण कार्यों के माध्यम से बच्चे के व्यक्तित्व को प्रस्फुटित करने पर जोर देती है, कोई भी पोषक तत्सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का पक्ष-पोषण इतने खुले और स्पष्ट रूप से न कर सका होता ह्विटमैन कहते हैं कि बच्चा दैवी सृष्टि है, उसे अपने अनेक प्रतिबन्धों और 'कठोर नियमों' द्वारा केवल यन्त्र में परिवर्तित करके विनष्ट न कीजिये।

अनेक दृष्टियों से पत्रकार ह्विटमैन का जीवन कवि ह्विटमैन के जीवन के लिए रहस्योद्घाटक था। वह देश में बाहर से लोगों के आकर बसने के पक्ष में थे। उन्होंने लिखा था : 'तो फिर, कोई भी व्यक्ति जिसके छाती के नीचे हृदय धड़कता होगा, नये विश्व के समृद्धशाली भण्डार में यूरोप के जरूरत मन्द लोगों के आने पर आक्षेप कैसे कर सकता है?" यद्यपि ह्विटमैन कभी भी दास-प्रथा के उन्मूलन के उत्साही समर्थक नहीं रहे और उन्होंने सदैव संघ राज्य की सुरक्षा को दास-प्रथा के प्रश्न से आगे रखा, फिर भी उन्होंने हठपूर्वक इस बात पर जोर दिया था कि नये प्रदेश में दास-प्रथा कदापि नहीं आनी चाहिए। बाद में लिखी गयी अपनी एक कविता में उन्होंने भगोड़े दास का एक अविस्मरणीय रेखाचित्र खींचा था :—

"वह भगोड़ा दास मेरे घर पर आया, और द्वार पर ठिठक गया;

लकड़ी के टाल की टहनियों को चिटखाते हुए मैंने उनकी गति को सुना;
रसोईघर के अधखुले द्वार से मैंने उसे लँगड़ाते और कृशकाय देखा,
और, वहाँ, जहाँ वह लकड़ी के कुन्दे पर बैठा था, मैं गया;
और उसे अन्दर लाया, और आश्वासन दिया;
और जल लाया, और उसके पसीने से तर शरीर और कुचले पाँव के लिए
एक बाल्टी भरी;

और उसे वह कमरा दिया जिसमें घुसने का मार्ग मेरे ही कमरे से था;
और उसे कुछ मोटे खुरदरे साफ वस्त्र दिये;
स्वस्थ होने के पूर्व वह मेरे साथ एक सप्ताह रहा, और फिर उत्तर की ओर
चल पड़ा,

मैंने उसे अपने खाने की मेज पर, अपने पार्श्व में ही बैठाया,
और मेरी अंगीठी का ताला कोने में लटक रहा था।

"लीव्ज आफ ग्रास" प्रकाशित होने के पाँच वर्ष पूर्व, ३१ वर्ष की अवस्था में, ह्विटमैन में ह्विटमैनी प्रवृत्ति का, जो कि आज उनके नाम से सम्बद्ध है, संचार होने लगा था। वे प्रदर्शनकारी वेशभूषा से, जिसमें छबीलेपन का पुट होता, अत्यन्त घृणा करते थे। उसके प्रति उनके हृदय में अतीव द्वेष था। उन्होंने उसकी बजाय, श्रमिक जैसा वस्त्र पहनना आरम्भ किया। उस समय ही उन्होंने 'शक्तिशाली व्यक्तियों की,—मल्लाहों, बस चालकों, घाटों और बन्दरगाहों के मजदूरों की संगति शुरू की। ह्विटमैन के सम्बन्ध में प्रचलित अनेक किंवदन्तियों का जन्म इसी समय हुआ, जब कि उनकी युवक प्रौढ़ता की अवस्था समाप्त हो रही थी और उनके जीवन की पूर्णता प्रस्फुटित होने के लिए हिलोरें ले रही थी। उदाहरण के लिए कहा जाता है कि एक अवसर पर वे एक मोटर बस चला रहे थे और शेक्सपीयर के पद भी अलापते जाते थे। एक दूसरे अवसर पर, उन्हें एक नाविक के समक्ष एपिक्टेटस पढ़ते हुए सुना गया था। उनकी कविताएँ यथार्थता के प्रतिबिम्ब के रूप में ही रूप-धारण कर रही थीं और विद्वत्तापूर्ण भूत-काल की विनम्र मृगतृष्णाओं में नहीं। उस अवधि में उनकी चेतना में शेक्स-पीयर, एपिक्टेटस, बसचालकों और नाविकों के लिए पर्याप्त जगह थी। ह्विटमैन साहित्यकारों की बैठकों की सीमा के बाहर के वातावरण के एक विचित्र संसार को समझने का प्रयत्न कर रहे थे—ऐसा विश्व, जिसमें गुण और दोष अविच्छिन्न रूप से मिश्रित हैं।

ह्विटमैन द्वारा बाह्य रूपों और दृश्यों के आकस्मिक प्रभावों के साथ सच्चे मूल्य का सामंजस्य स्थापित करने के लिए किये गये प्रयत्न ने उन्हें अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के उद्देश्य से उपयुक्त छन्दशैली ढूँढ़ निकालने के लिए प्रेरित किया। स्पष्ट रूप से पद्य में यथाक्रम लघु-दीर्घ अक्षरोंवाले पदों के प्रयोग से उत्पन्न खटखट तथा विशुद्ध इति-वृत्ति की संकुचित सीमायें उनकी स्वतन्त्रता सम्बन्धी परस्पर-विरोधी कल्पनाओं को तथा चुम्बकीय एकता-सम्बन्धी उनकी चेतना को, जो कि परमात्मा के अन्तर्गत मानवीय विविधता में उसके गूढ़तम अभिप्राय की प्रतिष्ठा करती हैं, सबलता के साथ प्रभावपूर्ण ढंग पर प्रक्षिप्त करने में बाधायें थीं। परम्परागत शास्त्रीय पृष्ठभूमियों, अति-प्रयुक्त विषयों तथा विदेशी प्रभावों से युक्त होने की उनकी घोषणा, 'उद्घाटन गीत' शीर्षक उनकी कविता के निम्नलिखित पद्यांश में स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट है—

आओ, कविता देवी, वीणा-वादिनि आओ,
तज दो वह यूनान देश, आयोनिय भरती,
करो पार उन लेखाओं को, कृपया, जिनका
अतिभुगतान हो चुका, अधि-भुगतान हो चुका,
विषय ट्राय का वह; अचलिस का, एनियास का
क्रोधोन्मेष; भटकना दर-दर ओडिसियस का,
अपने हिम-मण्डित पर्नासस के शिखरों पर
टाँगो तख्ती 'निष्कासित' की, 'खाली है' की,
रीति यही दुहराओ, देवी, जेरुसलम में;
नगर द्वार पर जाफा के, गिरि मोरियाह पर
ऊँचे, अति ऊँचे अधिसूचक-पत्र लगा दो,
वही सूचना टँगे फ्रांस, जर्मनी, स्पेन के
तेरे उन उन्नत दुर्गों के प्राचीरों पर
इटली की संग्रह-शालाओं पर लटके वह;
छोड़ो, उस जर्जरित भूमि को, चिर नवीन हे!
क्षेत्र श्रेष्ठतर और मधुरतर और व्यस्ततर,
एक अछूता विश्व, सुविस्तृत, नूतनामय,
निर्निमेष कर रहा प्रतीक्षा जननी, तेरी।

स्वभावतः ह्विटमैन की योजना में कविता-सम्बन्धी यह नया दृष्टिकोण 'जन साधारण' की लोकतन्त्रीय मान्यता से मूलतः सम्बद्ध था। वह स्वयं ही

वह व्यक्ति थे, जिन्होंने ह्विटमैन से केवल कुछ ही दशाब्दी पूर्व साधारण प्रतीत होनेवाली वस्तुओं में निहित सौन्दर्य का प्रतिपादन किया था। ह्विटमैन ने गलियों और कारखानों में काम करनेवाले मनुष्यों को, हीनतम वातावरणों में रहनेवाले निम्नतम कोटि की महिलाओं और पुरुषों को, परमात्मा क सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ कहकर गौरव प्रदान किया। उन्होंने हमारे राष्ट्रीय आदर्शवाक्य "एप्लूरियस ऊनम" की स्वयं जो व्याख्या की थी, वह उनके गीत "सुनता हूँ मैं हर्ष-निनादित अमरीका को" में व्यक्त हुई है :—

सुनता हूँ मैं हर्ष-निनादित अमरीका को,
विविध सुरों से सिक्त मधुर कलरव सुनता हूँ;
गाता है यांत्रिकों मध्य प्रत्येक स्व-ध्वनिमय
गीत भरा उल्लास, सबल उच्छ्वास भरा वह;
काष्ठकार झूमता, मापता बल्ली, तख्ता,
गाता मधुमय गीत सुहाना गुञ्जन उसका;
राजगीर आलाप रहा है अपना गायन,
धन्धे पर जाते-जाते या कार्यमुक्त हो;
नाविक गाता गीत, नाव में दुनिया उसकी,
वाष्प-यान पर तान गूँजती है मल्लाह की;
मोची आसन पर बैठा तन्मय हो गाता,
ईंट बनाने वाला गाता खड़े-खड़े ही;
गीत लकड़हारे का, हलवाहे का पथ पर,
साँझ, सकारे, मध्यान्तर में दोपहरी के;
गाता है प्रत्येक, दिवस का, अपना-अपना,
किन्तु रात में युवक बान्धवों की टोली है,
मस्त, ओजमय, स्नेह सूत्र में गुथे हुए जो,
मुक्त कण्ठ से सबल सुरीले गान गा रहे।

ह्विटमैन ने सभी मनुष्यों और सभी हृदयों के साथ, गुण और दोष के साथ, महान् और नीच के साथ जो तादात्म्य स्थापित कर लिया था, वही उनकी भावाभिव्यक्ति की तीव्रता तथा उसमें सुरुचि के अभाव को, जिसके लिए उनकी कड़ी आलोचना की गयी है, स्पष्ट करता है। किन्तु इन बातों को उनके आदर्शगत उत्साह की अत्यधिकता मानना चाहिए—उग्रतायें जो अपरिहार्य रूप

से नया आन्दोलन संचालित करने पर उत्पन्न हो जाती हैं और जिन्हें समय संशोधित और परिवर्तित करता है। यदि पाठक उनकी कविता, 'मेरा गीत' की विषय सामग्री को आद्यन्त पढ़ जाने के लिए तैयार हों, जो कि अबाध तथा बार-बार दोहराई गयी है, तो उससे बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है। इस कविता की कुछ पंक्तियाँ ही इस बात पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त हैं कि ह्विटमैन सबसे अधिक किस बात को कहने के लिए विशेष रूप से आतुर थे :—

अपना उत्सव स्वयं मनाता, गाता हूँ खुद,
मेरी मधुर कल्पना होगी कभी तुम्हारी,
कण-कण पर हूँ स्वत्व जताता मैं अपना ही,
है दुनिया की वस्तु जिस तरह सभी तुम्हारी।
मैं स्वेच्छाचारी, रमता रहता मनमाने,
प्राणों को देता रहता हूँ मौन-निमंत्रण,
सतत सीखता रहता, मुक्त-विहारी रमता,
लखता पैनी नोंक ग्रीष्म के दूर्वादल की।
मेरे साथ दिवस-निशि का अवसान करो, फिर
मूलमंत्र मेरी कविताओं का पा लोगे।...

पहले संस्करण में "लीव्ज़ आफ ग्रास" में केवल १२ कविताएँ थीं और उसे गुमनाम प्रकाशित किया गया था। एक साल बाद, १८५६ में, द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ, जिसमें ३२ कविताएँ थीं। तृतीय संस्करण १८६० में प्रकाशित हुआ था, जिसमें १५७ कविताएँ थीं। एक अर्थ में तो अपने शेष जीवन भर ह्विटमैन "लीव्ज़ आफ ग्रास" के संस्करण निकालते रहे; वे इस प्रेरक शीर्षक के अन्तर्गत अपनी बाद की समस्त काव्य रचनायें सम्मिलित करते जाते थे। ह्विटमैन ने अपनी कविताओं में, अपने ग्रन्थ के कुछ संस्करणों के आमुखों में, और अपनी गद्य-रचनाओं में, अपनी लोकतन्त्रीय विचारधारा तथा मनुष्यों, विचारों और प्रकृति-जगत् के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रियाओं को व्यक्त किया है।

किन्तु काव्य-प्रतिभा को अन्ततोगत्वा, परिपक्व बनाने का श्रेय गृह-युद्ध और विशेष रूप से, उसके महान् और दुखान्तगत अभिनेता अब्राहमलिंकन को ही है। जब राज्यों के बीच युद्ध छिड़ गया, तो ह्विटमैन सेना में भर्ती नहीं हुए। किन्तु उनके भ्राता, जार्ज, भर्ती थे। फिर भी, ह्विटमैन ने इस नाटकीय संघर्ष में शीघ्र ही एक ऐसी भूमिका ग्रहण कर ली, जो कि उनके

मानवीय लक्ष्यों और दर्शन के अनुरूप थी। जब जार्ज युद्ध में आहत हुए, वाल्ट ह्विटमैन ने उनकी सेवा-शुश्रूषा का भार स्वयं उठाया। फिर वह वाशिंगटन में ही अस्पतालों में भर्ती सैनिकों की सेवा-सुश्रूषा और सहायता करते रहे। वे असमर्थ व्यक्तियों के लिए यथाशक्ति सभी कार्य करते थे, उनके लिए पत्र लिखते थे, उनको तम्बाकू और आइसक्रीम खरीदकर देते थे और प्रायः उनके मनोरंजनार्थ कहानियों और कविताओं का पाठ किया करते थे।

ह्विटमैन के स्वतः अनुभूत अनुभव उनके काव्य संग्रह "ड्रम टैप्स" (मारू की चोट) में दिये गये हैं, जो कि बाद में चलकर "लीव्ज़ आफ ग्रास" में सम्मिलित कर लिया गया है। उनकी दो सर्वश्रेष्ठ कवितायें अब्राहमलिंकन की हत्या पर उनके हृदय में उत्पन्न अवसाद की अमिट अनुभूतियों की प्रेरणा का परिणाम थीं। उनमें ह्विटमैन के कवि को उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति मिली है। शौर्य और प्राकृतिक जीवन के गौरव का ओजस्वी उद्घोष करनेवाले तथा उनके उत्कट अग्रनायक ने अपनी कविता "युद्धक्षेत्र से लौटिये, पिता जी!" (कम अप फ्राम दी फील्ड्स फादर) में, जो कि जनता पर ढाये गये कष्टों के रूप में युद्ध के प्रभाव की अभिव्यक्ति है, तथा एक अन्य कविता, "जब द्वार के प्रांगण में अन्तिम बार बकाइने कुसुमित हुई थीं!" में, जो कि उस विषाद का सारांश और अन्तिम अभिव्यक्ति है, जिससे उस समय, जब कि अब्राहमलिंकन की हत्या हो चुकी थी और एक किंकर्तव्यविमूढ़ देश नेतृत्व-विहीन हो गया था, असंख्य मानवों का हृदय अभिभूत था, गहन सुकुमारता तथा उत्कृष्ट कलात्मकता का परिचय दिया है। यद्यपि यह कविता मृत्यु का, अवसाद का, करुण गीत है, फिर भी जनाजे पर रखी गयी बकाइन की टहनी उसका शाश्वत अंग बन चुकी है।

गृह-युद्ध से ह्विटमैन को एक गम्भीर शिक्षा मिली। उन्होंने संयुक्तराज से आये हुए सभी सैनिकों को जानना और समझना सीखा। युद्ध के पश्चात् वस्तुतः वे समूचे देश के कवि बन गये और अपनी अन्तर्दृष्टि को इतनी व्यापक बना दिया कि उसमें समस्त सृष्टि समा गई। उन्होंने अब उस 'जन समुदाय' को अच्छी तरह समझ लिया, जिसके विषय में उन्होंने लिखा था। वे लोकतंत्र संबंधी अपने दृष्टिकोण में, जो कि उस समय के रीति-रिवाजों और संस्थाओं में अपनी अभिव्यक्ति पा रहा था, अधिक यथार्थवादी हो उठे।

आदर्श लोकतंत्र संबंधी उनकी अन्तर्दृष्टि कभी भी प्रकम्पित नहीं हुई। ह्विटमैन ने अपने लेख "लोकतंत्रीय दृश्य" में जो कि १८७१ में "लीव्ज़ आफ

ग्रास" के पंचम संस्करण के साथ ही प्रकाशित हुआ था, बार-बार तत्कालीन अमेरिकी लोकतंत्र के दोषों और उसकी असत्यताओं की ओर संकेत किया था। उन्होंने उसके एक अंश में कहा था' "......इन राज्यों में समाज जर्जर, भद्दा, अन्धविश्वासी और निष्कृष्ट हो चुका है......इस समय यहाँ संयुक्त राज्य में लोगों का हृदय जितना अधिक छूछा और खाली हो गया है; उतना सम्भवतः पहले कदापि नहीं था......व्यावसायिक वर्गों का भ्रष्टाचार जितना समझा जाता है, उससे कम नहीं, बल्कि असीमित मात्रा में अधिक है। अमेरिका की राष्ट्रीय राज्य और नगरपालिका सम्बन्धी सरकारी सेवाओं के न्याय-विभाग के अतिरिक्त सभी विभागों और शाखाओं में भ्रष्टाचार, घूसखोरी, असत्यता और कुप्रबन्ध अपने चरम बिन्दु तक पहुँच चुके हैं, जब कि न्याय विभाग कलंकित हो चुका है..... ऐसा प्रतीत होता है, मानों हमें किसी प्रकार विस्तृत और अधिकाधिक पूर्ण रूप से नियुक्त संस्थायें दान कर दी जाती हैं, और फिर हममें कुछ भी या तनिक भी आत्मा शेष नहीं रह जाती।"

फिर भी वे लोकतन्त्र से निराश नहीं थे "लोकतन्त्र एक महान् शब्द है, जिसका इतिहास, मेरी समझ में अभी लिखना शेष है, क्योंकि अभी भी इतिहास अभिनीत नहीं हुआ है।" संयुक्तराज्य में उनका विश्वास सदैव बना रहा। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, सन् १८८८ में, ह्विटमैन ने अपने जीवन के पिछले दिनों पर पृष्ठपेषण करते हुए लिखा था, "लीव्ज़ आफ ग्रास" की कविताओं के पीछे एक प्रमुख मौलिक प्रेरणा मेरा यह अमिट विश्वास (जो कि अभी भी पूर्ववत् अडिग बना हुआ है) था कि संयुक्तराज्य के चरम उत्कर्ष को आध्यात्मिक और शौर्यपूर्ण होना है।"

जिस साल ह्विटमैन ने अपने लेख 'लोकतन्त्रीय दृश्य' में अमेरिकी लोकतन्त्री के दोषों पर खेद प्रकट किया था, उसी साल उन्होंने 'भारत की अभियात्रा' शीर्षक एक कविता लिखी जिसमें, उनके कथनानुसार किसी भी अन्य कविता की अपेक्षा उनके व्यक्तित्व की अधिक अभिव्यक्ति हुई थी। इस कविता में उन्होंने यह पूर्व-दर्शन व्यक्त किया है कि जब विश्व भर में लोकतन्त्र विकसित हो जायगा, तो राष्ट्रों के बीच एकता स्थापित होकर रहेगी :—

> भारत तक पथ !
> अरे, नहीं क्या तुझे सूझता, मन, अथ से ही,

इसमें जगन्नियन्ता का उद्देश्य मनोरम !
धरती का कण-कण बँध जाये एक सूत्र में
एक गाँठ में उसकी सीमाएँ लय होवें,
जाति-जाति के बीच, बीच घर के पड़ोस के
हों विवाह, आदान-प्रदान विवाहों का हो,
महासागरों की छाती हों पार, दूर हो
निकट, सभी भूखण्ड एक हों।

ऐसा प्रतीत होता है, मानो उनकी कविता "आधुनिकों के वर्ष" में, संयुक्तराष्ट्रसंघ की प्रतिच्छाया अंकित हुई है :—

दुनिया के देशो, यह कानाफूसी कैसी,
दौड़ रही जो तुमसे आगे सागर तल में ?
सभी राष्ट्र क्या वार्त्ता-रत हैं ? क्या पृथ्वी का
केवल एक हृदय ही अब होने वाला है ?
मानवता निर्माण कर रही है एकाकी जन-समूह क्या ?
देखो, लो, हिल रहे पाँव अत्याचारी के,
मन्द पड़ रही राजमुकुट की चकाचौंध, अब
विकल धरित्री नवयुग का आह्वान कर रही।...

× × × ×

जीवन के ओ वर्ष, तुम्हारे स्वप्न तीक्ष्ण ये,
कैसे मेरे अन्तर्तम को बींध चले हैं;
(नहीं ज्ञात मुझको मैं जगता या सोता हूँ)
अमरीका यूरप के क्रीड़ा स्थल पर मैंने
जिन स्वप्नों को सत्य किया, वे मन्द हो चले;
मेरे पीछे की छाया में लुप्त हो चले।
किन्तु नहीं जो सिद्ध हो सके स्वप्न निराले,
वे विशाल बढ़ाते, नित्य, निरन्तर,
चढ़े आ रहे मुझपर, मेरी ओर बढ़ रहे।

उचित रूप से यह प्रश्न पूछा जा सकता है, "ह्विटमैन ने उस नवीन युग का द्वार उन्मुक्त करने में कितना योग दिया था ?" लेखकों ने उनके प्रति अपनी

कृतज्ञता प्रकट की है। उदाहरण के लिए, राबर्ट लुई स्टीवेंसन ने "लीव्ज़ आफ ग्रास" के सम्बन्ध में सन् १८८७ में लिखा था : "यह एक ऐसी पुस्तक है, जो मेरे लिए अद्वितीय रूप से उपादेय सिद्ध हुई है, जिसने मेरे लिए दुनिया में उथल-पुथल मचा दी है; अन्तरिक्ष में विनीत और नैतिक ऐन्द्रजालिक छलनाओं के सहस्रों जाले रच दिये हैं, और इस प्रकार, मेरे असत्यों के क्षणिक मण्डपों की जड़ें हिलाकर मुझे पुनः एक शक्तिशाली आधारशिला खड़ा कर दिया है।......किन्तु, यह पुस्तक केवल उन्हीं लोगों के लिए है, जिनमें पढ़ने की प्रतिभा है।"

ह्विटमैन ने आधुनिक काव्य की न केवल शैली, बल्कि विषयवस्तु के चुनाव को भी प्रभावित किया था। उनकी कविता, 'शरद् काल में एक लोकोमोटिव के प्रति', में एक यन्त्र को विज्ञान के विभिन्न पक्षों को काव्य का विषय बनाया गया है। जेसेफ बीवर ने अपनी हाल में प्रकाशित पुस्तक, 'विज्ञान के कवि वाल्ट ह्विटमैन' में उन्हें 'पहला अमेरिकी कवि' कहा है, जिसने "अपनी रचनाओं में काव्यात्मक ढंग पर आधुनिक वैज्ञानिक धारणाओं को व्यक्त किया है।" और यह अभिमत प्रकट किया है कि विज्ञान के विषयों पर ह्विटमैन का ज्ञान जितना समझा जाता है, उससे कहीं अधिक क्रमबद्ध तथा श्रेष्ठतर था।

लोकतन्त्रीय आदर्शों के विकास और प्रसार पर ह्विटमैन के प्रभाव का पता लगाना अधिक कठिन है, तथापि विश्व भर में इस प्रकार के प्रभाव का अस्तित्व है। उनके विचारों तथा आधुनिक कवियों, उपन्यासकारों और उदारवादी विचारकों के बीच समानता के अध्ययन ने उनमें स्पष्ट समानताओं की ओर इंगित किया है। ये समानतायें इतनी सबल है कि उन्हें केवल आकस्मिक नहीं कहा जा सकता। उदारवादी भावना में ह्विटमैन का एक वक्र, किन्तु प्रत्यक्ष, योगदान है। उनका वह प्रभाव है, जो कि उन्होंने 'चतुर्दश सूत्रों' वाली घोषणा पर डाला था। जनरल स्मट्स, जिनके विषय में कहा जाता है कि चतुर्दश सूत्रों के लिए अधिकांशतः वे ही उत्तरदायी थे, ह्विटमैन के उत्साही समर्थक थे ? और उन्होंने ह्विटमैन के सम्बन्ध में एक पुस्तक भी लिखी है। सन् १९१५ में वान वाइक ब्रुक्स ने अमेरीकाज कमिंग आफ एज़ में लिखा था; "ऐसी प्रत्येक सबल व्यक्तिगत भावना तथा वस्तु के लिए हम किसी न किसी अंश तक वाल्ट ह्विटमैन के ऋणी हैं जो आधुनिक विश्व में सामाजिक पृष्ठभूमि को समृद्ध बनाती, प्रोत्साहन देती और विचारों को स्पष्ट करती है।"

एक अवसर पर वाल्ट ह्विटमैन ने यह दावा किया था कि उनकी पुस्तक भविष्य के लिए एक उम्मेदवार है। सभी उपलब्ध प्रमाणों के निष्कर्ष यह संकेत करते प्रतीत होते हैं कि वह पुस्तक ही अंशतः भविष्य के स्वरूप के निर्धारण के लिए उत्तरदायी हो सकती है।

अब्राहमलिंकन की भाँति ही, ह्विटमैन भी अपने तूफानी जीवन भर तिरस्कार और भ्रान्तियों के शिकार बने रहे। उन्होंने अदम्य साहस के साथ लकवे के विनाशकारी प्रभावों पर विजय प्राप्त करके भी अपने कष्ट सहे, क्योंकि लिंकन की भाँति ही, वे अपने उद्देश्य की ओर, एक उदारवादी की हैसियत से, सीधे अपने लक्ष्य की दिशा में अपना मार्ग बनाये रखने के लिए दृढ़ संकल्प थे, और अब चूँकि उनके कार्य और उनके प्रभाव का मूल्यांकन करना सम्भव है, हम कह सकते हैं कि लिंकन की भाँति ही वे सभी युगों के महामानव हैं।
